रुहोभव।

ভূতীয় ভাগ।

পঞ্চদশ সংগ্রায়। মোগল রাজাদের রাজত ।

বাৰর - তৈম্ব জ্ঞান বংশজ্ -

| , | | • | | | |
|--------------------------------|------------|------------|------------------|-----------|--------------|
| विकि खाला नगरम | পিড়ভীৰ | इहेग, | পিতৃয়াগ | ণর সহি | 7 3 |
| शुरू अंदु ७ वस | • | • | 2 | | • |
| ঁ টাহার যুক্ত হার, বা | द्रफ़ ७ न | ানাঞ | <u>কার ক্লেশ</u> | 74 | ও |
| বজিনুষাম গমন - ক | | | - | • | ₩ |
| छ। उठवर्ष क्रय | | - | • | - | 4 |
| মিবারে সঙ্গারাজা | র সহিত | যুদ্ধ, ত | ात्र र भूक | 10, | P158 |
| नां जिस्साम महन | | - | • | • | ٧ ٧ |
| ठासही धर्षकार, | পাঠানবি | रभन | निताम है। | (बभान क | 7 1, |
| ष्याया भूनव्धकाव | - | - | • | - | 28129 |
| বাবরের পীড়া, মৃতু | ্য, ও চরি | ত্ৰ, বাহ | भागम | • | 39120 |
| | ৰোডশ | অধ্যা | g 1 | | • |
| হোমান্দের রাজ্য | आखि | - | | - | * 2.5 |
| ভাঁহার স্ব্যোডিঃশ | | ata | • | - | २ २ |
| विद्धां इ निवांत्र | - | - | - | | |
| संस्त्रों क्य | - , | | • | • | 24/24 |
| के बाका भूनकीव | হভাভরি | ভ | - | - | , २ 4 |
| म्ब था-डाबाद | भू संविवन | 4-51 | शंब गरम | হোমায়্ | ,सङ्ग |
| যুদ্ধ ডিনি চণ্ডালগং | क प्रस्त व | वस् दर्भ | ोटक यांखा न | गरत्रन, प | 34 |
| हरेंदि विश्व हरेगा जा | हरमम, १ | र्मकार | ং দেৱ খাঁৰ | সহিত | 3.8 |
| करतम, अरे बुट्ड भंती | किए हरे | ग्रा शन | प्रम करवम | ** | 10108 |
| ७९ भद्र चे टनक (| क्रम शां | रेप्री र | नित्र क्रि | H & W | |
| witer to reper with a | E723 | - | - | - | 96 36 |

मल्डमम् अधारा ।

| (হামায়নের পল,মনের পর | শেষ আঁচ | 3 57, 5 T | 'থা |
|---------------------------------------|-----------|------------------|-------|
| वांक क नाइने, दें इ त वांक नामन सू | | | F#16A |
| স্ণীম সাজের বংক্ছ | - | ~ | · *> |
| क-न्यम कारहज़ की । व ल रमटल वि | できする | • | ? • |
| ্চামায়ন পুনর্কার ভারতবর্ষ জ | १ कटब्र न | - | đì |
| ट्रि कार सम्बद्धाः ५ छः हरन | - | • | 4.4 |
| मिल्ली बारजात अवस | | - | 47 |
| किन्तु क धीन द्राटकात विवदा | - | - | ## E |

व्यक्तिभ्यं व्यक्षांगः।

| भागवास्य वाक्षांद्रक् | | | |
|--|-------------|--------|---------|
| ' বঙ্গাম মখা ইইয়া একাধিপত্য কা | बून, कार | 84 3'A | 174 |
| कर्मा हुए के विष जालिन वां क्य धहन क | दर म | • | |
| अ नमाय बांद्या वड शांतरग | | व. निर | Je i 4 |
| करेंट अर्थिक का करव जाइ जिस्म निव | तिर करिए | ল্ ন | 45 0 |
| ত-পার বাদ্য বৃদ্ধি কবিজে লা | शिरसन, ब | वर मि | त' र. |
| চিতোর, "রস্তাত্তর, কালিঞ্জারের দুর্গা | | | |
| কৰিলেন | | | 49,52 |
| হিন্দ রাজাদিপের সভিত কুটু | বিভাকবি | 1.1 80 | |
| বাজাকে বর্গাড়ুড বরিলেন | - | - | |
| शक्य है छत्र, भौदेखि अधिकांद | ** | • | ر ه |
| अझदार्ड दाझविटलांड निवादन, अ | कियरत्व म | 155 | 9 |
| वसरमन अय, वक्तपंटन भागी | | | য% |
| লাঠানদি ডগর রাজ্যালা, ইনরাশ্ব- * | • | | ै १३ ९७ |
| कांदुल कग, कांच्यीत कय, कांचीएक | ह विवस्त | | 42150 |
| त्रम अप्रोटन युक्त—इत्रोमनिया, क्रांगि | | - | 65 |
| के प्राप्त चाक्रवरत्न दाक्रश्रपुष, | | ₹ | ५७,७स |
| সিকু জয়, ৰাকার রাজ্য উচ্চার, ম | | | weib* |
| রাজপুত্র সলীবের রাজবিলোক্ডি | | , ,, | * |
| ভারার ভূজীয় পুত্র লানিয়ালের স্থ | | | 28 |
| atter halv Anthus icati ali | K, | - | *** |
| | | | |

े छेनविश्म वधात्र।

| आंकरदब्र हिन्न | - | ate | • | 24 |
|----------------------------------|------|-------------|---------------|-------------|
| রাজ্য কৃষ্টি ধর্ম | * | ** | ** | 34 |
| रेककी ७ बारतककत. वि | 2013 | ो भक ब्रहिए | - | de la |
| রাজক সংগ্রহের নিযম, | | | - | 3.8 |
| (डाइडमल, सुरा | * | | • | * >** |
| विष्ठात्र, - | • | - | • | 35. |
| टेमनर् - | * | ••• | ₩- | 222 |
| অট্টালিক'নি | - | - | Self. | 534 |
| নিকার সক্ষা | ٠ | - | - 4 | 150 |
| कना डिचित घष्ठे - | • | - | • | à |
| | | | | |
| | | | | |
| वि १ व | প্ৰ | धारा । | | |
| आशंत्रीरवद शकाविक | | • | - | S y lar |
| রাজপুত্র খদকর প্রতি নি | গ্ৰহ | • | • | 4 7 3 |
| মুর্জাফানের সহিত রাজ | | विशाक | - | 32.3 |
| छाहां विवद्ग ५ धकाविः | | ** | • | 512 |
| मिकिन इंटिका भावस्योक | | • | - | ク そ |
| केनग्र भूटकत भूटक तांका | भूज | क्त्रामर क | रिके । के कार | हा न |
| সাহজাতাৰ খ্যাডি প্লাব্যি | - | • | • | 3'08 |
| ঝন কর মৃত্যু | - | * - | - | 3 98 |
| দাহজাহান পিতৃম্নেত্ ব | 4 | 3 - | • | 2 2 7 |
| ভাঁহার সহিও যুক | • | * | • | 248 |
| कांडाकीत महस्तउ थें क | | | | 745 |
| नुरक्षांशम डीशांक 🕏 | ক ব | ক্রিবার | (क्यी) करत | ।म े |
| किस शादान गाँ - 🔏 | - | • | *** | 187 |
| कार्गमीत्त्र मूकि अ मृष् | i. | ** | * | 124 |
| | | | | |
| | | | | |
| এক্রি | र ज | व्यथाप्र। | , | |
| माहकाशास्त्र हाकाध्या | | ** | • | 182 |
| बूबं बाहारनव जाधिशजा | | | ** | *** |
| मोइक्षांश्रास्त्र वेश्वभर्दर | STR. | इंचि | | 344 |

| वाक्यांकित्यक के बूकन वश्यत के समयक धूमधान - | 340 |
|--|---------------|
| मिक्टिनेत्र सुक्षः आत्र र स्रोता | esises |
| क्षाकात्र श्रीतः शासि-आसीमक्षेत्र बीत रिक्रिया क | 8 - |
| काद्रब द्रश्यों - | . 544 |
| चित्रा द्राटकात करील | 244, |
| ्रदर्श संस्था अधि | s :64 |
| क्रांक्रांक्रांक्रांक्रात शहरणत हिता, जाशीमिरशत शहरणीत मु | £ 2.6≥ |
| with कर कारण विकास करते हैं। किया के किया कर | 294 |
| সাছজাহানের মৃত্যু তাঁহার চরিত্র,রাজ্যের অবস্থা | ST. |
| | |
| Company of the Compan | |
| चाविरमं अधाप्र। | * |
| आं अत्रराक्षरवत्र कालमशीद नाम धादन, मिली करें | १ ड |
| দারার পলায়ন, দিলীরাজ্য অবিকার নিমিত্ত স্কুজার স্কাগন | क्रा ३१२ |
| ज्यात्राच अवराज्य ५ श्लाधन | . 7 .7 |
| प्रायुक्ति काङ्ग्रिकारणे आङ्ग्रामावादन केश क्छि. उद्भारत व | 175 |
| नां को १० एका उठाए का कार्य भान | , - 6 |
| अत्वदर्दकदवर इत्य माहाद शडन उ मुख्यम वसन, | . % |
| বিমান স্কুট্যা ক্রান্তার প্রোণ্ডাগ্র আছি | 2 16 |
| कार्यात (श्राह्मां भे अंशित श्रीतिक वेष्मा केंद्री), वे श्री | পু.ত্র |
| क्लाक्रमाना के कार्य क्रमाना में — डॉड़ा खोनेशे व्याउने कि | न व |
| विदक्षि-मित्रकूमला ताक्षश्रद्धक वन्नी करत्रम, ७५शरत स्व | 育え |
| স্তিভ ভাঁহার মৃক্ | 1 4 7 |
| मनाम मारका जाजांव मुखा बुद्धारमंत्र ज्योगम ७ " - |) A * |
| अ मगाद्वत ब्राकाकर्क्क माताब श्रेष मलीमानाक का अ | 4 ?- |
| ्रकातत हारब ममर्थन, महीबानएक हिन्द्रको दर्ग - | 217 |
| विरक्षाता कर्तक खामाम सम् ७ हानरमन याजः | mta |
| मार्का क्षेत्रांशमन ७ (ब्रांट्श मृद्युः, ७ का उत्राक्तित शाका | . 43 |
| का अत र अटवर का भीरत गमन-मश्ता की प्रनिरंभत | পূৰ্বৰ |
| বিৰব্ৰ | 38.4 |
| यामुद्रा ७ त्यद्र निवद्र १ – डाँशेद स्ना क्रिकित विवास | 3 4 2. |
| किकित मुस्ति निवकीत अवादबाद्द कमन अ सन्हार् | 2 2A. |
| বিজয় পুরের রাজাকর্ত্ক শিবজীর পিতাকে রোধ, দা | 到1- |
| ক্লানের আনেশে ভাঁহার মুক্তি | 26.8 |
| का करारकर करूक पाक्रम शास्त्रा सक | ii . 🤌 |

| লিবজীয় বংখত লাজ, লিবজী কর্ম্ব নোগ | ne metricke | , |
|--|-----------------------|------------|
| जूर्र नाट्यका या कर्कुक निरकीर श्रेतका अ श्रेमा प | প কাওকা) লভিকাত | is Same |
| निवकी वर्षक गोरबचा बाँब प्रकृति छत्त्वा भ- | म स्टब्स् र ाठ | 777 |
| भनागम, निवकी कर्कृक स्तीतां है नगद आक्रमन | # 15 · · · |) b * |
| भिवली कर्कुक नामा (मण मुकेन-डाइाइ सममा | ৰ্ব আওৰণ- | e e se |
| क्षारवत टेमना (क्षेत्रन, भिवकीत महिछ मिनाशिक म | Ter e | 35/1 |
| আওরংজেবের নিকট শিবজীর অপমান ও মুদ | £1 | 7 P.A |
| मिली इंडेटण निवकीत शलायन | _ ` | 16.9 |
| বিজয় পুনের রাজার সহিত শিবজীর যুক্ত | - | >>= |
| শিবজীর নিজ রাজ্যে যুক্ষ, ও রাজশাসন সম্প | किंग निग्रम | į |
| আওরংজেবের সহিত শিবজীর যুক্ষ, ও চৌধ ও | াত্ৰ | Sas |
| পাঠানদের সহিত ও সাধু সভ্রেদীদের সহিত | अपा अज़र- | |
| ्रकरवत् युक्तः माध्रकिटभन्न विवतन | - | ः |
| Special residence of the special speci | | |
| बरम्बरमं अधाराः। | | |
| আ ওরংডেলবের চরিত্র, তাঁহার হিন্দুধর্মে দেখ | - জ্ঞাজিয়া | |
| कर भूम: बालम, तक: भुजिल्लात मधी जिक. बांड | | |
| मञ्जि जार्शातम् सुक्ष, मिक | - | >># |
| শिवसीत द्वीर में नृष्ठित काइन, उपकर्त्क मा | গল রাজ্য | • ' |
| আজ্ঞান, শিবজীর মৃত্যু, তাহার চরিত্র- | - | 122 |
| শক্ষীর রাজ্যঞাপ্তি, তাঁহার আচরণ | - n | २७३ |
| कां अतः रक्ष रवत भून स्वांत्र प्रक्रिया ग्रमन कनकां में | पूर्व, विकास- | , _ |

गुत्र केश्टमत ८० में।, ८गांनकमा १वश्म, विकासभूत विनाम मक्की मिलीदक्क कानीज इन, जीकांत्र क्यांनमक, उर्श्यक अवात भूत गोद्य तीका इन, वोकांत्राम क्रिक्कि मूटर्स ताक्रथानी कातन, क्यां अत्राटक्य उदिलाक देमना ८४वत क्रांतम, अस्यवि मक्ति।क्योग्रामिदशत महिष्ठ युक्षात्रक्ष इय

महाताक प्रेमित के केने ज्या मानामित के कुछ श्रम हमें व्र शाहा, महाताक प्रिमित के के, कार्यामित के कि यू के, का इत्र-कारत प्रकार के कि का हत्

हर्जुर्सिश्म व्यथात्र ।

বাহাদুর সাহ, জাহার আতানিধের সহিত মুক্ত, মহারা-ইট্রাছনিধের আবা বিদেশ্য। রক্তঃপুক্ত দিধের সহিত সক্ষি । ২১

| | ने अमिट शब्द छै। | | टक्ब्र मुख | 11 1 1 | - 100 · ** | ₹3 |
|------------------------|---|------------------------------|----------------|---------------------------|-----------------|--------------|
| | रशिष्य गार | | | 5, | • | \$ 3. |
| | য়োধ সাহ, ট | | | | • | 551 |
| | इसामगाङ, टे | | | | | रश |
| - 1 | ामकङ्गा मचि | ৰ কাৰ | इस, शदद | তিনি 🗳 | কর্ম পরি | ٠. * |
| ভ্যা গ | सदिया इपिका | राटम ब्राक्त | धानी करत | म | • | ₹ & |
| ं द | नाकी विश्वन | व. वाजीता | is, cater | न त्रोका क | जिम्म ग | ₹. |
| | निक्कांत ना | হত যুদ্ধ | ** | . , | + | 3,49 |
| 400 | निकद्वाद कर | ीनजी श्रीक | 13 | | - | ર •ા |
| | | | | | | |
| | | शका वर | म अधाः | य । | | |
| 4 | রুসভাচনর বি | रे दड़ ग | | | • | 2,59 |
| | रमञ्जारहरू | | ६ सन्दर्भ क | ারতবর্ষ ভ | 113FA4 | 2 62 |
| | াক ও রাজ্যে | | ٠. | | • | 781 |
| | शक्षां की हिल्ल | | ार, वाकि | का अरमङ प् | 13 1 | 285 |
| . 40 | शहां खें विश्व निष् | भव मस्या | निर म्हल, | बन्द लम | witan, | |
| | দার মৃত্যু, উ | | | | - | 384 |
| | क्ति। निरश्त | | | দ, ভাকার | <u> হৈছি</u> | হ ধ ৠ |
| | क्कान थें। हुन | | | | | 1.美女 |
| | न्यस्य गाउँ द्वार | | | | | \$ 1 m |
| | किला मिरशब | | | | | |
| | হতমান ও চ | | | | •, | 4 6 % |
| | नवशीत हिंडी | | · . | • | * | 310 |
| | ার আচরণ | | • | <i>y</i> ' | (/a | · de |
| | হ্মান সাহ ক | र्कस विश्वी अके | আ কৈন্য ল | | | 3 5.4 |
| | | ছুকানজনা র পর মং | | เข้าเริ่น | - टक वीम | • |
| | জোহ্বান কা | | | । द् _{रम} ाराज्य | от т. м | 7 4 5 |
| artis tran | | | ran espitement | e (Keelm | e elector | * = 3 |
| | star outfairi | | A 44 (8) 4 | A 4 4 16 | क राज्यान्त | |
| . তা | হারা আদিয়া কেবে মচারা | जी विकास | a wair are | mine! | | |
| ভা অধিকার | क्ट्र महाद्रो | क्रीप्रसिट्ग | द प्रमादन द | পাস্থা আক্রমণ ক | e To Yest." | d |
| জাৰিকার অধিকার আ | शंहा आंगिया इं क्टूड़ महोड़ो इन्सन चूड़ोंगी दमना संखंख | च्छीप्रविद्या ङ्डीप्र बार | द प्रमादन द | পত্। যাক্রমণ এ | - | e e |

ভারতবর্ষের ইতিহাস।

তৃতীয় ভাগ।

शक्षमं अधाय।

মোগল রাজাদিগের রাজাারম্ভ।

वावत्।

যে মোগল দিগের রাজত্ব কালে ভারতবর্ব অতি উয়ত
দশা প্রাপ্ত হইয়াছিল, বাবর তাঁহাদিগের আদি সুক্রম।
বাবর বাল্য কালাবিধি কেবল মুদ্ধবিগ্রহেই কাল বাশন করিযাছিলেন, এক দিনের নিমিত্তেও সুস্থির থাকিতে পারেন
নাই। পরস্থ, তাঁহার সকল সময় একপ্রকার বায় নাই।
তিনি কথন রাজসিংহাসনে বিরাজ করিয়াছিলেন, কথন
বা অতি দীনের ন্যায় পর্যত ও কান্তের কাল বাপন করিযাছিলেন। ভাছার বিষয়ন পদ্দাৎ লেখা বাইতেছে।
পাঠকেরা পুর্বে অবগত হইয়াছেন বাবর বিখ্যাত
তৈমুরলজের বংশোদ্ভব। তৈমুরলজের মৃত্যুর পর
ভাছার পুরু সাহরোধ ভত্পান্তিত রুহৎ রাজ্যের অধিপাতি হইয়াছিলেন। কিন্তু তিনি ও ভাছার উত্রাধি-

ভারতবর্ধের ইতিহাস।

কারিগণ তাতুক্ বীর্যাবাদ্ ছিলেন না, ইহাতে ঐ রাজ্য জানে ক্রমে হ্রাস দশা প্রাপ্ত হইয়া আসিতেছিল। পরে ঐ তৈয়র লঙ্গের বংশোদ্তর আরু সৈয়দ রাজ্য হইয়া ঐ রাজ্য আগেন পুত্রনিগকে বিভাগ করিয়া দেন, বিভাগালুসারে তাঁহার জ্যেন্ঠ পুত্র আহম্মদ মিজা সমরকদ ও বোখারা রাজ্য, ছিতীয় পুত্র মহম্মদ নিজ্যা নাথ রাজ্য, তৃতীয় পুত্র জলকবেগ কাবুল রাজ্য, এবং তৃত্র্থ পুত্র প্রমার সেখা নিজ্য ফরগণা রাজ্য প্রাপ্তর কার জোঠ হালে বিজ্ঞা, বাবরের লিকো। রাজ্য প্রাপ্তির পর জোঠ ক্রাভার সহিত্র প্রমার সেখের ভাবান্তর হার্যার হার মুদ্ধারম্ভ হালে। এই সুদ্ধা শেব না হালে ক্রাভারে মুদ্ধারম্ভ হালা। এই সুদ্ধা শেব না হালে ক্রাভারের মুদ্ধারম্ভ হালা। এই সুদ্ধা শেব না হালে ক্রাভারের মুদ্ধারম্ভ হালা। ক্রাভারের ব্যাহ্রম ক্রাভার বিশ্ব ক্রাভারম ক্রাভার ব্যাহ্রম ক্রাভার

বাবর এই নতীন বয়নে পিজুরাজা প্রাপ্ত হইয়।
ক্যোষ্ঠতাতের সহিত যুক্তে প্রবৃত্ত হইলেন। কিছু দিন
পরে ভাঁহার জ্যেষ্ঠতাতের মৃত্যু হইল, ভাগতে ওাঁহার
ক্বিটায় ক্ষোষ্ঠতাত মহম্মদ মিজা, সমরকদ্দ অধিকার করিয়া
সেই মৃদ্ধ চালাইতে লাগিলেন। কিন্তু তিনিও কিছু দিন
পরে কলিপ্রানে পভিত হইলেন, ভাহাতে সমরকদ্দ
রাজ্য প্রকারে প্রস্থান ও বিশৃত্বল হইল। বাবর তাহা
দেশিয়া এ রাজ্য অধিকারের বাসনা করিলেন, এবং যদিও
ভিনি শ্বই ভিন্নার যুদ্ধে প্রাপ্ত হইলেন, কিন্তু অবশেষে

ভি ২০০ বিশ্বাহন তয় লাভ করিয়া শ্যরকলের

য়াঞ্চা ইইলেন। তৎকালে উহার ব্যরজেন
পঞ্চান বংসর মাত্র। ইহাতেই উহার বীরত্ত্র প্রিচল
প্রেদান করিতেতে, কিন্তু ভাঁহার মাতৃশ সাহস্ ও আকালেক।
ভাতৃশ বল ও উপাম ছিলনা। এফ দিক রক্ষা করিতে
আনা দিক হস্তান্তরিত হইত। সুস্রাহ সমরকাণ ধার
ক্রিয়া এক শতে দিবস তাম্ম্ ক্রিয়াজেন কিনা, এমন
সময়ে ভঙ্গল নামে ভাঁহার এক সেনাপতি ভাঁহার নিজ
রাজ্যা করপণা অধিকার ক্রিলেন।

এই সংবাদে তিনি সমস্কলে কাল বিলয় না করিয়া ফরগণাতে যাতা করিলেন। পাথিমাথা উথার এমন উৎকট পীড়া হইল যে, ভাহা হইতে রফা পাইবার সন্তান দিল না। যদিও এই পীড়া হইতে রফা পাইবার সন্তান উণ্ডীর্ণ হইলেন, কিন্তু ভাহার পরেই উাহার মর্ম্মনাশ উপভিত। তিনি শুনিলেন সমরকল-বাদীরা তাঁহার আগমনের পর এ রাজা শক্রহস্তে অর্পণ করিয়াছে। একপুকারে বাবর, করগণা ও সমরকল উভয় রাজ্য হারাইয়া মহা বিপদগ্রস্ত হইলেন, কিন্তু ইহাতেও একেবারে ভয়োদাম না হইয়া হিছুকাল মাতুলাল্যে থাকিলেন। হিং ১০৫ পরে এ মাতুলের সাহাযো করগণা রাজ্য পুনর্ধিকার করিলেন।

তদনস্তর সমরকাদ বাসীরা বাবরকে এই বলিয়া এক প্র

 লিখিল আপনি এইখানে আসিবেন, আমরা আপনাকে

এই রাজ্য দেওয়াইব। বাবর এই পতি পাইয়া সমরকল

যাত্রা করিলেন, কিন্তু তথায় উপস্থিত না হইতে হইতে
শুনিলেন যে উল্লবক জাতীয়েরা সমরকল ও বে,খারা
উভয় রাজ্য হরণ করিয়াছে। ইতিমধ্যে ভাঁহরে পূর্ব দেনপিতি ভয়ল পুনুষ্ঠার ফরগণা অপিকার করিলেন।
বাবর কি করেন, ছুই কুল হারাইয়া স্বীয় রাজ্যের দক্ষিগাংকো শৈলনিখনের প্রজ্বভাবে সিতি করিতে লাগিলোন।

কিছদিন পরে উজ্বক্দিগের সেনাগতি দিবানী খা যুদ্ধার্থ স্থানান্তর গমন করিল। এই সংবাদে বাবর ২৪০ জন লোক সমভিব্যাহারে সমবক্ষ যাত। করিলেন। ঐ স্থানে উপত্তিত হইমা বজনীযোগে আচীর উল্লেখন পুশাক নগর প্রনেশ করিব। প্রহারীদিগকে অবিশ্রান্ত সংহার कतिएक नाणिएलन । अने कांच मिथिया नगत्त्रक्षक छ ন্পার্ভ প্রজাগণের বোপ হইল ভাঁহার সভা অনেক লোক থাসিয়তে, অভএৰ ভাহায়া মুজাদিনা করিয়া ভাঁহারই পক্ষ হইল। বাবর ভাহতে অন্যামে এ নগর অধিকার করিলেন। মৃতরাৎ উজ্জবকেরা নগর ভাগি করিয়। স্থানান্তরে থাকিল। বাবর ঐ স্থান হইতেও ভাছাদিগকে पृत कतिरदन এই मानरम युष्क मक्का कतिया याजा कति-লেন। কিন্তু সংগ্রাম সময়ে উহিরে সেনাগণ রণকেত ত্যাগ করিয়া প্রতিপক্ষ্দিগের রণ-ভাণ্ডার লুঠনে প্রাক্তন হইল। ভাহাতে সমরে অসমর্থ হইয়া তিনি প্রাণ রক্ষার্থ সমরকদে আসিলেন। বিপক্ষেরা ভাঁছার পশ্চাৎ হ

ভারতবর্ষের ইতিহাস !

আসিয়া ঐ স্থান বেইন করিয়া থাকিল। বাবর শজ-জালে বেটিত হইয়াও চারি মাস পর্যান্ত সুর্থমখ্যে থাকি-লেন। তাহার পর আহারাভাবে তথা হইতে স্থানান্তরে প্রস্তান করিবেন।

ভদবনি তিনি ছই বংশর পর্যন্ত অভি ক্লেন্স কাল যাপন করিলেন। এই ক্লেশ জনশং অসম্ চইল, কাল্ডান তিনি গনে মনে দির কাইলেন চীন রাজ্যে যাইলা কোন প্রকালে দীনবেশে জীয়ন যায় নির্পাস্করিব। কিছু হঠাৎ তাহা না চরিলা আশার দান স্ট্যা আর কিছু কাল প্রজ্য কানে প্রিলেন। ইভিনধ্যে কর্গনা লাজ্যে মহা বিরোধ উপত্তি হাইল, ত্যান তিনি মাতুলের সংলয়ভার শীরাজা প্রস্থার অগিকার করিলেন।

কিছে কাল পারে উইয়ে প্রাচীন সজা তথল উল্লেখননিগের সহিত যোগ করিয়া করমণা রাজ্য রেইন করিলেন। বারের রাজধানীতে একিয়া প্রথমন্ত অতি সাহতে
মুদ্ধ করিলেন, অবশেষে পরা ভূত হইয়া প্রণে রক্ষার করা
তথা স্টতে প্রায়ন করিলেন। হুরভৃষ্টপ্রয়াজ ভীহার
অধ লাভ ইইয়া চলিতে পারিল না, মুত্রাং ভিনি প্রণ
যানে অসমর্থ চ্ট্রা শক্তহতে পতিত ইইলেন।

কিছু কাল পরে তিনি কোশলক্রমে শক্রহস্ত হউতে মুক্ত হইলেন, কিন্ত তৎকালে উজ্ঞবরুদ্বিগের গ্রহণ্ড লোজিও প্রভাপা, এবং ভাহারা অলক্যকার ভীরন্থ ভাষদ্দেশ অধিকার করিয়াছিল। বাবর ভাহাদের হস্ত হইতে ঐ দেশ উদ্ধার করিবেন এমন কোন উপায় দেখিলেন না, অতএব ফরগণা রাজ্যের মায়া অগত্যা পরিত্যাগ করিয়া বজুিয়াতে যাত্রা করিলেন। এ সময় তাঁহার সমভিবাা-হারে কেবল তিন শত লোক ছিল, এবং দুইটী মাত্র বজ্রাবাস ছিল, তাহার একটাতে আপনি আর কটাতে ভাঁহার গর্ম্বারিণী থাকিতেন।

বাবর এই ভাবে বজিয়া দেশে উপস্থিত হইলে তদ্দে-শস্ক্ লোকেরা টাহার মৌজনো বদীভূত হইল, এবং অনেকে ভাঁছার সহিত যুদ্ধগমনে প্রস্তুত হইল। বাবর **এই मकल (जाक मधानिया) शैं**द्ध कोतूरल घोला कविरणन । ঐ সময়ে কারুলে মহা উপদ্রব উপস্থিত হইয়াছিল। তাঁহার জ্যেষ্ঠভাত ইভিপুর্কে তথাকার রাজা ছিলেন। জীহার মৃত্যুর পর তৎসভাসদগণ ভাঁহার প্রকে 🖛ংহা-ক্রচ্যুক্ত করিয়া আপনার। রাজ্যাশায় নানা প্রকার বিরে৮ ধারস্করিয়াছিলেন। এই বিধেরাধ বাব্যার পক্ষে অতি একলকর হইল। তিনি বিজোহী সভাসন্গণকে অনা-_{ডিং ৯১০} । য়ামে পরাভূত করিয়া আপনি তথাকার 🤏 २००४ **ब्रांका हर्डे जन।** अहे नग्**र**श्च वान्दहत् वसः--ক্রম ২৩ বৎসরের অধিক নহে। তদবধি তিনি ক্রমাগত ছানিংশ বংসর, এবং তাঁহার বংশীয়েরা ছই শত বংসর পর্যান্ত, তথায় রাজত্ব করিয়াছিলেন।

কারুল অধিকারের পর বাবর, ভাঁছার প্রাচীন শক্ত উলবক কাতি ও আফগানস্থানের পর্বাতবাদী, এবং তৈমুর বংশীঘ শীয় কুটুর গণের সহিত অনেক দিন
বুদ্ধ করিলেন। মধ্যে তিনি বোধারা ও সমরকন্দ রাজ্য
প্রার্থিকার করিয়া, পারসন্থানের রাজার সহায়তায়,
ছই বংমর পর্যন্ত, ঐ ছই রাজ্য আপান অপিকারে রাথিলোন, কিন্তু পরে উজ্লবক্রেরা তাঁহাকে তথা হইতে
দুরীকৃত করিল। তদবধি তিনি পশ্চিম রাজ্যের আশা
একেবারে পরিত্যাগ করিয়া তারতবর্ষ প্রের অভিলাম
করিতে লাগিলেন। ঐ অতিলাম যে প্রকারে সিদ্ধা হইল
তাহা পুর্বের লেখা গিয়াছে। তিনি হিজ্বী ১০২ অকে,
গু ১০২৬, এরপ্রেল
করিয়া দিল্লীর স্মাট হইলেন।

বাবর দিলীর সিংহাসন আবোহণ করিয়াই যে সমস্ত ক্লিরী রাজ্যের অধীহর হইলেন এমন বলা যায় না, তিনি কেবল দিলীর পশ্চিম উত্তর আগ্রা পর্যন্ত যুদ্দার তীরস্থ বে ভূথও দিলীর অধীন ছিল তাহাই পাইলেন। গলার পূর্বপারস্থ যে সকল দেশ দিলীরা লাভুক্ত ছিল, তাহা পাইলেন না। এরাহেম সাহের রাজত্ব-কালে দরিয়া থাঁ লোহাই নামে এক বাজি ঐ সকল দেশ অধিকার করিয়াছিলেন। পরে তাঁহার পুল, মহম্মদ সাহ লোহানী উপাধি গ্রহণ পূর্বক, ঐ প্রদেশের রাজা হ্যেন। তিনি বেহার রাজ্যও অধিকার করিয়াছিলেন। তিদির মুনার পশ্চিমে অনেক প্রদেশ হস্তান্তরিত, হইয়াছিল, পাঠানেরা এই সকল দেশ অধিকার করিয়াছিল।

ভারতবর্ষের ইডিয়ার

धरें मकन दान अशरहत रस्य शोकित्न हारकात यक्क হয় সা ইহা বিবেচনা করিয়া বাবর প্রতিজ্ঞা করিলেন ভাহাও অধিকার করিবেন। কিন্তু ভাঁহার সেনাগণ শীতপ্রধান দেশে বাস করিত, ভারতবর্ষের প্রশ্নর রৌদ্র তাহাদিগের অসহা হইল। অতএব গ্রীষ্যাক্ষর আগদনে ভাছারা সকলে স্বদেশে যাইবার বাঞ্ছ। করিল, কোনরূপে এ দেশে থাকিতে চাহিল না। সৈন্যগণ প্রতিগমন করিলে বাব্যের সকল আশা বার্থ হয়, যেতেক্ত এতদেশীয় হিন্দু ও মুসলমান দেনাগণ তথন পর্যান্ত জীহার বাগ্য হয় নাই। "অতএৰ সকল সেনাগাক্ষকে আহ্বান ক্রিয়া তিনি বলিলেন, দেখ ভারতবর্ষ জয় করিবার জন্য আমরা কত দুর হইতে আসিয়াছি, এখন পর্যান্ত ভাষার কিছুই হয় নাই, কেবল স্ত্রপাত মাত্র হুইয়াছে, যদি এখা আদ্বা এখান হইতে প্রস্থান করি তাহা হইলে আমাদের সকল পরিশ্রম রুখা হয়, এবং লক্ষা রাখিতে স্থান পাইব না। অতএর এক্ষণে এখান হইতে গ্রন্থান করা কোন প্রকারে যুক্তিসিদ্ধ নহে। যদি ভোমরা স্বদেশ গমনে নিভান্ত ব্যগ্র হইয়া থাক, যাও, আমি নিবেধ কক্লিলা। কিন্তু আমি যাইব না, আমি যে সঞ্চপ করিয়াছি ভাহার অনাধা হইবে না।

বাবরকে এই প্রকার চুচ্প্রতিজ্ঞ দেখির। ভাঁচার অণি-কাংশ সেনাগণ তাঁচার সঙ্গে রহিল, অল্পাংশ ক্রদেশ গমন করিল। বাবর এই সকল দৈনা হানে স্থানে পাঠা- ইলেন, এবং ভাহার জ্যেষ্ঠপুত্র হোমাযুন ভাহাদিশের অধ্যক্ষ হইকেন। এবস্পুক্তের বাবর চারি মাসের মুধ্যে, এব্রাহেম রাজার রাজত্বতালে যে সকল স্থান দিলীর অধীন ছিল ভাছা পুন,পিকার করিলেন। তারিল জয়ান-খুর প্রভৃতি লোদী গোড়ীর রাজাদিগের রাজকালে যে সকল বৈকৈ হস্তান্তরিত হইয়।ছিল তাহাও হল্তগত হইল। অবংশারে বারেনা, প্রাপুর, ও গোয়ালিয়র দেখা উহিত্ত অপিকার্ড হইল।

এই প্রকার মুসলমান রাজার! বলীভূত হইলে পর বাবর হিন্দু রাজাদিশের প্রতিকৃত্তে তান্ত্র ধারণ করিলেন।

पूर्व्स व्यथः शियाहरू थिलकी नश्मीय जालाउनीन রাজার রংশতকালে হয়িব সিংহ চিচেরে রাকা পুন্তর্গ করেন। এই রজঃপুত ভূপতি জানে সকল মিবার দৈশ আপনার অধীন করিগাছিলেন। তৎপরে ভাঁহার পুত্র আজমির প্রদেশ ন রাজাভুক্ত করেন। এই দেশে স্লুডি বিনি রাজা ছিলেন তাঁহার নাম সঙ্গা। তিনি মালব প্রদে-শের প্রকাৎশে ভিলমা ও চন্দ্ররী পর্যান্ত আপন প্রভুত্ত বিস্তার করিয়াছিলেন। এবং মারওয়ার অযপুর প্রভৃতির ভাবেৎ রজঃপুত রাজারা ভাঁহাকে আপনাদের গুধান বলিয়া মান্য করিতেন। দিল্লী রাজ্যের প্রতি সঙ্গার ভ-তাম ছেম ছিল, তিনি সর্বাদা ঐ রাজ্যের বিনাশ বাঞ্চা ●রিতেন। বাবর ঐ রাজ্য আক্রমণ করিলে তিনি ডাঁহার महिन्छ देमकाहत्र कतियाद्वितन। किन्न एथन तावत् खे রাজ্য জয় করিলেন, তথন ভাঁহার সহিত যুদ্ধ আরগ্ধ করিলেন।

এই যুক্তে অনেক হিন্দু রাজা সঞ্চার সাহায্যকারী হইলেন। এবং মহন্মদ নামে লোদী রাজবংশীয়া এক রাজপুত্র, রাজ্যবিহীন হইয়াও, রাজা উপাধি গ্রহণ পুর্বক, দশ
সহস্র দৈন্য সম্ভিব্যাহারে তাঁহার সঞ্জে গ্র্মন করিলেন।
তদ্ধির লোদী বংশীয় প্রধানেরা ও মেওয়াতের রাজা
হাসন খাঁ তাঁহার সঞ্জী হইলেন।

এই সকল দল বল লইয়া সঞ্জা মহা সমারোহ প্রশ্নক বাববের সঙ্গে যুদ্ধার্থ সিক্ত্রী পর্যন্ত গমন করিলেন। বাবর তথায় উপস্থিত হইবা মাত্র, হিন্দু দেনাগণ চাঁহার অগ্রগামী রক্ষক সেনাদিগকে কাটিয়া লগু তও করিল। বদি এ সময় তাহারা আরো কিঞ্ছিং বল প্রকাশ করিত, তাহা হইলে তথনি অনায়াসে রণজ্ঞী হউতে পারিত, কিন্তু তাহা না করিয়া তথন যুদ্ধে বিশ্রাম দিল। তাহাতে বাবর সময় পাইয়া শ্বীয় সৈন্যগণকে এক উচ্চ স্থানে রাখিলেন, এবং এ স্থানের চতুর্নিক গড়বন্দী করিলেন।

বাবরের সেনাগণ প্রথম উদ্যুদ্দে পরাঞ্জিত হইয়া এক প্রকার হতোদাম হইল। তৎপরে কাবুল হইতে এক বিখ্যাত ভবিষাদকা বাবরের সভাতে উপস্থিত হইয়া প্রকাশ করিল এ যাত্রায় তিনি কোন প্রকারে জয় লাভ করিতে পারিবেন না, নিশ্চয় হারিবেন, কেন্না তাঁহার এই কথায় সকল সেনার হৃৎকল্প হইল, সেনাগ্যক্ষণ অভিশয় ভ্রিয়নাণ হইলেন, বাবর সেনাগণকে সাহস দিয়া কোন কথা কহিবেন জমন সাগে ইছিল না, অধিকল্প জীহার সঙ্গে যে সকল হিন্দু সেনা ছিল ভাহারা অনেকে বিপক্ষদলে গিয়া মিশিল।

বাবর ভবিষ্ণভাজার বাকো দৃষ্ণতি করিলেন না, কিন্তু
সংগ্রামের বল ইসনা, যদি ভাষারাই হত্তল হইল ভবে
কাহাকে লইয়া যুদ্ধ করিবেন। অত্যুব ভাষাদের সাহস
রিদ্ধি জনা তিনি আপানি প্রায়াশ্যুভ করিয়া শক্ষ খারণ করিলেন, এবং মদা পান ভাগে পুর্ধক স্থা ও রৌপান্য
পানগাত্র সকল দীন দরিত অনাথ দিগকে দান করিলেন।
অধিকদ্ধ ভিনি অজীকার করিলেন যদি প্রমেশরের ইচ্ছাঃ
এ গাত্রা করী ইইতে পারি ভবে যুসলগান দিগের স্থানেন
আর কথন শুলক গ্রহণ করিয় না।

অনস্তর বাবর সেনাগ্যক্ষ সকলকে আজ্ঞান করিল।
বলিলেন, পৃথিবীতে মনুষোর কীর্ভিই সজীব ও অক্ষয়
পদার্থ, জীবন কিছুকালের নিমিড যাত্র। মনুষোর জীবনাম্ভ হইলে ভাহার জীবনের কোন চিক্ষ পাকে না, কিছ বীর্ডি চিরকাল জাজ্বলামান থাকে। অভএব অক্ষয় কীর্ভির জনা মৃত্যুকে ভয় করা মনুষোর উচিত নহে। ইহা বিলয়া ভিনি শাহানামার এক কবিতা পাঠ করিলেন।
ভাহা ভানিয়া সকল সেনার বল ও সাহস বুদ্ধি হইল,
ভাহাতে ভাহারা কোরাণ প্রশ্বক শপ্রধ করিয়া বলিল এ যুদ্ধে প্রাণ্ণা করিলাম হয় সংগ্রাম জয় করিব, মতুবা खान भारत कहिर ना।

হৈননাগণ এই প্রকার প্রতিজ্ঞা করিলে পার, বাবর যুক্তের আয়োজন করিতে লাগিলেন। ছিন্দু রাজাদিগের সহিত অসন্ধ্য অস্থারোহী সেনা ছিল, ইছারা যদিও উত্তম শিক্ষিত ন। হউক কিন্তু অভান্ত সাহসিক। বাৰৱের যে সকল অশ্বারোহী সেনা ছিল তাহারা লগু অন্ত্রণারী, কেবল পলায়-মান কৈন্যের পশ্চাৎ ধারমান হইবার যোগা, রণক্ষেত্রে পাকিছা উত্তম রূপ যুদ্ধ করিবার যে।গ্য নহে। কিন্দ ভাঁহার ফামান ও বন্তৃক প্রধান বল চিল। অত্ঞৰ কামান নকল পৃত্যন-মুক্ত করিয়া সম্মুখে প্রাচীরবৎ সারী দিয়া द्राधाहरलन, ভाश्य भरत अश्रास्त्राशी रेमरनाता नलरफ হইয়া এবং নৰ্কপশ্চাৎ পদাতিক সেনাগণ প্ৰেণীবদ্ধ হটয়া मश्रीयमान क्रेज।

বাবর এই প্রকার ব্যহরচনাপুর্বক রণসজ্ঞা করিলে প্র হিস্ফু সেনাগণ অবিচন্দ্রাকারে তাঁহার সৈন্যগণকে বেইটন कतिवांत छिटो कतिव। किन्ह वावदत्त रेमनाश्रग विद्वक छ কামান ছারা অবিশ্রান্ত অগ্নি বর্বণ করিতে লাগিল, তাহা-তে হিন্দু সেনাগণ একপ্দ অগ্রসর হইতে পারিল না मस्था मस्था इतिया यहिए नाजिन। এই श्रकांत चांत्र उत যুদ্ধে প্রায় অর্দ্ধেক দিবা অতীত হইল, হিন্দু সেনাগণ ক্ষমে ক্লান্ত হইয়া পড়িল। বাবর ভাষা বুঝিয়া হুই ৰূপ অশারোহী দেনা লইয়া তাহাদিগকে অকন্মাৎ আক্র- মণ করিলেন। হিচ্ছা মেনাগণ ঐ আক্রমণ নহা করিছে না পারিয়া ছিল তিল ইইয়া পলায়ন করিতে লাগিল। ভাষা-তে হাসন থা প্রকৃতি অনেকানেক প্রধান ২ সৈন্যাধ্যক সমরশ্যায় শ্যুন ক্রিলেন, সঙ্গা क्र १४२१ मा १११ वह कट्छे अन्यान क्रिस्तन।

বাবর মুদ্ধ জয় করিলে পর ভবিষাদক্তা আহিয়া ভাঁহার স্তুতিবাদ আরম্ভ কবিল। বাবর ভাষ্তেত কর্ণণাত না করিয়া ভাহাকে অনেক ভৎসিনা কৰিলেন, অৰশেষ কিছু অৰ্থ দিয়া একেবারে রাজ্য হইতে নির্বাদন ক্রিয়া দিলেন :

ত্যনন্তর বাবর মেওয়াত দেশে যাত্রা করিলেন। হা-সেন ধাঁ নামে এক পাঠান এই দেশের রাজা ছিলেন। ভিমি কোন প্রকাব উৎপাত না করেন এজন্য বাবর ভাঁহার পুত্রকে প্রতিভূ ধকণ রাখিয়াছিলেন : সঙ্গার মঙ্গে শংগ্রাম উপস্থিত হুইলে বাবর হাদেন খাঁছের পু**ত্রকে** প্রতাপণ করিখা তাঁহার সহায়তা গ্রোর্থমা করিলেন। কিন্তু श्राप्तम थै। जाहा ना कतिया मनात महल मिलिएनम । এই 'আকোশে বাবর ভাঁহার রাজ্য লইয়া আপন অধি-কার ভুক্ত করিলেন।

অনস্তর যে সকল মোগল সৈনা খদেশ গমনে অভাস্ক ৰাঞ্চিত হইয়াছিল বাবৰ ভাহাদিগকে দলবদ্ধ করিয়া <u>কারুলে পুন: প্রেরণ করিলেন, এবং ভাঁচার জ্যেন্ঠ পুত্র</u> ংশীমাধ্নকে ভাহাদের সজে দিলেন, তিনি ভাহাদের मधाक हहेश भगन कतितन।

তৎপরে বাবর দেশের শাস্তি বিষয়ে মনোযোগী হইয়া রাজা ও প্রজা পালনের সুনিয়ন করিতে লাগিলেন। এই কর্মে তিনি বিলক্ষণ ক্রতকার্যা হইলেন, এবং নকল দেশ স্থানররপ শাসিত হইল। কিন্তু অযোগ্যা রাজ্যে কতক-শুলিন পাঠান বাস করিত, তাহারা কোন প্রকারে রাজ-প্রভাৱ মানিল না। বাবর তাহাদিগের দমনার্থ এক দল ইননা পাঠাইলেন।

পর বৎসর তিনি চন্দ্রীতে যামা করি-स्मन । इन्द्रती दुक्तनथ ७ ७ मानत्। इ নিধাবন্ত্রী। মেদিনী রায় নামে এক রক্তঃপ্রস্ত এই স্থানের 🖛 🍵 ছিলেন। মালবাদিপতি দ্বিতীয় মহম্মদের রাজ হ क्षारम धरे त्मिनी दाग्न अठाख প्रकारमानी रहेगा বলপুর্যক ঘালর রাজ্য তাদিকার করিয়াভিলেন। পরে বিহুমান, গুজুরটিরাজের সহায়তায় উল্লেকে যুদ্ধে পরাস্ত अविराम जिनि नकांत्र महर्यारण उत्तरीर उन्नधानी করেন। এই মেদিনী রায় সঙ্গার সঙ্গে দিকরির যুক্তে গমন कविश्वाहित्सन, त्मरे क्लांत्य वादत छाँदात तांत्या मरेमत्ना উপস্থিত হইলে, তিনি প্রাণপণে যুদ্ধের আয়োজন করি-লোন। কিন্তু রক্তপুত্রদিগের যেখন সাহস ভাদুক শিকা ৰা ধৈৰ্যাবলয়ন নাই। অতএৰ মোগল সৈনোৱা যে भिवम नंशद विकेन कहिन छोटांत शद मिवमरे त्रकः शुरु जा बरेपर्या छाटत, जालन २ की शुक्रियरक मरहात कतियी, উন্নত বেশে বাহির হইয়া পক্রহন্তে একে একে তাবতে

নিধন প্রাপ্ত হইল। মেদিনী রায়ের গৃহ রক্ষার্থ যে হাই তিন শত সৈন্য ছিল ভাহারাও আপনা আপনি কাটা-কাটি করিয়া মরিল। ভাহাতে বাবর ঐ রাজা অনায়াসে প্রাপ্ত ইইলেন।

চন্দ্ররী আক্রমণ কালে বাবর সংবাদ পাইলেন অযোগ্যা রাজ্য শাসন জনা তিনি বে সৈন্য প্রেরণ করিয়াছিলেন বাবন নামে এক পাঠান ভাহাদিগতে পরাভূত করিয়াছে। এই সংবাদ পাইছা তিনি স্বাং ঐ ভানে বাতা করিলেন। উাহার আগ্রমনে পাঠানের। তথা হইতে বন্ধ দেশে প্রাদ্ধান বন করিল। বাবর আ্যোগ্যা রাজ্য জিপিকার করিছা বিজ্ঞোহীদিগের পশ্চাদ্ধাবমান হইলেন, এবং কোও হয় ঐ সময়ে তিনি হেহার প্রদেশ জয় করিয়া থাকিবেন।

সন্ধা রাজার বিয়েখিতেও তাঁহার ভ্যেষ্ঠ গুক রাজা ইইলেন। বাবর ডাঁহার হিতীয় পুতের নিকট ইইটেড রিস্তায়বের মুর্গ লইলেন। ঐ মুর্গ অভি প্রধান।

এই সময়ে বেহার প্রদেশে পুনর্বার মহা গোলঘোগ উপস্থিত হইল, ভাহার কারণ লোদী বংশীয় যে মহন্দদ-শাহ সঙ্গা রাজার সজে যুদ্ধার্থ গ্রমন করিয়াছিলেন তিনি এ রাজ্য বলপুর্বক অধিকার করিলেন। যোগ হয় বল-দেশের রাজাও ভাঁহার পুঠপুরক ছিলেন।

যাহা হউক নহম্মদ লোদী বেহার অধিকার করিলে পর ঐ প্রদেশীয় ভাবৎ পাঠানেরা ভাঁহার দলে মিলিল, ভাহাতে তিনি প্রায় লক্ষ্য দেনার অধিপতি হইয়। বারাণস পর্যান্ত গম্স করিলেন। কিন্তু ক্রমে ভাঁহার
সেনার মধ্যে বিবান উপস্থিত হইল, সুভরাং ধর্মন
বাবর রণস্কা করিয়া গলা মনুনার সঙ্গমে ল্লবাং লালাফালা
বাদে উপস্থিত হইলেন, তথ্য এই সকল সৈন্য চিন্ন ভিন্ন
হইয়া পড়িল। মহম্মদের পলায়ন কিন্ন আর জান
উপায় রহিল না। মহম্মদ পলায়ন করিলে পর বাবর
গলার দক্ষিণ ভাবং বেহারের কর্তা হইলেন। উত্তর বেহার
তথ্য পর্যান্ত বঙ্গদেশাপিপতির হস্তে চিল। তিনি এ
প্রেদশ আপনি বাখিবেন, এই মনন করিয়া নাবরকে
সংগ্রাম হইতে নিরন্ত করিবার নানা প্রকার চেন্টা পাইন
কোন। ক্রিন্ত বাবর ভাঁহার কথায় না ভুলিয়া একেবারে
উত্তর বেহারে উপস্থিত হইলেন। তথ্য বঙ্গদেশীয় রাজা
অগভ্যা ভাঁহার নিকট নম্রভা স্বীকার পূর্বক সন্ধি বন্ধন
করিলেন।

এই দল্লির পর বাবর আগ্রাতে গদন করিলেন।
প্রথিমধ্যে শুনিলেন কতকগুলা পাঠান বাবনের সহযোগে
পুনর্কার অযোগ্যা অধিকার করিয়াছে। ঐ সংবাদ পাইয়া
ভিনি অযোধ্যা যাত্রা করিলেন। পাঠানেরা ভাঁছার
আগ্রমনে তথা হইতে পলায়ন করিল। তদনন্তর বর্ষাব্য় হওয়াতে বাবর মুদ্ধে কান্ত দিয়া আগ্রাতে প্রত্যাগ্রমন করিলেন।

ভদনন্তর বাবর পোনের মাস পর্যান্ত অতি পীড়িত স্বব-স্থার ছিলেন, সুতরাৎ আর কোন যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইতে পারেন नारे। এই शीकांकात जाहाद त्कार पूर्व दर्शमात्रून বাদকস্থান হইতে আসিয়া অত্যন্ত পীড়িত হইলেন। 🗳 পীড়াতে ভাঁহরে প্রাণ দংশয় হইল, চিকিৎসকেরা অসাধ্য রোগ বলিয়া চিকিৎসাতে কান্ত দিলেন। বাহর হোমায়-নকে অত্যন্ত ভাল বাসিতেন, অত্তব্ধ, ডংকালীয় বীত্য-রুসারে, আপনার প্রাণ নিয়া তাঁহার প্রাণ রক্ষার প্রতি-জ্ঞ। করিলেন। বাবরের আগ্রীয়গ্রণ এই প্রতিজ্ঞা হইতে উঁহোকে নির্ভ কর্ণার্থে অনেক যতু পাইলেন, কিন্তু ভিনি তাঁহাদিলের বাকা অবহেলন করিয়া শাস্ত্রদিক কিয়াছি করিলেন, ভাষার পর ভিন্বার রাজপুরের শ্বা প্রদক্ষিণ করিয়া জপারম্ভ করিলেন। জপ সম্পেন হইলে তিনি अर्डि अक्त नम्दन विवासन आगात मन्द्रामना निक् হইয়াছে। বস্তুতঃ ভাঁহার মনে দৃঢ় প্রভীতি ছইল, এবং রাজপুত্রও নিশ্চিত জানিলেন তাঁহার পীড়া শেষ হইবে। মত এব সকল ইতিহাসলেখকেরা লিখিয়াছেন এই ক্রিয়ার পর অবণি হোমায় ন আরোগা প্রাপ্ত হইলেন, এবং বার-রের পীড়া রুদ্ধি হইয়া তিনি দিন ২ ক্ষীণ-কলেবর হইতে वाशिद्धान ।

অনন্তর যথন ওঁাহার অন্তিন কাল নিকটবর্তী হইল, তথন
তিনি আপন পুত্র ও মন্ত্রিগণকে নিকটে ডাকিয়া রাজকর্মাসম্বন্ধে জাপনার যে সকল অভিপ্রায় ছিল তাহা ব্যক্ত করিকেন। তৎপরে সকলকে নির্বিরোধে ও পুত্রদিগকে পরস্পর
সম্প্রীতে থাকিতে জালা করিয়া, সর্বস্তিক ৬৮ বংসর

রাজ্বাত্বর পর, ৫০ বংসর বয়ঃক্রমে, হিজারী ৯৩৭ অকে,
কু ২৫০০, দিজস্বর ২৬
কং ৪৬৬২ পৌষ
লন । তাঁহার ইচ্ছানুনারে
ভাহার মৃত দেহ কাবুলে প্রোথিত হইন।

বাব্যের চরিত্র অতি মুন্দর। ভারতকর্ষে যত মুসলমান রাজা হ্রাভিলেন, বাবর যদিও ভাঁহাদের সর্প্রাপেক্ষা উৎরেই না হউন, কিন্তু তিনি সর্প্রজণান্থিত ছিলেন তাগার কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। তাঁহার তুলা সাহস মনুদোর প্রায় হ্রা। তিনি অনেক যুদ্ধ জয় করিয়াছিলেন, এবং এক এক যুদ্ধে এমন বীরত্ব প্রকাশ করিয়াছিলেন যে তাঁহার গোড়ী-প্রতি তৈমুরলম্প্র তজ্ঞপ বীরত্ব প্রকাশ করিতে পারেন নাই। ভাঁহার শরীরে এমন বল ছিল যে তাহাকে দৈনবল কলিলেও বলা হায়। ননী পার হইতে হইলে তিনি কখন কলিলেও বলা হায়। ননী পার হইতে হইলে তিনি কখন কলিলেও বলা হায়। ননী পার হইতে হইলে তিনি কখন কলিলেও বলা হায়। ননী পার হইতে হইলে তিনি কখন কলিলেও বলা হায়। ননী পার হইতে হইলে তিনি কখন কলিলেও বলা হায়। ননী পার হইতে হইলে তিনি কখন কলিলেও বলা হায়। ননী পার হইতে হইলে তিনি কখন কলিলেও বলা হায়। লাকের বিশ্বয় বোধ হইত।

বাবর কেবল সংগ্রামে পণ্ডিত ছিলেন এমন নতে,
সংগীত শাত্রেও মুগণ্ডিত চিলেন, এবং উত্তম ২ কবিতা
বুচনা করিতে পারিতেন। পারসী ভাষাতে যে কবিতা
রচনা করিয়া গিয়াছেন তাহা অতি প্রসিদ্ধ। ইয়া ভিদ্ ভিনি কতি মুলেখক ছিলেন, তাঁহার রাজ্যকালারম্ভ অবধি
কৃত্যুর কিঞ্চিৎ পূর্ম পর্যাম্ভ যে দিবস যে ঘটনা হইয়াছিল,
বাধন যে ভাবে কাল যাপন করিয়াছিলেন, যে দেখে ষেরপ রীতি নীতি দেখিয়াছিলেন, তিনি খ্রং তাহ্।
সমস্ত বিস্তারিত রূপে লিখিয়াছিলেন, ইহাতে রাজা
বলিয়া কোন কথা গোপন রাখেন নাই, মুখ ছঃখ যখন
যাহা হইয়াছিল সকলই প্রকাশ করিয়া লিখিয়াছেন। এই
পুস্তকে অনেক ভানের বিবরণ আছে। তাঁহার রাজছসম্বন্ধে যে সকল বিবরণ লেখা গেল ভাহার অধিকাং শই
তাঁহার ঐ পুস্তক হইতে উদ্ধৃত হইয়াছে।

উহার সদ্গণেরও অনেক প্রশংসা করিতে হয়। তিনি অতি সরলস্বভাব, দানশীল এবং সদালাপী ছিলেন, এবং যদিও সুদ্ধের সময়ে কথনং জাতীয় নিষ্ঠুরতা প্রকাশ করিতেন, কিন্তু অন্য সময় নিতান্তশক্রর প্রতিও অত্যন্ত দয়া করিতেন। পুর্বাকালে এমত রীতি ছিল সংগ্রাম সময়ে পথিক বা যাত্রী দেখিলে উসন্যোধা ঘাহার যাহা পাইত ভাষা অপহরণ করিত, কিন্তু বাবর উসন্যাগণকে ভাষা করিতে দিতেননা, ইহাতে উন্থার স্করিক বিজক্ষণ প্রকাশ হইয়াছে।

কিন্তু বাবরের রাজ্যশাসনে এই এক নহৎ দোষ দৃষ্ট হইতেছে যে দেশহিতজনক বা প্রজার হিতকর কোন কার্য্যে তিনি বিশেষ মনোযোগ করেন নাই। কেবল কতকণ্ডলিন রাজপথ পাছশালা ও জলাশয় নির্দাণ করাইয়াছিলেন। বাবর জতি চঞ্চল স্বভাব ছিলেন, সর্বানা যুদ্ধ বিগ্রাহে ব্যস্ত থাকিতেন, একস্থানে কিছুকাল দ্বির থাকিতে পারিতেননাই। অনুমান হয় এই জনা তিনি দেশহিতকর কর্মে বিশেষ মনোযোগ করিতে পারেন নাই। যাহাহউক সেই একটা ভাঁহার চরিতের কলজ। আর এক দোস এই তিনি অতাস্ত মদা পান করিতেন। এই কর্মা তিনি পরে ত্যাগ করিয়াছিলেন বটে, কিন্তু অতি পানেই। ভাঁহার শরীর একপ্রকার নাই হইয়া গিয়াছিল।

[•] তিনি আগনি লিখিয়াছেন ভাষার জানোদয় চইয়, অগনি তিনি এক স্থানে কথন অনজানের বোজি পুইবার কারন নাই।
আহি বংগর নূতনং স্থানে থাকিতেন এবং শোষে যখন পাঁড়িছ
ইয়াছিলেন তথনও একং বিবদ অথাবেভিনে চলিশ প্রশান
কোশ প্র জন্প করিয়াছিলেন।

যোড়শ অপার।

হোমাযুন।

বাবরের চারি গুম ছিলেন হোগায়ুন, কামরান, হিলাল, ' ও মিজা আকরী।

হোমাবুন পিতৃসিংহাসন প্রাপ্ত হইবেন বাবর জীবিজ্ঞ পাকিতেই ইছা পার্যা হইয়াছিল। কিন্তু ভাহা হইলে মন্ত্রীর বড় অবিপত্য পাকে না. এইজন্য মন্ত্রী, মেহেদীথাজা নানে রাজ-জামাভাকে র'জা দেওঘাইবেন এবং আপনি কর্তৃত্ব করিবেন ইছার ঘড়যন্ত্র করিয়া রাখিয়াছিলেন, কেবল বাবেরের প্রাণতা। গ হইবার অপেকা ছিল। কিন্তু মন্ত্রীর প্রতি মেহেদীখাজার অত্যন্ত দেয় ছিল, কোন কথাজারা হঠাৎ তাহা প্রকাশ হওয়াতে মন্ত্রী তাঁহাকে রাজ্য দেওয়া-ইবার কম্পনা ত্যাগ করিলেন, সুতরাৎ হোমাযুন নির্কিল্পে রাজ্যিৎহাসন প্রাপ্ত হইলেন।

বাবরের আর তিন পুসকে অন্য কোন রাজত্ব দিবার প্রস্তাব হয় নাই, তাহার কারণ রাজ্যবিভাগে অনেক
উৎপাতের সম্ভাবনা। কিন্ত দিভীয় পুত্র কামরান কাবুল ও
কাকারের কর্মাধাক ছিলেন। তিনি কোনপ্রকারে জ্যেতের,
প্রভূত্ব বীকার করিলেন না, অভএব সংবভাব হোমায়ন
ভাষাক্রের বাজ্য ও পঞ্চাব প্রদেশ একেবারে সমর্পন

করিলেন। এবং হিন্দালকে সম্বল ও মির্ছা আকরীকে মেওয়াত রাজ্য প্রদান করিলেন। পিতার স্থতন স্বোপা-জ্যিত হিন্দুস্থান মাত্র ভাঁহার নিজের রহিল।

হোনাযুন সক্ষণান্তিত ছিলেন। জ্যোতিষ শাজে তাঁহার, বিশেষ অনুরাগ ছিল, এজন্য নপ্ত গ্রহের সন্মানার্থ তিনি সাতটি গুল সুসক্ষিত করিয়া প্রত্যেক গৃহে এক এক গ্রহের নাম দিয়াছিলেন, এবং যথন ফেপ্রকার লাকের সহিত সাক্ষাং করিতেন ভগন তাহার কর্ম নিবেচনা করিয়া তত্ত্ব প্যুক্ত স্থানে, স্বর্থাং যুক্ত সম্বন্ধীয় লোকদিগকে মঙ্গলের গৃহে, বিশ্বান লোকদিগকে বৃংধর গৃহে, রাজভূত, বা ক্রমণকারি দিগকে চল্লের গৃহে, এবং আর ২ লোক দিগকে ব্রপোপযুক্ত গৃহে আধ্বান করিতেল।

এই প্রকার রাজ্যারন্ত করিলা কিল্লিবস পরে হোলালুন কালিজনের দুর্গ অপিকার করণার্থ বুণলবন্ধে গালা করি-লেন। তথায় উপস্থিত হইলা দুর্গ হেন্টন করিলে পর ভানিলেন বাবন পুনর্বার জুয়ানপুরে রাজনিটোই আরম্ভ করিয়াছে। এই সংবাদ পাইয়া হোলায়ুন অনিলমে ভথায় ঘাইয়া বিজোহ নিবারণ করিলেন। তৎপরে তিনি হিং ১০০ বারাণস সামিধ্যে চঞালগড় আক্রমণ প্ ২০০ করিলেন। তাঁহুার ভবিষাৎ বৈরী সের বা ভৎকালে এই দুর্গের কর্তা ছিলেন। তিনি হোমায়ুনের নিকট নত হইলেন বটে, কিন্ত দুর্গ তাঁহার হল্তে থাকিল। ভদনন্তর হোমায়্ন জাগ্রাতে প্রত্যাগমন করিলেন।

शृद्ध लिथानियां इ स्थानाग्रत्य न्त्रीलिडिक होका मि-वात कुमजाना इरेग्नाहिल। जे कुमजाना अकाम इरेटल स्मर्ट-দীখাজা গুজরাটে পদাশন করেন। এবং তত্তা রাহ্ন। বাহাছুর থাঁ তাঁহাকে আপন আগ্রে বাখেন। হোমা-যুন এই সংবাদ পাইয়া বাহাছুর খাঁকে পত্র লিখিলেন ভিনি মেহেদীকে পাঠাইয়াদেন। কিন্তু ৰাহাত্মর খাঁ তৎ-কালে অন্তি পরাক্রমশালী হইডাছিলেন, বিশেষতঃ খন্দের বেরার ও আহম্মনগতের রাজাল তাঁহার আক্রাকারী এবং समून्य शालत बांका छाँरांत कत्रभ किल। अहे खह-স্কারে তিনি হোমাদনের কথা অবহেলন করিয়া তাঁহার ভগ্নীপতিকে পাঠাইলেন না। ভাষাতে উভয়ে পরস্পর বাদ। লুবাদ হইতে লাগিল। পরে বাহাছর থাঁ মতগর্ক হইয়া দিলীরাজা লইবার মানসে অনেক সেনা সংগ্রহ করিয়া স্বীয় পুত্র ভাতার থাঁকে জাগ্রাভে পাঠাইলেন। ভাতার খাঁ মহা সমারোহ পূর্বক আগ্রাতে গাতা করিয়া : ये ताजधानी आक्रमण कतिरामन । किन्न पूरक रूछ रहेरलम, এবং ভাঁহার সৈনাগণ চিন্ন ভিন্ন হইয়া পলায়ন করিল।

এই জয়োলানে কিয়াপুর্ঝ কপানানুসারেই হউক, হোনাগুন বাহাছর থার গর্জধর্ম জন্য গুজরাটে সংস্কর্মা থাতা
করিলেন। ঐ সময়ে বাহাছর থা দিবারের রাজার সহিত

বুদ্ধে প্রস্ত হইয়া চিতোরের হুর্গ আক্রমণ করিয়াছিলেন।

দিবারের রাজা হিচ্ছা। মুসলমানশান্তে হিচ্ছাদিগতে কাফর
অর্থাৎ নাজিক ইলিয়াথাকে। অভগ্র যদি কোন মুসল-

মান কাফরকে নির্যাতন করিতে উদাত হয়, মুসলমানশাস্তানুসারে ভাহাকে কোন প্রকার বাধা দেওয়া অবিধি,
এই বিবেচনায় হোখাযুন গয়ংগছ করিয়া ঘাইতে লাগিলেন। অনস্তর বাহাছর থাঁ চিত্তোরের চুর্গ জয় করিলে
দিল্লীশ্ব তাঁহার সহিত্য যুদ্ধারস্ত করিলেন।

বাহাছর খাঁ কনস্তান্তিনোপল দেশীয় এক জন তুকী ও ক্তকভালন পোর্গী চাকর রাথিয়াছিলেন, তাহারা - আর্গ্নের মুদ্দে অর্থাৎ গোলাগুলির কর্ম্মে অতি পারগ, অভ্ৰেৰ ভাষ্টেদ্ৰ বলে নিৰ্ভৰ কৰিয়া তিনি মালেশৰে ছোমানুনের অপেকা করিয়া থাকিলেন। হোমানুন তথা ্উপস্থিত হট্যা ভাঁহাকে সৈনাকালে বেউন করিলেন। ভাহাতে দৈনাগণের আহারীয় প্রবাদি আন্মনের প্র ক্ষ হইল। মুত্রাং ভূতিকের আশস্কায় বাহাছুর তথায় खिकिए । भाविताः द्राधिकाटन कामान मकटनत मूटथ वाकन শিক্তপ্ৰ ক্রিয়া, আপনি একাকী মাণ্ডুতে পলায়ন করিবেন। ইদন্গণ পশ্চাতে রছিল। হোমায়ু ম বাহালুরের পশ্চাৎ ই মাওুতে গমন করিলেন। ভাহাতে বাহাছর তথা হইতে हान्त्रान्टत, उर्शद्य कार्य, अवटनंदय मगूरस्य गर्ह अताहे-লেন। হোমায়ুন তাছাকে কনী করিতে না পারিয়া চাল্পা-नत्त्र चानिया वर्ग काकमण कतिरलन । छान्यानत्त्रत् छर्ग প্ৰতিশিখনে, ভাহাঁর দার ক্ষু ক্রিলে ভাহা উল্লেখন করা কটিন। হোগায়ুন বেরূপ সাহসে ও কৌশলে এই রুর্ণ অধিকার করিবেন ভাষা অভি আকর্যা। তিনি রাজিঘোরে কতকণ্ডলি দৈন্তে প্রথমির অক্তিন্থ নিযুক্ত করিবেন। ছার আক্রান্ত হইবে প্রথমিক মেনাপণ ছার করিবেন। ছার আক্রান্ত হইবে প্রথমকা মেনাপণ ছার করিবার প্রথম করিবেন। করিবার করিবার করেবিরার করেবিরার করেবিরার করেবিরার করেবেরির প্রক্রিকান করিবেন। করিবার করেবেরির আরম্ভ করিবার করেবেন। করিবের করিবার করেবেন। করিবের করিবেন ভারাকেই সংহার করিবেন লাগিবেন। যে দৈন্যপণ দার আক্রমণ করিবাছিল করিবেন লাগিবেন। যে দৈন্যপণ দার আক্রমণ করিবাছিল তাহার এই করেবে চাপিবেন। যে দৈন্যপণ দার আক্রমণ করিবাছিল তাহার এই করেবে চাপিবেন। এই কর্মণ করিবাছিল করিবের জনিবার জ

গুজুরাট সংগ্র পর ছোগাগুন শীগ জ.তা নিজা আকরীকে তথার রাখিয়া আগ্রা প্রখান করিলেন । কিন্তু
ভিনিও গুজুরাট ত্যাগ করিয়াজেন উল্লার কর্মক্রিক্রিক্রর
মধ্যে মহা বিসংবাদ উপস্থিত হরল। উহার নানাপ্রকার
কুমস্ত্রণা করিতে লাগিলেন। কেন্ন কেন্ত্র স্থির করিলেন
নির্কা আজিরীকে রাজসিংহাসন নেওয়াইবেন। কিন্তু এই
নকল মুক্তি নিশ্বল হইয়া লাভে হইজে আগুরিছেদ ও
বলক্ষর হইতে লাগিল। ভাহাতে বাহাত্র খাঁ বিনাযুদ্ধে
স্নায়ানে গুজুরাট রাজা পুনর্ধিকার করিলেন। এবং
ভ্রুন মালবন্দেশ ঘদিও কোন উপদ্রেব বিজ্ঞাহ ছিলনা
তথানি মোলন্দিগকৈ ভাহা পরিত্যাগ করিতে হইল।

इजिम्हार त्मत्या क्रमणंड अञास श्रवन श्रेता छेठि-লেন। দেরখা পাঠানজাতীয়। ডাঁহার পিতামহের নাম अद्वारहम । अद्वारहम आश्रनारक शाहराजवर नीय विवर्त পরিচয় দিতেন। এব্রাহেনের গুত্র হাসন কোন সম্ভান্ত িকাকের কন্যা বিধাই করিয়াছিলেন, তাছার গর্ট্তে সেরখাঁ। ও निकाम था। प्रदेशम जत्म। किन्तु शमत्नव एक छेशशक्षी ্ডিল, ভাহার মশতাপদ হইয়া তিনি পুর্দিগকে তাজ্লা ক্রিডেন, এজন্য সের্ধী পিতালয় ভ্যাগ করিয়া ল্যান-ুপুরে এক সিপাহির কর্মে প্রবৃত্ত হয়েন। তথায় বিদানু-नीन्या भरनारमात्र कहिया माना कावा ७ ইতিহাস शुस्तक शार्ट क्रिट्ड क्रिंगिटलन। अवर रमथ मानीत श्रुखकथानि ্রাম অভাগে করিলেন যে তাহা অনালাগে মুখন্থ বলিতে পারিতেন। এইরূপ কিছু কাল অতীত হইলে ভাঁছার পিতা ঠাছার প্রতি অমুকুল ছইলেন, এবং বেছারের অন্তঃপাতী সমত্রাদে ভাঁহার যে জায়গীর ছিল ভাঁহাকে ভাহার করিছের ভার দিলেন। সেরখা বেহারে থাকিয় পিতৃদত্ত জায়গীরের কর্তৃত্ব করিতে লাগিলেন।

কিছুকাল পরে শলিমান নামে তাঁহার পিতার জারজপুত্র বরঃপ্রাপ্ত হইয়া জায়গীর-মম্পর্কে তাঁহার সঙ্গে বিবাদ উপস্থিত করিলেন। তাহাতে সের্থা ও তাঁহার সংহাদর, নিজাস খাঁ, সেফাদর সাহের কর্মো নিযুক্ত হইয়া দিলীতে বাদ করিতে লাগিলেন। কিংকোল পরে তাঁহাদের পিতার মৃত্যু হইল, তাহাতে সের্থা সদরামের জায়গীর শুনঃ প্রাপ্ত হটলেন। পরে মহম্মদ সাহ লোহানী জুরানপর ও বেহারের রাজা হইলে, তিনি তাঁহার সঙ্গে মিলিয়
কিছুদিন সম্মানে থাকিলেন। তদনন্তর তাঁহার ইবলাজেয়
কাতো শলিমান রাজসভায় উপস্থিত হইলা পাকচক্র করিয়
তাঁহাকে জালগীর হইতে বঞ্চিত করিলেন। তপন সের্থী
মহম্মদ লোহানীর সভা ভ্যাগ করিয়া জুয়ানপুরে যাইয়া
বাবরের পঞ্চীয় ইসনাধাক্রের সহিত মিলিলেন। এবং
ক ইন্যাধাকের সাহাথো বেহারের পর্বতের কতকওলি
লোকের সহিত যোগ করিয়া আপনার স্থানগীর পুনর্বার
উদ্ধার করিলেন। তৎপরে আপনাকে বাবরের প্রজাবলিয়া
মহম্মদ লোহানীর রাজ্যে উপদ্রব করিতে লালিলেন।

কিছুকাল পরে চজ্রবীর যুদ্ধ উপস্থিত হইলে সের খাঁ বাবরের সমতিবাহারে ঐ যুদ্ধে গমন করিলেন, ভাহাতে বাবর তাঁহার প্রতি সদয় হইলা ভাঁহাকে বেহারের সেনা-ধাক্ষ করিলেন। তদনস্তর হিং ১০৬ অলে মহম্মদ লোদী বেহার অধিকার করিলে, তিনি বাবরের পক্ষ ভাগে করিয়া মহম্মদের সহিত মিলিলেন। পরে যথন ঐ মহম্মদের সৈনাগণ ছিল ভিন্ন হইল, তথন তিনি পুনর্কার বাবরের শরণাগত হইকেন।

বসর্থী এই প্রকার জনেক গোলমাল করিলেন। কিছু-নিল নের বহুত্বার লোহানী, জলাল নামে এক শিশু সন্তান রাষ্ম্মি শর্মার কমন করিলেন। জলালের মাতা তাঁহার কর্মকর্মী ইইয়ারারয়ের অধীন্তা খীকার করিলেন। তা- হাতে বাবর উচ্চার প্রতি অনুকুল হইয়া উহিতি বৈহার প্রদেশ অপন করিলেন। সেরখা ঐ সময়ে কলালের মাতার অনুগত হইয়া ভীহার সকল বিষয়ের অপাক্ষ হই-লেন। এবং ভাঁহার মাতার মৃত্যুর পর ভাঁহার সক্ষম কর্ত্ত হইয়া ভারু সেহার ও চণ্ডালগড় ও রোটস অপি-কার করিলেন। এই প্রকারে সেরখা ক্রমশঙ্গ প্রভান্ত প্রবল হইয়া উটিলেন।

ইতিপুর্বে হোমায়ুন যথন চপ্তালগড় আক্রমণ করেন, তথন সেরখা তাঁচার অধীনতা স্থীনার করিল। এই অলীন কার করিলাছিলেন উলোর ক্রে কতকগুলি অধানোহী লইলা তাঁচার কর্মে নিয়োজিত পাকিনেন। কিন্তু মখন হোমালুন ভল্গরাটে গালা করেন, তথন সের খার পুর টোহার দক্ষে লান নাই। হোমালুন ভদ্দাধ গুলুরাটের সুদ্ধে ব্যস্ত ভিলেন, এজনা তাহার প্রভীকার করিতে পারেন নাই। হোমালুন গুলুরাটে গুলুরাটের করিতে পারেন নাই। হোমালুন গুলুরাটে গুলুন করিলে সেরখা ন্যুদার বেছার অধিকার করিলা বল্পেন পালিভ আক্রমণ

বিশ্বদেশ আন্তণের আর এক স্বত ইইযাছিল। সেরখা।
আলাল লোহানীর কর্মাণ্যক ইইয়া আপনিই সকল কর্ত্ত্ত্বিরের, জলাজকে কিছু করিছে দিজেন না, ভিনি কেবল
আভিমুর্তির ন্যায় থাকিতেন। এই দলোহতার্থ ভিনি বঙ্গক্রেমীয় রাজাকে পরা লিখিলেন, জামাকে ঐ ব্যক্তির হয়
ক্রিতে পরিজাণ করন। বঙ্গাণিকারী জনালের সাহায়ে

প্রার্থ্য হইবেন, কিন্তু কৃতকার্যা হইতে গারিলেন না। সের-খাঁ সেই আজোশে গৌড় রাজধানী হাক্মন করিলেন।

যথন দেৱখা সহতে লাভা কেন্দ্ৰ প্ৰস্তু, তথন হোষায়ুন্ত ওকারাট্ট হইতে রাজধানী প্রভাগেও হইনা দেখিলেন, সেরখা অতান্ত প্রাক্ষণালী হইয়াছেন, উল্লেখন না করিলে রাজ্যের কুশল নাই। অভ্যুব তিনি সম্মন্ত আগ্রা হইতে যাক, করিলেন।

रमत्रभा निर्दर्शन। कतिहानन् यमि दशासीय न अपकराहत् रक्ष ारम आहेरमन छोश इंडेटन छै। हाइ जे सम कर कर इय না, অভএৰ চণ্ডালগড়ে কতকণ্ডলি মেনা রাখিয়া তাহা-भिगरक खास्हा मिरदान भागत देवना उवाय डेलनी ड श्हेरण छोहाँ निवादक धेथारम आधिक कतिया यछ निवाह করিতে পারে করিবে, শীত্র আসিতে দিবে না। কেনাগণ এই আজ্ঞাক্রে হোমায়নের পথাবরোধ করিল ৷ ১হামা-गुन निक्रभाग्न इरेग्ना छूर्ग त्नकेन कतिशा शाकित्वन। ার্ডর দ্বারা দ্র্গাভেদ ক্রিবার চেটা পাইলেন, কিন্দু डोहा शीतिरलम मा। करमक मांम श्रद्ध प्रश्तिकक रेमना-গণের আহার ত্রিয় শেষ হইলে ভাহারা আপনারাই . शहा जर मानिना इंटर्गर मद्या जिन मं उ छन शोल माज ছিল, হোদায়ু ন'রাগ্যশতই হউক, বা ভবিষ্যতে ভাহার यात भागनांखी कर्च कतिएक नाभारत अरे बिक्शारवरे · २ उके, छोशादमञ्ज मक्तात मन्ति। इस एकमन करिया निटलन । চতালগত করের পর হোনামুন পর্ব পাইয়া গলাঃ বার দিয়া দক্ষিণভিমুখে আসিতে লাগিলের। পাটনার
দারিয়া আসিয়া দেখিলের বন্ধদেশের রাজা মহম্মদ
রাজায়ত হইয়া তথাস রহিয়াছেন, সের খা তাঁহার রাজা
লইয়াছেন। পরে ভাগলপুর উত্তীর্ণ হইয়া শুনিলেন
জলাল নাগে দের খার এক পুত্র সংস্করা সকরীগলির
পাহাড়ে আছেন। অতএব পাহাড়ের ঘোনা অধিকার
জনা তিনি অত্যে কতকগুলি সেনা প্রেরণ করিলেন, কিন্তু
ভিহার। ঐ ছানে উপস্থিত হইবা মাত্র জলাল পর্কাত
হইতে নামিয়া ভাহাদিগকে সংহার করিলেন। ঘোনাযুন এই সংবাদে স্বয়ং ভাঁহার সহিত গুদ্ধার্থ গমন করিলেন। কিন্তু গাইয়া দেখেন জলাল তথা হইতে গলায়ন
করিয়াজেন। অতথব তিনি নির্কিণ্ডে গলা পার হইয়া
ক্রেডিড় ঘানা করিলেন।

হোমানুন গোড় রাজ্যে উপনীত হইয়া দেখিলন সের খাঁ বা রাজ্য জয় করিল তথা হউতে প্রস্থান করি-গাছেন। অতএর অবাপান বা রাজপানী অধিকার করি-লেন। কিন্তু তৎপরেই বর্ধারের হইয়া তাবদেশ জলপ্লাবিত ইউল, তাহাতে মুজের কণ্পনা রুবা হইল, তিনি গতি রহিত হইয়া ঝাকিলেন। তাহার সেনাগণ বলদেশের, জনীয় বালুদোৰে পীড়িত হইতে লাগিল, এবং অনেকে ভাছাকে পরিত্যাগ করিয়া প্লায়ন করিল। হোমায়ুন ভিত্তিক লাল করিল। ক্যায়ুন ইতিমধ্যে দের যাঁ। আপন ধন ও পরিজনাদি রোট-দের ছবে রাখিন। রাজা উপাদি একণ পূর্বক তাবং বেহার ওচঙালগাড় ও বারাণ্য অধিকার করিলেন, তৎপরে জো-চানপুর আক্রমণ করিলা কানারুক্ত পর্যান্ত দৈন্য প্রেরণ করিলেন, তাহার। গজাতীরস্থ ভাবে দেশ অধিকার করিতে লাগিল।

বেদায়ুন বর্গান্তে বঙ্গদেশ হইনেত ঘনেশ যাত্রা বরিয়া বজার দলিল থার নিয়া গালন করিতে লাগিলেন। বকনর উদীর্থ ইইয়া দেখিলেন সের থাঁ। উথার পণাবরেগথ জনা জোয়ানপুর হইতে সচলনো তথায় উপস্থিত হইয়াহেন। হোমায়ুন উহার চমনা উল্লেখন করিয়া যাইকে না পারি-হা, সঙ্গার পর পার দিয়া যাইকেন এই গান্সে নৌকার সেড় প্রস্তুত করাইতে লাগিলেন। এই কর্য ছই নাস পর্যন্ত ইইতে লাগিল, ইহার মধ্যে সের খাঁ। কোন প্রকার বিশ্ব দিলেন না। কিন্তু বখন সেড়ু প্রস্তুত্র য় হইল ভশন তিনি এক দিবস রাজিযোগে কভকগ্রি সেনা লইয়া হোমায়ুনের চস্নায়গুলীর পশ্যান্তাগে গোপন তামে থাকিলেন। রাজি প্রভাত না হইতেই একেবারে তিন দিক হুত্ব উল্লেখন বিশ্ব বিশ্ব প্রাক্তি প্রাক্তি বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব প্রাক্তি প্রাক্তি বিশ্ব বিশ

হোমায়ুন কিছুই জানিতেন না, তথাপি শক্ত আগত মাত্র অস্থাতে আহ্বোহণ করিয়া যুদ্ধে প্রস্তুত হইলেন। কিছু তথ্ন যুদ্ধ করা বিফল, সমরসজ্ঞা করিতে ইসনাগণ শ্ৰনায়ত্ব গ্ৰাম করে। এজনা ভাছার ইসন্যাধ্যকেরা নিষ্ণে

कतिया विकालके के नमता पूछ कतिया किछू करिएए शांति-त्वन मा, अकृत्व प्राथमात्र आव तकात (एक) (प्रथम । हेह। विनिया केंश्वात व्यवस्था नेनीयूटथ किवाहेया निटनन। হোমামুন ন্রীভটে যাইয়া একেবারে ভ্রম সংগত তরংজ কাঁপ দিলেন। কতক ছুর বাইয়া ভুরক জনগর হুইব। (शर्मायुक्तत्व टारे पर्या शक्ति) देवरायव उरकारत सक জন ভিত্তী বাষ্পুৰিত মদক অৱলয়ন করিয়া নদীপার হইতেছিল, সে হোনাযুদ্ধে দল্পে গটা। নদী পার করিয়া দিলা। কেমালুন ভাগের পর আরাতে এতাগমন ক্রিলেন ৷ এদিকে তাঁহার মেনাগ্র শক্রজাল অভিক্রম ক্ষিতে না পারিয়া কতক স্থলে কাটা পড়িল, কতক ব। अनमग्ने हहेगा पतिल, धात (इट्डे वीहिल ना। (इ.स.)-মুনের রাণীও শক্রতে পতিত ইইয়াভিলেন, কিন্তু সের খাঁ ভাঁহার প্রতি কোন অভ্যাচার করিলেন না। ভাঁছার ঘধোচিত সন্মান করিয়া সৌজনা প্রকাশ পূর্বক ভীহাকে রণকেত হইতে নিরাপদ স্থানে পাঠাইয়া দিলেন, इंगी छ्णा क्टेट्ट यदम्दल भगन कतिरलन्।

এই ঘটনার পর সের খাঁ বল্লদেশ পুনর্থিকার করিছে প্রায়ত কইলেন। হিন্দাল হোমায়নের ছনিশার সংবাদ পাইছা ভাঁহার প্রভূত অধীকার পূর্বক দিলা অধিকারের উপজ্ঞ করিলেন। কামরান এই বিজেচ নিবারণছলে কালুলে সমাগত হইলেন। ভাঁহার মনে মনে ইছা জিল আন সুযোগ হল আপ্রনি রাজাধিকার ক্রিবেন। কিন্তু হোমায়ুন থ সময়ে রাজধানীতে প্রত্যাগত হঠলেন, তাহাতে তাঁহাদিগের মনোতিলান পূর্ণ হট্ল না।

পরে হোসায়ুন পুনর্মার হিদ্যা সংগ্রহ করিয়া, সের भौति अভिकात जना, क'नाकुटरज गावा कतिहनत। क्लि গঙ্গা পার না হইতে হইতে নের খাঁ প্রপারে উপস্থিত হইলেন। ভাহতে হোমায়্ন পার হইতে পারিলেন না। এই সময়ে ভাঁহার এক জন প্রারান কেন্পেড়ি ভাঁহারক প্রিক্তাগ করিয়া আপ্ন অধীন সৈনা মন্তিয়াহারে প্রহান করিবেন। বিলয় করিনে পাছে আরু । মেনারা সেই প্রকার প্রায়ন করে এই আশিস্থায় হোমামুল হিং ৯৫৭:১০ হস্তর জিলেকেই তিপনা পার করিলেন । কং ১৫৬০:১৬ মে তিৎপরেই যুক্তারস্ত হাইল : এই ' মুদ্ধেও হোমায়ুন পরাস্ত হইলেন, এবং ভাঁগার সেনাপণ भक्तकर्त्क आकाल इहेशा मनीत भाई পড़िएल शासिन। এই বিপদকালে হোমায়ুনের অম্ব আহত চইল, তিনি এক गाउबशुर्छ चारताइन कतिया कान खेकारत नमी शास इंडेप्सम । किन्न इन्हीं अमन कांग्रम महिन्न। छिनि तम प्राव्हांच ম্মতে তটারোহণের কোন উপায় ছিলনা, ভাহাতে সেই-थारनेहें जैदिति पुष्टात महादन। इहेल । देनवायल छूटे जन শোগল সেনা ভটহইতে আপনাদের গ্রহটা পাণড়ি একত क्रिया कुलारेका मिला, रहाभागून छोटा अवनवन क्रिया San Sheet Control of the Control of

এই ক্ট্রের পর হোমার ন রাজধানীতে উপনীত

হইলে, তাঁহার ভাতা হিলাল ও মিজা আক্রী তাঁহার **जाहाबादि उनाम जामिदलन। किन्छ खरू देगना जर धर** ना कतिरल दोका तका कता किन, धेर विरद्धनाम दशकाम् न, আগ্রাও দিলী হইতে, পরিবারপণ লইয়া পঞ্জাবে পলায়ন ক্রিলেন। সের খাঁ কারুল রাজ্য আক্রনণ ন। করেন এই অভিপ্রায়ে কামরান ভাঁছাকে পঞ্জাব অনেশ সমর্পন করিয়া তাঁহার সহিত সম্পীতি করিলেন। কিন্ত কি জানি পাছে কামরান ভাঁচাকে শক্তহত্তে অর্পণ করেন এই আশ-কায় হোনাৰুন পঞাৰে সুদ্ির হইতে না পারিয়া দিকু द्रांटका भगन कतित्वन । मिकु दाका शृद्ध मिलीकुक किन, ভাহাতে তিনি মনে ২ করিলেন ঐ স্থানে তাঁহার প্রস্তুত্ব চলিবে, ভাতএব অবীদশ নাস প্রান্ত ওথায় বাস করিয়া ভাহার নানা প্রকার চেটা করিতে লাগিলেন। সিল্কুরাজ তাঁহার সহিত দৈতাচরণ না করিয়া অবংশংৰ विशेष इहेश डिहिलन।

ভখন হোমাণুন সিন্ধু রাজা পরিত্যাণ করিয়া যারোয়ারের রাজা নালনেবের শরণাগত হইবার মানুসে বালুকারুণাদিয়া গালা করিলেন। কিন্তু ঘোধপুরে ঘাইয়া শুনিলেন
মালদেবের নিকট পমন করা নিক্ষল, ভিনি ভাষার পরম
শারু, অভএব সিন্ধুতটে অমরকোঠে গমন করা প্রেয়ফশশ বিবেচনা করিয়া পুনর্মার বালুকারখ্যে পড়িলেন। বালুকারুগ্য পার হইতে ভিনি এবং ভাষার সমভিব্যাহারী লোকেরা
বে ক্য পাইলেন ভাষা নতুতো দ ভবিষাতি। একে বালি ভালিয়াপথ চলা কঠিন, ভাহাতে বৈত্তির উত্তাপে ঐ সকল ৰালুকা ক্ষরিবৎ হইয়াছিল, ঐ বালুকাতে পদ প্রকেশ করি। হংসাধা। মধ্যে হ বহিবৎ বাভাদে শরীরকে একবারে দক্ষ করিছে লাগিল। কিন্তু সর্বাপেকা জলকটাই প্রধান। এই পথের মধ্যে জল প্রোয়ই পাওয়া যায় না, যে স্থানে বংশ কিঞ্চিৎ পাওয়া যায় ভথাকার লোকেরাভাহা স্থ অপেকাও অধিক মূলাবান জ্ঞান করিয়া কাহাকে স্পর্গ করিছেও দেয় না। জলের জন্য গ্রামন্থ লোকদিগের সঙ্গে লাঠালাটি কাটাকাটি পর্যান্ত হইতে লাগিল, ভপাণি জলের ছংখ ভূর হইল না। এক দিন একটা কৃত্তে জলপাত্র নামাইয়া অব উদ্যোলন কালে জলের জন্য সকলে গ্রমন বাছিবান্ত হইল যে ভাহাতে বজ্জু ছিল হইয়া কলপাত্র সমেত জল-গ্রমানী ভারতে ভূপের মধ্যে পড়িয়া মরিল।

এই প্রকার পথকেশ ও জল ফটের সম্যে মালদেব
রাজার পুত্র সইসনাে তাঁহার পশ্চাদানমান হইলেন।
তাহার কভকগুলা সেনা অগ্রে আসিয়া কুপ সকল আটক
করিল। জীবনাভাবে কাহারও জীবন রক্ষার উপায় রহিল
না। কিন্তু মালদেব রাজার পুত্র হোমায়নের নিকালবর্তী ইহয়া শ্রেভ পভাকা ভুলিয়া দিলেন, ভাহাতে বোধ
হইল ভাহার শর্জভাব নহে। ভদনস্থর তিনি হোমাবুনের নিকটে আসিয়া ভাহাকে কিঞ্ছিৎ ভং সনা পূর্বক
বিলিনে হিন্দুরাজ্যে প্রবিট হইয়া গোহভা করা আপনকার উচিত ছিল না। ইয়া বলিয়া জীবনদান প্রক্ষ তিনি

ৰদায় হইয়া গোলেন। হোগালুন বেমন হাইতেছিলেন ভ্ৰমনি চলিলেন। কিছু জলকট ঘূচিল না, জন্ধাভাবে ভাছার সম্ভিব্যভারী সকলেই ক্রাহি আহি ক্রিভে লাগিল।

दोखंबानीड" संदर्शदामाचि दिन शाहितन। डिमि उद्कारण प्रद्विकी, धरः द्रालात धक कर्मकादीय प्राप्त कार्ट्सार्थ करिया याहरण्डिलान । देशवागुण खे कर्माकारीय নিজের অ্যা চল্ড্মান্ড্রিক ছুইল, ভালাতে তিনি গ্রু-वृत्ती तांनीत्व असङ त्याप्रकर्वेदक व्यवद्वारन कर्यंचेम् অ।পনি ভাষাতে আব্রোহণ করিয়া চলিত্রন। তথন ছে।ন-मून कि करतन, जालन ज्यन त्रांशिक जारतोहन कहा देश आंशिति श्रमताक है। होत्र महस्य प्रकारमा। यह अकात মহাজ্যে হোয়াযুন গমন করিছে লাগিলেন। জনে । ক্রীছার মকল সম্ভিলাছারী লোক মারা পাছিল, কেবল गांड खन नाज कीविड बरिन। धेरे गांड कन लांक मटन করিয়া তিনি অমরকোঠে উপনীত হইলেন। ভাষার পর তীহার আর্থ লোক আসিয়া মিলিল। অমরকে টের রাজা প্রমাদ অভি ভল্লোক, ইোমায়ুন উপনীত ইইলে তিনি क्षीबादक सरवंके समामज कहिए। आश्रम पुरुष हा विद्यान ।

ইেছিল ন যাংকালে নিজু ভাকতে অব্যিতি করেন, তথন
কিলালের আক্রেম এক দিনেন গ্রেম্পর ইইলাভিক। তাহাতে
কিলালের আক্রেম এক দিনেন গ্রেম করিছা কোন সভান্ত লোকের এক ক্রা
কানিয়াছিকেন। হোমালুন তাহার ক্লাছারণ কল আবেল বেবিয়া
কাহাতে বিবাহ কলিয়াছিকেন। তিনি এই রাজ্বালী :

रिर 🊧 🏋 धर्मन दर्शगांधून अमंबदकार्य वाम करत्न ১৫ আছেন্য ি তথ্ন তৎপুত্র বিধ্যা 5 আকবর তথায় জন্ম গ্রাহণ করেন। 'আকবরের ভূমিষ্ঠ হওন কালে' ছোমায়ুন স্থানাস্তরে চিলেন। এ দেশে এমত রীডি: আছে পুত্র কন্যা হইলে পিতা আহীয় পারিষদ দকলকে কিছু হ'পন দান করিয়াপাকেন। কিন্তু বথন আকরে জন্ম-এহণ করিবেন তথন হোমালুনের কিছু নাল সঞ্চি ডিলা না, কেবল একটী মূগনাভি ছিল। তিনি তাহা ভগ্ন করিয়া উপস্থিত সকলকে এক এক কণা দিয়া বলিলেন মুগনাভির যেমন দৌরভ পৃথিবীতে আমার প্রতের যেন দেই প্রকা সৌরভ হয়।

त्थामाधून व्यवतकाटो थाकिया मिकुबोका उषाद्वत দাসনা করিলেন। কিন্তু ভাঁহার নক্ষে এক শত মোগল সে-নার অধিক ছিল না, ভাহাতে রাজা প্রদান প্রভৃত্তি আরহ बराक स्नन हिन्सू बाज। उक्ष छ। शूर्कक श्राप २००० रेमना গ্রতিবাহারে সিন্ধুরালা উল্লাৱ্থ তাঁহার সলে গমন করিলেন। কিন্তু জাঁচার কেমন ছুর্ভাগা, একটা সামানা कार्यत केना मक्त उत्माश एव हरेल। उहात कार्यन, ংহামাণুনের সঞ্চী কোন মোগণ, রাজা প্রসাদকে অপ্রধান रुविन । अमान अभन्ति इरेग्रा दशमाग्नदक जाना है-प्तन, किछ द्यामाग्रन छोटात किरात कतिराम मा। देशाउ वागाए के हिर्देश सभी डोकाहा टीराह सम भहिलाव किशा गोजटमा किश्विम् लोटक न ।

द्याभाषुन अमार्टनंत भगदेनंत भक्त मिन्नूद्रीद्वा डिक्टिड ना भारिया काकादत जाजात गमदन आदान कतिदलन, धरेर मरनर याहाई थाकूक, भैयन कतिर्दर धरे कथा ता के कति-লেন যে তাঁহার প্রক্রে জাতার নিকটে রাখিয়া তিনি ময়: जीदर्भ शमन करिददम। किन्द्र कास्त्रादेश किशम्दत छेश-नील रहेरत हर्राय कान वालि उँविधिक नरवाम मिन भिका ত্মাক্ত্রী আগতপ্রার, তিনি জাসিয়া ভাঁহাকে বদী করি द्वते। धरे कथा अवंग माज दामीयून मंगतास हैरेश রাণীকে খীম অধ্যে আহেরাহণ করাইয়া উর্দ্ধানে প্রায়ন কৰিলেন, শিশু আফবর তথায় পড়িয়া রহিলেন, উছে:-क करेगा काहेर छ शाहित्वन मा। अनर्ভिविवरण, भिक्षी आफरी ज्याम उत्रमी उ इरेटनम, जबर खालाक मा क-খিলা খেদ করিয়া ধলিলেন তিনি কেন পলাইলেন আমি উাহার অনিউ নাঞ্চায় আসি নাই, ইউ লাঞ্চায় আনিয়া-ভিলান। ইহা বলিয়া তিনি শিশু আকবরকে লট্যা কাতুলে योजा कविद्यान ।

হোনায়ুন কান্ধারের অধিকার ত্যাগ করিয়া পারস-ভানের অভঃপাতি সিন্ধানে উপনীত হইলে, তত্তত্ব দৈনা-বক্ষক তাঁহাকে হিরাটে প্রেরণ করিয়া পারসম্বানের রাজা-কে স্বিশ্বের সংবাদ জিখিলেন। সাহত্যাপ্য তৎকানে পারস্থানের রাজা ছিলেন। তিনি হোনাযুনের আগা-মন রাজা গাইয়া তাঁহাকে ক্যাপ্য আল্যান পুর্ক্ত ক্তি সম্বানে রাখিলেন। হোনায়ুন সভাকে পাক্তিরন নাহ তথাপ দিয়া" মতাবলনী ছিলেন, সতত এ মতের রিদ্ধি বাসনা করিতেন। অতএব হোমায়ুন তাঁহার সভায় উপন্থিত হউলে তিনি তাঁহাকে খীয় মতাবলনী করিবার एও করিতে লাগিলেন। হোনায়ুন প্রথমতঃ নিয়া মত গ্রহণে সম্মত হয়েন নাই, পরে ভাষা গ্রহণ করিয়া মন্ত্রী-কারপত্র লিখিয়া দিলেন যে, ভারতবর্ধে ঐ মত প্রচার করিবেন। ঐ অজীকারপতে ইছাও লেখা রহিল পারস-হানের রাজা তাঁহাকে কান্ধার বাজা উদ্ধারার্থে ১২০০০ লেনা দিবেন, যদি হোমায়ুন ঐ দৈনা হারা কান্ধার জয় করিতে পারেন ভাষা হইলে ঐ রাজ্য পারসন্থানের রাজা-কে অপণ করিবেন।

এই প্রকার অঞ্চীকারের পর হোনায়ুন পারসন্থান হই-তে নিজানে থাফা করিলেন। তৎকালে উাহার নিজ দৈন্য ৭০০ মাল ছিল। নিজানে উপনীত হইলে পারল-হানের রাজাব পুত্র, মুরাদ মির্জা, ১৪০০০ অশ্বারোহী দৈন্য লইয়া ভাঁহার সজে নিলিলেন। হোমায়ুন তৎ-সম্ভিব্যাহারে হেলমন্দ ন্দীর তীরে বোস্তন্গর জন্ম করি-য়া কালারে যাত্রা করিলেন। কালারে ভাঁহার ভাতা

[•] सूनमभान मिर्टशत भरदा पूषे मठावलची लोक आहा. श्रुवि ७ निया। श्रुविता करे कथा नर्टलन महमारणत मृज्य श्रुव श्रुव श्रुव एवं जिन अन्न विश्वाण प्रतिकाल परियोद्धितन जैविता उपश्मीय, এवर जैवित ध्वक् प्रवृत्ति श्रिकाती। मिसाता वर्टलन के जिन क्षान ध्वशासक, महम्म-'एन्त्र वर्शीय नर्ट, ठेडूच होला आणि महमारणत ध्वक् उज्वाधिकाती दिस्त वर्शीय नर्ट्, ठेडूच होला आणि महमारणत ध्वक् उज्वाधिकाती दिस्त वर्शीय नर्ट्, ठेडूच होला आणि महमारणत ध्वक् उज्वाधिकाती

তিনি পাঁচ মাস পর্যন্ত তাঁহার সঙ্গে যুদ্ধ করিলেন। হোমাধুন প্র্ণ অধিকার করিতে পারিলেন না, অতএব নৈরাশ
ইয়া তথা হইতে উচিয়া যাইবেন এই মত কপানা করিতে
ছিলেন এমন সময় তত্তেলীয় অনেক লোক আসিয়া তাঁহার
সঙ্গে মিলিল, কিছুকাল পরে তুর্বের মধ্যে ছুর্ভিক্ষ উপস্থিত
ইইল, তাহাতে প্র্লক্ষক কতক সৈন্য নগরে প্রস্থান করিল,
অবশিষ্ট সৈনাগণ হোমায়ুনের সঙ্গে মিলিল। মির্জা
আক্রী সূত্রাৎ প্র্ণ রক্ষায় অমন হইয়া হোমায়ুনের
শরণাগত হইলেন। হোমায়ুন কান্ধার অধিকার করিয়া
আজা দিলেন মির্জা আক্রী গলদেশে অসি বন্ধান করিয়া
তাহার সম্মুখে আসিবেন। মির্জা আক্রী তাহাই করিলেন, তদনস্তব তিনি তাহার অভজ ব্যবহার জন্য তাহাকে
শ্রালমন্ত করিয়া রাখিলেন।

কান্ধার অব্যের পর এ রাজ্য পারসভানের রাজ্যভুক্ত হইল, ভাহাতে অনেক ইরাণী সেনা ফদেশে প্রভ্যাগনন করিল। কেবল রাজপুত্র মুরাদ নির্জা দুর্গ রক্ষার উপযুক্ত কতকগুলিন সেনা লইয়া তথায় থাকিলেন। কিয়ৎকাল পরে হঠাৎ এ রাজপুত্রের মৃত্যু সংবাদ রাই হইল। তদ্-নপ্তর হোমাযুন নগর প্রবেশ পূর্বাক বছ দৈন্য সংহার করিলেন, এবং অবশিষ্ট সেনাগণকে ফদেশে প্রভিগমন করিতে অনুমতি দিয়া আগনি কান্ধার অধিকার করিলেন। এই কর্মা সভি গহিত বলিতে হইবে, ইহাতে হোমাযুনের বিশ্বাসখাতকতা প্রকাশ হইয়াছে। অনেকে ইহাও বলিয়া থাকেন তিনি রাজপুত্রকে নম্ভ করান।

কান্ধার অধিকারের পরে হোমাগুন কারুলে যাতা করি-लगा। जे मधरम हिम्मान ও আर् जरमक अधान लगक আসিয়া তাঁহার সঙ্গে নিলিলেন। কামরান হুছে নিরুৎ-শাহ হইয়া ফোনায্ত্নর জাগমনে কাবুল পরিত্যাগ করিয়া বিজু রাজ্যে প্লাইলেন। ছোমাধুন অনাধানে কাবুল অধিকার করিলেন, এবং সীয় পুত্র আক্রবরকে পুনঃ প্রাপ্ত ছইলেন, তৎকালে আক্রেরের ব্যঃক্রম ছুই ভিন নৎসর। হোমায্ন কিছুকাল কাবুলে অবভিত্তি করিয়া বদক্ষান উদ্ধার জন্য গমন করিবেন। এ সময়ে কামরান সইসন্যে আলিছা কার্ল পুনরধিকরে ফলিছেন, এবং আকবর পুনর্কার ভাঁছার হত্তে পড়িলেন। কোমা-গুন বদকজান হইতে প্রভাগত হইয়া পুনর্কার কারুক আক্রমণ কবিলেন। তথন প্রণের যে স্থান দিয়া ভাঁহার তোপ চলিবে, কামরান ছুদ্ধপোষা আক্ররকে সেইখানে রাখিয়া দিলেন, মনে২ করিলেন ইহা করিলে ছোমায়ন যুদ্ধ করিবেন না। কিন্তু হোমায়ুল তাহাতেও ক্ষান্ত হই-লেন না। কামবান সংগ্রামে অসমর্থ ইইয়া পলাগ্র 'করিলেন। তাহাতে হোমাধ্ন দীয় পুত্র ও কাবুল রাজ্য श्रमः প্राश्च शहरतम ।

হোমায়ুন নগর প্রনরধিকার করিলে কামরান তাঁহার সদনে আসিয়া কমা প্রার্থনা করিলেন। হোমায়ুন তাঁ-

হার অপরাধ মার্ক্তনা করিয়া তাঁহাকে নিকটে রাখিলেন। হিন্দান ও মির্জা আক্ষরী ঐ সময়ে তথায় ছিলেন। অত-এব কনিও ভাত। যিজা আঙ্গরীর শৃত্তাল মোচন করাইয়া চারি ভাতায় একত আহার আহ্লাদ করিতে লাগিলেন। একং ঐ তিন জাভা ভবিষাতে হোমাগুনের অপকার করি-বেন না এই প্রতিজ্ঞা করিয়া ভাঁহার লবণ ভক্ষণ করিলেন ৷ কিন্ত ভাষার বিভুকাল গরেই কামরান প্রতিজ। উল্ল-জ্বন পূর্বক খোমানুনকে কার্ল ইইতে তাড়াইলেন। ্তিং ৯৬১ 📗 হোনাযুন পুনধার এ রাজ্য অধিকরে ূ^{ক্ষু ২৫৫} ি করিলেন^{*}। তথ্য কাম্রান্ প্লায়ন চিল্ল অনা উপায় না দেখিয়া গোরকা রাজ্যে গোপন ভাবে থাফিলেন। কিন্ত গোরকারা ভাঁহার পরম শক্র, তাঁহাকে ধরিষা হোমায়ুনের হত্তে সমর্পণ করিল ৷ হোমায়ুন জাঁ-হাকে তিন দারি দিবস উত্তম রূপে রাখিলেন, তাহার পর অসৎ আচরণের প্রতিফল জন্য তাঁহার চক্ষ্ণ উৎপাট-নের আজা দিলেন। চকু উৎপাটন কালে কানরান কিছুমাত্র যন্ত্রণা নোগ করিলেন না; কিন্তু যখন ভাষাতে লবণ ও নেষ্র রস অক্ষণ করিতে লাগিল, তথ্য সভাষ যাতনা বোধ করিয়া বলিলেন হে পরমেশ্বরা আমি যে পাগ ক্রিয়াছি এই পৃথিনীতেই ভাহার দণ্ড হইল, ভবিষাতে থান আর এমন্ যন্ত্রণা ভোগ করিতে না হয়। এই ব্যাপা-

ইহার মধ্যে হোনায়ুন আরি আর অনেক যুক্তে প্রবৃত হইয়া ছিলেন, তাহা এছলে লেখাগেল না।

রের পর হোষ্টান ভাঁহাকে মহাতে প্রেরণ করিলেন, কামরান কিছু দিন পরে হুপাস মানবলীল। সম্বনে করিলেনঃ

খোষায়ুন এবলিধ বিনিধ বিপাদ ও যুদ্ধের পার কান্তল
ম বৎসর রাজত কবিলেন। তাননাত্তর তিনি পাঞ্জাব আদিকার করিয়া, ১৬০ মকে, দিলীর রাজসিংহাসন পুনঃ প্রাপ্ত
হইলেন। ইহার ব্রছান্ত পরে লেখা যাইবে, জিল হিজারী
মন্ত্রণ ভারে হলা হইলে লাহার পলায়ন অবনি ১৬০
অকে দিলী পুনরবিকায় পর্যান্ত, ১৬ ধংগর দিলীর রাজকর্মা কিরুপে চলিয়াছিল ভাহা গাইবেড্ডে।

मसुप्रभा अशासि।

ন্থরবংশীয় রাজাদিগের রাজত্ব। শের সাহ।

হিং ১০০ বিলেপার, ব্যক্ত গরাজিত হুইয়া প্রায়ন বৃহত্ত করিলেপার, সেরসাহ তাঁহার সমুদ্য রাজ্য অধিকার করিলেন। সেরসাহ যে প্রকারে এ রাজ্য লই-ক্ষেত্রিকার করিলেন। সেরসাহ যে প্রকারে এ রাজ্য লই-ক্ষেত্রিকার করিলেন। সেরসাহ যে প্রকারে এ রাজ্য লই-ক্ষেত্রিকার হিলেন। কিন্তু এ কথা নিভান্ত সম্ভত বোধ হয় নাক্ষেত্রেন। কিন্তু এ কথা নিভান্ত সম্ভত বোধ হয় নাক্ষেত্রেন। কারতবর্গ হৈত্রর বংশীয়দিগের ইপাভ্রুক রাজ্য নহে, তাঁহারা স্থানান্তর হইতে আদিয়া কেবল ১৪ বংশর মাক্র এই দেশে রাজত্ব করিয়াছিলেন। সেরসাহ এই দেশে জন্ম গ্রহণ করেন, অভ্রের জন্মভূনি বিলায় এই দেশে তাঁহার এক প্রকার অধিকার চিল, বিশেষভঃ যথন অনাহ মুসলমান রাজ্যারা এই দেশ বলপুর্বাক লইতে পারিয়াছেন, তথন ভিনিও আধুনিক রাজ্যাদিগের হন্ত হইতে রাজ্য লইবেন ভাহার বাধা কি। অভ্রেব এই রাজ্য লওয়াতে তাঁহার

সেরসাহ সম্রাট হইয়া প্রথমতঃ গঞ্জাব রাজ্যের গোল-বোগ নির্ছি করিলেন। তৎপরে রোটসের বিপ্যাত তুর্গ নির্মাণ করিয়া, বলদেশে গমন করিলেন। তথায় বিজ্ঞোহ শান্তির পর তিনি ঐ দেশ এমন করিয়। বিভাগ করিলেন যে তাহাতে ভবিহাতে আর কোন গোলখোগের সম্ভাবনা রহিল না।

বিং ৭৪৯ । পর বংসর ভিনি মালব দেশ পুনরপি-পু ১৫৭২ নং ৪৮৮৪) কার কবিলেন। তৎপরে এ রাজ্যান্ত-র্ণত রায়সিংকের ছুণ আক্রমণে নিযুক্ত হসলেন। এই কেলা এক হিন্দু রাজার, তিনি ৰাহাগুর মাহ রাজার রাজার কালে অভাস্ত পরাক্রনশালী ভিলেন। সের সাহ দুর্গ বেটান করিলে সেনাগণ যুদ্ধে ক্ষান্ত নিয়া দুর্গ হুইতে প্রস্থান করিবার প্রস্তাব করিল, ভাষাতে সের সাহ ভাষা-দিগকে অভয় দান পূর্বক বলিলেন তোমরা প্রস্তান কর্রী, ভোষাদের প্রতি কোন অভাচার করিব ন।। এই কথায় বিশাস করিয়া চারি সহস্র রজঃপুত সেনা ছুর্গ ইইডে বহিৰ্গত হইয়া কতকদুৱে শিবির সলিবেশ করিল। তথন সের সাহ বিশ্বাসপাতকতা পূর্মক ভাহাদিপের শিবির বেষ্টন করিয়া একেবারে সকলকে সংহার এবং ভাহাদিশের যথাসবাস হরণ করিলেন। বুজঃপুত সেনা-গণ সকলে মরিল বটে, কিন্তু এক এক জন গুই তিন জনকে মারিয়া মরিল। রগকেত্র শহে পড়িপুর্ণ হইল। ঘাহা হউক এই কর্মো মেরসাহের নিতাম্ভ বিশাস্থাতকতা **প্রকাশ হইয়াছে। তৈমূর ভিন্ন আর কোন্ মু**সলমান রাজা এমন বিশ্বাস্থাতকতা নুখন করেন নাই :

পর বংশর সের সাহ ৮০০০০ সৈন্য লইয়া সারওয়ার

र्पीभ जाक्रमण कविद्यान । ये मनता मानतन्त्र जानत्रा রাজা ছিলেন। তাঁহার অত্যন্ত প্রতাপ ছিল। তিনি ए०००० रेमना वहेगा छ। हार अटक युटक मनक इहेटनन। এই অপে দৈনা লইয়া তিনি সংগ্রাম জয়ী ইইবেন এগন সম্ভাবনা ছিল না, কিন্তু ঐ দেশে জল কট প্রযুক্ত তিনি সাইস করিলেন সেরসাই তাঁহার সংফ যুদ্ধ করিতে পারি-ধ্বন না। কিন্তু দেরসাহ কৌশলে গ্রী হইলেন। তিনি वृष्क अमरक भानरमध्यत भागाणिक भगरक मामा अकाव तारु अपूर्वन श्रुक्त श्रव शिथर नागिरनन, उप धांशाटक करे मकल शक्र मालामात्वत इस्छ शएफ छारा ক্রিডে লাগিলেন ৷ এই সক্র প্র মালদেবের হস্তগত হইলে ভাঁহাত মনে সম্পূৰ্ণ সন্দেহ জন্মিল, মুভরাং তিনি ধুদ্ধনা কবিয়া প্রস্তান করিলেন। কিন্তু ভাঁহার এক সেনা-পতি সের সাংহর আচরণে কুপিত হইয়া তাঁহার সঞ্চে লোরতর যুদ্ধ করিলেন, সেরসাহ ঐ যুদ্ধে একপ্রকাব পরাজিত হইয়। আসিলেন।

পার বৎসর সেরসাহ মিবারের অন্তর্গত কালিঞ্চবের ছর্গ আক্রমণ করিলেন। মনেহ ভাবিলেন তদ্দেশীয় রাজাকে কোন কৌশলে বশীভূত করিবেন। কিন্ত ইতিপুর্ব্বে রায়সিং-হে তিনি যে অবিশ্বাসের কর্ম করিয়াছিলেন তাহাতে মিবা-রাধিপতি ভাঁহার কোন কথায় বিশ্বাস করিলেন না, সুত-রাং ছুর্গ মারিয়া লইবেন ই্ছা দ্বির করিয়া তিনি তেপি চালাইবার উদ্যোগে থাকিলেন। ঐ সদয়ে হঠাৎ ছুর্গ- হইতে একটা গোলা আসিয়া উহিনি বারদ্ধনিয় পজিল,
নাক্ষদ অলিয়া উহিনি সর্ব্ধ শরীর দক্ষ হইলা ভাঁহার
পূর্ব্ধ বিশ্বাস্থাতকতার এই এক প্রকার শাস্ত্রি, কিন্তু মৃত্যু
শ্ব্যাতে শ্রুন করিয়াও তিনি ছুর্গ লইবার সন্ধান বলিয়া

ছি ২০২ নিতে লাগিলেন। অবশেষে সেই
খ ২০০০। নে। দিবলৈ ছুর্গ অধিকার হইল। এই
সংবাদ শুনিয়া তিনি অতি আহ্লাদে, প্রমেশ্র ধ্না, এই
কণা বলিয়া প্রাণ্ড্যাগ করিলেন।

সের সাহ অতি কমতাবান পুরুষ ছিলেন, দামানা মন্ত্রুশ্য হইয়া তিনি স্বকীয় বৃদ্ধিবলে দিলীর রাজ্য অধিকার করিলেন ইহা সামানা কমভার কর্মানহে। ভানেক রাজ্য এম্বর্যা করিব ইচাই তাঁহার আকাজনা ছিল, কিন্তু কার্য্য-সিজি পক্ষে সদসৎ বিবেচনা কিছুই করিভেন না, যে প্রকারে হউক কর্ম ফিদ্ধি হইলেই হইল। এইজন্য তিনি বিশ্বাস্থাতকতা পর্যান্তও করিয়াচিলেন। কিন্তু রাজ্য-इंफ्रितं अना तांकां पिट शह मटक त्य नावंदांत कतिये शोकन, প্রজার প্রতি তিনি অতান্ত সদা ছিলেন। প্রজার রুখ ও मक्षणात जना जिनि यादा यादा कतियादछन गरूनदे উद्धमाः अरमक अरमक दोका अरमक काल दोक्य कतिया किछूरै कतिएक शास्त्रन नारे। स्मत्रमार शाँठ वरमत মাত রাজদও ধারণ করিয়া সকল রাজ্য শাসিত এবং বিচারাদির অনেক সুনিয়ম করিয়াছিলেন। ইহা ভিল किसि वहरमभ इटेटल निक्य नमी शर्या खेक ताज शय

ध्यञ्चक करतम, लोहाएक प्राटमत खरमक मेक्न इहेग्राटह । এই রাজপথের গুইপার্যে রক্তশ্রণী রোপিত হইয়াছিল, তাহার ছায়াতে পথিকেরা সুখে গমনাগমন করিতেন, खदर छात्म र शरिकशांच उ शर्गमाना निर्मिष हिन, তাহাতে নানা প্রকার খাদা দ্রব্য প্রস্তুত পাকিত, দীন হীন ব্যক্তিরা বিনা সলো আহার পাইও। তদ্ভিন এই রাজপথের এক এক কোশ অন্তরে এক এক কুপ এবং স্থানে ২ মণ্ডিদ নির্দাণ করিয়া দিয়াছিলেন, ভাহাতে মুসলমান দিগের পর্যা কর্ণা হইত। সের সাহের আর এক প্রধান কর্ম্ম এই তিনি সর্বাত্ত অব্দের ডাক বসাইয়া ছিলেন, তদ্যারা শংবাদাদি শীত্র ২ পাইতেন। অধিকন্ত তিনি দ্যার্ডি অতি সুন্দর রূপে নির্ভ করিয়াছিলেন, ভাছাতে পথিক বা মহাজনেরা রাজপথে অকুতোভয়ে क्षवामि निष्कर्भ कतिया निका गाउँ छ, त्कर धे मकन प्रदा স্পার্ণ করিত না।

সের সাহের মৃত দেহ বেহারের অস্তঃপাতি সসরাচন নিখাত হইয়াছিল। ঐ স্থানে তাঁহার গোরস্থান অদ্যাপি বর্ত্তমান আছে, ভাহা অতি অপুর্বা, ভাহার চারিদিকে একটী প্রম রমণীয় ঝিল আছে, ঐ ঝিল চতুর্দিকে প্রায় এক কোশ, গোরস্থানের শোভার জন্য খনিত হইয়াছিল।

मनीय मार खूत।

সের সাহের জ্যেষ্ঠ পুত্র আদিল খাঁ নিতান্ত হীনবীর্যা ছিলেন। এজনা তিনি আপনাকে রাজকর্মে অক্ষম। কিং ২৫২ জান করিয়া ছিতীয় জ্রাতা জলাল খাঁকে সু ২৫৪২ সমস্ত রাজ্য সমর্পণ পূর্বাক কেবল বায়না প্রদেশ আপনি রাখিলেন। জলাল খাঁ রাজ্য পাইয়া অদীকার করিলেন জ্রাতার প্রতি কোন অত্যাচার করিবনে না, ডক্জনা রাজ্যের চারি জন প্রধান লোক ভাঁহার প্রতিভূ হইলেন। কিন্তু জলাল খাঁ রাজ্য প্রাপ্ত হইয়াই সলীম নাম ধারণ পূর্বাক মহা ধুম ধাম আরম্ভ করিলেন। ভাহাতে এনন অনুমান ইইল তিনি অজীকার পালন করিবেন না, অত্রব জ প্রথানেরা ভাঁহার বিরুদ্ধে অস্ত্র পারণ করিলেন, কিন্তু কিছু করিতে পারিলেন না। জলাল খাঁ ভাঁহাদিগকে পরাস্ত করিলেন।

এই ব্যাপারের পর সলীমের রাজত্ব কালে আর কোন সংগ্রামাদি উপস্থিত হয় নাই, তাহাতে তিনি নয় বংসর নির্মিল্পে রাজত্ব করিয়াছিলেন। মধ্যে একবার জনরব হই-য়াছিল হোমায়ুন ভারতবর্ষ লইবার জন্য সমৈন্যে যাতা করিয়াছেন। সলীম এই সময়ে রণসজ্জা করিয়া বাহির ইয়াছিলেন, কিন্তু কাহাকে দেখিতে না পাইয়া সদেশে প্রস্ত্যাগ্রমন করিলেন।

हाटकाह स्थान वर्षात शिलाह नाह मनीरमह यर्थके

উনুরাগ ছিল। দিল্লীর রাজালয়ের যে অংশ সলীমগড়। নামে খ্যাত তাহা তিনি নির্মাণ করেন।

महत्राम माद सुत आपिनी।

সঙ্গীমের মৃত্যুর পর তাঁহার স্থানীয় জাতা মহম্মদ খাঁ,

হিং ২০০ হাদশ-নৎসর-বয়স্ক ভাঁহার এক পুরুক্তে

ব্ ২০০০ বিধ করিয়া আপনি রাজ্যেশ্বর হইলেন।

মহম্মদ নীচসহবাসী, মূর্য, এবং অতি লম্পট ছিলেন।

সূত্রাং তিনি সর্ক্ষ সাধারণের অত্যন্ত অপ্রিয় হইলেন।

হেমু নামে এক হিন্দু দোকানদারী করিয়া দিনপাত করিতেম, তিনি ভাঁহার প্রধান মন্ত্রী হইলেন। ঐ ব্যক্তির

বেমন ব্যবসায় আকারও ভদ্রপে, কিন্ধ ভাঁহার বিদ্যা ও বুদ্ধি
ভাল ছিল, ভাহাতে তিনি যে পর্যন্ত জীবিত ছিলেন

সকল কর্মন্তি উত্তম রূপে সম্পাদন করিয়া ছিলেন।

নহম্মদ রাজ্য প্রাপ্ত ইইয়া অত্যন্ত অপবায় আরম্ভ করিলেন, তাহাতে রাজভাণ্ডার দীত্র শুনা হইয়া পড়িল। তথন অপবায় ও কুসহবাসী দিগকে ধনবান্ করিবার আরি কোন উপায় না দেখিয়া তিনি রাজ্যের প্রধান ২ লোকদিগের রভিছেন ও ভূমাদি হরণ করিতে লাগিলেন, ইহাতে সকলেই অসন্তথ্য হৈলেন। এবাহেন সূর নামে ভীহার পরিবারম্ এক ব্যক্তি দিল্লী ও আগ্রা অধিকার করিলেন। সেকদর সুর নামে জার এক জ্ঞাতি পঞ্জার বাজ্য লইলেন। বন্ধ দেশের রাজাও রাজপ্রস্তুত্ব জন্মান্য করিলেন, এবং মাজবাধিকারী অাধীন হইনা বনি-লেন। এই প্রকার টারি দিকে বিজ্ঞোহানল প্রজালত হইল। হেয়ু বন্ধদেশের উপত্রব শান্তির জন্য তলেশে বালা করিলেন, কিন্তু তথা হইতে প্রত্যাগ্যন না কবিতে করিতেই শুনিলেন হোমায়ুন সেকদরকে পরাজয় করিয়া আগ্রাও দিল্লী পুনরধিকার করিয়াছেন।

হোমাযুদের দ্বিভীয়বার রাজস্ব।

হোমাযুন যৎকালে কাবুলে রাজত করেন তথন একবার কাশীর আসিবার উদ্যোগ করিয়াছিলেন। কিন্তু
সলীম যাহ অগ্রসর হইয়াছেন শুনিয়া কান্ত হয়েন।
তদনস্তর সলীম সাহের মৃত্যুর পর, মহম্মদ সাহের রাজত্ব
কালে, এবাহেম দিল্লী রাজ্য অধিকার করিলে, পঞ্জাবেশর
সেকশর, ভাঁছার সহিত মুজারয় করিলেন। মহম্মদও
শীম রাজ্য উদ্ধারের জন্য সেকদর ও এবাহেম উভয়ের
সহিত সংগ্রামে প্রবৃত্ত হইলেন। এই মুযোগে হোমারুন ২৫০০ অশ্বারোহী সৈন্য লইয়া পঞ্জাবদেশ আজমণ পূর্বক সেকদরের সেনাগতিকে গরান্ত করিয়া ঐ
রাজ্য অধিকার করিলেন। সেকদর এই সংবাদ পাইয়া

বছ সৈনা সমতিব্যাহারে সরহদে তাঁহার সহিত বুজার্থ
প্রমন করিলেন। কিন্তু পরাস্ত হইয়া হিমালয় শিশরে
পলায়ন করিলেন। তাহাতে হোমায়ুন দিলী ও আগ্রা
হিং ১৬০ রাজ্য অধিকার করিলেন। সেকদর
কং ৯৬০০ পুনর্কার সমর সজায় আদিয়াছিলেন,
কিন্তু হোমায়ুনের সেনাপতি বহরাম তাঁহাকে পরাভব
করিলেন। এই সংগ্রামে মুবরাজ আক্ররও উপস্থিত
ছিলেন, তিনি তখন চতুর্দশে-বর্ষায় বালক, তথাপি এমন
বীরত্ব প্রকাশ করিলেন হে ভাহা দেখিয়া সকলে চমৎক্রত
হইল।

হোমায়ুন দিলী রাক্ষা পুনঃপ্রাপ্ত হইলেন বটে, কিছ তথন থা রাজ্য জ্রীজ্রই হইয়াছিল । ঘাহাইউক ভাষা পাইয়াও তিনি বহুকাল ভোগ করিতে পারিলেন না। ভাহার কারণ, এক দিবস অপরাক্ষে পুস্তকালয়ের ছাতের উপর পাদ বিহার করিতেছিলেন, সন্ধ্যাকালে যেমন নামিয়া আসিবেন অক্যাৎ পৈঠাতে পা পিছলিয়া একে-বারে ভূমিতে পড়িলেন, ইহাতে ভাঁহার মন্তক ও শরীরে অভান্ত আঘাত লাগিল, ভাহা কিছুতেই সারিল না, পত্ত-নের চারি দিবস পরে তিনি প্রাণক্যাগ করিলেন।

হোমায়ুন অতি সংখতাব ছিলেন। তিনি দিলী রাজ্যের অধিপতি হইয়া বে একার ক্রেশ সহু করিয়াছিলেন ভাহা প্রায় অন্য কোন রাজা ক্রেন নাই। কিন্তু প্রথমতঃ তাঁ-হার শরীরে যেমন দয়াছিল পরে তক্তপ ছিলনা। তাহার কারণ, সর্বাণ শক্রভালে বেন্টিড, শক্রর সহিত সদ্ব্যবহার করিলে রাজ্যরকা কঠিন। অতএব দেশ কাল পাক্র বিবেচনা করিয়া দয়া বজ্ঞিত হইতে হইয়াছিল। কিন্তু সকল বিষয় বিবেচনা করিয়া দেখিলে তাঁহাকে সতের মণোই গণা করিছে হয়। হোমায়ুন ৪৯ বৎসর বয়ঃক্রমে পরলোক গমন করেন। ইহার মধ্যে ১৬ বংসর দেশভ্যাগী, এবং ১০ বংসর রাজত্ব করিয়াছিলেন। হোমায়ুনের মৃত্যুকালে যুবরাজ আক্রর পঞ্চাবে ছিলেন। হেয়ু বজ্লদেশ পুন-জায় করিয়া বখন শুনিলেন হোমায়ুন পরলোক গমন করিয়াছেন, তথন মহা আক্ষালন পুর্বক আগ্রাতে দালা করিয়াছেন, তথন মহা আক্ষালন প্রবিক আগ্রাতে দালা করিয়াছেন, তথন মহা আক্ষালন প্রবিক আগ্রাতে দালা করিয়াছেন করিয়া দিলেন। তৎপরে নিলী হইতে মোগলকুল নির্বাসন করিয়া দিলেন।

তই সকল কাণ্ড দেখিয়া আক্বরের মন্ত্রিগণের মনে
নহাত্রাস জন্মিল। তাঁহারা দিল্লী বাজ্যের আশা পরিত্যাগ করিয়া কাবুলে প্রত্যাগমনের পরামর্শ দিলেন।
কিন্তু হোমায়নের বিশ্বাসী সেনাপতি আক্বরের কর্মকর্ত্তা
বহরাদ্ধি পরামর্শ অগ্রাহ্ম করিয়া হেমুর সহিত পানিপত্তে গৃদ্ধ করিলেন। হেমু যুদ্ধে অসাধারণ বীরত্ব প্রকাশ
করিলেন, কিন্তু অবশেষে সাজ্যাতিক আঘাত প্রাপ্ত হটযা মাতৃকপুঠে অচেতন হইয়া পড়িলেন। তথন বহরাস তাঁহাকে রণক্ষী করিয়া আক্বরের সম্পূত্র দিয়া

বিলিলেন এই তোমার পরস শক্ত, ইহাকে বিনাশ কর।

নড়ার উপর খড়নাঘাত করা কাপুরুষের কর্ম এই বিবেচনা করিলা যুবা আক্ষর তাহা করিলেন না। বহরাম

হিং ৯৬৯ আপনি তাহার শিরশ্রেদন করিলেন।

২০০৬ তাহাতে মহম্মদ সাহ চিরকালের জন্য
রাজ্য আশায় বঞ্চিত এবং ভুবনবিখ্যাত আক্ষর দিলীর
সম্রাট হইলেন।

হিন্দু স্বাধীন রাজ্যের বিবরণ।

এই ভারতবর্ষে পাঠানেরা যে সকল দেশ অধিকার করিয়াচিলেন মহম্মদ তোগলকের রাজস্ব কাল অবধি তাহা ক্রমেন অনেক স্বাধীন হইয়াছিল। তৈমুর গোষ্ঠীয় রাজারা তাহা পুনরধিকার করিয়াছিলেন, কিন্তু তাহা একে-নারে হয় নাই, বছকালে হইয়াছিল। অতএব আকবরের সিংহাসনায়োহণ কালে এই রাজ্যের কি অবস্থা ছিল ভদ্বিয়ে কোন জম না জল্মে এজন্য তাহা স্পাষ্ট করিয়া লেখা ঘাইতেছে।

যখন মহম্মদ তোগলক রাজা হইলেন তথন উভরে হিমালয় অবধি পূর্ব্ব পশ্চিমে সমুদ্র পর্যান্ত ভাবৎ দক্ষিণ দেশ পাঠান দিগের অধিকার ভুক্ত হইয়াছিল। কেবল রক্ষঃপুত রাজাদিগের রাজা ও উৎকল প্রদেশ আয়ুত্ত হয় নাই, এই সকল ক্ষেশ তদেশীর রাজারা রাজত্ব করিতেন। তদনস্কর বঙ্গদেশের রাজা প্রথমতঃ দিলীশরের অধীন নভা পরিভাগে কবিষা সাধীন হইলে, ক্রমে অন্যান্য স্থান নেও ঐ বাভাগ উচিল। তৈলজ ও কর্নাটের হিন্দু রাজার। ঐ দুই রাজ্য উদ্ধার করিয়া, হায়দ্রাবাদে রুক্ষঃ নদী পর্যান্ত মুশলমানদিগের যে ২ রাজ্য চিল ভাষা অধিকার করি-লেন, এবং উত্তরে অরঙ্গল ও দক্ষিণে বিজয় নগর স্থাপন করিলেন। ভাষার পর দক্ষিণ দেশে যে সকল মুদলমানের। হিলেন ভাষারা রাজভোষী হইয়া নন্মদা পর্যান্ত সকল রাজ্য অধিকার করিলেন। ন্ম্মদার দক্ষিণে দিলীশ্বের কোন প্রভুত্ব রহিল না।

মহম্মদ তোগলকের মৃত্যুর সময় পাঠানদিগের রাজ্যের স্বস্থা এই প্রকার ছিল। যথন তৈমুবলঙ্গ ভারতবর্ম আন্তন্মন করনে তথনও তাঁহাদিগের রাজ্য ভদবস্থায় দিল। তৎপরে মালহ ও গুজরাটের রাজারা স্বাধীন হইয়া বজিলন। তদ্বিদ্ধ জোয়ানপুর নামে আর এক হতন রাজ্য হাপিত হইল, গঙ্গার উত্তর অযোধন পর্যান্ত তাহার সীমা। তৈমুরলঙ্গ স্থানে প্রস্থান করিলে আরহ সকল রাজ্য একে একে রাজপ্রস্থুত্ব অমান্য করিলে আরহ সকল রাজ্য একে একে রাজপ্রস্থুত্ব অমান্য করিতে লাগিল, স্কুতরাং দিলী রাজ্যের সীমা কেবল এ নগরের ক্যেক জোশ ব্যাপিয়া রহিল। তদ্বিদ্ধ অন্য স্থানে দিলীশ্বের কোন ক্ষতা রহিল না।

দ্দিশ দেখে হোসন গজু সামে এক প্রাহ্মণ যে রাজ্য স্থাপন করেন ভাহা ভাঁহার স্কানের ১৭০ বংশর পর্যান্ত

ভোগ করেন। এই রাজারা অরঙ্গল ও বিজয়নগরের হিন্দু রাজাদিপের দহিত অবিশ্রান্ত যদ্ধ করিয়াছিলেন, ভাহা-च्यातङ्गलनभातः अटकवाट्यः । आर्थः, अवर विकासनभारत्यः অন্তঃপাতি ক্লফা ও তবুলা নদীর মধাবর্জী যাদতীয় দেশ ভাঁহাদিগের অধিকার ভ্তত হয়। অবশেষে এই রাজো ধর্মবিরোগ উপস্থিত হইন। তাহার কারণ, ঐ দেশে দো-भन, পाठान, जुर्की, পाउमी ও अन्याना जाठीय अपनक মুদলমানের। বাস করিত, ইহাদিগের মধ্যে সিয়া ও মুনি তুই মতাবলধী লোক ছিল। পার্দ দেশীয় লোকের। প্রায় সকলে সিয়া, আরু জাতীয়েরা অধিকাংশ সুঞ্চি ঐ সকল লোকের ঔরসজাত তদ্দেশীয় যে সকল মনুষ্য ঐ দেশে সৈনোর কর্মা করিত ভাছারা সকলে সুলি মতা-বল্মী, সিয়া মতাবল্মী দিলের সহিত তাহাদের সর্বদা বিবাদ বিসম্বাদ হইত। যে প্র্যান্ত রাজার। স্বল ছিলেন সেপর্যান্ত এই সকল বিবাদে রাজ্যের কোন বিত্ন হয় নাই। কিন্তু যথন রাজাদিগের বলহাস হইতে লাগিল, তথন इफ़ेमफ् आफिल थे। नाटम मिसा मुखावनही धक खन कुकी विशक्त मन्द्रक आवन मिथिया, श्रीय मनवन महेया आंशनि विकासभूदर याहेगा अक सांधीन जाका जाशन करियान। ঐ রাজ্যে তাঁহার বংশীয়েরা রাজত্ব করিছে লাগিলেন।

ইহার কিছু দিন পরে কাণীম বারীদ নামে এক জন ভুকী অপর দলাধিপতি নিগোমউলমুলককে হত্যা করিল, ভাহাতে ঐ দলপত্তির ইজ আহম্মদ রাজভোহী হইয়া আপনি আর এক রাজ্য স্থাপন করিলেন, ভাহার রাজ-ধানীর নাম আহমদ নগর হইল।

নিজামতিলমুলকের মৃত্যুর পর কাশীম বারীদের অভুল পরাক্রম হইল, তাহাতে তিনি রাজাদিগকে প্রতিমৃত্তি শ্ব-রূপ রাখিয়া আপনি রাজ্যের সর্ক্রময় কর্তা হইলেন। তাঁহার মৃত্যুর পর ভদীর পুত্র আনীর বারীদ পিভার কর্মে নিযুক্ত হইলেন। কিন্তু পরকীয় কার্যো সম্ভোধ বোধ না করিয়া শ্বং রাজ্যেশর হইব এই বাসনার তিনি বামন রাজ্য দাংস করিয়া আপনি বিদরে আর এক রাজ্য স্থাপন করিলেন। ঐ স্থানে ভদ্ধংশীয় বারীদেরা রাজ্য করিতে লাগিলেন।

ইহা তিম কথকলী নামে আর এক জন জুর্কী গোলক-নাতে আর এক রাজধানী করিলেন, এবং ইমানউলমূলক নামে মুসলমানগর্মাবলম্বী এক হিন্দু বেরারের মধ্যে ইলিচ-পুরে আর এক রাজা স্থাপন করিলেন।

এই প্রকার অনেক ফুতন রাজ্য হইল। নব্য রাজারা পরস্পর এবং নিকটন্থ হিন্দু রাজাদের সঙ্গে সর্কাদা যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। অনন্তর সকলে মিলিত হইয়া বিজয়-নগরের রাজার বিরুদ্ধে অস্ত্র ধারণ করিলেন। তাহাতে কথানদীর তীরে ভালিকোটের নিকট এক ঘোরতর মুদ্ধ হিং ১০০ হইল। এ মুদ্ধে বিজয়নগরের রাজার কু ১৫০০ সকল সৈন্য ছিল তিল, তিনি আপনি রগবদী ও হত এবং তাঁহার রাজ্য একেবারে ধ্বংস হইল। কিন্তু বে সকল রাজারা পাকচক্র করিয়া তাঁহার রাজ্য নই করিলেন তাঁহাদের বিশেষ উপকার ছইল না। বিজয়নগর ভল্ল হইলা অনেকগুলি ক্ষুর রাজ্য হইল। এবং পোলকদার রাজারা অরঙ্গন ও কণাট জয় করিয়া পানার নদী পর্যান্ত আপনাদের রাজ্য বিস্তার করিলেন।

ক্ষান্ত্ৰী হাজা বড় বিস্তৃত ছিল না। কিন্তু এ দেশক রাজারা মালব রাজ্য জয় করিয়া ঐ দেশ আপনাদের অ-ধিকার ভুক্ত করিষাছিলেন। এবং রজ্পুত্দিগকে সর্বাদা মুদ্ধে পরাত্তব করিতেন। তদ্যি খাদেশে তাঁহাদিগের আদিপতা চলিয়াছিল, এবং নেরার ও আহম্মদ নগরের রাজারা তাঁহাদিগের আজাকারী ছিলেন। অধিকত্ব এই রাজারা পৌর্ভূণিষ লোকদিগের সঙ্গে সর্বাদা সমুজ্রযুদ্ধ নিমৃক্ত থাকিতেন। এই সকল কারণ প্রায়ক্ত দক্ষিণ প্রদেশ শে মুসলমানদিগের যত রাজ্য ছিল তল্লপ্যে জজরাটকে লাধান বলাযাইতে পারে। বজ্পেশ গুজবাট হইতে আরো বিস্তৃত ও ধনাত্য বটে, কিন্তু এতদেশীয় লোকেরা নিভান্ত বীর্যাহীন, তাহাতে এই দেশ গুজরাটের ন্যায় খ্যাভ্যাপন হইতে পারে নাই।

দক্ষিণ দেশ ভিন্ন আর ২ যে সকল হিচ্ছুরাজ্য তৎকালে ছিল এবং জদাপি বর্ত্তমান আছে, রজঃপৃত জাতীয়ের। ভাহার রাজা। এই রজঃপুতেরা কল্রিয়-বংশোদ্ধর এবং অতাক বীর্যাবান। মুসলমান রাজারা যে সকল রজঃপৃত-রাজ্য পরাক্ষয় করিয়াছিলেন তিক্ত রজঃপৃত্তরা অন্যান্য

লোকের ন্যায় ক্রবি কর্মা করিয়া দিনপাত করিত। কিন্ত সিক্ষু ও যমুনাৰ মথাক্ত বিশ্বা গিরির উত্তরে দিলীর রেখা পর্যাস্ত রক্ষঃগুতদিগের যে সকল রাজ্ঞা ছিল ভাহাতে মুসলমানের। দন্তফুট করিতে পারে নাই। তক্তর রাজারা শ্বাধীন ভাবে ছিলেন। এই চতুঃগীমাবদ্ধ স্থানের মধ্যে মক্রভূম ও আরাবলী পর্মত আছে। এ পর্বাতের পূর্ম উত্তরে **भिड्यांड, अग्र**भूत, आक्रमीत, श्राहाडी, भिनाह, हुल्मन-থও, মালব, এই কয়েক প্রদেশ আছে। ভ্রাধ্যে ফিবার প্র-मिटम क्यापुत, **आजभीत,** जिमसपूत, ५ हिट्छाटतच छूर्ग; কালিঞ্চরের তুর্গ। ইহ। তিন্ন রিক্তাদর গোয়ালিয়র ও আরহ অনেক হুৰ্ণ আছে তাহা অতি চমৎকার ও দুট। আর্-বলীর পশ্চিম যে রজঃপুতরাজ্য ভাহার নাম মারওয়াড়, তমধ্যে যোগপুর যশলমীর ভিকানির প্রভৃতি কয়েক স্থান আছে। এই সকল স্থান বাল্কারণোর মধ্যে। বালকাতে **এই मकल दिमारक उका करत, अर्थाय वालकात उराम के** অঞ্চলে প্রায় লোকের গতিবিধি হয় না, তাহাতে ঐ স্থানবাসী লোকদিগের শক্রশক্ষা প্রায় ছিল না। মুতরাং মুসলমানেরা ঐ সকল দেশ জয় করিতে পারেন নাই व्यक्तिति शुद्धं ते अकल तार्थ हिल डाइटिड सूगमगान-দিপের গমনাগমন হইত তত্ত্ব রাজারা কখন প্রাজিত কলন করাধীন হইতেন, কিঃ আক্রবের রাজ্য কালে ইহারা সকলে স্বাধীন ছিলেন/।

ঁ আক্বরের রাজ্যারস্ক কালে মুসলমান রাজ্যের এই অবস্থা ছিল। আক্বর রাজা হইয়া রাজ্যশাসন ও প্রজা পালনের যে সকল সুনিয়ম করিয়াছিলেন তাহা পরে প্রকাশ হইবে। উাহার রাজত্বকালে যে সকল ঘটনা হইয়াছিল তাহাই সম্পতি লেখা যাইতেছে।

यकेषिम खधार

অক্রর।

যথন আকবর বিংহাসনারেহণ করিলেন তথন টা
হিং ৯০০ হার চতুর্মণ বৎসর ব্যঃক্রম। এই ন্নীন

গু ১৫৫৬
বয়দে তাঁহার সাহস ও বিচক্ষণতার কিছু
মাত ক্রটি ছিল না, তথাপি হোমাধুনের আজ্ঞা ছিল তিনি

যেপর্যান্ত বয়ঃ প্রাপ্ত না হইবেন সেপর্যান্ত বহরাম থা
রাজকর্ম্ম সম্পাদন করিবেন। সুত্রাং ঐ ব্যক্তিই রাজ্যোর
কর্ম্মকর্ডা ইইলেন।

বছরামের জন্মতান তুর্কভান। তিনি যৌবন কালাবণি হোলাযুনের সঙ্গেই জ্বন্দ করিয়াছিলেন, এবং আকররেরও গুড়ারুধাায়ী ছিলেন। কিন্তু তিনি অত্যন্ত দান্তিক ও কর্কশভাষী, এবং সকলকে তুল্ছ তাল্হলা করিভেন, ইহাতে প্রথান পক্ষ তাবং লোক তাঁহার প্রতি বির্ভ্ত ইইলেন। অধিকল্প, তার্দীবেগ নামে হোলাবুনের অতি বিশ্বাসী এক দৈন্যাধ্যক্ষ দিল্লীনগরের কর্মকর্তা হইয়াছিলেন, হেনু বুলার্থ উপস্থিত হইলে তিনি নগর পরিত্যাগ করিয়া প্রায়ন ক্রেন। এই অপরাধি তিনি তাঁহার প্রাণদণ্ড করিলেন, আকবরকে একটী কথাও জিজাসা করিলেন না আর এক জন প্রধান লোক তাঁহার অভিপ্রায়ের বিপরীত কর্মা করিয়াছিলেন ভাঁহাকেও তিনি খড়রমুখে অপণ করি-লেন। ইহাভিন রাজগুরু পীর মহম্মদেরও প্রাণদও করি-তে উদাত হইয়াছিলেন, তিনি নক্ষা গদন করিয়া কেনি প্রকারে রক্ষা পাইলেন।

বহরামের এই বকল কর্ম দেখিয়া প্রধানপক্ষ সকলের

মনে অতান্ত ত্রাস জন্মিল। আকবরও দেখিলেন বহরাম

উহিচ্চে প্রতিমূর্তির ন্যায় বাখিয়া আপনি সকল কর্ত্র্য
করিতেচাহেন। অতথ্য কতকগুলিন আত্মীয় লোকের

সহিত পরাসর্শ করিয়া এক দিন মুগয়াছলে বহির্গত হইয়া,
পর্মারিণীর পাড়া হইয়াহে তাঁহাকে দেখিতে মাইতেছি,
এই কথা বলিয়া তিনি দিল্লীতে যাত্রা করিলেন। তদনস্তর,
এক খোষণা দিলেন তিনি শ্বয়ং রাজকর্ম সম্পাদন
করিবেন, অতথ্য হাহার যে প্রার্থনা পাকে তাঁহাকে

জানাইবে, আর কাহাকে জানাইবে না।

এই আজে প্রকাশ হইলে বহরামের চক্সু বিকসিত হইল। তিনি দেখিলেন আকবর তাঁহাকে অবিশ্বাস করি-য়াছেন। বহরাম পুনর্কার রাজারপ্রহে প্রতিষ্ঠিত হইবার চেটাকরিতে লাগিলেন। কিন্তু সে চেটা বিফল হইল, আক-বর জাঁহাকে বিশ্বাস করিলেন না। বহরাম প্রথমতঃ মনে করিকেন আকবর যেমন অবাধ্য হইলেন আমি বলপ্রের্কক মালবঞ্জনেশ অধিকার করিয়া সাধীন হই। কিন্তু পরে বিবেচনা করিয়া দেখিলেন সে কর্মা উচিত নহে। অতএব সে অভিপ্রায় ত্যাগ করিয়া নগরে যাত্রা করিলেন। তথা হইতে ওজরাট দিয়া মন্ত্রায় যাত্রা করিবেন এই চিস্তা করিতেছেন এমন সময় আকদর ভাঁহাকে কর্মচ্যুত করিয়া পত্র নিথেলেন ভাম মন্ত্রা গমন করা বছরাম এই আজ্ঞা পাইয়া, নিসান ডক্ষা প্রভৃতি মর্য্যাদার যে যে জ্ব্যাদি ভাঁহার স্থানে ছিল ভাহা রাজস্মিপানে প্রেরণ করিয়া গুজরাট যাত্রা করিলেন।

গুজরাটে উপস্থিত হইষা বহুরামের কেলন কুম্ডি হইল তিনি দৈনা যংগ্রহ করিয়া বলপ্রাক পঞ্জাব রাজা অধিকারের চেউ। করিলেন। তাক্তর অংগগৈ তথায় গমন করিয়। তাঁহাকে যুদ্ধে পরাস্ত করিলেন। বহুরাম তথন ভাঁহার পদানত হইয়া নানা প্রকার আর্ত্রনাদ করিতে লাগিলেন। আকবর যথোচিত সম্মানপূর্বক তাঁহাকে আপিনার দক্ষিণ ভাগে বসাইলেন। তালার পর সম্ভব স্থাক পরিছেদ পরিধান করাইণ। জিজাগা করিলেম, একটো তোমার কি অভিলাম, যদি রাজ্যসুখের বাঞ্চা হয় বল ভৌমাকে কোন বুহুৎ রাজ্য শাসনের ভারাপণ করি-তেছি; যদি তাহা মনোগত না হয়, তবে আমার সভায় कि मिश्रीख कर्मा शहन करें। अने छीर्यनगरनर অভিনাৰ হইয়াথাকে ভাহাতে আমার আপতি নাই, इमि बङ्गा भगने कता। आह्कात वा मिश्वटवछन। अध्यक्ष হউক বছরাম রাজ্যাতিলার না করিয়া মন্ত্রাগননের বাসন্

कानाहरणन । जारांटल आंकवर ठाँशात भगेन । जत्म भाषांच्य निभिन्न बर्धाहिल द्रखि निर्माणिक करिया पिरसन । जममञ्जत वहत्ताम एकदीर पाँचा करिरणन, किन्न भी जान हहेटल भगन जाराकारताह्म करिरन भी मन्दर भक्कन भागिन जारांदक वध करिल । वहताम भी गालित भिजारके पुरस्त वध करियाहिएलन स्मेह जारकार्य भी वालित भी कर्या करिल।

रुमनखत्र अधीमन दरमत देशः कृत्म, आकरत मन्छ রাজ্যের ভার গ্রহণ করিলেন। তৎকালে রাজ্যে কেসন গোলবোগ ছিল ভাষা বলিভে পারাযায় না, বিচার ও রাজকর্মের কিছুমাত শুখালা ছিল না। ভিনহ তানে যে যকল দৈন্যাগাক নিযুক্ত ছিলেন ভাহারা নিভাত অবাধ্য এবং নিয়ত যুদ্ধ ছল্বে নভ থাকিতেন, তাহাদি-गटक भौगदम तीथिया श्रकाशायन ও वावसामि गए-শোধন, ও অপহত রাজা উদ্ধার করা বড় সহজ কর্ম নহে; বিশেষভঃ ভাঁহার আয় অধিক ছিল না, কেবল পঞ্জাব দিলী ও আগ্রার রাজস্বের উপর নির্ভর। অধিকন্ধ ভাঁহার महार प्रका रेमना जानिशाहिन छोटाहा धक्छारनत लाक मत्र, जित्र शांन श्रेट्ड लोडोन्ट्राटर शांगियांडिन. রাজার নিভান্ত ভভারুগারী ছিল না। ইহাতে সকল मिक प्रका कतिया कर्मा कहा कमन कंठिन छाटा विनवात अदशका करत मा। किन्दु जीकरत मामाना भन्नेरा हिटलन ना, डाहांब रिमा। दुवि ठठुत्रका ও অতি অসাধারণ কমত।

ছিল, তাহাতেই তিনি সকল বিষয়ে ক্লতকাৰ্য্য হইছেন। অন্য কোন ব্যক্তি হইলে সে ক্লপ কদাচ হইত না।

रा वरमत संक्रित जाशन इस्ट हाकाचात बहेरनम. সেই বংসর সুলভান নহম্মদের এক পুত্র বহু সন্ধাক টেমনা একত করিয়া **ज्**यान भूदत ताजविद्यार आतम् कतिदलन । आकरत् खे বিজ্ঞোহ দমন জনা এক সেনাপতি প্রেরণ করিলেন. ঐ সেনাপতি মহম্মদকে পরাজয় করিলেন। কিন্তু অনেক লঠিত ধন প্রাপ্ত হইয়া রাজ্ঞার প্রাপ্তা অংশে ভাঁছাকে বঞ্চিত করিলেন। আকবর এ সংবাদ পাইয়া সমুৎ मरेभरना योहेशा छै। होद गर्य थर्य क्रिट्निन । जन्म छत বাজবাহাত্ব নামে মালবের কর্দাক্রী রাজতোহী হইলেন। आमग्र थे। नाटम आकडदत्रत एक देनमाधाक उथाय ग्रहिया বিজ্ঞোহ দমন করিলেন। কিন্তু তাহার পর আপনি অভ্রধারী হইবার উপক্রম করিলেন, আকবর তাহা শুনিয়া ব্য়ং তথায় উপস্থিত ইইলেন, তাহাতে ঐ সেনাপতি আর কোন উপদ্র করিতে পারিলেন না।

আকবর সকল কর্ম্যের নিয়ম নির্দারিত করিয়াছিলেন, এবং নিয়ম পালনের প্রতি বিশেষ কটাক্ষ রাখিতেন, হিং ১৭২ নিয়ম উল্লেখন করিলে কাহাকেও ক্ষমা ও ১৫৯৬ করিতেন না। ইহাতে উজবক জাতীয় সেনাপ্রভিগণ অত্যন্ত বিরক্ত হইলেন। বিশেষতঃ ভাহা-দিপের প্রতি তাঁহার পিতা। ই ও পিতার নিতান্ত ছেব ছিল, কি জানি সেই ছেম প্রয়ক্ত তিনি যদি ভাহাদিগের প্রতি বেষ কর্মেন এই আশেক্ষায় তাহারা সকলে অস্ত্র ধার্ণ করিল। 'সাব'হ অনেক প্রপান লোকও তাহাদের সহিত মিনিল। এ সময়ে নর্মাদার তীরে গরা নামে এক द्धारम এक हिन्छू, भन्नाक्रमनानिभी ज्ञानी क्रिल्लन । ज्यांक-রর উঁহেরে দমন জনা আসেফ গানামে একজন সেনা-পতিকে ভোরণ করিয়াছিলেন। আসক খাঁ উপস্থিত হইলে এ রাণী স্বাৎ দৈনা সামস্ত আইছা তাঁহার সহিত शुक्त कवित्यान, किन्द्र अन्दर्भाषा উश्लिद समामक्या श्रमाश्रम করিল, এবং তিনি আপনি আঘাত প্রাপ্ত ইইলেন। ভাহাতে নিরূপায় হউষা অপমানের ভায়ে সমূৎ বক্ষেদেশে থজ্বাদাতপর্যক প্রাণভাগে করিলেন। রাণীর মৃতার পর তাঁলার সম্প্র সম্পত্তি আমফের হতে প্রতিল। আস্ফ ভাছার লোভ সমরণে অক্ষম হ**্যা ভি**ক্তবক্দিগের **সহিত** चिकिटलम ।

এই প্রকার চতুনিলে বিজোহ উপত্তিত হইল। আকবর

ছই বংশব গতিপ্র করিয়া ভাহার শান্তি করিলেন। তদ
নন্তর, হাকিন নানে তাঁহার যে প্রাতা কাবুলে রাজা হইয়া
ছিলেন ভিনি পঞাব রাজা লাজনণ করিলেন, ভাহাতে

আকর্য প্রথং তথায় গন্ন করিলেন। ঐ দ্যান এতদেশীয়

শুজুন্দ সানং ভাবল হইয়া রাজা লাইবার মন্ত্রণা করিতে

লাবিল্ন আকব্য পঞার হইতে আদিয়া ভাহাদিগকে

ব্যাত ক্রিটা ভ্রিলেন যে ভাহাতে ভাহারা একেবারে

গঙ্গাপার পলায়ন করিল। আকবর তাহাদের পশ্চাৎ২
গঞ্গাপর্যান্ত অনিবেলন। বিদ্রোহীরা মনে করিল বর্ষারস্ত ।
হটার নদী করি বরণবাদী হইয়াছে, বর্ষা শেষ না হইলে আকবর নদী পার হইছে পারিবেলা। কিন্তু তিনি ভাহার অপেকানা করিছা এক দিবন সন্ধারে পর ছই সহজ্ঞ সেনা সমন্তিব্যাহারে, গভ্রেণ পূর্বক নদী পার হইয়া, গোপন ভাবে থাকিলেন। রাজি প্রভাত হইবামাত অকন্মাৎ বিদ্যোহীদিগকে আকম্য করিলেন। এ আক্মাণ শক্তপণ ছিল ভিন্ন হইয়া যে ধেদিপে পাইল সেই বিদ্যা পলায়ন করিলে।

এইপ্রকার আক্রর ধকল আনাগা প্রধানদিগকে বদীভূত করিলেন। তথন জাঁহার বয়ংক্রম ২৫ বংবর
ভি ১৭৫ মান্র। তৎপরে তিনি বাজা রফির
থ ২৫৬৭৮ কিন্তা জার্ম করিয়া, প্রাণ্যতঃ মার্থযার অন্তর্গত নির্তার প্রর্গ জয় করিয়া, প্রাণ্যতঃ মার্থযার অন্তর্গত নির্তার প্রর্গ জয় করিলেন। পরে চিতোরের
রাজা উদয়সিংহের প্র্গ আক্রমণ করিলেন। উদয়সিংহ
নকার পুত্র, তিনি শান্তস্বভাব জিলেন, অভ্যুব যুদ্দে
প্রেক্ত না হইলা জয়মল নামে এক মহাবল সেনাপতির
হল্তে প্র্র্গ সমর্পণ করিয়া আগনি গুজরাটে পলায়ন করিলেন। আক্রর স্থির করিলেন বারুদ দ্বারা প্রাচীর ভেদ
করিয়া প্রর্ণ প্রবেশ করিবেন, এনিমিত প্রাচীরের নীচে গুই
স্থানের স্থৃতিকা খনন করাইয়া তন্মধ্যে বারুদ প্রিয়া
প্রক্রেয়ের স্থৃইস্থানে অগ্নি দেখ্যাইলেন। কিন্তু একস্থানের

বারুদ পরিয়া কতকটা প্রাচীর ভগ্ন হইল, দ্বিতীয় স্থানে অগ্নি পরিল না, ইহা দেখিয়া সেনাগণ ভগ্নস্থান দিয়া প্রাচীর আরোহণ করিতেলাগিল। ইতি মধ্যে দিতীয় স্থানের বারুদ হঠাৎ প্রজ্বলিত হইয়া তাঁহার অংনক সেনা হত ও আহত হইল। যাহাহউক সেই ঘটনার পর ভূর্দ বেইন করিয়া থাকাই সংক্ষা বিবেচনা করিয়া, ভূর্ণের চতুর্দিগে প্রহরী নিযুক্ত করিলেন।

তদনমূর আফবর এক দিবস বাতিকালে উটিযা দেখি-लन अदनक दाङमञ्जूद मनान जानाहेश उथ आहीत. পুনঃ সৌষ্ঠর করিতেছে, এবং জয়মল তাহাদিপের মধ্যে থাকিয়া কোখায় কি করিতে হইবে তাহা দেখাইয়া দিতে-ছেন। এতদবলোকনে আকবর লক্ষ্য শুদ্ধ করিয়া ভাঁছাকে এমত গুলি মারিলেন যে তাহাতে তিনি দেইখানেই শয়ন कविशा महानिज्ञाश्राश्च इटेटनन । এই घर्षनाट्ड प्रर्ग-রক্ষক সেনাগণ ভূল্মোদাম হইয়া ছূর্ণের থাবভীয় নারীগণকে জয়মলের অলম্ভ চিতাতে নিক্ষেপ করিল, পরে আপ-नांत्र (मदमन्दित व्याधार कदिशा थे किल, पूर्वदकांत (कान বত্ব করিলনা। আক্ষর ভূর্ণ প্রবেশ করিয়া প্রথমতঃ দুর হইতে আগ্নেয়াক্ত বর্ষণ করিতে আজা দিলেন, ভাহার পর তিন শত রণমাতজ ছর্গের মধ্যে ছাড়িয়া দিলেন, 🔌 সকল সাতজ পতজের ন্যায় কাহাকে চরণে মর্দ্দন কাহাকে श्रद्ध डिट्डानन कतिया मध्यात कतिरू नामिन। এই

খি ৯৭৫) প্রকার ৮০০০ লোক একবারে ইত খু ১৫৯৮ মার্চ ইল। আকরর ভাষার পরে সচ্চদে তুর্গ অধিকার করিলেন।

উদয়সিংই বহু দিবস পলাইয়। পাকিলেন। পরে তাঁহার পুত্র প্রতাপসিংহ অনেক মুদ্ধাদি করিয়া পৈতৃক রাজ্যের কিয়দংশ উদ্ধার করিয়াছিলেন। অনস্তর তিনি উদয়পুর নানে এক কতন রাজ্যানী শাপন করেন। ঐ ভানে ভাঁহার উত্তরাধিকারীপণ অদ্যাপি রাজস্থ করিতে-চেন।

পর বংশর আকবর বিস্তায়র ও কালিজবেন মূর্ণ তার করিলেন। তৃৎপরে আরহ অনেক রজঃপুত রাজাদিগের সম্প্রের প্রাপ্ত করিলেন। তাহার কোললে জনেক রাজাকে বলাজুত করিলেন। তাহার কারণ, তিনি জয়পুরের রাজা বহরমলের কন্যার পাণিগ্রহণ করিলেন, তদনস্তর মারওয়ার হাজার কন্যার পাণিগ্রহণ করিয়া, জয়পুরের রাজপরিবারশ এক কন্যার সহিত আপানার জ্যেষ্ঠ পুত্রের বিবাহ দিলেন। ইহাতে অনেক হিন্দু রাজার মঙ্কে কুটুরিতা আরম্ভ হইল, এবং হিন্দুভার্যাদিশের গর্মজাত সন্তানেরা, মুমলমান জীর গর্মজাত সন্তানের ন্যায়, পিতার বিষয়ের অধিকারী হইতে লাগিজনা রাজাও তাহাদিগকে রাজ্যের প্রধান হর্মজিত লাগিজনা মুমলমান জীর গর্মজাত সন্তানের ন্যায়, পিতার বিষয়ের অধিকারী হইতে লাগিজনা রাজাও তাহাদিগকে রাজ্যের প্রধান হর্মজিত করিতে লাগিজনা। মুতরাৎ অনেক রজঃপ্রত

ভার আকাজ্জার ভাঁহার অনুগত ইইতে লাগিলেন। আক্তর অনেক রাজাকে এই প্রকার বশীভূত করিলেন, অধিক মুদ্ধ করিতে হইল না।

আকিবরের পরেও আর ক্ষেক জন রাজা এই পারাতে চলিয়াছিলেন, এবং হিন্তুরাজারা মুসলমান্দিগকে চ্ছিতা দান করিতেন। কেবল উদয়পুরের রাজা জাতাভিমান প্রযুক্ত একপ কুট্রিভা করেন নাই, বরং যে সকল রজঃ-প্ত রাজারা আকবরের পরিবাবে কনাাদান করিয়াছিলেন জীহাদিপের সহিত আহার বাবহার রহিত করিয়া-ছিলেন।

এবনিধ উপায় ছারা অনেক রাজাকে করন্থ করিছা আকবর গুজরাট জন্মের চেন্টা করিতে লাগিলেন। পাঠকের। অবগত হইয়াছেন, গুজরাট রাজা ইতিপুর্কের রাধীন হইয়াছিল। গুজরাটাগিপতি বাহাছর সাহের মৃত্যুর পর ভাঁহার ছাতুপ্পুত্র মহম্মদ রাজ্যেশ্বর হইয়াছিলেন। তিনি পরলোক গণন করিলে এত্যাদ খাঁ নামে ভাঁহার এক হিম্ফু ক্রীত দাস ভাঁহার পুত্র বলিয়া মজাকর নামধারী এক বালককে সিংহাসনে উপবেশন করাইয়া আপনি রাজকর্ম করিতে লাগিলেন। ইহাতে অনেকে ভাঁহার প্রতিবাদী হইল, বিশেষতঃ জলিশ খাঁ নামে এক প্রধান লোক ভাঁহার সহিত সংগ্রামে প্রক্রম্ভ হলিন। এই সংগ্রাম ১৫৭২ থ্টাক্র পর্যান্ত চলিল)। এত্রাদ যুক্তে অকম হইয়া আকবরের সহায়তা প্রার্থনা

করিলেন, আকবর অতি আগ্রহ পূর্ব্বক গুজরাটে যাত্র। করিলেন। তিনি গৈতানে উপনীত হইলে, মজাকর ভাঁহার, নিকট উপত্তিত হইয়া সমুদায় রাজা তাঁহার হস্তে সম্পূণ্করিলেন।

আকৰর ঐ বাজ্যের প্রস্তুত্ব প্রাপ্ত হইয়া অবাধ্য প্রধান निशरक अञ्चरता वांधा कतितार। ७९% त मसून्रकारे সৌরাট নগর আক্রমণ করিলেন। এই নগরে অনেক বিদ্রোহী একত হইয়াছিল, তাঁহার আগমনে ভাষারা ভথা इहेटा अकान कतिला। अहे मकल विद्यारी अनार निद्या-হীর সঙ্গে খিলিয়া দলকের নাহয় এজনা আকরর অগ্রহার হইলেন, কিন্তু ভাহা নিধারণ করিতে পারিলেন না। এক দিবৰ কেবল ১৫৬ জন টমনা লইয়া তিনি এক সহস্ৰ লোকের সন্ধাথে পড়িলেন, ইহাতে ভীত না হইছ। তিনি তাহাদিগতে আলমণ করিলেন। একর্মা অতি ছুঃমাহ্ম বলিতে হইবে, যেচেতু ইহাতে প্রাণ ঘাইবার আটক ভিলনা। তথাপি সং<mark>গ্রামে পরাজমুখ</mark> না হইয়া,তিনি একটা মুডি পথ আশ্রয় করিয়। অকুতে:ভয়ে তাহাদিগের মজে শুদ্ধ করিতে লাগিলেন। বিদ্রোহীগণ ভাঁহাকে প্রাভিদ ক্রিতে না পারিয়া অপেনারা পরাক্ত চ্ইয়া अञ्चान कहिल। अनस्रत आकरत भोताचे नगत अधिकांत করিকেন। তাহাতে তাবৎ গুজুরাট প্রদেশ তাঁহার अख्याधीन इहेत।

এই ঘটনার পর আকবর গাগ্রাতে প্রত্যাগমন করি-

লেন। কিন্তু একমাস অভীত না হইতে২ শুনিলেন হোসন মিৰ্জা নামে এক অবাধ্যপ্ৰধান ওছরাটে আদিয়া আহ-মাদবাদে তৎপক্ষ সৈন্যাধ্যক্ষকে আক্রমণ করিবার উদ্যোগ করিভেছে। যথন আকবর এই সংবাদ প্রাপ্ত হইলেন তখন ঘোর বর্ষা, প্রত্তর, অনেক গৈনা প্রেরণ করিতে না পারিয়া, কেবল ছুই সহত্র রুণদক্ষ অশ্বরেছী প্রের্ণ করিলেন। ইহারা এম্বানে উপস্থিতে না হইতে হইতে তিনি সয়ং তিন শত ভরলোক সমভিবাহারে উট্টা-বোহণে, এক এক দিবস চল্লিশ চল্লিশ কোন পথ গমন করি-য়া, অচিরাৎ তথায় উপনীত হইলেন। পারে একানে আর এক সহত্র অস্বাবোহী সৈনা সংগ্রহ করিয়া, সর্বস্বিতলা ৩৩০০ সৈনা লইয়া, আহমদাবাদে যাত্রা করিলেন। শক্ত-গণ ভাৰতে হঠাৎ লা স্থানে উপনীত দেখিয়া অভিশয় চমৎকৃত ও ভীত হটল। কানন্তর হোসন, তুর্গরকার্থ ৫০০০ প্রহরী রাখিয়া, ৭০০০ অমারোহী লইয়। ঘতে অগ্রসর হইলেন। আক্ররের নিশাস ছিল ছুর্ণের প্রছরী সকলে উঠোর পক হইবে, কিন্তু ঐ সেনাগণ টাঁহার বিপক হইল, তপাচ তিনি নির্ভয়ে স্থন্ধ আরম্ভ করিলেন এবং শক্রমেনা ভিন্ন ভিন্ন করিয়া সংগ্রাম জয় করিলেন। होगन আহত ও बन्ही इहेटनन ।

্ৰাক্ষর এত অপে দেন। লইয়া যুদ্ধ করিতে গিয়াছি-লেন, ইহা অপে বাহদের কর্ম নহে। আরো আশ্চর্য এই শক্তবেনা পলায়ন করিলে বিখন উচ্চার দেনাগণ ভাহা- মের পশ্চাৎ খাবমান হইল, তথন তিনি কেবলং ০০ আখারোহী লইয়া এক উচ্চ স্থানে দণ্ডায়মান ছিলেন। অসমত বিপক্ষণণ তাঁহাকে বেইন করিবার চেন্টা করিল। কিন্তু তিনি চুত্রতাপুর্মক রণবাদ্য বাজনের আজ্ঞা দিলেন। অবাদ্য শুনিয়া শত্যনাগের মনে হইল বুঝি অনেক রাজ-দেনা পশ্চাং আছে, এই ভাবিয়া সকলে পলায়ন করিল।
আকবর তথন ঐ দেশ অবাধায় গুনুর্ধিকার কবিলেন।

শুজুরাট ক্রয়ের পর আক্ষরর বেহার ও তল্পদেশের রগ-इटक मा इंटिन्स । इंजिश्टर्स (वहादि किप्रमर्भ पिती রাছা ভুক্ত হইয়াছিল, কিন্তু আদীল সাচের রাজ্য কাল অবধি বল্পদেশ পাঠানদিলার হস্তগত হয়। ভাদবর্গি তাঁহারাই তপায় রাজত্ব করিতেভিবেন। সম্পৃতি দাউদ খাঁ ঐ দেশের রাজা হইযা ছিলেন। তিনি অত্যন্ত চুকল ध लम्भने फिटनन अकना डीहाद मछीरे मकत कर्या निर्माह করিতেন। ক্রমে এ মন্ত্রী অতান্ত প্রথল হইদ। উচিলেন। ভাষতে দাউদ থা উত্তরকালে রাজ্য নানের আশস্কায় ভাঁহার প্রাণদত্ত করেম, এই কারণে মস্ত্রীর আগ্রীয় গণ **শব্দে রাজ** নিরু**দ্ধে অন্তর্**ধারণ করিল। স্থাতরাৎ রাজ্যের मत्या नाना त्यान छेशिख्छ इहेन। अहे सूर्यात्य आक-বর দাউদ ধার স্থানে এক অস্কীকারণত্র লেখাইয়া লই-লেন ভিনি ভাঁহাকে কর দান করিবেন। কিছুদিন পরে माजेन थे। वे अज़ीकांत अज कतिद्वान । जाशास्य निर्वा-म्ब्र क्वला उ रहेगा, आंक्वत विश्वतिष्ठ जनलाल प्रशासका- রোহ পূর্বক বন্ধদেশে বাত্রা করিলেন। দাউদ কাঁ তাঁহার আগমনে রাজধানী পরিত্যাগ করিয়া দক্ষিণ প্রদেশে পলায়ন করিলেন। তাহাতে আফবর রাজা ভোড়ল্-নল্কে বন্ধদেশ জয়ের ভারার্পণ করিয়া আপনি আগ্রাতে প্রভাগমন করিলেন।

রাজা ভোড়ন্মল আকবরের রাজস্ব সম্পর্কীর কর্মকর্জা ছিলেন। তিনি অতি বিচ্ছণ এবং গুলকর্মেও সুপাওত, কিন্তু বঙ্গদেশ ঘেমন সহজে জয় করিবেন নানস করিয়া-ছিলেন ভাষা পারিলেন না। ভাষার কারণ, দাউদ ধাঁ পলায়ন করিয়াও বাজনেনাদিগকে চুইবার পরাজিত ও ছিন্নভিন্ন করিলেন। তৎপরে ধখন তিনি আপনি পরাজিত হইলেন তখনও তিনি আপনার পরাজম ভি: ১৮০ চাডিলেননা, উড়িয়া অপিকার করিয়া খ ২০০০ থাকিলেন। ভোডন্মল এ প্রদেশ জাইতে না পারিয়া কেবল বঙ্গদেশ অধিকার করিলেন।

এই বাপোরের পর রাজা তোড়লাল ও আরু ইসন্যাখান্দেরা ভাগ্রাতে প্রত্যাগদন করিলেন, বল্পদেশে কেবল
ক্রেন্সন কর্মকর্তা রহিলেন। এই ব্যক্তি গৌড়রাজগানাতে যাইয়া অচিরে পঞ্চ প্রাপ্ত হইলেন। আকবর
ভাগার মৃত্যু সংবাদ পাইয়া আর একজন কর্মকর্তা নিযুক্ত
ক্রিয়া পাঠাইলেন। কিন্তু তিনি কর্মক্রে পদার্পন না
ক্রিটিডেই দাউদ থা সুনর্কার বস্তদেশ অধিকার করিলেন।
ক্রিটিডেই দাউদ থা সুনর্কার বস্তদেশ অধিকার করিলেন।
ক্রিটিডেই দাউদ থা সুনর্কার বস্তদেশ অধিকার করিলেন।

হত হইলেন । তাহাতে বেহার ও বলদেশ দিলী রাজ্য-ভূকে হইল, এবং এই ছই প্রেদেশে পাঠানদিগের আধি-পত্য একবারে ঘূচিল।

রাজা তোড়লাল রাজ্যের কর্মকর্তা ইইলে রাজফ্র বিবয়ে বড পুঞ্জালুপুঞ্চ ইইতে লাগিল। তিনি বস্তুদেশের
কর্মকর্তাদিগকে লিখিলেন সমুদয় রাজ্যের জনা ধর্

এবং ব্যয়াবশিষ্ট রাজফ রাজভাগুরে জেরণ করিবে,
আর জায়গীরভোগী ব্যক্তিরা দৈন্য সামন্ত রাথিয়া
হিং ২৮০ রাজকার্যা নির্বাহ করে কি না, তাহাব
আরু করিয়া, আজ্ঞা দিলেনু
ক্রেন্ ব্যক্তি ক্তেনিনারাথে তাহার তালিকা পাঠাইবে।
এই আজ্ঞায় অভিনব কর্মকার্দিগের একেবারে চক্ষুংশ্বির

হইল। উহারা দৈনা সামন্ত কিছুই রাখিতেন মা, বাহা পাইতেন সকলই আপনাদিগের উদরে দিতেন, হিসাব দিতে মা পারিয়া রাজবিক্তকে অস্ত্র ধারণ করিলেন।

व्याकरत (मिंबटलन वज्रटमण अध करा मिथा। इटेन, কর্মকর্তাদিগকে বশীভূত করিতে না পারিলে সংব্রেব বি-कल, অতএर পুনর্কার সৈন্য প্রেরণ করিলেন। ইহাতেও কোন ফল দশিল না। অভএব তিনি ভোড্লালকে পুন-র্মার পাঠাইলেন। ভোড়জাল ভয় দৈত্তা প্রদর্শন পূর্মক হিম্মুভূমাধিকারিদিগের সহিত এক প্রকার বন্দোবস্ত করি-बाद উদ্যোগ कदिएलन। किन्छ दासमञ्जी दह आकारका করিয়া অধিক কর স্থাপনের আজ্ঞা দিলেন। এই আজাতে विद्यारी वाजीखंड व्यत्तरक शनांखक रहेन। रंडाफ्लान তিন বৎসর পর্যান্ত থাকিয়া কিছুই করিতে পারিলেন না। অনন্তর আজিজ্ থাঁ নামে আর এক ব্যক্তি তাঁহার কর্মে नियुक्त रहेशा आंत्रितन । তिनि काशांक अर्थ पिशा ্কাহার রুত্তি সুস্থির রাখিয়া, বিরোধ ভঞ্জন করিলেন। क्षममञ्जूत बोककत बीजिमक मध्यार रहेटक माणिन। त्यां भरत्यां विष्णाद काल दहिन।

এই বিরোধের সময়ে দাউদ থাঁএর পারিষদ লোকের।
শ্বর হইয়া ছিল এমত নছে। মোগলের। বঙ্গদেশে
বিজ্ঞাহ আরম্ভ করিলে, তাহারা কড়ু নামে এক প্রধানের আক্রম কইয়া উৎকল প্রদেশে অক্রধারী হইল।

তিং ২৯৮ \ এবংউড়িয়াও ভছুভর বর্দ্ধনানের সালিপা প ২০২০ \ দানোদর পর্নাস্ত সকল স্থান অপিকার ৰবিল। এই বিজেছি শান্তি জন্য আক্ৰৱ মানসিংককে এপ্রেণ করিল। মান্সিশ্ছ আক্ষরনের ট্রন্ট্রক, প্রের্থ কাবলের কর্মকভা ভিলেন, তিনি বস্তুদেশে উপভিত হউলে পর বর্ষা আরম্ভ ইল। তাহাতে যুদ্ধের ব্যাগাত প্রযুক্ত, সম্পতি যে ছানে কলিকান্ত। ইইয়াছে তিনি তথান অৰম্ভান কৰিলেন। ইতিপুকে তাঁছে র পুত্র ভাষে গুলিন देसना लहेश: विद्यारीपिट पत मध्य गुफार्थ भगत किएए-**फिल्मन, डिनिड** रश्वकी इहेटनगा। देशहरू गुक्त करपत <mark>বিষয়ে আরও বাখাত হটল।</mark> কিছুনিন পরেট **ক**তু পর-लांक भगन कहिरलम, धवर हेर्य मार्ग धक छ। मवान ব্যক্তি তাঁচার পুত্রিগের অভিতাবক হইলেন। সাল-সিংহ ভাঁহার সহিত এই ধার্য করিবেন উদ্ভিন্য এদেশ **কতুর পুত্রদিগোর থাজিকে, উচি**টে। দিলীখরকে কিছুৎ क्रक्रमान कदिद्वम ।

এই প্রকার সন্ধির্মন হুইয়া সকল বিবাদ শেষ হইল :
কিন্তু ভালার ছুই বংসর পরে ইজা পরনোক গমন করিলে,
তৎপরিবর্তে যে ব্যক্তি কড়ুর পুত্রগণের রক্ষক হুইলেন
ভিনি গজনাথ দেবের মন্দিরের রাজ্য গ্রহণ করিছে লাগিলেন। ইহাতে ভাঁহার জনান্ত অয়শ হুইল, এবং
আক্রর পুনর্কার মান্দিংহুকে পাঠাইলেন। মান্দিংহু
আনিয়া ঘোরতর যুদ্ধ আরিষ্ক দ্রিলেন, ভাহাতে পাঠা- নের। পরাস্ত ইইয়া কটকে পলায়ন করিল, এবং নিভান্ত ব্রিয়মাণ হইয়া থাকিল। কিয়ৎকাল পরে (১৬০০ খৃষ্টাব্দে) গুদমান নাজে কডুর এক পুত্র মন্তকোভোলন করিবার চেন্টা করিয়াহিলেন কিন্তু করিতে পারিলেন না। ভদবণি পাঠানদিগের রাজ্যাশা একবারে নির্ভ ইইল।

यथम रक्न प्राप्त धेर भकत क्रिक श्रांट बारक, जगम আক্ররের জাতা মির্জাহামিক পুনর্বার পঞ্চাব রাজা षोक्रमन करवन । मान्ति ११ थे द्वारकात कर्माकर्डा हिस्सन, হিং ৯৮৯ তিনি স্থানজ্ঞ হইয়া লাহোরে পলাইয়া শ্ ১৫৮১ আসিলেন। আক্রম ভাছা দেখিয়া বয়ং পঞ্চাবে যাত্রা করিলেন। তৎকালে আকবরের অতিশয় प्रादिखळाला, डाँहात जाशंभरन मिर्का हाकिम शनायन করিলেন। আকবর তাঁহার পশ্চাৎ ধাবমান হইয়া শিক্কু-পারে কারল অধিকার করিলেন। হাকিম তৎকালে পর্বত্রিখরে প্রায়ন করিয়া থাকিলেন। পরে ভাতার নিকটে আদিয়া ভাঁহার শরণাগত হইলে, তিনি ভাঁহাকে কারুল রাজ্য প্রত্যর্পণ করিলেন। তদনন্তর আকবর সীয भागिक ब्राञ्जा छत्रयान मामत्क शक्षात्वत कर्षाकर्षा कत्रिया, क्षकात्रमम काल निकु शाहावाद्वत चार के कर पूर्व নিশ্বীৰ করিলেন। এ মুর্গ এখন পর্যান্ত বর্ডমান। ভাছার নাম প্ৰতক বারাণস

্রীহার পর গুজরাটে 'আর একবার বিজ্ঞাহ উপস্থিত। হুইটাছিল। ভাহায় কারণ এই, মজাকর আক্রারের হিং ১৮৯ হত্তে রাজা সমর্পণ করিলে, আকবর

ই ২০৮২ তাঁহার ভরণ পোষণার্থ উপযুক্ত জারপীর দিয়া তাঁহাকে আগ্রাতে রাখিলেন। মজাফর এক
প্রকার সক্ষণে থাকিলেন। কিন্তু গুজরাটের লোকেরা
তাঁহাকে কুনজনা দিল ভুমি এথানে আইস, ভাহা হইলে
আমরা ভোগাকে পুনর্মার গুজরাটের রাজা করিব।
এই মন্ত্রণা পাইয়া ভিনি আগ্রা হইতে গুজরাটে গমন
করিলেন, এবং বিজোহীদিগের সঙ্গে মিলিয়া রাজ্যের
অধিকাংশ অধিকার করিলেন! ভদন্ধি ১০ বংসর প্রয়ন্ত্র
অধিকাংশ অধিকার করিলেন! ভদন্ধি ১০ বংসর প্রয়ন্ত্র
অধিকাংশ অধিকার করিলেন! ভদন্ধি ১০ বংসর প্রয়ন্ত্র
অধিকাংশ অধিকার করিলেন। তাহার পরে মজাফর রণবন্দী হইলেন। কিন্তু যখন ভাহাকে আগ্রাভে লইয়। বায়
ভব্ন ভিনি একথান স্কুর্লারা আপন কণ্ঠদেশ ছেদন
করিয়া প্রাণ্ড্রাণ করিলেন। সেই অবধি গুজরাটে আর
কোন উপত্রব হর নাই।

১৫৮৫ খুটালে মির্জা হাকিম প্রলোক গমন করিলে,
আকবর কাবুল রাজ্য অপিকার জন্য গুনর্বার যাতা করিলেন। তত্ত্পলক্ষে উভরের ছর্দান্ত পর্বভিবাসীদিগের
কৃতিত ভাঁহার খোরতর বিবাদ আরম্ভ হইল। এই স্থতে
ভিনি কাশ্মীর রাজ্য জয় করেন, তাহার বিবরণ পশ্চাৎ
লেখা ঘাইতেছে।

কাশ্মীর রাজ্য হিমালহান্তর্গত পর্বতের উপরে, চারি-দিলে দৈলে বেটিত। মধ্যস্থলে কাশ্মীর রাজ্য। ইহার চতুর্দিকস্থ শৈল হইতে বৃহত্তর নির্মার নির্মত হইয়া কাশ্মীর রাজ্যে প্রবেশ করিবার যে সকল পথ আছে ভাষা অভি ছর্গন ও ভয়ানক, অধিকাংশ পর্বভেশ্ব বাহিয়া উর্দ্ধে আরোহণ ও স্থানে ২ অথোমুখে অবরোহণ করিতে হয়। কোন স্থানে ছই দিকে উচ্চ গিরি, ভাষার মধ্যদিয়া ঘাইতে হয়। কোন স্থানে বেগবং স্থোতের উপর বহির্ণা পর্বভিশ্ব উল্লেজন করিয়া গমন করিছে হয়। ইহা ভিম্পাক্তক অনেক, এবং সকল পথই অগ্রন্থ ও বক্র, ভাষাতে অনায়াসে বা অপ্য ক্লেশে রাজ্য প্রবেশ করা ছর্ঘট। যদি কেই এমন মনে করেন পর্বাভ্

পর্মন্ত সকল অতি উচ্চ, এবং প্রায় সর্মকাল নীহারাহ্বত থাকে, তাহাতে মনুষা গমনাগমন করিতে পারে না। সুতরাং এই স্থানে শক্র শক্ষা প্রায় নাই। অশ্প সৈন্যে চারিদিক্ উত্তমরূপে রক্ষা হইতে পারে।

এই রাজ্যে প্রথমতঃ পাও্বংশীয় রাজারা রাজত্ব করি-তেন। তাঁহার। খুটাকের চতুর্দশ শত বংগর পর্যায় রাক্ষত্করিলে পর, এক জন মুসলমান তথাকার রাজা হল্মেন, তদর্গি মুসলমানেরা তথায় রাজত্ব করিয়া আ-দিতে ছিলেন। ফ্রনে ভাঁহাদিগের গৃহবিচ্ছেদ আরম্ভ হইল, ভাহাতে আক্ষর ঐ রাজ্য লইবার কম্পনা করিয়া অতক হইতে স্বীয় শালিক রাজা ভগবানদাস ও সাহরোশ मारम जात अरू अधान क उथाए महेमाना व्यवन कहि-लन। देशांता পथाजात्व अथमजः कामीत अत्वर्भ करि-তে পারেন নাই, পরে রক্ষকশুনা এক দার দিয়া অতি कर्षे कान शकादत त्रांद्यात गर्भा श्रादम कतिरमन। কিছু আহারীয় দ্রব্যাভাবে ঐ স্থানে অধিক কাল ভিন্তিতে না পারিয়া, কাশীররাজের সহিত আপাততঃ এই প্রকার वटलांवल कतिरमन, তिनि आकरंदतत श्रज्य माज बीकात করিবেন, কিন্তু আকবর তাঁহার রাজ্যে কোন প্রকার कर्ष क्रिएंड शाहित्यम ना।

व्यक्तित करे बर्णावन कथान कतिया भन्न वर्णन प्रमुक्तित कना देशना दक्षत्रभ कतिरमन । देगवार के गमदन कालीत्रतारकत्र दर्गनमित्यत्र मत्या दिवाम आदस स्टेग- ছিল, তাহাতে ভাহাদের অনেকে জাসিয়া আক্রকের
পক্ষে মিলিত হইল, আর ২ সেনা সকল ছার রক্ষানা
করিয়া রাজধানীতে প্রত্যাগমন করিল। ইহাতে মোধন
সৈনাগণ বিনাবাধায় রাজধানী প্রবেশ করিল। কান্দীররাজ সংগ্রামে অক্ষম হইগা আক্ররকে
কান্দীর রাজ্য সমর্পণ করিলেন। এবং
আপনি দিল্লীনগরে ঘাইয়া রভিভোগী হইয়া থাকিলেন।

আক্রর কাশ্মীর জয়ের পর ঐ রাজ্যের সুথ সন্তোগ ক্ষনা তথায় গমন করিলেন। তাহার পরেও আর এক-ধার ঐ স্থানে গমন করিয়াছিলেন। তদনস্তর আর কাইতে পারেন নাই। কিন্ত উত্তরকালে ঘাঁহারা রাজা হইফাছিলেন ভাঁহারা দর্মদা ঐ স্থানে ঘাইয়া উল্লাস করিতেন, যেহেতু ততুলা আয়াদের স্থান পৃথিবীতে আর ছিল না।

কাশ্বীর জয়ের পর আকবর পেশওয়ারের প্রান্তরের উত্তরদিণের পর্বতবাদী ও তদক্ষিণে দলিমান ও ধাই-বর পর্বতক্ষ লোকদিণের বিরুদ্ধে অশ্বধারণ করিকেন। পেশওয়ারের উত্তরে হিম্ফুরুশ পর্যান্ত বে বকল পর্বত লাছে তাহা অতি উর্বার, এবং তথাকার জল বায় প্রান্ত শাহর ইসক জী নামে এক জাতি কান্ধারের নিকট হইতে লাকিয়া এই জানে বাস করে, এবং ভত্তর প্রাচীন প্রা-

অক্টের বাহারা বাস করিতে তাহাদিলের নাম রস্মিতা অর্থাং উজ্জলকারী, তাহারা কেবল এক পর্মেশ্বর মানিত, শার কোন ধর্ম বা কোরাণ কিছুই মানিত না। ঐ জাতী-**ষেরা জ্বাপনা**ছের ধর্মা প্রচার জন্য অন্তথারণ করিয়া ক্রমে এমত দৌরাল্লা আরম্ভ করে যে ভাছাতে নিকটছ লোকেরা অন্ধির হয়। কুলাধিপতি হাকিন মাহ তাহা-निरंभत्र ममन कना रेमना त्थात्र करत्रन, किन्छ किछूहे **করিতে পা**রেন মা। পরে হাকিম সাহের মৃত্যুর পর ষ্থন কাবুল রাজ্য আক্বরের হস্তে পড়িল তথন ভিনি রাজা মামসিংহকে কাবুল রাজ্যের অধিপতি করিলেন। ইহাতে রসনিয়াদিগকে দমন করিবার এক উপায় হইল। किन्दु जिनि । इंडर्कार्या इंडर्क शाहित्यन ना । व्यवस्थित আক্ষর প্রপদতঃ রাজা বীরবর ও তাঁহার শালিপতি জাতা হৈলন খাঁকে দেনাপতি করিয়া ইসফ্জীদিগের বিরুদ্ধে প্রেরণ করিলেন। রাজা বীরবর ও জৈন খাঁ প্রত व्यादबाईन भूक्षक जातक पृत् श्रादन कतित्वन । किन्न ভাষার পরে পর্বতখ্যাও সুভয়বৎ পথে এমত আবদ্ধ र्रेट्डिंग के खर्थ। रहेटल कान खकारत वाहित रहेटल शिक्तिकान मा। धे गमरम शर्वा उनामी भाष्ट्रारनहा छेशत रहेट डाहामिशदक बाक्रमण कविल। देगदमाता डाहा-भित्तत निर्क यूटक अकम हरेश। भना रेटल कात्र कतिन। কিন্ত নকীৰ পৰা দিয়া বাহিত্ৰ হইতে না পারিয়া অৰ मन्द्रा मालक मकन अफिल देहें। अखिल, किंहूमाव শৃথানা রহিল না। পাঠানেরা উপর হইতে ভাহারিগকে জনবার সংহার করিতে লাগিল। ইহাতে ভাবং সেনা মারা পড়িল, এবং বীরবরও রণশারী হইলেন। তৈলন বাঁ কোন প্রকারে প্রাণ কইয়া পলাইয়া আসিলেন, কিছ উছার ভাবং ইসনা হত হইল।

রাজা বীরবর রাজসভায় থাকিতেন, এবং সর্কাশান্তে মুপণ্ডিত ও অতি সম্বজা চিলেন, ততুলা সদালাণী ও উপন্থিতবক্তা রাজসভাতে আর কেহই চিল না, ইহা তিল তাঁহার আর আর অনেক গুণ চিল'। এই জনা গুণ-গ্রাহী আকবর তাঁহাকে গ্রেহ করিতেন, অতএব তাঁহার মৃত্যু সংবাদ গুনিঘা তিনি অভান্ত শোকাকুনিত ইইলেন।

বীরবরের মৃত্যুর পর আকবর ভোজআল ও মানসিংহকে দেনাপতি করিয়া পুনর্জার ঐ দেশে পাঠাইকেন।
ইহারা একেবারে পর্বতে আরোহণ না করিয়া পর্বতের
নিম্ন ছানে ইসফ শীদিগের যে সকল চাসবাস ছিল ভাষা
বন্ধ করিয়াদিলেন। ইসফ শীদিগের এমন সাধা হইল
না, পর্বতের নীচে আসিয়া মোগল সেনাহ্রান্ত সলে যুদ্ধ করে, অভএব ছার্ডিফের
আলকায় ভাষারা নতিশির হইয়া আকবরের রাজগ্রুত্ব

[•] बीवरदात चानक चानक कथा कथानि स्रोतिए गाँउस बीव; क्रांश मात्रि बरबावर ।

ভদনস্তর মানসিংহ ও ভোজনাল থাইবার পর্বতবাসী রসনিয়া পাঠানদিলের সহিত ধুদ্ধারম্ভ করিয়া একজন উত্তর জার-একজন দক্ষিণ হইতে ভাহাদিগকে আক্রমণ করিলেন। পাঠানেরা একেবারে ছইদিক রক্ষা করিতে না পারিয়া জপার্যামাণে পরাজয় স্বীকার করিল। কিন্তু পাঠানজাতি অতি ছদ্দিন্ত, এগর্যান্ত কোন রাজা তাহা-দিগকে একবারে বদীভূত করিতে পারেন নাই। বিশো-বতঃ জলাল নানে ভাহাদের রাজা বেপর্যান্ত জীবদ্দশায় ছিলেন সেপর্যান্ত তিনি মধ্যেই অস্ত্রপারণ করিতেন। পরে ১৬০০ থুটাকে ভাঁহার মৃত্যুর পর এই সকল যুদ্ধ এক প্রকার নির্ত্ত হইল।

এই সকল যুদ্ধ উপলক্ষে আকবর ১৫ বংসর সিন্ধুতটে বাস করিয়া ছিলেন। ইতাবসরে তিনি সিন্ধু রাজ্য জয় করেন। এই যুদ্ধে সিন্ধুরাজের পক্ষে ছইশত গোরা দৈনা যুদ্ধ করিয়াছিল, ইহারা পর্তুগীস। তিন্ধি এও-দেশীয় অনেক সৈনা গোরাদিগের ন্যায় বস্তাদি পরিপান করিয়াছিল, তদবধি সেপাহীর সৃষ্টি।

এই সময়ে কান্ধার রাজ্যও উদ্ধৃত হয়। পাঠকের।
অৰগত হইয়াছেন হোমায়ুন এই রাজ্য বিশ্বাস্থাতকতাপূর্বক অধিকার করিয়াছিলেন। তাঁহার মৃত্যুর পর আকবরের রাজ্যারম্ভ কালে অভ্যন্ত গোলবোগ উপস্থিত হইলে,
পারসরাজ লাহ তমাস্প ঐ রাজ্য পুনর্ধিকার করিয়ান
ছিলেন। আকবর ঐ সময়ে ভাষা রক্ষা করিতে পারেন

নাই। পরে সাহ তমাস্পের মৃত্যুর পর তাঁহার হিং ১০০৯ নিজ রাজ্যে সেই প্রকার গোলযোগ বৃ ১৫১৪ উপস্থিত হইলে তিনিও তারা উদ্ভ করিলেন।

এই রূপে পশ্চিমে পারস্থানের সীমা অবধি, পূর্ব্ধে বঙ্গদেশের পূর্ব্ধ, উত্তরে হিমালয়, এবং দক্ষিণে বিদ্ধানিরি ও সমুদ্র পর্যান্ত তাবং রাজ্যা আকবরের দণ্ডাধীন হইল। মুসলমানদিগের রাজ্যারন্ত অবপি এপর্যান্ত কোন রাজ্যা এতাদৃক্রাজ্যা বিস্তার করিতে পারেন নাই। আকবর এই সকল বাজ্যা জয় করিয়া মহারাজ্যকবর্তী হইয়া বসিললেন, তাঁহার দোর্দ্ধগুগুতাপে সকল প্রদেশ সুশাসিত হইল। হিন্দু ও মুসলমানরাজারা তাঁহার আজাকারী হইলেন, এবং অনেক রাজ্যা তাঁহাকে করদান করিতে লাগিলেন। কেবল উদয়পুরের রাজ্যা ও আফগানস্থানের পাঠানেরা অবাধ্য রহিলেন, তাঁহারা রাজপ্রভুদ্ধ বীকার করেন নাই।

मक्तिरशंत युष्त ।

এই প্রকার তাবৎ উত্তর রাজ্য করন্থ হইলে, তথন কেবল দক্ষিণ রাজ্য জয় করিবার অপেকা রহিল। ইহা-তেও আকবরকে অধিক ক্লেশ পাইতে হইল না, ভাহার কারণ দক্ষিণ রাজ্যে তৎকালে মহা গোলযোগ উপস্থিত

হইয়াছিল। ভবিবরণ এই, ১৫৮৬ খৃটাব্দে মন্ত্রাজা-নিজাম আহম্মদ নগরের রাজা ছিলেন। তদভুজ বরবান ভাতাকে রাজাত্যত করিয়া আপনি রাজ্যেশর হইবেন এই অভিলামে রাজরাজেশ্র আকবরের সহায়তা প্রার্থনা করিলেন। আক্রর দৈন্যসাহাঘ্য করিলেন, কিন্তু ভাহা-তে তাঁহার অভীক সিদ্ধ হইল না। বরবান ভদবধি আৰুবরের অনুগত হইয়া ছিলেন। পরে সংহাদরের মৃত্যু हर्रेल डिनि, ১৫৯২ थ्योद्म, जाक्दरत्त विना गाहार्या ঐ রাজ্য অধিকার করিয়া বিজ্যপুরের রাজার সহিত যুদ্ধার্ম্ভ করেন।

किशमितम পরে বরবান পরলোক গমন করিলে, স্বভন্ত ২ চারিব্যক্তি রাজ্যাকাজ্জী হইয়া পরস্পার সংগ্রাম আরম্ভ করিলেন। ইহার মধ্যে যিনি রাজধানী অধিকার করিয়াছিলেন তিনি মোগলেশ্বরের সহায়তা প্রার্থনা করি-লেন। আকবর ভাঁহার মনোরথ পূরণার্থ গুজরাট হইতে খীয় পুত্র মুরাদ, ও মালব হইতে আর ছুই সেনাপভিকে প্রেরণ করিলেন। কিন্ত ইহারা তথায় উপনীতঃনা হইতে হইতে চাঁদ-বিবি নান্নী এক কামিনী, বাহাছুর-নামা স্বীয় শিশু ভাতুষ্পুতের প্রতিনিধি স্বরূপ, ঐ রাজ্য অধিকার করিকেন। রাজ্যাকাঙ্কী আর তিন ব্যক্তি তাঁহার সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন।

. वरे नमदय त्मानन मन आहमान नगदतत्र निक्रेवर्जी **रहेग। उपन तामात्रकात्र आश्रनाटक अक्नम द्**विता

চাঁদবিবি দৈন্যমাহায্যজন্য বিজয়পুরের রাজাকে পত্র লিখিলেন, এবং রাজ্যাকাজ্জী আর তিন ব্যক্তিকে বলিয়া পাঠাইলেন, মোগলেরা রাজ্য লইতে উদাত, যদি এই-কণে আমরা পরস্পার যুদ্ধ করি তাহা হইলে মোগলেরা অনায়ামে রাজ্যাধিকার করিবে, আমরা সকলে দৈরাশ হইব, অতএব সম্পৃতি পরস্পার বিবাদে বলক্ষয় না করিয়া প্রথমতঃ শক্রক্ষয়ের চেকা দেখ, তাহার পর আপনাদের মধ্যে যাহা কর্ত্তরা তাহা করা যাইবে। এই কথায় সকলে সম্মত হইয়া রাজ্যরক্ষায় অগ্রসার হইতে লাগিলেন।

রাজপুত্র মুরাদ নগরাধিকারের আর কোন উপায় না দেখিয়া প্রাচীর ভঙ্গ করিয়া নগর প্রবেশ করিবেন এই ছির করিয়া প্রাচীরের নিমন্থ তিন স্থানে বারুদ প্রোথিত করাইলেন। চাঁদবিবি ভাষা জানিতে পারিয়া ভিতর দিয়া বারুদ উঠাইয়া ফেলাইলেন। কিন্তু এক স্থানের সকল বারুদ উচিল না, ভাষাতে যখন বিপক্ষ পক্ষীয় লোকেরা ঐ বারুদে অগ্নিদান করিল, তখন প্রাচীর ফাঁক হইয়া পড়িল, এবং শক্রটেননা ঐ স্থান দিয়া নগর প্রবেশ করিবার উদ্যোগ করিল।

় চাঁদবিবি এ সময়ে চামুগুার ন্যায় নিক্ষোষিত অসি হল্পে অস্থাবোহণে সেই স্থানে দাঁড়াইলেন । ভাঁছার

[্]রিক্তিত আছে চাঁদ্বিবি রূপার ওলি পুরিয়া বন্ধুক ছাড়িতেন।

এক জন স্থাইতিহাসবেতা লিখিয়াছের, যখন যোগলনিগের

সেনা ও সেনাপতিগধ ক্রমে তাঁহার নিকট আসিয়া শ্রেণী-ষদ্ধ হইল, এবং তাঁহার উৎসাহে অতিসাহসে বিপক্ষপক লক্ষা করিয়া নিরম্ভর অনল ও শর রুষ্টি করিতে লাগিল। ভাহাতে মোগল দল এক পদ অগ্রসর হইতে পারিল না, व्यत्नदक तमां छन (भना। पुनतीक मन्ना। शर्गस मर्थाम कतिया निजास क्लांस इटेशा भिविद्य शमन कविदलन। মনে করিলেন রজনী প্রভাত হইলে নগর প্রবেশ করিয়া রাজা অধিকার করিবেন। কিন্তু প্রাতঃকালে উচিয়া দেখিলেন প্রাচীরের যে স্থান দিবসে ভঙ্গ করা গিয়াছিল তাহা রাত্রির মধ্যে পুনগ্র থিত হইয়াছে, অতএব প্রনর্মার बाक्रम बादा आहीत टिप्स आरम्बन कतिए नागि-लन। ইতিমধো বিজয়পুরের রাজা ও আর২ বন্ধ দৈন্যেরা আমিষা উপস্থিত হইলেন। তাহাতে যুবরাজ ছিং ১০০৪ মুরাদ অনেক বল সত্ত্বেও যুদ্ধ জয়ের আ-শৃ ২০২৬ শাতে নিরাশ হইয়া চাঁদবিবির সহিত निक्क क्क्रान क्रिटलन । निक्रित गर्मा এই, আहमान नगरत्त्र রাজা সংপ্রতি যে থেরার রাজ্য লইয়াছিলেন, ভাহা মোপলদিগকে দিবেন, মোগলেরা আর যুদ্ধ করিবেন না। আই প্রকার সন্ধি বন্ধনের পর যুদ্ধাদির বির্তি হইল। किन अक वंदमत ना बाइटल वाइटल श्रूनकात शहनिवाम

निष्ण कृष हर, ज्यम जिनि वर्ग छ त्रश्रां प्रित्रिया मोशन मिशदक वर्ष क्षित्राहित्समा

আরম্ভ হইল, ভাহাতে চাঁদ বিবির কর্মাখাক ভাঁহার শহিত বহিরস্তা করিয়া রাজপুত্র মুরাদকে আহ্রান করি-বেন। রাজপুত্র তথন পর্যান্ত দক্ষিণ দেশে ছিলেন, অত-এব তাঁহার পক হইয়া চাঁদ বিৰির সহিত মুদ্ধে এরছ रहेटलन, अवर थटफटमंत्र दाखां उँ। हात मटक मिलिटलन । विकास प्रदास ताका श्रवंशिय होंग विविद्य शक किरलन. ভাষ্ট্রে গোলকনার রাজাও তাঁহার পক্ষ হইলেন। প্রকার সমরসকা হইয়া গোদাবরীতীরে মহা যুদ্ধ আরম্ভ হইল। এই যুদ্ধ ছুই দিবস পর্যান্ত চলিল, কিন্তু জয়াজয় কিছুই নিশ্চয় হইল না, তাহাতে আকবর বয়ং मिक्न (मर्स्म श्रूनसीत योजा कतिरम्म। इंडिमस्मा स्मानम **মেনাগণ দৌলতাবাদ প্রস্তৃতি আর ২ স্থান সকল অধি-**কার করিল। আকবর নর্মনাতে উপস্থিত হইয়া ওাঁহার অভীয় পুত্র দানিয়ালকে লেনাপতি করিয়া তাপ্তি নদীর তট দিয়া আহমদ নগর আক্রমণার্থ প্রেরণ করিলেন। ঐ नमटरा नहां नाटम हीन दिवित शक भेक थे नगत त्वकेन করিয়াছিলেন। মোগল দৈনা উপস্থিত হইতেই তিনি তথা হইতে প্রস্থান করিলেন।

ভাদ বিবি নোগলনিগের সহিত পুর্বের যে প্রকার যুক্ত করিয়াছিলেন এখনও সেই প্রকার যুক্ত করিতে নাপারি-ভেন এমন নতে, কিন্তু গুহের শক্রকে মহাশক্ত জ্ঞান করিয়া তিনি মোগলনিগের সহিত সন্ধি করণের চেকা। করিতে লাগিলেন। ইতিমধ্যে ভাহার কীয় সৈহন্যর। তাঁহার প্রতিপক্ষের পরামশালুসারে একেবারে অন্তঃপুর প্রবেশ করিয়া তাঁহাকে বপ করিল। কিন্তু ইহার কল ভাহারা হাতেহাতে প্রাপ্ত হইল। বেহেডু মোগল সেনারা ভৎপরে ঐ নগর স্বধিকার করিয়া ভাহাদিগকে একবারে ম্মালয়ে প্রেরণ করিল, এক প্রাণিকেও রাখিল না:

এই ব্যাপারের পর মোগলের। আহম্মদ নগরের শিশু
রাজাকে বন্দি করিয়া গোয়ালিয়রের ছুর্গে পাঠাইয়া দিল।
কিন্তু ইহাতে মুদ্ধ শেষ হইল না, বিপক্ষেরা আর এক
ক্ষনকে রাজা করিয়া সিংহাসনে বসাইল। ইহাতে ঐ
যুদ্ধ জারো কয়েক বংসর চলিল। আকবর যুদ্ধের শেষ
পর্যান্ত পাকিতে পারিলেন না, তাহার কারণ, তাহার
জ্যেষ্ঠপুত্র সলীম নিতান্ত অবাধ্য হইয়া উঠিলেন। অতএব
হিং ১০০১ আবলফজলকে সেনাপতি করিয়া আপনি
যু ১৯০১ রাজ্পানীতে প্রত্যাগ্যনন করিলেন।
দানিয়াল বিজয়পুরের রাজার কন্যাকে বিবাহ করিয়াছিলেন, তিনিও বেরার ও খান্দেশের কর্মাধ্যক হইয়া
ঐ প্রদেশে থাকিলেন।

দলীম শিশু বা অজ্ঞান ছিলেন না, তাঁহার বয়ঃক্রম
৩০ বংশর হইয়াছিল, এবং তিনি বিদ্ধান ও জ্ঞানবান
ছিলেন। পরস্ত আকবর তাঁহাকে আজমীরের সুবাদারী
দিয়া ইহাও ব্যক্ত করিয়াছিলেন তাঁহার অবর্ত্তমানে তিনি
রাজ্যেশর হইবেন। কিন্তু তাঁহার অত্যন্ত পান দোব ছিল,
তিনি স্কহিকেন ও মদাপানে দিবারাত বিশ্বল পাকাতে

ভাঁহার বুদ্ধির স্থিরতা ছিল না, তাহাতে, পিতা কতকালে
মরিবেন তাহার পর রাজ্য পাইব, এই ভাবিয়া, আকবর
দক্ষিণ রাজ্য গমন করিলে, তিনি সৈন্য সংগ্রহ করিয়া
আগ্রা অধিকারের চেন্টা করিলেন। কিন্তু তাহা পণরিলেন
না, কেবল বেহার ও অধ্যোধ্যা অধিকার করিয়া আপনাকে
রাজা বলিয়া ঘোষণা দিলেন, এবং আলাহাবাদে রাজধানী করিলেন।

আৰুৰর আগ্রাতে প্রত্যাগত হইয়া পুত্রকে পত্র লিথি-লেন, যেকর্মা করিয়াছ তাহা অতি গাছিত, এমন কর্ম আর করিও না, এবং এখনও আপনার কর্ত্তরা কর্ম্মে প্রবৃত্ত হও, তাহা হইলে ভোমার মঙ্গল, নতুবা অমঞ্চল ঘটিবে। এই পত্ৰ পাইয়া সলীম মধোচিত খেদ প্ৰকাশ পূৰ্ব্বক পিতার সহিত দাকাৎ জন্য আগ্রাতে গমন কবিলেন। কিন্তু ভাঁহার সহিত অনেক দৈন্য দামন্ত চলিল, আকবর তাহা জানিয়া তাঁহাকে লিখিয়া পাঠাইলেন যদি ভোমার দাকাৎ করিবার মানদে আদা হয় ভাহা হইলে ভুমি ৰম্প লোক সমভিবাহারে আসিবে, নতুবা আসিবার প্রয়োজন নাই। এই লিখন পাইয়া সলীম বক্ষভাবে আলাহাবাদে ফিরিয়া আদিলেন। আকবর কি করেন भूत्वत मास्ना कना डीहाद वाकना ও উড़ियात पूर्वा-गांत्री निया, ताक्रमजी स्नावनककत्तर निमन ताका हहेएछ कित्री कांत्रिटक कांका मिदनेन।

व्यायनकसन करे प्रांखा शाहेमा शोगानियत निग्रा मिटन

আসিতেছিলেন, পথিমধ্যে বুদ্দলখণ্ডের অন্তর্গত আর্চরের রাজ্ঞা নরসিংহ দেব তাঁহাকে বপ করিয়া তাঁহার ছিল মুগু সলীমের নিকট প্রেরণ করিলেন। আবলফজল আকররের অতি প্রিয়পাত্র ছিলেন, অতএব তাঁহার মৃত্যু সংবাদ শুনিয়া তিনি অত্যন্ত ছংখিত হইলেন, এবং ছই দিবস আহার নিজা বজিতি হইয়া পাকিলেন। আকরর জানিতে পারিলেন সলীম হইতে এই কর্মা হইয়াছে,* কিন্তু সে কথা প্রকাশ না করিয়া হত্যাকারীর দণ্ডের চেন্টা করিলেন, ইহাতেও পুতের সহিত পুনর্কার মনান্তর হইল।

কিয়ৎকাল পরে পিত। পুত্রের বিরোগ ভঞ্জন হইল।
ভাহার পর আকবর আলাহাবাদ হইতে ওঁহাকে আনাইয়া রাজবেশ ধারণের অনুগতি দিলেন। সলীম থেপ্যান্ত
পিতার নিকট থাকিলেন সে প্র্যান্ত অতি বিশিষ্ট ধারায়
চলিলেন, কিন্তু আলাহাবাদে পুনর্গমন করিয়া পুর্ব্বমত
মদ্য পান ও ইন্দ্রিয়ন্থে মউ হইলেন এবং নানা প্রকার
ছক্তিয়া আরম্ভ করিলেন। পরস্ত খসক নামে ভাঁহার
এক পুত্র ছিল, পাছে পিতা ভাঁহাকে দিলীরাজ্যের অধীশ্বর

[•] সলীয় খীছ জীৱনচারতে লিখিয়াছেন আবলকজল কোৱাণ মানিতেন না, এজন্য তিনি তাঁহাকে বধ করেন এবং তাঁহার পরা-মর্শে আকর্ম মুদলমানধর্ম ত্যাগের বাজা করিয়াছিলেন এইজন্য তিনি তাঁহাকে রাজ্যচ্যুত করিবার চেফা করেম।

চার * করিতে লাগিলেন। এই সকল অভ্যাচার উপলক্ষে ভাঁহার সহধর্মাণী থসকর গর্ম্পারিণী বিষ পান
করিয়া প্রাণভাগি করিলেন ।। এই সকল কথা শুনিয়া
আকবর তাঁহার প্রতি অভ্যন্ত বিরক্ত ইইলেন, অভএব
যখন ভিনি রাজ্পানীতে আসিলেন তখন ভাঁহাকে কারাবন্ধ করিয়া রাখিলেন।

কিন্নৎ দিবস পরে আকবরের তৃতীয় পুত্র দানিয়ালের মৃত্যু হইল। দানিয়াল জাতার নাায় অত্যন্ত পানাসক্ত ছিলেন, আকবর তরিবারণের অনেক যত্ন করিয়াছিলেন এবং তাঁহার নিকট আপন বিশ্বাসী লোক রাখিয়া দিয়াছিলেন তাহারা তাঁহাকে সদ্যপান করিতে দিত না। কিন্তু তিনি তাহাদের চক্ষে ধুলা দিয়া বন্তুকের নলের তিতর করিয়া মদ্য আনাইয়াপান করিতেন। এই প্রকার প্রবঞ্চনা করিয়া অতি হরায় তিনি আপনি আপনার মৃত্যুকে আছ্রান করিলেন।

আকবর, দানিয়ালের মৃত্যুতে অত্যস্ত কাতর হইলেন, বিশেষ ইহার পূর্বে ভাঁহার বিতীয় পুত্রের মৃত্যু হইয়াছিল, সেই শোকের উপর আবার এই শোক পাইলেন। শোকেং

[া]ণ মধ্যে তিনি একজন জিয়ত্ত মনুষ্ঠের চর্ম ভেল করাইয়া-ছিলেন। আকবর এই সংবাদ শুনিয়া থেদ করিতেং বজিলেন, যে ব্যক্তির শিক্তা মূত কন্তর চর্মভেদ দেখিয়া মনেই ব্যক্তি হয় ভাহার সম্ভান জিয়ত্ত মনুষ্ঠের চর্ম ভেল করে এ কি আশ্চর্যা।

[ौ] दैनि मानिस्धित्र छन्नी।

ठाहात मतीत अकनात जीर्ग हहेन, ध्वर क्रम्य नाना রোগ উপস্থিত হইল। তাহাতে জীবন আশায় নিরাশ হইয়া তিনি জ্যেষ্ঠপুত্রকে উত্তরাধিকারী করিবেন ইহা স্থির কবিয়া ভীহাকে কারামুক্ত করিলেন। অনেকের এমন আশকা চিল স্থীম রাজা হইলে ভাঁহাদের প্রভুত্ব থাকিবেনা, অভএব ভাঁহাকে বাজ্য না দিয়া ভাঁহার পুত্র ধসককে রাজা দিবার পরামর্শ দিলেন। কিন্তু আকবর সে পরামর্শ অপ্রায় করিয়া সলীমকে রাজসিংহাসন দিবার প্রতিজা জানাইলেন। তথন উত্তরাধিকারিত্রের আর কোন গোল রহিল না। পরে তাঁহার অন্তিম সময়ে সলীন ও সভাসদগণ তাঁহার নিকটে উপস্থিত হইলেন। তিনি তাঁহাদিগকে বলিলেন আমি হাহাই করিয়া থাকি যদি আমাকর্ত্তক কাহার অনিষ্ট হইয়া থাকে তবে ভৌমরা আমাকে মার্ক্তনা করিবে। সলীম পিভার এই কথা শুনিয়া ভাঁহার চরণ ধারণ পুর্বক উচ্চঃস্বরে রোদন করিতে লাগিলেন। অনম্ভর আকবর যে করবাল-খানি সর্মদা ব্যবহার করিতেন অজ্লী দ্বারা তাহা প্রদর্শন করিয়া সলীমকে তাহা কটিদেশে ধারণ পূর্বক রাজবেশে **ভাঁহার সম্মুখে** দাগুাইতে বলিলেন। সলীম রাজবেশে দণ্ডায়মান হইলে আকবর অন্তঃপুরস্থ যাব-তীয় নারী ও ভাঁহার বন্ধা বান্ধৰ ও কর্মকারী-দিগকে **डीहात हरेल गमर्भव क**ित्रलन । विनासन हेहानिशटक হিং ২০২৮ পালন করিবে। তদনন্তর প্রেরাহিত

ৠ ২৬০৫

২০ ৮৮০৭ . ডাকাইয়া উাহার সম্পুথে ঈশ্বরভক্তি
জাপন পূর্ব্বক, আক্টবর মাসের ক্রেয়াদশ দিবসে, রাজরাজেশ দিলীশ্ব ঈশ্বলোক গমন করিলেন।

क्रिविर्ण अधामि।

व्यक्तित्व हिन्द्र।

আকবর অতি মুপুরুষ ছিলেন, এবং ভাঁছার ৰুধা বার্ডা ও বাবহার অতি নোহিতকর ছিল। যৌবনাবস্থাতে আৰ-বর আহার পানে অতান্ত আনোদ করিতেন, কিন্তু বয়ো-इंदि रहेटल म आत्माम किछूरे हिल मा, जिनि अजि পরিমিতাহারী হইয়াছিলেন। বৎসরের মধ্যে তিন মাস আমিষ ভোজন করিতেন না। তিনি অতান্ত পরিপ্রম পরায়ণ ছিলেন, দিবসে একবার বিশ্রাম করিতেন না, এবং অনেক রাত্রি পর্যান্ত শাস্ত্রালাপ করিতেন, অভ্যাপ্প-कान निष्ठा बाहेटछन। वञ्च छः छिनि कार्या करम्ब अमन খুনিয়ৰ ক্রিয়াছিলেন বে যুদ্ধ বিগ্রহে নিয়ত আৰম্ वाक्ति। अख्यारे, धर्मात्नांत्रां, ७ मृत्रवार्थ, जात्वक व्यवना शहराजना कांकवरदद माजानारश स्वमन कार्-त्राथ भीकादत् कार्यकात आत्मान हिन, विद्याव वार्थ-नम स बना करो हु छ कहरन अधिक आधार हिन, आब गरिए बीनम निकृमांक भेका कतिए उस मा। उँ।शाह

শরীরেও অত্যন্ত বন্ধ ছিল, তিনি এক এক দিবস এক শন্ত দেড় শত কোশ পথ অশারোহণে অবলীলাক্রমে গমন করিতেন, এবং বিশ পঁচিশ কোশ পথ অনায়াসে পদক্রফে গমন করিতে পারিতেন। তিনি সংগ্রাম-সময়ে স্বয়ং উপস্থিত থাকিয়া যুদ্ধ চালাইতেন, যুদ্ধ শেষ না হইলে শমরস্থল ত্যাগ করিয়া আসিতেন না। তিনি সকল কর্ম আপান চক্ষে দেখিতেন, যে কর্ম্মে প্রস্তুত হইতেন ভাহা সম্পূর্ণ না হইলে নিব্লন্ত হইতেন না। এই নিমিত্বই ভাঁহার রাজ্যকালে সকল দেশ উত্তমরূপে শাসিত হইয়াছিল।

রাজ্যর জি।—আকবরের রাজ্যলোভ ছিল না এ কথা
বলা বাইতে পারে না, তিনি রাজ্য অনেক রুদ্ধি করিয়াছিলেন, কিন্তু ইহা নিভান্ত লোভের কর্ম নহে। তিনি বে
সকল রাজ্য জয় করেন ভাহা পূর্বে দিলীর রাজাদিগের
অধিকার ভূক্ত থাকিয়া কনে ২ হস্তান্তরিত হয়। ঐ সকল
রাজ্য উদ্ধার না করিলে ভাঁহার যশংশশপরে কলপ্ত থাকে,
এই জন্য ভাহা জয় করিতে হইয়াছিল। যাহাহউক,
তিক্তা রহৎ রাজ্য আর কোন মুসলমান রাজার ছিল না,
কিন্তু প্রাজাহিতীয় বিলিয়া রাজ্যমাজে আকবলের বে
জারিক ভাহা যুদ্ধ ঘারা হয় নাই, ধর্ম-সম্বন্ধীয় বিচার প্রক্র
রাজ্য ও প্রজাপাননের সুনিয়দ ঘারাই হেইয়াছে, ভারাই

ि वर्ष । चारुरत कोरनारकात्र चारून कीर्य प्रश्नित । प्रमुशेतारथ लाइकर महिक मानाद कतियाहितात । सनम তাহার বয়ংক্রম একবিংশতি বংগর তথনও মন্ত্রা গম-নের একাত্তিক বাসনা করিয়াছিলেন। ভাহার পর মুসল-मान भर्त्यात नकाला विश्वत्य कीशांत्र मत्न मर्भाग काला, ভাহাতে ডিনি সভা ধর্মের অনুসন্ধানে প্রবন্ধ হইয়া मक्त धर्मावलही लाक अकब कतिया गाञ्जानाश अधर्म-বিচার করিতেন ৷ ফৈলী ও আবলফজল এই নহৎ অনু-श्रीतम् नश्काती हित्तन। आखार् त्यावात्रक नात्य अक বিখ্যাত পণ্ডিত চড়ুম্পাঠী করিয়াছিলেন, এই ছুই যাজি डीहात पूज। रेककी आकरत्वत आरमभ करम इंगरिंग्भ সর্মশান্তক এক ব্রাহ্মণের স্থানে সংস্কৃত ভাষা শিক্ষা করিয়া ন্যায়দর্শন প্রাকৃতি অনেক সংক্তপুত্তক পারদী ভাষাতে अनुवाम करतून, এবং হিব্ৰু ভাষা হইতে বীজ-গণিত ও লীলাবতী নামক ভাকরাচার্য্যের রচিত এছ ভাৰান্তর করেন। ভূমিন বেদ রামায়ণ ও মহাভারত এব পারদী ভাষাতে অনুবাদ হয়, তাহা ভিনি সংবৈশাধন क्रत्रन'। आवनककले नर्सनाट्य सूर्णां छ ताबनी-ডিজ ও সময়দক ছিলেন। তিনি ক্রমে রাজ্যজী হয়েন धरर आकरत्नामा अधीर आहेन जोकरती अन त्राना करवन ।

[•] আকবর সংক্ত ভাষা উত্তমরূপ জানিতেন, এবং আর আর অনেক ভাষা শিক্ষিটিলেন। গলে গোয়া হইতে করাবাতন নামে এক পণ্ডিত আনিষা কতক্তালিন মুখা লোককে একি ভাষা শিখা-ইমাছিলেন। ভাষারা একি ভাষা শিখিয়া ঐ ভাষার অনেক শিক্ষারনী ভাষাতে সনুবাদ করেন।

् धाकरत वह पुरे डांडाक नहेग्रा मर्सना धर्मा विवयक পরামর্শ করিতেন, এবং প্রতি শুক্রবারে এক সভা করিয়া ধর্মবাবসায়ী সকল লোকের সহিত শাস্তালাপ ও ধর্মবিচার করিভেন, এক এক দিবস এই বিচারে ব্লাক্তি প্রভাত হইয়া মাইত, তথাপি বিচার শেষ হইত না শুক্রবার ভিন্ন অন্য দিবদেও ব্রাহ্মণ ও মুসলমান পশুন্ত দিগকে আনাইয়া ডাঁহাদের সঙ্গে শাস্ত্রালাপ করিছেন। মধ্যে ২ ইণ্ড ধৃষ্ট উপাসক দিগকে আন্মন করিয়া তাহা-দের সহিত বিচার করিতেন। এক সময়ে কএক জন হিল্ল পণ্ডিত রাজসভাতে আসিয়াছিলেন, যুসলমান পথিতেরা তাঁহাদের সহিত বিচারে প্রবৃত্ত হইয়া বলি-লেন আমরা কোরান হত্তে অগ্নিকুও প্রবেশ করিতেছি, ৰদি মুসলমান ধৰ্ম মিখা হয় তবে কোৱান ভক্ম ছইয়া খাইবে, যদি ভাহা না হয় তবে ভোমরা অদীকার করিয়া ৰল মুসলমান খৰ্ম মান্য করিবে । নতুবা ভোমরা ৰাইৰল হত্তে অগ্নি কুও প্রবেশ কর, বদি ভোমাদের धर्म श्रुष्ठक जन्म ना दर, जामता धृष्ठे धर्म मानित। धृष्ठे ধর্মাবলম্বী পণ্ডিভের। এই পরীক্ষাতে স্বীক্লত হইলেন না। আকবর জানিয়াছিলেন মনুষ্য যেমনই বিছান বা বুজি-

নান হউন তথালি পদে পদে অস আছে, অভএব তিনি শির করিয়াছিলেন মনুব্যপ্রণীত ধর্ম কখনই অম পুনা হইতে পারে না। সুভরাৎ মুসলমান ধর্মের মুল তথা নতে, বেহেতু ভাহা মনুব্যপ্রণীত। তিনি বলিতেন আনবলে श्वरमध्वरक क्रांनिया डाँहोत खात्रांधना कता, अवर व कर्य করিলে পরমেশ্বরের সম্ভোষ, অগতের মঙ্গল, ও ভবিষাতে: मुर्भित मञ्जावना मिट् छेखन धर्मा, छाटाँटे व्यवनयन कता কর্ত্তবা, মনুষ্টোর কথা অনুসারে কোন ক্রিয়াকলাপকে পর্যা জ্ঞান করা উচিত নহে। এক প্রমেশ্বর ভিন্ন যদি আনা কোন দুখামান বস্তুর উপাসনা কর্ত্তব্য হয় তাহা হইলে सूर्या कुक्कवानि वा कांग्र आंत्राधन। कता याहेटल शाहत, কিন্ত ইহাতেও বাহ্য আড্যরের প্রয়োজন করে না। অৰ্থাৎ লোক দেখাইয়া বা পুরোহিত আনাইয়া কিয়া উপ-वाम कविया छोडा कदा कर्डवा नटह। कोहोटन अलटक विभिक्के मुमलभारतता मूला थाइन अ पक् इन कतिता। শুজা ধারণ ও ছক্ ছেদ্ কথন ধর্মাক নহে। কোরানে আরো লেখে সকল মুসলমান উপনাস, তীর্থগমন ও अरमदक अकळ इटेश क्रिश्वताताथमा कहित्व। এटे मकल ধর্মাভারমাত্র, ইহাতে প্রকৃত পুণ্য সঞ্চয় হয় এমত ৰলাষাইতে পারে না। ইত্যাদি বিবেচনা করিয়া আকরর वाका नियोक्तितन धरे नकल कर्धा तकर काशांत अछि वन ध्वकाभ वा धर्मालय अमर्भन कतिर्द्ध शांतिरव नां, য়াহার ইচ্ছা হয় করিবে, যাহার ইচ্ছা না হয় করিবে না। ইश जिन ममालान प्राउकी छ। कातारन निरमध हिल, পাঞ্চর ভোহার বিধি করিলেন, এবং কোন২ পশু স্পর্শ . निरम् क्रिम क्रि निरम्ध व व्रश्छ क्रियापिटन ।

व्यक्ति वामक देखा करतन नाहे व्य युजनगान धर्मात

करादि उत्हार कतिरकन, किन्छ महत्रादमत अनायम अविधि বে হিজার অব্দ চলিয়া আসিতেছিল ডিনি তাহা রহিত করিয়া আপনি যে বৎসর রাজ্যভার গ্রহণ করেন সেই ৰৎসংবর উত্তরায়ণের বিষুব অবধি অক্তগণনার আজ্ঞাদেন এবং আরবীয় মানের পরিবর্ত্তে দৌর মান ব্যবহার করিয়া মাসের পারসী নাম * দেন। তারের প্রচলিত আর্বী দ ভাষা উঠাইবার চেষ্টা করিয়াছিলেন, এবং কেরিন-হবদেয় শাঞ্চদারী লোকমাতকে নিকটে আসিতে দিতেল ना. ইহাতে धर्माश्रदायन वा धर्माक मूननगरिनदा अलाख বিরক্ত হইয়াহিলেন। তিনি আর এক আজা প্রকাশ করেন সময়বিশেষে পারসস্থানের প্রাচীন রীতানুসারে লোকেরা তাঁহার সম্বো অকীঙ্গ প্রাণিপাত করিবে t ইহাতেও মুসলমানেরা অত্যন্ত কুপিত হইয়াছিলেন। ভাঁহারা বলিভেন কেবল দেবতাকে এরূপ ভূমিষ্ঠ হইয়া প্রণাম করা যাইতে পারে, মনুষাকে করা ঘাইতে পারে না। হিল্পুধর্মে পর্থীর্মের ছেব করে না এজন্য তাহাতে रख क्टिश्र अंद्राखन रहा नारे; ज्य जनवकृत्य

[•] এই সকল মাদ পূর্ককালে পার দস্থানে ব্যবহার ছিল।

† পূর্বে কারার সহিত কাহার মাক্ষাৎ কইলে লোকেরা
সেলাম আলেকম (তোমার অফল হউক) বলিয়া সন্তারণ করিত।
আক্রবর ভাষা উঠাইয়া আজা দিলেন আলা আকবর, অর্থাৎ পরমেবর স্ক্রিপ্রেট এই বলিয়া সন্তারণ করিবে। ভাষার উত্তর করিতে হইলে জিলীজলালত বলিবে অর্থাৎ পর্মেশ্রের জ্যোতি
ক্রিপ্রিনান ইউক।

*

अदम्भ कतिया कलकः शित्रहांत, अदमांगा वेत्रहां कर्गामा श्री यक्त करा विल्मान है मकल कर्म गर्हिन विद्या क्रिया आकरत जांश निर्मा कित्रा क्रिया आकरत जांश निरम्भ कित्रा हिल्लन, वर्म मन्त्रीय आकरत जांश निरम्भ कित्रा हिल्लन, वर्म मन्त्रीय आकर्मा जिएक महंगमन कित्रक मिएक ना। वर्म विवर्ध जांशित श्रीक शिला। त्या प्रश्नित त्रा व्या वर्म वर्म हिल्लन ना, व्या कित्रहा श्री का जांशित वल्ल क्रिया महंगमन कर्ना हिल्लन ना, व्या की क्रिया जांशित कल्ल क्रिया महंगमन कर्ना है वा तर्म व्या वर्म वर्म क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया

হিন্দুদিগের সম্পর্কে আকবর আর বাহা বাহা করিয়াছিলেন সকলি উত্তম। তিনি হিন্দু মুসলমান প্রভৃতি সকলকে সমভাবে চুটি করিতেন, এবং উভর জাতিকে উচ্চহ
ও সম্মানের কর্ম প্রদান করিয়া ছিলেন। জাইজা নামে
কাফর ঝাতির উপর এক কর ছিল, ইহাতে রাজধর্মাবলহী
লোক দিগের সঙ্গে অন্যান্য ধর্মাবলহী দিগের সর্কাদ
বিদ্যোধ ও ক্ষাবেষ হুইত। আকবর এ কর রহিত করি-

[्]रेंबिन दोक्षकारम विस्ता बनमयमात्री, बाबबाग्रानि, स्वर्क गानि, श्लिकाद्वि, कांगुनरभात्री, कांब्रक्ती ७ थांकांकी भटन नियुक्त वेदेकने। रेक्ट रेक्ट स्वामाद्वी शर्दाक भारेग्राहिरानन ।

ঁলেন, ভাহাতে ঐবিব্যোধ ও দ্বোদ্ধেষ নিবারণ হইল। অপর তীর্থযাত্রিদিগের উপর আর এক কর ছিল, ভাহার ভাৎ-পর্যা এই, কর দিতে হইলে পৌডলিকেরা তীর্থ গমনে কাম হইকে, সুতরাং পৌত্তলিক ধর্ম ক্রমণ ক্রাস হইবে। কিন্তু সকল মনুষ্য পরমেশ্বরকে এক পারায় উপাসনা করেনা, তিল্প জাতীয় লোকেরা ভিন্ন্থ ধারায় উপাসনা कविशा थाक । विनि व्य थावां । छेशामना अक्टन, शिकत्मव মূল অভিপ্রায় এক, অতএব কাহার ধর্মপর্টে কন্টক ক্ষেপ্ণ উচিত নহে এই বিবেচনা করিয়া আক্ষর যাতীর কর উঠাইয়া দিয়াছিলেন। পুর্বের আর এক রীতি ছিল কুৰ্ব আক্ৰমণ কালে ছুৰ্গৱক্ষক সেনাৱা অত্যন্ত পীড়াদান করিলে ^{*}আক্রমণকারী ছুর্ণজয়ের পর দেনা ও তাহাদিগের স্ত্রীপুত্র সকলকে লইয়া দাস করিতেন। এই কুৎসিত রীতি ক্রমে আরো পীড়াকর হইয়াছিল। জয়কর্তা নিরীহ গ্রাম-বাসী দিগকে বন্দীবেশে আনিয়া বিক্রয় করিতেন। আৰ-ৰর এই কুরীতি একবারে রহিত করিয়া দেন। এই কর্ম সকল জাতির পক্ষে মললকর হইল, কিন্তু ইহাতে হিচ্ছ-দিপের বিশেষ উপকার দর্শিল।

আকবর বে ধর্ম চালাইবার বত্ব করিলেন ভাহার নাম
"দীন এলাহি" ব্রহ্ম ধর্ম। আকবরের এমন অভিজ্ঞায়
ছিলনা আপনার মত বলপূর্মক চালান। তিনি মনে
করিয়াছিলেন সকলকে সম্মত করিয়া ক্রমে জনে তাহা
ক্রেকিত করিবেন । কিন্তু তাঁহার পারিষদ ও ফুভাগণ

কেবল ঐ মতানুসারে চলিতেন, ধর্মানুরক্ত ভক্ত মুন্তানানেরা তাহা মানিতেন না। বিশেষ আকবরের ভূসধদ্বীয় কার্যো যে সকল মলা দিগের রুত্তিছেদ হইয়াছিল
ভাহারা. তাঁহার পরম শক্ত হইয়াছিলেন। বোপ হয়
ইহাদিগের ফাহার২ প্রতি তিনি বলপ্রকাশ করিয়া পাকিবেন। কিন্তু কাহার প্রতি দৌরায়া করেন নাই, যে বেমন
মনুষা ভাহার সহিত সেই প্রকার ব্যবহার করিতেন,
দ্বাধি ঘাঁহারা তাঁহার মন্ত গ্রহণ করিয়াছিলেন তাঁহাদিগকে উত্তম ২ কর্মাদিতেন, যাঁহারা ভাহা করেন নাই
তাঁহাদিগের প্রতি সে রূপ অনুগ্রহ করিতেন না।

এই প্রকারে তিনি ক্রমেং অনেককে ধীয় মতাবলমী করিয়াছিলেন, কিন্তু তাঁহার যে মত ভাহা অভিস্কা, কেবল জানবান লোকেই তাহার মর্মা বুরিতে পারিতেন, আপামর সাধারণ সকলে ভাহার ভাব বুরিতেন না, মুতরাং তাঁহার মৃত্যুর পর সে মত প্রচলিত রহিল না। আহালীর রাজা হইয়া ভাহার অনেক অনাথা করিলেন। পরে মুসলমানদিশের পূর্ব্ব রীতি ও ক্রিয়া কাণ্ডাদি ক্রমেক্রমে প্রভাগিত হইতে লাগিল। সৌর বংসর অনেক দিবস পর্যান্ত চলিয়াছিল, কিন্তু ভাহাও ক্রমে লোপ পাইল। ভবে আক্রবরের ধর্মান্দোলনে এই এক মহোপকার হইয়াছে, পূর্বে মুসলমানেরা মুসলমান ধর্মের সভ্যাসভা বিষয়ে কিছুমান্ত বিবেচনা করিতেন না, কেবল একাজিক ভজি পূর্বক এ ধর্ম মানিভেন। আক্রবরের সময়াবধি

সকলের চক্ষু বিক্ষিত হইয়াছে, এইক্ষণে ধর্মের সভা। সভা বিষয়ে সকলে ভর্কবিভর্ক করিয়া থাকেন।

যাহাহউক আকবরের মতকে সূতন বলা বাইতে পারেনা, কবীরপত্মি নামে আকবরের রাজত্বের একশত বংসর পূর্বে এক হিচ্ছু সম্পুদায় ছিল, তাঁহারা একেশর বাদী ছিলেন, ইহারা আর আর দেবতা অমান্য করিতেন না। আকবরেরও সেই মত ছিল, তিনি বে সকল নিমুম করিয়াছিলেন বোধ হয় তাঁহাদের দেখিয়াই করিয়া থাকিবনেন। বাহা হউক আর কোন মুসলমান রাজা ধর্মনিয়ে এমত বিচক্ষণ ছিলেন না, আকবর সকল রাজার জ্যেষ্ঠ।

রাজ্য সংগ্রহের নিয়ম।—আকবরের কর গ্রহণের
প্রথা অতি উত্তম বলিয়া গণনীয় হইয়াছে। সের সাহ
রাজা হইয়া এই ধারানুসারে কর গ্রহণ করেন। কিন্তু
তিনি অপ্পকাল রাজত্ব করিয়াছিলেন ইহাতে তাহা সমাক
রূপে চলন করিতে পারেন নাই। আকবর ঐ ধারা
সংশোধন পূর্বক তদনুসারে জরিপ জমাবন্দী ও কর
গ্রহণ করিতে লাগিলেন। পূর্বে ভূমি মাপের নানাপ্রকার যন্ত্র ছিল, সে সকল রহিত করিয়া তিনি এক প্রাকার গল্প অর্থাৎ হাতকাঠী হাপন করিলেন। এই হাতকাঠীতে রাজ্যের যাবতীয় ভূমি মাপ করাইলেন। পরে
ভূমির শলা উৎপাদন শক্তি বিবেচনা করিয়া তাহা তিন
প্রকারে বিভক্ত ইইল। অর্থাৎ উৎকৃত্ব মধ্যম ও নিক্তী।

এই তিন প্রকার ভূমিতে যে শাসা উৎপন্ন হইক, তাহার গড় পড়তা করিয়া কর স্বরূপ তিন ভাগের এক ভাগ [†] আপনি গ্রহণ করিতেন, অপর ছই ভাগ প্রজাকে দিতেন।

বে ভূমিতে সকল সময়ে শন্য জন্মিত কৰ্মন পতিজ্ রাধিতে হইত না, তাহার রাজস্বের স্থানাতিরেক হইত, না। যে ভূমি মধ্যে ২ পতিত রাধিতে হইত ভাহার শুস্য উৎপাদন হইলে রাজস দিতে হইত, নতুবা রাজস্ব দিজে হইত না। যে ভূমি বন্যাতে তুবিয়া যাইত অথবা তিন বৎসর পতিত থাকিত, কিয়া আবাদে ব্যয়বাছলা

| • মথাএক খণ্ড ভূমিতে গম জনেয় | | | | | | | | |
|------------------------------|--------------|---------|----------|--------------|----------------------|----------------|----------|---------|
| द्वेदक्षे कृतित र | | | | বি'ঘা | | 16 | মোন : | |
| मंधाम जुमित | | - | ÷ | ණ් | - | >2 | মোন ৷ | |
| निकृषे पूमित | • | ŧ | * | a) | • | ANG | মেনি। | |
| সর্ব্ব শুর | F - | - | - | - | • | r. R. Va | উংপদ | ₹¥ |
| উহার গড় | - | - | • | - | - | ३२ १४ ४ | । সের। | |
| ज्ञांकोड़ ध्यांशर | - | •• | • | - | • | 8.3 | 4/01 | |
| আর এক ডুমিতে তুল জন্মে | | | | | | | | |
| প্ৰেথম জাত ভূচি | | | * | • | ₹ | | मोन । | * ** |
| किलीय | • | d | • | • | * | 910 | (मान । | ٠, |
| ভূতীয় | • | 4 | | - | - | • | মোৰ। | |
| | ্নাট | • | - | ÷ | - | २२॥ | ্ মোন | ı |
| with a little of | 15 | ÷ | • | <u></u> | () · (4 | 9 16 | মোন | ٠. |
| 1. | क्रोक | त्र प्र | 1913 | . 7 | 7 | 2.11 | মোন। | |
| स्मद्रमाह छ | ९ शटन | 4 P | sर्बा १८ | শর | এক | হাং শ | ঘহণ কা | ब्रेटजन |
| টুড়া ভিছ আৰু সংশোধ তথ্য | ा जन | ্ বা | আ আ | ওয়া য | (हिन | , ভাহাে * | ত প্রায় | ভূতীয় |

ছইত, তাহার রুসদ জমা ধার্য হইত, অর্থাৎ প্রাথম বৎ-শরে পঞ্চমাৎশের গ্রুই অংশ, দ্বিতীয় বংসরে পঞ্চমাৎশের ভিন অংশ, এই প্রকার পাঁচ বংসরে পুরা জনা দিতে স্থির হইত। যে ভূমি পাঁচ বংশরের অধি**ক পাঁতিত** থাকিত তাহার রুসদ আবো কম হইত। আমলা থবচা .ও আর কোন বাব আবওবাব ছিল না। প্রকারা শুদ্ধ রান্ধার প্রাপ্য অংশ দিতেন। যে তাল শস্যের পরিবর্ছে মুদ্রা লওয়া হইত সে স্থলে গত উনিশ বৎসরের মূল্য গড় করিয়া যে পড়তা হইত সেই হারে মালওভারি করিতে হইত। এই সকল বন্দোবন্ত প্রথমতঃ এক বৎ-শরের জনা হইয়াছিল, পরে দশ দশ বৎসরের জনা হইত। তদলুসারে প্রজারা দশ বৎসর মালগুজারী করিতেন। ভাহার পরে পুনর্কার বন্দোবস্ত হইত। ইজারা বন্দো-ৰভের রীতি ছিল না, যে হেতু তাহাতে অধিক প্রস্কা-পীড়ুন হয় *।

মালগুজারী আদায়ের জন্য অনেক গুলিন লোক নিযুক্ত হইয়াছিলেন। ইহারা এক এক জন এক কোর দ্রুমন,
আর্থাৎ ছুই লক্ষ পঞ্চাশ সহত্র মুদ্রা, সংগ্রহ করিতেন,
ভক্ষনা ইহাদিগের কোরী উপাধি হইয়াছিল। প্রজারা
ভারাদিগের স্থানে আপন ২ মালগুজারী প্রদান করি-

আৰু বিষয় মৃত্যুর পর ইজার। বিজ্ঞাবন্তের রীতি হইমাছিল। প্রারা অত্যক্ত প্রজ্ঞা পীড়ন করিছেন। তাহাতে রাজ্য ক্রমে বিজ্ঞান্য

তেন, ইহাতে অধিক ব্যয় হইত না, এবং কোষভঙ্গ বা প্রভারণার তাতৃক আশস্কা ছিল না। কিন্তু এ নিয়ম বহু-কাল ছিল না, কিছুদিনের পর তাহা রহিত হইয়া হিন্তু-দিগের প্রাচীন ধারাতে কর সংগ্রহ হইত।

যাহাহউক আকবর যে নিয়নে কর সংগ্রহ করিতেন তাহা অতি উত্তম। তোড়নাল ইহার মূলাধার, তিনি যুদ্ধ কর্মে যেমন মুপণ্ডিত ছিলেন, কর স্থাপন বিষয়েও তদ্ধপ বিচক্ষণ। আবলফজল লিখিয়াছেন তিনি জনিদারী কর্মে অভিতীয় ছিলেন, উাহার আদশানুসারে রাজ্যের সকল কাগজ প্রস্তুত হইত, তাহাতে দর্পণের ন্যায় সকল বিষয় উত্তম রূপ বুঝা মাইত। ইহা দেখিয়া আর ২ রাজার। ঐ ধারাতে আপনাপন রাজ্যের জগী জমার কর্ম নির্বাহ করিতেন, এবং এখন পর্যান্তও দেই ধারাক্রমে ভূসম্বরীয় তাবং কর্ম হইয়া আসিতেছে। তোড়ন্সল অভিশয় হিম্পুধর্মপরায়ণ ছিলেন, কিন্ত তাঁহার অভান্ত কৃব স্বভাব ছিল, ভজন্য আক্বরও কথন ২ তাঁহাকে অনু-যোগ করিতেন। তোড়লালের মৃত্যু হইলে আকবর অত্যন্ত ছঃথিত হইয়াছিলেন।

ু সুবা।-আকর্বরের রাজত্ব কালে দিল্লী রাজ্য ১৫ সুবাতে

[•] स्वाय नाम-> এলাহারাদ । ২ আগ্রা, ৬ অযোধ্যা, ৪ আজমীর। • श्राम्तांक, ७ दिशांत, १ रक्षपृत्ति, ৮ मिली, २ कावृत, २० लोटशंत-२२ स्वायात, २२ सालव, २५ दिवांत, २८ श्रेटक्स, २० व्यारम्यम नगर ।

বিভক্ত হইয়াছিল, পরে বিজয়পুর ও গোলকনা অধি-क्रुड रहेरेल ब्यात ७ सूछन सूता हरेग़ मर्सस्का ३৮ में। मुवा इहेमाछिल । इहांत्र धक धक मुवाट्ड धक धक तांज-প্রতিনিধি থাকিতেন, ইহারা সুবার সর্বময় কর্তা ছিলেন, কিন্তু রাজার উপদেশ মত কর্মা করিতে হইত। আক-वरत्त ताजकारण देशिमरणत नाम मिलामानात हिन। পরে ভাহাদিগের স্থবাদার সংজ্ঞা হইয়াছিল, এবং ওাঁহা-मत्र अधीरन थक थक अन म अशान नियुक्त इरेग़ जिल्ला, ভাঁহাবা বাজস্ব সম্পর্কীর সকল কর্ম করিতেন। করসং-গ্রহকারী ও সেনাপতিরাও সুবাদারের অধীন থাকিতেন, করসংগ্রহকারেরা প্রবাদারের আজ্ঞাবর্তী হইয়া কব সংগ্রহ করিতেন। সেনাপতিরা সেনার অধ্যক্ষতা করিতেন, বিদ্রোহাদি উপস্থিত হইলে তাহা নিবারণ क्तिएडन এवर गुष्क कर्म्यत जना य मकल कांग्रगीत फिल ভাষার ভদাবক করিভেন।

বিচার ।—বিচার সম্বন্ধীয় কর্ম নির্মাহ জনা মির আদিল ও কাজী নামে ছই ব্যক্তি নিযুক্ত ছিলেন। কাজী অভিযোগ শুনিয়া ব্যবস্থা দিতেন, মির আদিল ভাষা বিবেচনা করিয়া চূড়ান্ত আজ্ঞা প্রদান করিতেন। শান্তি রক্ষার কর্ম কোতয়াল উপাধিক এক ব্যক্তির মারা নির্মাই হইত। সামান্য২ স্থানে কোতয়াল নিযুক্ত করিতেন। গ্রাক্তর সম্পর্কীয় কর্মকারকেরা ঐ কর্ম সম্পাদন করিতেন। গ্রাক্তর শান্তিরক্ষার কর্ম গ্রামন্ত কর্মকারক



দিপের ছারা নির্বাহ হইত। এই সকল কর্মকারকেরা কি পারতে কর্ম করিতেন ভাহা বিশেষ বর্গন পাওয়া যায় মা, কিন্তু আকৃবর গুজরাটের সুবাদারকে যে কয়েক পত্র লিখেন ভাহাতে দেখাযায় শৃষ্খলছারা পদ বন্ধন, কশাঘাত, ও প্রাণদণ্ড একেবারে নিষিদ্ধ হইয়াছিল। কেবল রাজ-দোহী হইলে প্রাণদণ্ড হইত, তদ্তির আন্য কোন অপ্রাধে প্রাণদণ্ড কর্ত্তর হইলে রাজার নিকটে সংবাদ যাইও, রাজা বিবেচনা করিয়া যেমন আদ্ধা দিতেন সেই প্রকার দণ্ড বিধান হইত। কোন সুবাদার আপ্রাণ

দৈনা।—পূর্বে দৈনাগণকে রাজকোষ হইতে বেতন দেওনের রীতি ছিলনা, দৈন্যাথাক্ষদিগকে জায়গীর দেওয়া যাইত, তাহার উপস্বত্ব হইতে তাঁহারা আপন আপন দৈন্যগণকে বেতন দিতেন। আবশ্যক্ষত থাজনাতেও দৈন্যদিগের বেতনের বরাত দেওয়া যাইত, দৈনোরা প্রজাদিগের স্থানে টাকা আদায় করিয়া লইত। কিন্তু উত্তর মতে জনেক প্রতারণা ও অত্যাচার হইত। জায়গীরদারেরা বরাদ মত দৈন্য রাধিতেন না, দৈন্য প্রদর্শন কালে আপনাদিগের ভূত্য ও মুটিয়া মজুর পরিয়া কোন প্রকারে সংখ্যা পূর্ণ করিয়া দিতেন। খাজনাতে বেতনের বরাত হইলে, দৈন্যেরা যথেজাক্রমে টাকা সংগ্রহ করিত, ইহাতে প্রজাপীত্নের একশেষ হইতে।

্ আক্রর খাজনাতে বেতনের বরাত না দিয়া রাজ-কোষ হইতে সৈনাগণের বেতন দিবার নিয়ম করিলেন এবং জায়গীরদার দিগের ছল প্রভারণা না চলে, অর্থাৎ এক জনের বেতন আর এক জন নালয়, এজন্য সৈন্য-গণের অবয়বের তালিকা করাইলেন, বেতন দান কালে ভালিকার সহিত অবয়ব একা করিয়া বেতন দেওয়া-ইতেন। আর অশ্বারোহীরা প্রতারণা করিতে না পারে এজন্য প্রত্যেক অখের গাত্তে ছাপ মারিয়া পেওয়া-ইলেন, সেই ছাপ দেখিয়া অশ্বারোহী দিগের বেতন দেওয়া যাইত। তদ্তিল উচ্চু বলদ গাড়িও অন্য ২ যে সকল দ্রা দৈনাস্থভিবাহারে গমন করিত ভাহার ফর্দ করাইলেন, সেই ফর্দ দেখিয়া নির্দ্ধারিত হার অন্ত-সারে ভাড়া দেওয়া যাইত, কেহ প্রতারণা করিতে পারিত ना। अहे नकन नियम अखि छे दह छे, किन्छ पूर्व शीखि পরিবর্ত্তন করিয়া ভাষা প্রচলিত করাতে সম্পূর্ণ বিপদের ' আশক। ছিল, সৈন্যের। ভাছাতে অসম্মত হইয়া অক্সধারণ করিলে রাজ্য রক্ষা কঠিন হইত, কিন্তু আকবরের কৌশল ক্রমে ভাহা ঘটিতে পারে নাই।

তৎকালে দৈনাগণকে দলবন্ধ করিবার রীতি ছিল না, এক এক জন প্রধান দশ অবধি দশ সহস্র সৈনা লইয়া সরকারি কর্মো নিযুক্ত হইতেন। ইছাদিগের নান মন্-সবদার। ইছারা যিনি বত সেনার অধাক্ষ হইতেন তদলুসারে উপাধি পাইতেন, যিনি এক শত সৈনের

অধ্যক্ষ উভিাকে শতপতি, যিনি সহত্য সৈনোর কর্তা তাঁহাকে মহত্রপতি বলাযাইত। দশ সহত্র দৈনোর মন্সবদারী রাজপুত্র ভিন্ন প্রায় অন্য লোকে প্রাপ্ত হইত্তেম না ! রাজকুট্র ও রজঃপূত রাজারা পঞ্চরত্তী দেনা-পতি হইতেন: আর ২ মন্সবদারী অন্য লোককে দেওয়া ষাইত। প্রত্যেক মন্সবদারকে অর্চ্ছেক অম্বারোহী ও অর্জেক পদাতিক দেনা রাখিতে ইইত। পদাতিকের मर्सा हर्सुश्म तस्क्रकवादी, अविभिष्ठे धनुष्वत । এই मक्ल (मना मफावमात्मिरभंत ज्ञाधीन शांकिश कर्मा कृति छ, এবং ভাহানিগের বেতন মজাবদারদিগকে দেওয়া হাইত। प्रकारपाति पिरंगत अपल जासी तारी जिन्न जामि नार्य আরো এক প্রকার অখারোহী সেনা ছিল, ইহারা অভি ৰীর, গুণ বিবেচনার ইহাদের বেক্তন পার্য্য করা যাইত। বিশেষ ঘাহারা দিকু পার হইতে আদিত ভাহারা এক এক জন ২৫ মুদ্রা করিয়া পাইত, ভারতবর্ষীয়েরা ২০ করিয়া পাইত। যাহারা বক্তক চালাইতে পারিত তাহারা ৬ টাকা, এবং তীরন্দাক্তেরা ২া ে টাকা করিয়া পাইত। সংগ্রাম উপস্থিত হইলে রাজা সেনাপতি * নিযুক্ত করিতেন, মন্সবদারেরা * তাঁহার আজ্ঞাকারী

^{🌲 🔹} মন্দ্রদারেরা অতি উচ্চ ২ বেতন পাইতেন, এবং উভ্ন রূপে कर्म कद्रित्ल डाँहात्मत्र मखात्मत्। जे शांडि उ ममान आश्र ষ্ইতেম। কাহার কাহার বৃত্তি বরাদ হইত।

হইয়া কৰ্ম করিছেন, এক এক যুক্তে ৩।৪ শাভ মভাৰদার নিযুক্ত বাকিতেন।

শ্রুষ্টির রোজহুকালে কড দৈন্য নিয়ত নিযুক্ত

 বাকিত তাহা কোন গ্রন্থে বেখে না। আওরলজ্জেবের

রাজহু কালে ছই লক্ষ অখারোহী দেনা, ডিচিন অনেক

অশিক্ষিত পদাতিক ও পোলদাজ নিযুক্ত ছিল। আকববের সময় এত অধিক দেনা ছিল এমত বোধ হয় না।

অনুরাগ ছিল। — অটা লিফা নির্মাণে আকবরের যথেঁট অনুরাগ ছিল। সিজুকুলে তিনি যে প্র্ণ নির্মাণ করেন ভাহার হবা পূর্বে উলিখিত হইয়াছে। তদ্কির তিনি আরো করেক প্র্ণ নির্মাণ করেন, তমধ্যে আপ্রাও এলাহাবাদের পূর্ণ অতি উত্তম। এই কৃই স্থানের প্রাচীর প্রস্তরময় এবং ভাহার চতুর্দিণে গভীর পরিখা, আর এই কৃই স্থানে মেটক আছে তাহা অতি অপূর্বে রাজালয়ের বারের উপযুক্ত। আকবর ফতেপুর ও নিকরীতে সর্বাদা থাকিতেন, এজনা এ স্থানও কিলাবলী করিয়া অতি সুর্গোতিত করিয়াছিলেন। এ স্থান একণে প্রায় লোক-কুলা ইয়াছে, তথাপি প্রথম পর্যন্ত ভাহার পূর্ব সৌক্দ-

আইন আক্ররী প্রয়ে আক্ররের আরং তাবৎ কীর্তির বিজ্ঞারিত বিবরণ আছে। এই প্রয়ে রাজভাগ্রার অবধি ব্রহ্মশালার বিবরণ পর্যাত্ত নোখা আছে, ইবার এক এক ভানেকত দ্রব্য সামগ্রী ও লোক জন বাবিত ও কটই

জাঁকজমক ছিল তাহার বর্ণন করা বাছল্য। টাকা জলের नाां अंतर रहें छ, अंथर मकल दिस्त्यत अमन वांधावाधि ছিল ভাহাতে এক কপৰ্দকও অপবায় হইত না।

निकांत्र मक्या ।— कान हेर्त्राक आकरत्त्र मछाएड शिशांडितन। जिनि निथिशांट्न आंकरत यथन युष्क বা শিকারে * যাইতেন, তখন প্রায় খা॰ জোশ ভূমি কানাত দিয়া বেফীন করা যাইত, তাহার মধ্যে রাজা ও সভাসন্গণের ভাষু সারি২ পড়িত, এবং বাটীতে ধে প্রকার প্রান্তরে সেই প্রকার রাজসভা, ভোজনালয়, নৃত্যালয়, শয়নালয় প্রস্তুত হইত। তাষুর ভিতর শাল ৰনাত মখমল কিংখাপ প্ৰভৃতি নানাপ্ৰকার উত্তমং বল্লে মণ্ডিত হইত। বহিভাগ লাল বসনে গোড়া যাইত। তায়ুর চূড়াতে রূপার কলশ থাকিত। উচ্চ স্থানে দীড়াইয়া দেখিলে বোধ হইত নগর বসিয়া গিয়াছে, এবং সহরে বেমন রাস্তা ও গলি থাকে ভাহার মধো नकनि छाएछ।

क्या जिल्हा घरे। - वदमद्वत अथम मिनदम अ ताकांत জন্মতিথির দিবসে বৎসর্থ যে মহাসভা হইত, সেই সময়ে र्दश्यद्वानां स्थित मगाद्वार रहे । वे मगद्ध क्टब्रक मितम পর্যান্ত ভারি মেলা বসিত, এবং রঙ্গ সল তামাশা নানা-

[•] व्यक्तिरद्भव व्यवालदम् ১२००० अयं धनः इखिमादल ८००० इखी मर्खन बाका बाकिए, देश छिन निकाद्यत संव्यापि कर दिन छाना निर्शेष्ठ कविया त्वाचा ना ।

প্রকার হইত। রাজার তালু মধ্যহলে পড়িত, তাহার চতুর্দ্ধিকে পাঁচ ছয় বিঘা ভূমি ঘেরিয়া সভা সাজান যাইত, তাহার চতুর্দিক স্বর্ণ ও বছমূলা রত্ব বিভূষিত মথমলে মঞ্জি হইত। চন্দ্রতিপ নক্ষতের ন্যার মণিতে সুশো-ভিত হইড, ভাহার ঝালরে মুক্তাশ্রেণী ঝুলিড। ভূমিতে গালিচা ছলিচা ও কিংখাপ পাতা যাইত। তাহার উ-প্র মছলন্ পড়িত। রাজসভাসদ্গণের স্তস্ত্র ২ তামু পড়িত। সভারত্তে রাজার তুলা হইত, সর্ণের দাঁড়ি পালা খাটাইয়া তিনি এক দিকে বসিতেন, অন্য দিকে হেম রক্সত রত্ব সুবাস ও আর ২ বছমূল্য দ্ব্য চেরি করিয়া দিত, তুলার পর এই সকল দ্রন্য বিতরণ হইত। তৎপরে রাজা বর্ণ ও রূপার বাদাম ও অন্য ২ ফল মুটি ২ -ক্রিয়া ছড়াইয়া দিতেন, সভাসদ্গণ তাহা কুড়াইয়া লই-তেন। ইহার পরে রাজা সভাসদ্গণকে সম্মানস্থচক পরিছেদ, হয়, হস্তি ও বহুমূল্য রত্নাদি দান করিতেন। পর্বের দিবদ রাজা সিংহাসনে উপবেশন করিতেন, চতুর্দ্ধিকে সভাসদ্গণ মণি মুক্তায় ভূষিত ও কৌঞ্পুক্ দারা শিরঃ শোতা করিয়া সভাতে বসিতেন, সভার অসু-পম শোভা হইত। এই সভার সন্মুখ দিয়া শত ২ হন্তী যুধ্বন্ধ হইয়া গমন করিত, হস্তিসজ্জা অতি আশ্চর্যা, প্রতি সম্পূদায়ের প্রথম হতির মুও ও বক্ষোদেশ মণি মুক্তা বুজ অপ্পত্তে মণ্ডিত হইত। এক ২ হস্তির সজ্জা এক ২ सम मनूरवात धेवर्या। दिख्याजात भन्न भेक भेक प्रम-

জ্ঞীভৃত তুরঙ্গ সেই প্রকার গমন করিত। তৎপরে গণ্ডার সিংহ, ব্যান্ত্র, চিতা, শিকারী কুক্লুর, ও বাজপকী সারি ২ লইয়া যাইত। অবশেষে অশ্বারোহী সেনাগণ সভার সন্মুখ দিয়া গমন করিত, এই দেনা কত যাইত তাহার সংখ্যা ছিলনা। এবং তাহাদের অস্ত্রশন্ত ও সাজ সভা কেমন উত্তম তাহা বর্ণনাভীত।

এই ঘটার সভাতে আকরত্বের কিছুমাত বেশের ছটা ছিল না ভিনি সহজ বেশে সিংহাসনে বসিতেন, কতক ওলা মণি মুক্তা পরিয়া অঞ্চ শোভা করিতেন না। ছুই জন ইংরাজ ভাঁহাকে স্বচকে দর্শন করিয়াছিলেন ভাঁহারা লিখিয়াছেন তিনি বিচারকালে সিংহাসনে উপবেশন না করিয়া ভলিমভাগে উপবেশন করিতেন, कथन कारात्क ७ छ छ वांका करिएजन ना, मकत्नत मत्त्र সদালাপ করিতেন। তিনি ছটের দমন ও শিষ্টের পালন করিতেন। ভাঁহার রাজ্যে সকল প্রজা মুখী रहेशांडिन।

বিংশ অধ্যায়

आहाकीत।

সলীম, জাহালীর অর্থাৎ পৃথীজয়ী নাম ধারণ পূর্বক হিং ১০১৪

থু ১৬০৫ অক্টবর১৬
কং ৪৭০৭ আধিন

তার নিয়োজিত কর্মকারী০দিগকে স্ব স্কর্মে স্থিত র রাখিলেন। তিনি আরো কয়েক কর্ম করিলেন তাহাও উত্তম। বিশেষতঃ পথিক ও মহাজন দিগকে নানা প্রকার শুলক দান করিতে হইত, আকবর তাছার অনেক রহিত করিয়াছিলেন, যাহা অবশিষ্ট ছিল তিনি তাহাও উঠাইয়া দিলেন। রাজসম্পর্কীয় লোকের। विकिमित्गत वालिका ज्वामि श्रीत्या मिश्रिक, धवर वाक-দৈন্য ও রাজকিঙ্করেরা যাহার ভাহার বাটীতে যাইয়া বলপুর্বক বাদা করিত, গৃহত্তেরা স্থানাভাবে ক্লেপ পাইত। कारामीत এই मकन पोताचा अवकराद्य निरादण क्रिया मिटलन। नामिका ७ कर्न ट्रमन क्रिया मर्छ विधारनद ৰে কুরীতি ছিল তাহা রহিত করিলেন, মদাপান * একেবারে নিষেধ, এবং অহিফেন ভক্ষের নিয়ম নিষ্কারিত

[े] जाराचीतं भरे चाचा रुद्रिशं पित्तनं यत्ते, क्षिष्ठ धार्शनं महा-सान फान स्टबन नहिं।

कत्रिश्नो मिल्लम । अधिकछ नकन अन्नो तोन्नात निकटमें যাইয়া আপন ২ ছঃখ জানাইডে পারে এজনা তিনি আপনার বদিবার গৃহে কতক গুলা অর্ণময় ঘলী টাক্ষাইয়া তাহাতে এক গাছা শৃঞ্জল বন্ধন করিয়া বাহিরে यानारेया (मञ्जारेतन, यारात तान्याकाद जावभाक হইত শুখল ধরিয়া লাভিত, ঘনী বাজিয়া উচিলে ভাহ্ন কে ডাকাইয়া ভাহার কথা শুনিভেন।

রাজগুত্র থসরু পূর্বাবিদি পিতার অপ্রিয় হইয়াছিলেন, জাহাজীর তাঁহাকে দেখিতে পারিতেন না, রাজনন্দন হিং ১১৪ বন্দীর ন্যায় থাকিতেন। এক দিব্দ খু ১৯০৬। মার্চ। ব্রহাজীর নিজা যাইতেছেন, কিস্করণণ সংবাদ দিল, রাজগুত্র কতকগুলি বয়স্য সমভি-ব্যাহারে পশ্চিমাভিমুখে পলায়ন করিভেছেন। জাহাস্কীর এই সংবাদ পাইবামাত্র তৎক্ষণাৎ কতক্তলা অশারোহ रमना छाँशांत अध्यव्दर्भ भाष्ट्रीहिलम, भारत প্রাভঃকালে যত সৈন্য একত করিতে পারিলেন ভাহা লইয়া আপনি তাঁহার পশ্চাদ্ধাবমান হইলেন।

রাজপুত্র রাজালয় পরিত্যাগ করিয়া ইসন্য সংগ্রহ ও मिथु नुक्रेन कतिरक कतिरक शक्कावां कियूर्थ क्रिलिन। এই ভাবে যথন লাহোরে উপস্থিত হইলেন ভখন ভাঁহার मरक मन महत्व लोक मिलियाहिन। जाहां भीरत्त अध-গামী মেনাগণ ভাঁহার পশ্চাব ২ লাহোরে উপস্থিত হইলে तानकुमात्रः छोहारमत् गरिंछ वृक्त कतिरनन । किन्छ यूर्व

विंश्म जैभाम

জাহালীর।

সলীম, জাহালীর অর্থাৎ পৃথীজয়ী নাম ধারণ পুর্বক ছিং ১৯১৪

থু ১৬০৫ অক্টবর১৬
কং ৪৭০৭ আধিন

তার নিয়োজিত কর্মকারী০দিগকে স্বাস্থ কর্মো স্থিরতর রাখিলেন। তিনি আরো কয়েক কর্ম করিলেন ভাহাও উত্তম। বিশেষতঃ পথিক ও মহাজন দিগকে নানা প্রকার শুল্ক দান করিতে হইত, আক্বর ভাহার অনেক রহিত করিয়াছিলেন, যাহা অবশিষ্ট ছিল তিনি তাহাও উঠাইয়া দিলেন। রাজসম্পর্কীয় লোকেরা विकिमिटशंत वांभिका खवामि थ्लिया मिथिल, धवर तांक-সৈনা ও রাজকিন্ধরেরা বাহার তাহার বাটীতে বাইয়া বলপুর্মক বাসা করিত, গৃহত্বেরা স্থানাভাবে ক্লেশ পাইত। জাহালীর এই সকল দৌরাক্সা একেবারে নিবারণ করিয়া मिटलन। नामिका ७ कर्ग छमन क्रिया मे विधारनद ষে কুরীতি ছিল তাহা রহিত করিলেন, মদাপান * একেবারে নিষেধ, এবং অহিফেন ভক্ষের নিয়ম নিষ্কারিত

[•] आश्राचीत करें जांका कतियाँ मिरलत वरहे, किस जांशनि महा-शास छांश करतम नारें।

করিয়া দিলেন। অধিকন্ত সকল প্রজা রাজার নিকটে
যাইয়া আপন ২ ছঃপ জানাইতে পারে এজন্য তিনি
আপনার বসিবার গৃহে কতক ওলা বর্ণময় ঘন্টা।
টাঙ্গাইয়া তাহাতে এক গাড়া শৃখল বন্ধন করিয়া বাহিরে
বুলাইয়া দেওয়াইলেন, যাহার রাজসাকাৎ আবশ্যক
হইত শৃখল ধরিয়া লাভিত, ঘন্টা বাজিয়া উঠিলে তাহাকে ডাকাইয়া তাহার কথা শুনিতেন।

রাজধুত্র ধনর পূর্মাবপি পিতার অপ্রিয় ছইয়াছিলেন,
জাহালীর ভাঁহাকে দেখিতে পারিতেন না, রাজনদন
হিং ১১৪
বন্দীর ন্যায় থাকিতেন। এক দিবদ
শৃ ১৯০৬। মার্চ। জাহালীর নিজা বাইতেছেন,
কিন্ধরগণ সংবাদ দিল, রাজগুত্র কতকগুলি বয়য়য় সমতিন
ব্যাহারে পশ্চিমাভিমুখে পলায়ন করিতেছেন। জাহালীর
এই সংবাদ পাইবামাত্র তৎক্ষণাৎ কতকগুলা অন্যারোহ
সেনা ভাঁহার অন্বেষ্বণে পাঠাইলেন, পরে প্রাভঃকালে
যত সৈন্য একত করিতে পারিলেন ভাহা লইয়া আপনি
ভাঁহার পশ্চাছাব্যান হইলেন।

রাজপুত রাজালয় পরিত্যাপ করিয়া ইসনা সংগ্রহ ও দেশু লুঠন করিতে করিতে পঞ্চাবাভিমুখে চলিলেন। এই ভাবে বখন লাহোরে উপস্থিত হইলেন ওখন ওাঁহার সলে দুশ সহজ্ঞ লোক মিলিয়াছিল। জাহানীরের জ্ঞান গামী সেনাগণ ভাঁহার পশ্চাৎ ২ লাহোরে উপস্থিত হইলে রাজকুমার ভাহাদের সহিত মুদ্ধ করিলেন। কিন্তু মুদ্ধে

240

जिल्ला विशेषाता

পরাস্ত হইয়া কারুলে পলায়নের বাঞ্চায় সিন্ধ পার হইতে লাগিলেন, হঠাৎ নৌকা চড়াতে বসিয়া গেল, তাহাতে পার হইতে পারিলেন না। জাহাঞীরের দেনা-গণ ভাঁহাকে গৃঙ্খলবদ্ধ করিয়া আনিল। খসরুর প্রতি জাহালীরের যে ভাব ছিল তাহা অবিদিত নাই, তথাচ পুত্র বলিয়া তিনি তাহার প্রাণ বধ করিলেন না। কিন্ত তাঁহার সঙ্গে যে সকল কুসঙ্গী মিলিয়াছিল ভাহাদিগের সাত শত জনকে লাহোর ও কাবলের দ্বারের তুই পাসে माति २ माँ फ कतारेया ध्वानीदत्रत मदझ পেदतक गातिय। দিলেন, তাহারা বার খাডার ন্যায় ছারে দাঁড়াইল। প্রসক্তকে গজপুঠে আরোহণ করাইয়া তাহার মধ্যদিয়া লইয়া গেলেন, তাঁহার অগ্রেহ এক পদাতিক এই কথ বলিভে২ চলিল, মহারাজ এই সকল লোকেরা ভোমার শুভারুধ্যাথী, ইহারা ভোমার অভার্থন জনা দুগুয়মান হইয়াছে ইহাদিগের অভার্থনা গ্রহণ কর।

ধসক অপমানে মৃতপ্রায় হইলেন, তিন দিবস জলস্পর্শ করিলেন না। জাহানীর তাঁহাকে প্রথানবদ্ধ করিয়া রাখিলেন, এবং এই অবস্থাতে তাঁহাকে কারুলে লইয়া গেলেন। কারুলে যাইয়া তাঁহার পৃথাল মোচন করাইয়া ভাঁহাকে হর্পের উদ্যানে ভ্রমণ করিতে অনুসতি দিয়া-ছিলেন, তবিষ্যতে আরো অনুপ্রহের সম্ভাবনা ছিল। কিন্ত ভাঁহার করেক জন পারিষদ মন্ত্রণা করিল আহানীরকে রুধ করিছা প্রস্কুকে রাজা বিবে। জাহানীর তাহা क्रानिट्ड शाहिया श्वनकात छाष्ट्राटक स्थानक क्रिका व्राथितम, उपनि आत वाशित हरेट्ड मिट्डन मा ।

आहामीरत्रत्र तांक्यातरश्चत्र किছू मिवन शरत उपयुद्धत्त রাজার সহিত সংগ্রাম আরম্ভ হইয়াছিল। পরবেজ নামে জাহালীরের দিতীয় পুত্র ঐ যুদ্ধে ঘাইয়া উদয়পুরের दाक्कात महिन्छ এकটा मदमित कतिवात जैप्तालम हिप्तम, ইতিমধ্যে খসরু পলায়ন করিলে জাহাসীর তাঁহাকে आश्रमात्र निकटि आनाहेरलन, सुख्दार महे मिक्त हहेल ना। পর বংসর জাহালীর কাবুল হইতে প্রত্যাগমন করিয়া মহকত খাঁ নামে এক প্রধান সেনা-র্থ : ৩০৭ সিতিকে উদয়পুরে প্রেরণ করিলেন। কিয়দিবস পরে দক্ষিণ রাজ্যে অত্যন্ত গোলযোগ উপ-স্থিত হইল। তলিবারণ জন্য জাহানীর, খা খানানকে তথায় প্রেরণ করিলেন। তিনি দক্ষিণ রাজ্যে যাইয়া যুদ্ধা-রম্ভ করিলেন, কিন্তু যুদ্ধ জয় করিতে পারিলেন না। মালক আধর নামে তত্তর রাজমন্ত্রী আহম্মদ নগর অধি-কার করিয়া মোগলদেনাপতিকে এ রাজ্য হইতে একে-বারে দুরীভূত করিয়া দিলেন।

্ছিং ১০২০ অন্দে জাহানীর ভুবনবিখ্যাত সুরজাহানের পাণিগ্রহণ করেন। * সুরজাহান অতি রূপবতী ছিলেন।

[•] ইহাঁর পূর্ক নাম আমীক্রদ্বিশা, জাহাজীর উহাকে বিবাহ করিয়া মুক্তভাষান কর্মাই জগতেজ্যাতি নাম দিয়াছিলেন, ডিনি এই নামে ব্যাক, ক্ষত্তার অন্য নাম লেখা গেল না ১

তত্তুলা সুন্দরী তৎকালে এতদেশে আর ছিল না। জাহা-লীর অনেক দিবসাবধি তাঁহার প্রেমাসক্ত হইরাছিলেন। এবং তাঁহার জনা বে সকল কুকাও করিয়াছিলেন, তাহা রাজার অনুচিত কর্ম। তাজিবরণ পশ্চাৎ বেখা বাঁইতেছে,

নুরজাহান থাজা আইরাদের কন্যা। থাজা আইরাস পারসন্থানের অন্তঃপাতি তেহরাণে বাস করিতেন। তিনি मञ्जास लाटकत मस्रोम अवर नामाश्रम विभिन्ने हिल्लम, কিন্তু তাদৃক্ ধন বা সম্পতি ছিল না। অভএব স্বৰ্ণভূমি ভারতভূমিতে আসিয়া ঐশ্রাশালী হইবেন এই বাস-নায় সদেশ পরিত্যাগ করিয়া জ্রী ও ছইটী পুত্র লইয়া এড ब्लिटम याजा कतिरनम । धे ममस्य छाँदात खी शर्छ-বতী। সম্পত্তির মধ্যে কয়েকটা মুদ্রা ও একটা সামান্য (यांग्रेक किस । जे (यांग्रेटक ভार्याटक आदाहन कहा है। অলপনি ছইটী পুত্র-লইয়া ভাঁহার সঙ্গে সজে আসিতে ছিলেন। কতক দুর আসিয়া তাঁহার পথসমল ফুরাইল, তথন অনন্যোপায় হইয়া ভিক্ষায় নির্ভন্ন করিয়া আসিতে লাগিলেন। কান্ধার পরিত্যাগ করিয়া মধন প্রান্তরে পড়িলেন তথন সে আশাও দুর হইল, ঐ ছানে মনুষ্যের ্পম্লাগ্মন প্রায় হয় না এবং চতুর্দিশে মলভূমি, কোন্ ्दादम जन करा हिल ना (य उन्होंद्रो ध्यानधादन करतन ।

এই ছংসময়ে তাঁহার পত্নীর প্রসক্ষেদনা উপস্থিত হইলা একটা কন্যা ক্ষমিল। এই কন্যার নাম সুরজা-হান, তাহার রূপে মন্ত্রি উদ্ধুল ক্রিন, কিন্তু আপ্নারা ক্ষা ভূফাতে কাতর, চলৎ শক্তি রহিত প্রায়, কন্যাকে কি প্রকারে লইয়া যান এই ভাবিয়া কন্যারীকে প্রাচ্চা-দন করিয়া এক রক্ষমূলে রাখিয়া, আপনারা যেমন গমন কবিতে ছিলেন সেই প্রকার চলিলেন।

কতক দুর আসিয়া ভাঁহার ভার্য্যা কন্যার শোকে অধৈর্য্য হইয়া রোদন করিতে লাগিলেন। থাজা আই-য়াস ভাঁহাকে কোন প্রকারে সান্ত্রা করিতে না পারিয়া कनारंगितक ज्यानशन कतिएक शिलन । शिश्व (मर्थन এक কাল ভুজন্ন ফণা বিস্তার করিয়া তাহাকে গ্রাস করিতে উদাত। থাকা আইয়াস তাহা দেখিয়া দুর হইতে চীৎকার ও প্রস্তরাদি নিঃকেপ করিতে লাগিলেন, তা-হাতে সর্প কন্যাকে পরিত্যাগ করিয়া এক গর্ভে প্রবেশ করিল। খাজা আইয়াস তথন কন্যাকে লইয়া ভার্যার ক্রোভে দিলেন। ভাঁহার ভার্যা কন্যাকে পাইয়া ধর্ম্য श्रीक्ष इहेटलन ।

প্রদিন কতকণ্ডলিন যাত্রী ঐ পথ দিয়া যাইতেভিলেন, তমধ্যে একজন বণিক ছিলেন। তিনি তাহাদিগের ছুর্গতি मिया छोरामिशक मक्त कतिया नाट्टाटत जानित्तन। তৎকালে আক্ষর ঐ স্থানে ছিলেন। তাঁহার মন্ত্রী থাজা আইয়ানের কেমন কুটুর ছিলেন, তাহাতে তিনি তাঁহাকে जाशन जानरत्र द्वाधिरमन, शरत द्वाजांत्र मरम छारात আলাপ করিয়া দিলেন। আক্বর তাঁহারতভুরতা ও কর্ম-মক্ষতা দেখিয়া প্রথমতঃ ভাঁহাকে সহত্র অখাধিপতি, তৎ-

পরে রাজকোরাধ্যক, করিলেন। খাজা আইয়াস যেনন সম্ভান্ত লোকের সন্তান তহুপযুক্ত কর্ম্ম পাইলেন।

খাজা আইয়াস বাল্যকালাবধি কন্যাকে নানাপ্রকার বিদ্যাত্যাস করাইতে লাগিলেন, সুরঞ্জাহান সেই সকল বিদ্যা উত্তয় রূপে শিখিলেন, সুতরাং তিনি ঘেমন রূপ-বতী সেইপ্রকার গুণবতীও হইলেন। তাঁহার তুল্য নারী তৎকালে আর রহিল না, তিনি রূপে গুণে অদিতীয়া হইলেন।

সুরজাহানের গর্ভধারিণী রাজার অন্তঃপুরে গমনাপমন করিতেন, নথ্যেই সুরজাহানও তাঁহার সজে যাইতেন। তাহাতে রাজপুর সলীম তাঁহার অপরূপ রূপ
দর্শনে নিতান্ত বিচলিত্তিত হইয়া তাঁহাকে বিবাহ করিবার মানস করিলেন। এই কথা ক্রমে আকবরের কর্ণগোচর
হইল। কিন্তু সের আফগান নামে পারসন্থানবাসী এক
বুবার সহিত সুরজাহানের বিবাহের সম্বন্ধ ইইয়াছিল,
তাহা রহিত করিয়া পুরের সহিত বিবাহ দিলে অধ্যোব
তাগী হইতে হয়, এজনা আকবর তাহা না করিয়া সের
আফগানের সহিত তাঁহার বিবাহ দেওয়াইলেন, এবং
তাহার তরণ পোষণ জন্য বলদেশে বৃদ্ধি নিয়োজিত
করিয়া দিলেন। সের আকগান সুরজাহানকে লইয়া
বিশ্বানে বাস করিতে লাগিলেন।

ভাষানীর পিতার ভয়ে তখন কিছু করিতে পারিলেন না, মনের মান্স ননেতেই রাখিনেন। পিতার মৃত্যুর পর রাজ্যেশ্বর হইয়া তিনি সের আফগানকে নানাপ্রকার লোভ প্রদর্শন করিতে লাগিলেন। কিন্তু ভদ্রকোকে
জীদান করিয়া কে কোথায় লোভ সম্পূর্ণ করিয়া থাকে।
মের আফগান ভাহাতে ভুলিলেন না। অভএব সে
আশায় নিরাশ হইয়া জাহাজীর ভাঁহার বিনাশ বাসনায়
ভাঁহাকে বর্জমান হইতে দিলীতে আনয়ন করিয়া যথেক
সমাদর পূর্বক রাখিলেন। সরলস্বভাব সের আফগান
ভাঁহার মনের ভাব কিছু বুঝিতে পারিলেন না।

व्यनखत काशमीत এक भिवन डींब्रांटक नहेश भीकारह গমন করিলেন, এবং একটা ব্লহৎ ব্যাত্তকে খেরিয়া সলী-গণকে বলিলেন এই ব্যান্ডের সঙ্গে একাকী যুদ্ধ করিতে পারে ভোমাদের মধ্যে এমত বীর পুরুষ কেছ আছে কিনা : এই কথায় তিন বাজি মুসক্ষিত হইয়া দাগুইলেন। সের वीताश्रभंग जदर मंडल यमध्यशंभी हिल्लम, अभाव गांड বধ করিলে তাঁহার যশ লাভ হয় না, এই ভাবিয়া তিনি बाकारक वनिरलन महाताक हेराता अञ्चानि महेगा गा-শ্রের সলে যুদ্ধ করিতে উদ্যত হইয়াছেন, কি আশ্চর্য্য, श्रद्धमाना श्रिक विमन श्रु श्रम अ मुखानि नियाद्धन * মনুষাকে সেইপ্রকার হস্ত পদাদি দিয়াছেন, অধিকত মহু-ষাকে বুদ্ধিবল দিয়াছেন, পশুগণ ভাষাতে বঞ্চিত, অতএব व्यक्तानि नहेशा युक्त करा शोक्रदयत नट्ट। यनि नितं इटेशा কেই ব্যাত্ত্রের সঙ্কে যুদ্ধ করিতে পারে করুক, নতুবা আমি नित्रव इहेश यूच कतिव। जाहाजीत वहे क्यांत्र मदनर শন্তট ইইয়া তথনি অনুমতি দিলেন। ইই একবার বারশ করিলেন কিন্তু সে মৌখিক। সের নিরক্ত ইইয়া ব্যান্তের সঙ্গে যুক্তে প্রকৃত ইইয়া তাহার মুখের মধ্যে ছই হস্ত দিয়া ভাহার জিহ্না টানিয়া ধরিলেন, ব্যান্তের বিক্রম রহিলনা, ভাহার পর সের আফগান ভাহাকে অনায়াসে বধ করিলেন *।

এই সাহস দেখিয়া সকলে সেবের প্রশংসা করিতে লাগিলেন, কিন্তু জাহানীরের মানোভিলার পূর্ণ হইল না, অভএব তিনি তাঁহাকে বিনাশ করিবার আর এক উপায় করিলেন। সে উপায় এই, তাঁহার একটা মন্ত মাডক ছিল, ভাহার মাছতকে ডাকিয়া আজা দিলেন যখন সের আফ্রান রাজপুরী হইতে বাসাতে ঘাইবেন তখন হাতিকে লইয়া ভাহার উপরে চাপাইয়া দিবে। হন্তিপ এই আজা পাইয়া হন্তীকে প্রস্তুত করিয়া রাখিল। পরে যখন সের আফ্রান পালকী আরোহণে রাজালয় হইতে বাহির হইয়া একটা গলিতে প্রবেশ করিলেন, তখন হন্তিপ মন্ত হন্তীকে তাঁহার পালকীর উপর চাপাইয়া দিলে। কাহাবেরা পালকী ফেলিয়া পলায়ন করিল। সের ভাহাবেরা পালকী হইতে নামিয়া হন্তীর শুতে এমত খল্লা- গাত করিলেন যে ভাহাতে হন্তীর শুতে এমত খল্লা-

[•] ডিনি পুর্বে একটা ব্যাহ বধ করিয়াছিলেন এই স্থন্য ওঁছির কের মান হইয়াছিল। সের শক্ষের কাল ব্যাহ

থিও হইয়া পড়িল। হন্তীর পো চীৎকার করিতে ২ বেলে পলায়ন করিল।

জাহানীরের এই সকল কুমন্ত্রণা ক্রমে প্রকাশ হইয়া পড়িল। সের আফগান তাহা জানিতে পারিয়া দিল্লী পরিত্যাগ করিয়া রাজমহলে আদিয়া বাস করিলেন। ইহাতেও জাহালীর কান্ত হইলেন না। কুত্রুদ্দীন নামে ভাঁহার মাতার এক পালক পুত্রকে বলদেশের পুরাদারী দিয়া আজা করিলেন বেপ্রকারে হয় সের আফগানকে বধ করিবে। কুতব এই আজ্ঞা পাইয়া চল্লিশ জন দস্যু নি-যুক্ত করিলেন, ইহারা অঙ্গীকার করিল সের আফগানকে বধ করিবে। সের আফগান অতি বলবান্ ছিলেন, রাত্রে কাহাকে বাটীর মধ্যে থাকিতে দিতেন না, কেবল একজন প্রাচীন ছারবান ছারে থাকিত। এক দিবস সন্ধ্যাকালে ঐ ছারবান স্থানান্তরে গমন করিলে দ্যুগণ চুপে২ বার্চী প্রবেশ করিয়া গোপন ভাবে থাকিল। সের আফগান নিট্রিত হইলে, দম্যুগণ ভাঁহার শয়নমন্দিরে প্রবেশ করিয়া তাঁহাকে অন্ত্রাঘাত করিতে উদাত হইল, ঐ সময়ে ভাষাদের परिधा একজন প্রাচীন বলিল অরে ভাই শুন-**দেখি. একজন নিজিত ব্যক্তির উপরে আমরা চলিশ জন** একেবারে পড়িব ইহাকি ধর্মের কর্ম। নিক্রিত মনুষ্যকে মারা অকর্ত্তবা, নিদ্রিত মনুষ্য মৃতের তুলা। এই কথায় न्त्र आयम्पादनत निजा एक इहेन, जिनि उरक्पाद गोरकाशीन कतिका निरक्षांविक व्यति रुक्त भग्नानरमञ् এক কোণে দাগুইলেন। দম্যুগণ উহিকে বেইন করিয়া অক্সাঘাত করিবার চেন্টা করিল, কিন্তু কোন ব্যক্তি উহার নিকটে যাইতে পারিল না। সের আকগান কণেক কালের মধ্যে অনেককে ক্ষৃত বিক্ষত ও শোণিতাক করিয়া দিলেন। দম্যুগণ লক্ষিত হইয়া পলায়ন করিল।

এই ব্যাপারের পর সের আকগান বিবেচনা করিলেন রাজমহলে বাস করা আর কর্ত্তবা নহে। অতএব তিনি বৰ্দ্ধনানে আসিয়া বাস করিতে লাগিলেন। কুতবুদ্দিন ইহাতেও काछ ना इहेश वर्षामात्म कर्म कार्यात ज्यान-ধান ছলে ভাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ তথায় আসিলেন। সের আফগান তাঁহার অভিপ্রায় কতক বুঝিতে পারি-লেন, কিন্ত তাহা প্রকাশ করিলেন না৷ অন্তর যখন কুত্ব বর্জমানে উপস্থিত হইলেন তথন সের আফগান অশ্বারোহণে ভাঁছাকে অভ্যর্থনা করিতে গেলেন। ভাঁহার महम रक्रम इहेजन अभारताही कृष्ण भगन कतिन। रमत উপ্ৰিত হইলে কুতৰ তাঁহার সঙ্গে সদালাপ করিতে ২ हिल्लान । कंडक मूत्र आमियां नगत मर्गटन घाइँदिन धाइँ इत्न कूठव रखी जानिए आका मिल्नम। रखी जानवन করিলে যখন তিনি তাহাতে আরোহণ করেন তখন সের आक्तान अश्राद्वाहरन डाहात मन्यूर्थ मछायमान नाकि-ताम । व नगरम कुछरवत्र धककन एम्ड्डकक रमना अब हाछ बनिया छीटाटक अगड दर्वाचां कहिन व छोटाटड ভিনি অৰ হইতে ভূমিতে পড়িলেন। ঐ সমায় কুতবের

আর ২ লোকেরা বর্ষা বন্দুক লইয়া প্রস্তুত হইল। সের বুঝিতে পারিলেন গতিক ভাল নহে, অতএব অবিলয়ে অখে আরোহণ পূর্বক কুতবের হস্তিপাখে ঘাইয়া একা-খাতে তাঁহার শিরশেছদন করিলেন। কুতবের লোকেরা শব্রপাণি হইয়া ওাঁহার চারিদিগ বেইন করিল। চারি-দিগ হইতে বল্লম বর্ঘা তীর ও গুলি বর্যণ হইতে লাগিল : **শের শত্রুজালে বেটি**ত হইয়া এনন ভাবে অগ ও অ**প্ত** চালুন করিতে লাগিলেন কোন ব্যক্তি ভাঁহার অসম্পর্শ করিতে প্রারিল না। যে ব্যক্তি নিকট আসিবার চেটা করিল সে তথনি সেই খানে শয়ন করিল। সেরের চতুর্দ্দিগে শরের ঢেরি হইল। তিনি বাাছের ন্যায় আক্ষা-লন করিতে লাগিলেন। অভংপর একটা গুলি আসিয়া তাঁহার অধের সম্ভব ভেদ করিল, ঐ গুলি খাইয়া অশ ধরাবল্ঠিত হইল। তখন সের জীবনাশা পরিত্যাগ कतिया अञ्च निर्शक शृद्धक मङ्गामा इहेगा माँ छाहेरलन, এবং বারি অভাবে একমুটি মৃত্তিকা মন্তকে অর্পণ করিয়া ঈশ্বর সমরণ করিতে লাগিলেন। তথনও কেহ তাঁহার নিকটবর্জী হইতে পারিল না। একে একে তাঁহার শরীরে ছয়টা ব্যক্তবের গুলি প্রবেশ করিল, তাহাতে তিনি ক্রমে रीमवन हरेया बीद्रभगाग्र भग्नन कतिरमन। उरलद জীহার প্রাণত্যাণ হইল। সের আফগান এই প্রকার महानीत हित्तन । जनन हे जिल्लाम के जारात नीत-**चित्र अर्थश्या कतित्राट्स** ।, १,००० क्षेत्र १ १ १ १ १ १ १ १ १

শের আফগানের মৃত্যুর পর কুতবের পারিষদ লোকের।
তাঁহাকে রাজজোহী বলিয়া তাঁহার যথাসক্ষ হরণ
করিল, এবং পুরজাহানকে বন্দী করিয়া দিলীতে পাঠাইয়াদিল। পুরজাহান দিলীতে আনীত হইলে জাঁহালীর
তাঁহার পাণিগ্রহণের অভিলাষ করিলেন, কিন্তু পুরজাহান
তাঁহাকে স্বামিহস্তা বলিয়া পাণিদানে সম্মত হইলেন না।
জাহালীর বল প্রকাশ করিলে করিতে পারিতেন, কিন্তু
তাহা না করিয়া পুরজাহানকে স্বীয় গর্ভধারিণীর নিক্টে
বন্দিনী করিয়া অন্তঃপুরে রাখিয়াদিলেন। এই বিপরীত
ভাবের প্রক্লত কারণ এপর্যন্ত কেহ অনুভব করিতে পারেন
নাই; বোধ হয় পরস্ত্রী হরণ জন্য বে সকল জখন্য কাপ্ত
করিয়া ছিলেন ভাহাতে মনে ২ লক্ষা হইলা থাকিবে,
ভাহাতেই ক্ষান্ত হইলেন।

মুরজাহান প্রায় চারি বৎশর সামান্য বন্দিনীর ন্যার রাজান্তঃপুরে থাকিলেন। তাঁহার ব্যয় নির্মাহের কোন উপায় ছিল না, এজনা তিনি চিত্র লিখিয়া বিক্রয় করাই-তেন, তাহাতে ব্যয় বিধান হইত। ক্রমে তাঁহার চিত্র ও শিপ্পকর্দ্যের অভিশয় গৌরব হইল, রাজা তাহাতে প্রনর্মায় তাঁহার প্রণয়াভিলাবী হইলেন। সুরজাহান ক্রমন রাজরাণী হইবার অভিলাহে পাণিদান করিলেন। বিবাহে অভান্ত সমারোহ এবং ঘটা হইল। তৎপরে নুরজাহান রাজ্যের কর্মন্ত্রী কর্মী হইয়া উচিলেন, তাঁহার পিতা রাজনত্রী, এবং তাঁহার জাতা রাজ্যের অভি কর্মে নিযুক্ত হইলেন। তাঁহার নাম পর্যান্ত স্বর্ণমুদ্রাতে ক্ষিত হইতে জাগিল। তাঁহার আধিপত্যের নীমা পরি-নীমা থাকিল না। জাহাঙ্গীর তাঁহার পরামর্শ ভিন্ন কোন কর্মে করিতেন না, তিনি যাহা বলিতেন তাহা বেদবাক্যের ন্যায় মানিত্তেন।

এই প্রকার নারীভক্তি নিন্দনীয় বটে, কিন্তু সুরজাহান প্রথম ২ যে ২ কর্ম করিয়াছিলেন ভাহাতে রাজ্যের হিত ভিন্ন কিছুই অহিত হয় নাই। তাঁহার পিতা বিনিরাক্ষস্ত্রী হইয়াছিলেন ভিনি অতি জ্ঞানবান্ ও নিরাকাঙ্কী, তাঁহার জাতাও অতি পণ্ডিত ও থার্মিক ছিলেন, তাঁহানের জারা রাজ্যের অনেক মঙ্গল ইইয়াছিল। জাহান্দীরেরও অনেক তুর্নীতি ছিল, তিনি মদ্যপান করিয়া সামান্য মদ্যপের ন্যায় যথাতথা পড়িয়া থাকিতেন, এবং লোকের প্রতি নানা প্রকার দৌরাত্মা ও অভ্যাচার করিতেন। সুরজাহান এই সকল তুর্নীতি দূর করিলেন। জ্যাহানীর অপুরিমিত পান ত্যাগ করিয়া শ্রনাগার তিম্প্রাকীর অপুরিমিত পান ত্যাগ করিয়া শ্রনাগার তিম্প্রাক্ষীর অপুরিমিত পান ত্যাগ করিয়া শ্রনাগার তিম্প্রাক্ষীর অপুরিমিত পান ত্যাগ করিয়া শ্রনাগার তিম্প্রাক্ষীর অপুরিমিত গান ত্যাগ করিয়া শ্রনাগার তিম্প্রাক্ষীর বিশিক্ট ব্যবহার করিতে লাগিলেন।

• সুরজাহানের যেমন রূপ ও গুণ, বুদ্ধি ও ক্ষমতা সেই
প্রকার ছিল, তদ্বারা তিনি রাজকর্ম উভমরূপে চালাইতে লাগিলেন। বিশেষ, গুহসজ্জার তাহার অত্যন্ত বড়
ছিল, তিনি পুরাতন গঠনের প্রবাদির পরিবর্তে স্তুল গঠনের অব্যাদি প্রস্তুত করাইলেন, ইহাতে রাজসভার অমন

নৌন্দর্য রুদ্ধি হইল যে ততুলা শোভা হর্ষে ক্ষন দেখা বায় নাই, অবচ পূর্বাপেকা বায় অনেক স্থান হইল। অপর তৎকালে জ্বী জাতিরা যেপ্রকার বসনাদি পরিধান করি-তেন তাহা উত্তম ছিল না, তৎপরিবর্জে তিনি বাইআনা পোশাকের সৃষ্টি করিজেন, সেই পোশাক অদ্যাপি বাব-হার হইতেছে। ভদ্তির এইকণে যে গোলাপি আতর * বাবহার করা যায় তাহাও সুরক্ষাহান কর্ত্ব সৃষ্ট হয়। সুরজাহানের বিদ্যাও যৎসামান্য ছিলনা, তিনি মুক্ষেৎ কবিতা রচনা করিতে পারিতেন। ক্ষিত আছে এই গুণে জাহানীর তাঁহার অত্যন্ত বশীভূত হইয়াছিলেন।

ताकात विवादित किछूकान পরে রাজবিজাহী ওসমান

यूटक পরাজিত হইয়া মরিলেন, তাহাতে বঙ্গদেশের উপ
হিং ১০০১ আনে শান্তিজল পড়িল। কিন্তু দক্ষিণ

বাজ্য খোরতর গোলযোগ রুদ্ধি হইল,

থ রাজ্য পুনর্জন্মের কণ্পনায় এইরূপ থার্য্য হইল, গুজরাট

হইতে একদল এবং বেরার হইতে আর একদল সেনা

একেরারে থ দেশ আক্রমণ করিবে। তাহা হইলে

মলকারর রাজ্য রক্ষা করিতে পারিবে না। কিন্তু মলকারর

চতুরতা প্রক্ষ উত্তরে কতগলন অখারোহি সেন্

রাশিয়া দিলেন, গুজরাট হইতে রাজদেনা বেমন আসিতে

[্] এই আড়ারের ভরি পূর্মে ৮০ টালা ছিল। এইকংশ ভারা প্রস্তুত করার ধারা আরো ভাল হইরাছে, অডএব ডাইার মূল্যও কমিয়া আনিয়াছে।

লাপিল, তাহারা তাহাদিগকে আক্রমণ করিতে লাগিল, এবং তাহাদের বাট ঘাট বন্ধ করিল। গুজরাটী দেনা দিগের আহারাদির মহা কট হইতে লাগিল, তাহাতে তাহারা তিন্তিতে না পারিয়া স্বস্থানে প্রস্থান করিল। বেরার হইতে যে সকল সেনা আসিরাছিল তাহারা গুজ-রাটী সেনাদিগের ঐ ছর্দশা দেখিয়া রণে ক্ষান্ত দিয়া বদেশে প্রতিগমন করিল। সুতরাং দক্ষিণ রাজ্য পুনর্জ-যের ক্পানারপা হইল। তাহা মলকাম্বরের হস্তে রহিল।

উদয়পুরের যুদ্ধ পূর্কাবধি চলিতেছিল। মহমত থাঁ
ও আবহুলা এই যুদ্ধে সেনাপতি হইয়া মুদ্ধ জয় করিয়াছিলন। কিন্তু তথাকার রাণা প্রগ্ম তানে পলায়ন করাতে
মুতরাং যুদ্ধের প্রকৃত ফল দর্শে নাই, অতএব জাহাঙ্গীর
করম নামে তাঁহার পরম প্রিয় তৃতীয় পুত্রকে বিংশতি
মহল্র সেনা সমভিলাহারে তথায় পাঠাইলেন। রাজপুত্র
আপনি কয় শীকার করিয়া রাণাকে নানাপ্রকার কয়
দিতে লাগিলেন। রাণা বিব্রত হইয়া দিল্লীশ্বরের অধীন
নতা শীকার করিলেন, এবং সন্ধির প্রার্থনায় নানালাভীয় উপটোকন লইয়া রাজপুত্রের সভাতে উপস্থিত
ছইলেন। রাজপুত্র, পিতামহ আকবরের রীতানুসারে,
তাঁহাকে আলিঙ্গনাদি করিয়া আপন পাথে উপবেধি ১০২২
মন করাইলেন। অনস্তর তাঁহার যে সকল
শ্বাক্ষা জয় করিয়াছিলেন সমুদয় প্রত্যর্পণ

পূর্মক তাঁহার পুত্রকে দিলীতে লইয়া গিয়া উচ্চ কর্মে নিযুক্ত করাইলেন।

এই কর্মে করমের অভ্যন্ত প্রতিষ্ঠা হইল। বিশেষ ভিনি ষেমন পিতার প্রিয়, বুরজাহানের ভাতৃক্ষন্যাকে বিবাহ করিয়া ভাঁহারও সৈইরূপ প্রিয়পাত হইয়াছিলেন, রাজ-রাণী সর্বদা তাঁহার ইফ ইঙ্ছা করিতেন। অভএৰ জাহা-লীর তাঁহাকে সাহজাহান, অর্থাৎ পৃথীরাজ, উপাধি দিয়া দক্ষিণ দেশের যুদ্ধে প্রেরণ করিলেন। ইহাতে তিনি ভবিষাতে রাজা হইবেন ইহা এক প্রকার স্থিরীকত হইল, মুতরাৎ তাঁহার জ্যেষ্ঠ জাতা ধসরুর * রাজ্যাশা একে-বারে শেষ হইল এবং ভাঁহার দ্বিতীয় জ্রাতা পরবেজের ধে ঘৎকিকিৎ আশা ভরুষা হইয়াছিল ভাহাও রহিল না। ্ সাহজাহানের কেমন্ শুভাদুষ্ট, দক্ষিণ রাজ্যে গমন নাজেই, মলকাষ্টরের সেনাপতি ও মুহ্ন সকলে ভাঁছাকে ভাগে করিয়া পলাইতে লাগিল। মলকাম্বর হতবল হইরা দিলীখনের প্রভূত্ব শীকার পূর্বক আহম্মদুনগর প্রভৃতি যে যে স্থান জয় করিয়াছিলেন তাবৎ প্রত্যর্পণ করিলেন। ভদবণি ঐ রাজ্যে শান্তিস্থাপন হইল। চারি বৎসর পর্যান্ত আর কোন গোলযোগ রহিল না। পঞ্চম বৎসরে মলু-कामत पूनकीत जाल धातन पूर्वक स्माननिमध्य छ्या हरेंद्र हुत्री छूठ कतिशा खे दिन जाशनि श्वनतिधकात कति-

লেন। তথন সাহজাহানকে এ রাজ্যে পুনঃ প্রেরণ করা ্ত ১৯৬১ নিতান্ত আবশ্যক হইল। কিন্তু সাহজাহা১৯২১ নির অন্তঃকরণে কেমন সন্দেহ জন্মিয়াছিল ভিনি বক্র হইয়া বসিলেন, বলিলেন খসরু ভাঁহার হস্তে থাকিবে, ইহা হটলে তিনি যুদ্ধে গমন করিবেন, নতুবা করিবেন না। জাহাঞ্চীর কি করেন তাহাই খীকার করিয় খসরুকে তাঁহার হল্তে অর্পণ করিলেন। সাহস্বাহান ভাহাকে लहेग्रा पिकार्श योजा कतित्वन । खरशात मल-কামরের সলে যুদ্ধারম্ভ হইল। অনেক সুদ্ধের পর সাহ-জাহান ভাঁহাকে পরাস্ত করিলেন।

ইতিমধ্যে জাহালীরের শাস কাশ অতি প্রবল হইয়া व्यान विद्यारभव नक्कन इहेन। शतुरवाय धेरे मः वीरम রাজ্যাশায় রাজধানীতে আসিলেন, কিন্তু আগদন মাত জাহানীর তাঁহাকে স্থানে প্রস্থান করিতে আজা मिटलन । **धे ममरत्र थम**ऋत मृङ्गम श्वाम श्वामिल । स्वर २ অনুমান করেন তিনি সাহজাহানের রাজাপ্রাপ্তির পথে কর্তকন্বরূপ ছিলেন, এজন্য সাহজাহান ভাঁহাকে বধ করিয়া থাকিবেন। একথা নিতান্ত অসমত নহে। কিন্তু শাহজাহান এপর্যান্ত কোন অধর্ম কর্ম করেন নাই, এজনা সে কথায় সম্পূর্ণ বিশ্বাস করা যাইতে পারে না। 💛

ষাহাহউক সাহজাহান তৎকালে নুরজাহানের স্নেহে একবারেই বর্জিত হইয়াছিলেন। তাহার কারণ, সুরজা-राम्बर श्रुव यामित खेतमजां अक्री कना हिन, ताजात চতুর্থ পুত্র সাহরিয়ারের সহিত ভাহার বিবাহ দিয়াছিলেন। সুতরাং সাহরিয়ারের প্রতি সম্পূর্ণ শ্লেহ জন্মিয়াছিল। বিশেষতঃ সাহজাহান বীর্যাবান্ ও সক্ষম পুরুষ,
তিনি রাজা হইলে তাঁহার আধিপত্য থাকিবে না, এই
জন্য তিনি মনেং স্থির করিয়াছিলেন সাহরিয়ারকে রাজা
করিবেন, সাহজাহানকে রাজা হইতে দিবেন না। সুরজাহানকে এই প্রতিজ্ঞা হইতে জান্ত করায় তৎকালে
এমত কোন লোক ছিল না। তাঁহার পিতা কর্ত্তমান
থাকিতে তিনি নিভান্ত গর্হিত কর্ম্ম করিতে পারিতেন না,
করিতে উদ্যত হইলে তাঁহাকে ক্ষান্ত করিয়া রাখিতেন।
তাঁহার মৃত্যুর পর সুরজাহানের সহোদর রাজ্মন্ত্রী হইয়া
তাঁহার আজ্ঞানুসারে কর্ম্ম করিতেন, তাঁহার ইচ্ছার বিপরীত কোন কথা বলিতে পারিতেন না, এই জন্য তিনি
আরো প্রবলা হইয়াছিলেন।

নুরজাহানের মনোভিলাব এই ছিল, সাহজাহান পিতার নিকটে থাকিতে না পারেন, তাহা হইলে জাহা-লীরের অবর্ডমানে সাহরিয়ারের রাজ্য প্রাপ্তির কোন প্রতিবন্ধক থাকে না। দৈববোগে এ সময়ে ইরানাধিপতি কান্ধার রাজ্য অধিকার করিলেন। তাহাতে রাজরাণী এই প্রভাব করিলেন সাহজাহান অতি বীর পুরুষ, তভিন্ধ নার্মান বাজি ভারা এই রাজ্য পুনরুষ্ঠ হওয়া নার্মান অভ্যার কনোগত অভিপ্রায় না বৃশ্বিরা তখন কংশ্রামসন্ধা করিক্ল যাত্রা করিলেন। পরে তাঁহার মন্ত্রণা
বুনিয়া মাঞু হইতে লিখিয়া পাঠাইলেন, ভবিষাতে
আমার রাজ্যপ্রাপ্তির বিল্প না ঘটে, তাহার বোধ পাইলে
আমার রাজ্যপ্রাপ্তির বিল্প না ঘটে, তাহার বোধ পাইলে
আমি এই যুদ্ধে গমন করিতে পারি, নজুবা পারি না এ
কুরজাহান আজা দিলেন যদি ভূমি বুদ্ধে গমনে অসম্মত
হও তবে সাহরিয়ার মেনাপতি হইয়া ঘাইবেন, ভূমি
সৈন্দ্রগণকে শুল্পানী পাঠাইবে। কিন্তু এই আজা দিয়া
মুদ্ধির হইয়া থাকিতে পারিলেন না, মনে ২ তয় হইল
যদি সাহজাহান বিপক্ষতাচরণ করেন, তাহা হইলে অনধৌৎপত্তি হইবে। অতএব মহাবীর মহন্দ্রত খাঁকে কারুল
হইতে আনাইলেন, যেহেতু ততুলা বিচক্ষণ সেনাপতি
তৎকালে আর ছিল না।

প্রতি পোল্যোগের সময়ে জাহালীর কাশীরে বাল করিতেছিলেন। ধথন বড় বাড়াবাড়ি হইরা উঠিল, তথন হিং ১০৩১ কাশীর হইতে আসিয়া লাহোরে অব-পু ১৯২২ হিতি করিলেন। তথা হইতে পুত্রের সজে পত্রাদি লেখালেথি হইতে লাগিল, কিন্তু সিভাপুত্রে মনোমালিনা ঘুচিল না। অধিকন্ত সাহজাহানের কুমন্ত্রণাল কে লিপ্ত বোধ করিয়া, জাহালীর তাঁহার কয়েক জন লোক কে বিশ্বার বক্র। অভ্যাব আগো অধিকার ক্রিক্তি মান-লোলা করিয়া, নিলীর বিংশতি কোশ দক্ষিয়া লাহোর

इडेटफ फैं। हात श्रमां ६२ व्यानिएक संशिक्षत । नाहकाशांन **টনরাশ হইয়া বিলাসপুর হইতে মিবার পর্বতে গমন** করিলেন। তথায় রাজদেনাদিগের সহিত তাঁহার দৈনোর একটা যুদ্ধ হইল। সাহজাহান পরাস্ত হইয়া মালব প্রদেশে প্রায়ন করিলেন। জাহাদীর আজ্মীর পর্যাত্ত ষ্য়ৎ ভাঁহার পশ্চাৎ২ গেলেন। পরে রাজপুত্র পরবেজ ও মহক্ষত খাঁকে ভাঁহাকে ধরিবার জনা পাঠাইলেন। बै मगर्य माहकाशास्त्रं अपनेक स्मा अवाहिए वाकिन। হিং ১০০০ তাহাতে তিনি নর্মদা পার হইয়া তৈলজে, भू १०२० छिथा इहेटल मननिभाषेटन शमन कहि-লেন, তৎপরে বসনেশে আসিয়া বাসলা ও বেহার অপি-काँव कविद्यान । अवश् अभाशावादमत पूर्व अधिकांत जना উদয়পুরের রাজার ভাতা ভীমসিংহকে সেনাপতি করিয়া পাঠাইলেন। রাজপুত পরবেজ ও মহনত খাঁ प्रक्रिश वार्टका वाहेग्रा वथन अभित्वन, माहकाशान वक-দেশ অধিকার করিয়া আলাহাবাদ লইতে গিয়াছেন, তথন ভাঁছারা ঐ ভান রক্ষার্থ দ্রতগমন করিলেন। সাহ-জাহান ভাহাদিগের সহিত বুজার্থ গলাপার হইয়া অগ্র-नंद इहेरलन । किछ जे रमभन्न लारकता छाहारक स्नोका बाबाम स्वामि किहुई मिन ना, धेवर वज्रम्य रहेएछ जिनि देव नकल रेमना मरशह कतिया जानियाहित्तन, ভাষারাও ভাষাকে ভ্যাগ করিয়া প্রস্থান করিল। সাইজা-" क्षेत्र विधियटक विभाग शक व्हेटलन, मुख्यार प्रनक्षात्र प्रक्रिय রাজ্যে পলামন ভিন্ন অন্য উপায় রহিল না। অভ্তর ভিনি ঐ রাজ্যে হাইয়া মলকাম্বরের সহিত নিলিয়া বর-হানপুর আফ্রনণে নিযুক্ত হইলেন। রাজপুর পরবেজ ও মহর্মত যাঁ ভাঁহার পলায়নের সংবাদ পাইয়া পুনর্কার ভাঁহার পশ্চাৎহ ঐ দেশে গমন করিলেন। অনস্তর যথন ভাঁহারা নর্মদা পার হইলেন, তথন সাহজাহানের সেনাগণের হৃৎকল্প জন্মিল, ভাহার। পালে ২ পলায়ন করিতে লাগিল। ইহা দেখিয়া সাহজাহানের মনে অভান্ত শঙ্কা জন্মিল। তিনি বিনতি পুর্কক পিতাকে পত্র লিখি-লেন, আমি আপনার আজ্ঞালজ্যন করিয়া অতি কুক্র্মা করিয়াছি আমার অপরাধ মার্ক্সনা করিবেন।

কিন্তু এবিষয়ে কর্ত্তবাকর্ত্বর ধার্যা না হইতেই জাহানীর আপনি খোর বিপদে পড়িলেন, ভাহার বিবরণ এই—সাহজাহান দক্ষিণ রাজ্যে পলায়ন করিলে জাহান্তীর বায়ু পরিবর্ত্তন জন্য ছই বার কাশ্মীরে গমন করেন। তৃতীয় বংসরে কারুলের রসনিয়া জাতীয়েরা উপদ্রব আরম্ভ করিল। ভাহাতে ভিনি সে বংসর কাশ্মীরে না যাইয়া কারুলে ঘাত্রা করিলেন। এই সময়ে মহক্ষত শাঁ অভ্যম্ভ প্রবল হইয়া উঠিয়াভিলেন। বিশেষ, রাজমন্ত্রির সহিত্ত ভাহার চিরশক্রতা ছিল, কি জানি রাজার অনুপন্থিতিকালে ভংকর্ত্বক রাজ্যের কোন অনিক্ট ঘটে, এই আশ্বাদ্ধার রাজরাণী ভাহাকে সর্কান প্রভাষাধীন রাখা আব-শাক বির্ঘেণ। করিয়া আজ্যা বির্লেম, তুমি বঙ্গদেশে

অনেক অর্থ অপচয় করিয়াছ, প্রভাব বাজগভাতে আসিয়া তাহার নিকাশ দিবে। মহমত খাঁ এখন নানা-প্রকার আপতি করিলেন, রাজী তাহা শুনিলেন না। মহন্তত কি করেন রাজাজ্ঞা শিরোধার্য্য করিয়া পঞ্চ সহত্র বিশক্ত রজঃপুত সেনা সমভিব্যাহারে সিন্ধুতটে রাজার ক্টকে উপস্থিত হইলেন। কিন্তু রাজা ভাহাব সহিত সাক্ষাৎ করিলেন না, ইহাতে মহন্ত অতাত ক্ষা হইলেন। মহকতে খাঁ ইতিপুর্কে বরুখোরদার নামে এক সম্ভান্ত ষ্যক্তির সহিত আপনার কন্যার বিবাহ দিয়াছিলেন। ঐ विबाहर ब्रांकाल्यमिक नरबन नारे, अकना बाका शाळत्क বিবস্ন করিয়া প্রহার করান, এবং যৌতুকের ভাবং ধন कां जिल्ला मध्यम । इंशांटिं स्थां अश्मानि इरेगोहि-সেই অবধি ভাঁহার মনে ২ আক্রোশ ছিল। অধুনা সেই আফোশ আরও রুদ্ধি হইল। অতএব সময় शाहरू इहात अञ्चलात कतिरदम धरे अञ्चलकार श्रीकटनन । 🤲 👙

ভাহাদীর থ সমরে সিকুর বাম তটে শিবির করিয়া ছিলেন। পত্র কাবুল গমনার্থ নৌকার সেতু প্রস্তুত করা-ইয়া প্রথমে কোনা সকলকে পার হইতে আজা দিলেন। কোবেশ দিবনে পার হইয়া দক্ষিণ পারে থাকিল। ভাহা-শীর-অনুসংযে পারপারে নাইবেন এই প্রকার কপানা ছিল। বাজ সম্ভাই মেনিলেন সেনাসকল দক্ষিণ পারে ভিয়াহে

তথ্ন তাঁহার পাঁচ সহত্র অখারোহী রক্তঃগুত দেনার মধ্যে ছই সহজ্ৰ সেনাকে আজ্ঞা দিলেন তাহারা সেতু আটক করিয়া থাকে, বামভট হইতে কেহ যাইতে চাহিলে ষাইতে দেয়, কিন্তু দক্ষিণ ভট হইতে কাহাকেও আসিতে नारमग्र। পরে তিনি স্বয়ৎ অবশিষ্ট ৩০০০ সেনা महेग्रा রাজার শিবির বেষ্টন করিয়া একেবারে তাঁহার ভাষুর হি ১০০৫ । মপ্যে প্রবেশ করিলেন। জাহাঙ্গীর প্^{১৯১৬। মার্চ} সমস্ত রাতি মদ্যপানাদি করিয়া তথন-পर्गास निजा याहेटक फिटलन। रेमरनात कोलाहरल নিদ্রা ভঙ্গ হইয়া স্বরিত গাতোখান করিয়া মহকতেকে সম্মুখে দেখিয়া অসিধারণ পূর্বক অতি ক্রোধে কহিলেন, অরে ক্রতন্ন ভোর কি এই কর্মা? মহরতে অফালে প্রাণ-পাত করিয়া কহিলেন মহারাজ আমি আপনার সহিত माकाद कतिवात खना व्यत्नक अवाम शाहेगाहिलाम, কোন প্রকারে তাহা ঘটে নাই, অতএব মহারাজের **চরণ দর্শনের জন্য এই উপায় করিয়াছি। এই কথায়** আহাজীর ক্রোধ সম্বরণ করিলেন। মহক্ষত বলিলেন মহা-রাজ এইক্ষণে ভাষুহইতে বাহিরে আমুন, মহারাজকে , भिथिया मकत्वत प्रकीवना पृत रेखेक। कारामीत रेखामि পরিধানছলে রাজরাণীর ভাষুতে ঘাইবার চেষ্টা করিলেন, किन्न महस्र वाहेटल मिल्लम ना। ভাহাতে जाहानीत সেই খানে বস্ত্রাদি পরিধান পূর্বক ভাঘুর ছারে আসিয়া व्यवादबार्ग क्रिटनन्। मरुक्छ दनियन गरकत श्रुटके

সকলে মহারাজকে দেখিতে পাইবেন, অতএব হস্তী আরোহণ করুন, ইহা বলিয়া আপনার মাতকে আরোহণ করাইলেন। পরে রজঃপৃত সেনা বেইন করিয়া আপনার শিবিরে লইয়া গেলেন।

बाहाकीत এই श्रकात वन्ती हहेटल नूतकाहान छाहाटक উদ্ধার করিবার কোন উপায় না দেখিয়া, ছল্যবেশে অডি সামান্য একখান শিবিকা করিয়া দক্ষিণ পারে গমন করিলেন, কেহ আটক করিল না। রাণী তথায় উপ-ব্রিভাইইয়া জাতা ও আর্থ প্রধানদিগকে নানামতে ভিরস্কার করিতে লাগিলেন, বলিলেন ভোমাদিগের চক্ষের সমক্ষে রাজা বন্দী হইলেন, ভোমরা ইহা দেখিয়াও ভাঁছার উদ্ধারের কোন চেটা করিলে না, তোমরা অতি নরাধম। এই প্রকার অনেক ভৎ সনা করিয়া তিনি সৈনাগণকে প্রস্তুত হইতে আজা দিলেন। পর্দিন প্রভাবে আপনি এক বৃহৎ হন্তী আরোহণ করিয়া সমরবেশে ৰাছির হইলেন। ইসন্যগণ ভাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিল। नमील्टिंग जामिया पिथित्वन तबःश्टलता मिकु मक्ष कतिया ফেলিয়াছে। অতএব পার হইতে না পারিয়া নদীর কিয়-अदस अक्षा ठड़ा निया गरेमरना श्रमखरक शमन कतिरङ লাঞ্জিলন। ডাঁহার ভাতা ও আর্থ প্রধানেরা পাখেৎ हिन्दिन्स । किन्छ ह्राइंट खाटनु २ श्रेडीत कन, मट्रशां र চোরা বালী, কোন ২ ছানে প্রভান্ত প্রোতঃ, ইহাতে পার इत्रक्ष अञ्चल कठिन रहेत । विद्यात, मध्यत्य विशक्तमा

রাণীকে লক্ষ্য করিয়া চতুর্দ্দিগ হইতে তীর ও গোলা বর্ষণ कतिएक नाणिन। तागीत पोहिकी छाँहात क्वांटक हिन, ভাহার রকার জন্য অত্যন্ত যত্ন করিতে লাগিলেন, তথাপি তাহার শরীরে একটা শর প্রবিষ্ট হইল। ভদ-নম্ভর তাঁহার মাছত আহত হইয়া জলে পডিল। মাছত अভाবে হন্তी চালায় এমত লোক রহিল না। বিশেষ, रखीत ७७ ७ विट विक रहेन, रखी तारे जात्न ७७ উভোলন না করিয়া মুগু ডুবাইয়া চলিতে লাগিল। রাজরাণী অতি বিপদগ্রস্ত হইলেন। তাঁহার সেনাগণ ৰৎপরোনান্তি ছুরবন্থা প্রাপ্ত হইল। একে পোশাক আঁটো ও হত্তে অন্ত্র, সাঁতার দিতে না পারিয়া অনেকে ভরফে ভাষিয়া গেল, কতক থাবি খাইতে লাগিল, কতক হল-मध इहेन। इस्ती, अस, मनूट्या, नभी आफ्न इहेगा পড়িল। य नकल रेमत्नादा পात हहेल, ভाहारम्ब পোশাক ভিজিয়া মুটিয়ার বোঝা হইল। বারুদে জল লাগিয়া কোনু পদার্থ রহিলনা। এই ছুরবস্থার পরে ভটে পদার্পণ মাত্র শক্রদেনা উপর হইতে শরও অগ্নি রুষ্টি করিতে লাগিল। ভাহাতে অনেকে হত ও আহত এবং अप्रतरक नमीजहरम याँ श मिर्फ माशिन। दांशी शब পারে উঠিলে তাঁহার বন্দিনীগণ নিকটে উপস্থিত হইল। রাণী প্রথমতঃ দৌহিত্রীর মূক হইতে শুর বহির্গত করিয়া चाइक चान वक्षन क्रिटनन, शदद देगना शतद हत्रवका वा स्मित्र शतिकात्मत्र छेशाय ना मिथिया जार्शनात्क মহম্বতের হত্তে সমর্পণ করিলেন। মনে করিলেন রাজার যে দশা হইয়াছে আমারও তাহাই হউক, ইহার পর যদি পরমেশ্বর প্রসন্ম হন তবে তাহার উপায় করা শাইবে।

মহব্বত, রাজা ও রাণীকে ইস্তগত করিয়া রাজ্যক্রী আসফ ও আর যে যে প্রধান লোক প্রায়ন করিয়াভিলেন छाशामिशक्छ धतिलान, अमार्छ मकाला वन्ती इहालान। মহম্বত তাহাদিগকে সঙ্গে করিয়া কার্লে যাতা করি-लान । डीहात देमना ११ । व्यव्हातां व काहा भीतदकं विकेन कत्रिया थाकिल। ताला ও तांनी जिला के रेमनाम अलीत বাহিরে যাইতে পারিতেন না। কিন্তু ইহাতেও মহকতের মনে একটা ছুর্ভাবনা রহিল, ভাঁহার নিজ সেনা অপেকা রাজ্ঞসেনা অধিক, ভাহারা বিপক্ষ হইলে রাজাকে আটক করিয়া রাধা কঠিন ছইবে। সুরজাহান তথ্ন কোন বিপক্ষতাচরণ না করিয়া চতুরতা পূর্বেক জাহান্ধীরকে মহক্ষতের সহিত^{্র} সৌহ্বন্য করিতে পরামূর্শ দিলেন। কাহানীর ডাঁহার মন্ত্রণাক্রমে তাঁহার সাক্ষাতে মন্ত্রী ও द्रांशीद नानाश्वकांत्र सानि कतिएछ नागितनन, धक्या शर्मा ह बनियान । जामरक द ठक इहेट जामारक उपात করিয়া মহোপকার করিয়াছ; কিন্তু রাণী ঐ চক্রের মহা-हकी, जुनि डीशांत हटक कथन शांगरकण कतिसना। मर-মত চাতুৰী বুৰিতে না পারিয়া রাজাকে নিভাত সুক্ৰ वित्वहरा कतिरवन ।

্ এই ভাবে সকলে কাবুলে উপস্থিত হইলেন, তথায় পাঠান দিপের ভয়ে রাজার দেহরক্ষার সেনা রুদ্ধি করিছে ছইল। ঐ সময়ে রাণীর অনুগত যাবতীয় লোক আসিয়া তৎকর্মে নিযুক্ত হইল। রাজার প্রতি তথন মহক্তের কিছমাত্র অবিশ্বাস ছিলনা। তিনি তাঁহাকে যথা তথা ষাইতে দিতেন। রাজা মধ্যে মধ্যে গজারোহণে শীকার করিতে ঘাইতেন, কেবল দেনার। ওাঁহার সঙ্গে ঘাইত। একদিন রাজরক্ষক সেনাদিগের সহিত রজঃপৃতদিগের বিবাদ উপস্থিত হইয়া রক্তঃপুতেরা অনেক রাজদেনা বধ করিল। মহ্মতের নিকট ইহার অভিযোগ হইল, কিন্ত তিনি তাহার বিচার করিবেন না। ইহাতে রাজরক-কেরা অপমান বোধ করিয়া রজঃপুতদিগকে আক্র-মণ পূর্বক ভাহাদিগের অনেককে নঠ করিল, কতক-গুলা বজঃপত পর্মতে পলাইল, দেখানে পর্মতবাসী लारकता छाटानिभरक भतिया नाम कतिया ताथिन। धटे অষপি মহমতের পরাক্রমের থকতো ঘটতে লাগিল, তিনি আৰু প্ৰবলভাবে চলিতে পারিলেন না।

্রাণী মনে মনে ধে কম্পনা করিয়াছিলেন ভাহার সময় ক্রমে নিকটবর্তী হইল। রাণী স্থানান্তরে কতক-क्रिक रेमना मर्श्वर कतिया बाबित्वन । शद्त कारा-मीत्रक निया मर्थेंबरछत छाटन अरे श्रेष्ठांव करारे-त्यम, श्रिशादमञ्जा व्यत्मदक जाग्रशीत त्यांश करत्र किछ दक्ष रेमनामाहाया करतम मा। धक्था स्थिष्ठि

· 10.

হাইলে মহক্ষত আজ্ঞা করিলেন, রাজরাণী সকল অপেকা অধিক জায়ণীর ভোগ করেন, তাঁহার সেনা অগ্রে গণিত হাউক, পরে আরহ জায়গীরদারের সৈন্য গণনা ক্রাযাই-কেন। নুরজাহান এই আদেশে অপনান বোধ করিয়া কোধ করিয়া উচিলেন, কিন্তু সকলের যাহা কর্ত্তব্য তাঁহা-কেও ভাহা করিতে হয় এই বলিয়া তিনি যে সকল লোক সংগ্রহ করিয়া রাখিয়াছিলেন ভাহাদিগকে দণ্ডায়মান করাইলেন। জাহালীর এই সৈন্য গণনা করিতে গেলেন, মহক্ষত তাঁহার সঙ্গে যাইতে চাহিলেন, কিন্তু রাজ্ঞা তাঁহা-কে যাইতে নিষেধ করিলেন। মহকত্তের তথন ভালুল পরক্রিম ছিল না, মুতরাং রাজার নিষেধ শুনিতে হইল।

জাহাজীর দৈন্য সন্দর্শনে উপস্থিত হইলে রাণীর দৈন্যগণ চক্রাকারে তাঁহাকে বেন্টন করিল। এবং রাজসমন্তিবাহারী রজঃপুত অপারোহী সেনাগণকে কাটিয়া লও তথ্য করিল। মহন্ত এই কাণ্ড দেখিয়া দৈন্য সামন্ত লুইয়া অবিলয়ে পলাইলেন। রাণী তাঁহার প্রতি অভ্যাচার করিতে পারিতেন, কিন্তু রাজমন্ত্রী আসক খাঁ তথ্য পর্যান্ত তাঁহার হত্তে ছিলেন, এজনা ভাহা না করিয়া, তাঁহার সঙ্গে এই গার্ঘা করিলেন তিনি সাহজাহানের সঙ্গে মুদ্ধ করিবেন, ভাহা হইলে তাঁহার প্রতি কোন প্রকার অভ্যাচার হইবে না।

সাহজাহান ঐ সময়ে আজমীরে আসিয়াছিলেন, জা-হার সঙ্গে কেবল এক সহত্র সৈনা ছিল। তিনি মনে করিয়াছিলেন ক্রমে আরো সৈন্য সংগ্রহ করিবেন। কিন্তু ক্রফানিংহ নামে এক রজঃপুত রাজা ভাঁহার সহকারীছিলেন, ভাঁহার হঠাং মৃত্যু হওয়াতে ঐ সৈন্য অর্জ্বেক হইয়া পাঁড়িল। সাহজাহান বলহীন হইয়া ভয়ে বালুকারণ্য দিয়া সিন্ধু রাজ্যে পলায়ন করিলেন। তথা হইতে বিমাতার ভয়ে পারসন্থানে যাইবার মনত করিলেন, কেবল শারীরিক অসুস্থতাপ্রযুক্ত যাইতে পারিলেন না। কিয়ুদ্দিবস পরে শুনিলেন ভাঁহার দ্বিতীয় সহোদর পরবেজ লোকান্তর গমন করিয়াছেন, এবং মহক্ষত রাজার সজে বিরোধ করিয়া রাজনৈন্যের ভয়ে দক্ষিণ রাজ্যে পলায়ন করিয়াছেন। এই সংবাদ পাইয়া ভাঁহার আশা পুনর্ম্বার বলবতী হইল, তিনি মহক্ষতের সহিত মিলিল্লন।

জাহালীর বৎসর বৎসর কাশ্মীরে যাইবার নিয়ম করি
য়াছিলেন, লাহোর হইতে প্রত্যাগত হইয়া ঐ নিয়ম
রক্ষার্থ তথায় গমন করিলেন। কাশ্মীর ঘাইয়া তাঁছার
কাসরোগ অতান্ত রদ্ধি হইল, তাহাতে তথায় থাকা

হিং ১০৩৭ সফর ২৮
খ ১৯২৭ অন্তর্বর ২৮
বং ৪৭২৯ কার্ত্তিক।

তিনি লাহোরে যাতা করিলেন।
কৈন্ত অর্থেক পথ না আসিতেহ পঞ্চত্ব প্রাপ্ত হইলেন।

জাহালীরের রাজত্বকালে সর তামস রো নামে* ইংল-

তীয় রাজার এক দৃত তাঁহার সভাতে আসিয়াছিলেন।
তিনি ছই বৎসর পর্যান্ত ঐ সভাতে বাস করিয়াছিলেন,
এবং জাহালীরের সঙ্গে একজ মদ্যপানাদি করিতেন।
তিনি রাজসভার অভ্যন্ত প্রশংসা করিয়াছেন।

জাহালীরের রাজ্যকালে আনেরিকা হইতে তমাক আনীত হইয়া তাহার ব্যবহার আরম্ভ হয়। ঐ মহাদীণে ইহাকে তবাক বলিয়া থাকে। জাহালীর তদ্বাবহার নিবিশ্ব করিয়াছিলেন, কিন্তু সেই তমাক এইকণে সকল ব্যবহারীয় জব্যের মধ্যে অতি প্রসিদ্ধ হইয়াছে, তমাক না থায় এয়ত অত্যম্প লোক দেখা যায়।

জাহালীরের রাজত্ব কালে পারসী ভাষাতে কর্মকার্য্য চলিত, কিন্তু হিন্দুস্থানী ভাষাতে কথোপকথন হইত।

একবিংশ অগ্যায়

সাহজাহান।

काराकी दिव की बनाविषरे सूतकारानित आधिशका हिन, डाँराव की बनाव्य डाँराव आद कान कमछ। विश्व ना। काराकी दिव मुज्य श्रेष सूतकारान श्रीय कामां जारित यादियां विश्व कि सामां अपनि कि दिवा एक कि दिवा हिल्लन, किन्छ छारा शाद्यन नारे। ताकमञ्जी डाँराक बन्नी विश्व ताबिया। गारकारानिक पिक्त ताका रहे छ सामयन श्र्यक गिर्शाम अर्थन कि दिवान।

সাহজাহান রাজ্যেশ্বর হইয়া তুরজাহানের ভরণ পোষথের জনা বার্ষিক পঁচিশ লক্ষ মুদ্রা নিযোজিত করিয়া
দিলেন। সুরজাহান ঐ রতিভোগিনী হইয়া বিংশতিবংসর পর্যান্ত জীবিড়া ছিলেন। ইহার মধ্যে রাজসম্পকীয় কোন কথার মধ্যে থাকিতেন না, কেবল পতিচিছায় কাল বাপন করিতেন। কথিত আছে জাহালীরের
মৃত্যুর পর তিনি রলিন বন্ধ ও অলক্ষারাদি পরিত্যাগ
করিয়া শুক্তবন্ধ পরিধান করিতেন, মাংসাদি ভক্ষণ

নাহজাহান রাজা হইলেপর সাহরিয়ার লাহোরের রাজভাণ্ডার অধিকার করিয়া আপনি রাজপদ গ্রহণ করেন। এই সংবাদ পাইয়া আসফ থাঁ লাহোরে গমন করেন। তিনি উপস্থিত হইলে সাহরিয়ার তাঁহার সহিত সংগ্রাম করিলেন, কিন্তু জয়ী হইতে পারিলেন না। যুদ্দে পরাভূত হইয়া তিনি সুর্গন্ধার রুদ্ধ করিয়া পাকিলেন। ক্রিছ ইহাতে নিস্তার পাইলেন না। মুর্গরক্ষকেরা তাঁহাকে নাইয়ার হস্তে সমর্পণ করিল। অভংপর মন্ত্রী তাঁহাকে লইয়া রাজধানীতে উপস্থিত হইলে, সাহজাহান তাঁহার প্রাণ নতের আজ্ঞা দিলেন। দানিয়ালের সুই পুত্র সাহনীরয়ারের সঙ্গে নিলিয়াছিলেন এজনা ভাঁহাদিগেরও প্রোণ দ্ব হইল।

এই ব্যাপারের পর সাইজাহানের আর কোন শতা রহিল
না, তিনি নিশ্চিত্ত হইয়া রাজ্য করিতে লাগিলেন, এবং
আসফর্থা ও সহজ্যত থা প্রভৃতি যে সকল বীরবর বন্ধুর
কার্য করিয়াছিলেন তাঁহাদিগের বিধিমতে সন্মান ও পদ
রাজ করিলেন। তদনস্তর ভোজ মহোৎসব ও আটালিকা নির্মাণে অপরিসীম ধন বায় করিতে লাগিলেন।
রাজ্যাভিষেকের প্রথম সাম্থসরিক সভাতে কাশ্বীর নগরে
ক্রেকার ঘটা হইয়াছিল ভজ্রপ ঘটা আর কথন কোল
কাতে হয় নাই। ক্রিত আছে এ সভার জন্য এক ভাষ্
ভাষ্র ভিতর কত সাল মধ্মল ও কিছাপে মুগ্রিত

ও তাহা বর্ণ ও বছমূল্য প্রস্তরে কিপ্রকার মুশোভিত হইয়াছিল ভাহা বর্ণনে বর্ণ পরিহার মানে। পুরের রাজা-ভিষেক দিবলে রাজাদিগের তুলা হইবার প্রথাছিল। থী তুলাতত কেবল রজত কাঞ্চন ও বছমূল্য প্রস্তরাদি প্রদন্ত হইত, তাহা দীন ছঃখী ও অপরাপর মনুবাদিগকে দান করা যাইত। সাহজাহানের সময়ে তুলা ভিন্ন মণি युक्ता ও আहर मुनावान जनामि वर्गभाटक नाकाहेश। ভাঁহার মন্তক প্রদক্ষিণ করণানম্ভর ভুত্তোরা সারী সারী রাখিয়া দিত। সাহজাহান ঐ সক্ত বছমূল্য ত্রব্য উপ-স্থিত লোকদিপকে বিভরণ করিতেন। ইহা ব্যতীত হয়, হস্তী, অর্থ, মণি মুক্তা ও উক্তম উক্তম পরিছেদ কত বিতরণ হইত তাহার সংখ্যা নাই। একজন মুসল্মান ইভিহাস-বেক্তা লিখিয়াছেন কাশ্মীরে প্রথমবার যে সামৃৎসরিক রাজাভিষেক হয় ভাহাতে অস্থান বোল কোর মুদ্রা রায় इहेग्राहिन।

সাহজাহানের রাজত্বকালে দক্ষিণ রাজ্যে প্রথম সং-প্রামের সূত্রপাত হয়। খাঁজাহান নামে লোদিগোঠীয় এক পাঠান দিল্লীর সভাটের কর্মে নিযুক্ত থাকিয়া ক্রমশঃ উক্পদস্থ হইয়া অবশেষে দক্ষিণ রাজ্যের সৈন্যাধাক হই-शोছिলেন। । জাহালীরের মৃত্যুর পর তাঁহার কেমন কুৰুদ্ধি হইল, দিলীর রাজার জয়হত তাবৎ প্রদেশ আহ-মান লগতের ব্রাজানে অর্পণ করিয়া ভাঁহার সহিত প্রথম করিলেন, মনে করিলেন ইহাতে তাঁহার আশার সুসার

敬

इहरन, किन्छ 'छाहा हहेम 'ना। छाहार छ छिनि यूनसांत সাহজাহানের প্রাকৃত্ব স্বীকার করিয়া রাজধানীতে আদি-जैममद्य क्रिकी समद्रव उठिन, द्राष्ट्रा छीहाद्र প্রাণদ্ধ করিবেন । এই কথা তদম্ভ না করিয়া তিনি আপ-নার ছই সহত্র পাঠান হৈদনা লইয়া একেবারে আগ্রা-হইতে প্রস্থান করিলেন। সাহজাহান তাহাকে রাজজেহী বিচৰচনা করিয়া স্বসৈন্য ভাছার পশ্চাৎ ধার্মান ছইলেন। উহাতে খাঁজাহান প্রথমতঃ গন্দোজানাতে, তাহার পর चाइनाम नगद्र शलायन कदिलान। चाइनाम नगद्रद्र बांका छै।हात माहाशार्थ अखधात्र कतित्वन। माहजारान यार वे युष्क ना याहेग्रा अकल्पन त्मनाशिक शाठाहरणन। সেনাপতি আহম্মদ নগরের রাজার সহিত সংগ্রাম করিয়া তাঁহাকে পরাস্ত করিলেন। তাহাতে খাঁকাহান पक्तिन बोका घ्टेटल दुम्तनथट्स भनावन कतितन । धैस्टारन ব্যক্ষেনাগণ ভাঁহাকে যুদ্ধে পরাস্ত এবং তাঁহার শিরশ্ছে-मन कर्रिया क्रिय मलक बाकाद मभीरल आनिल।

किन्छ बाँकाशास्त्र मृज्य शहेरन अ मिन बाका छे ने जा कर का शहे वर ने ब का बाहे कि स्टेन, छाशास्त्र हिन्द के प्रशास कर का बाहे कि स्टेन, छाशास्त्र हिन्द के प्रशास करिया ने निक्र का किन्न शिक्ष का का किन का विक्र का किन का किन का विक्र का किन किन का किन का किन का किन का किन किन का

সকার হইতে লাগিল। যাহারা ছর্তিকে না মরিল তাহারা পীড়াতে মরিতে লাগিল। এই প্রকারে প্রায় তাবং রাজ্য মনুষ্যশ্ন্য হইল। রাজ্য একেবারে উচ্ছিন্ন হইল। তাহার পর আহম্মদ নগর ও বিজয় পুরের রাজাদের সঙ্গে মোগলদিগের মহাযুদ্ধ আরম্ভ হইল। এই যুদ্ধে ছল, চাতুরী, বিশাস্থাতকতা, কত হইতে লাগিল তাহার সংখ্যা নাই। অতঃপর সাহজাহান স্বয়ং এ রাজ্যে গমন করিয়া প্রায় ছই বংসর যুদ্ধ করিলেন। হিং ১০৪৭ তদনস্তর তিনি গোলকদা ও বিজয়পুরের শু ১৬৬৭ রাজাদিগকে বদীভূত, এবং আহম্মদ নগর

যখন সাহজাহান দক্ষিণের যুদ্ধে প্রবৃত্ত, তথন রাজ্যের আর আর হানে কয়েক ঘটনা হইয়াছিল, তাহার বিবরণ এই। পর্তুণি জাতীয়েরা কলিকাতার সানিখে জগলিতে এক জুর্গ নির্দাণ করিয়াছিল। বঙ্গদেশের সুবাদার ঐ ছুর্গ অধিকার করিয়া লইলেন। বুন্দিনারা কয়েকবার রাজ-বিদ্ধাহ করিল। প্রথম বিজ্ঞোহ নৃসিংহদেবের পুত্র হত হইলেন। পূর্বাঞ্চলে রাজসেনাগণ কুদ্র তিবাং দেশের বিলোকত সমাপনু করিল। আর কতকগুলিন সেনা শ্রীনগর কার্কান করিতে ঘাইয়া প্রায় তাবতে নিহত হইল। তারি ক্রাক্রান কুচ্বেহার সমন করিয়াছিল, ভাহারা ঐ দেশ ক্রিকার করিল, বিদ্ধা তথাকার জল বায়ু সহু করিছে না

এই সকল ঘটনার পর সাহজাহান ১৬ বৎসর কারুলে उ में अक्नीय यूटक नियुक्त थाकित्वन। ১०৪৭ अस्म আলিমর্দন খাঁ নামে পারসভানের রাজার পক্ষ যে ব্যক্তি কান্ধারের কর্মাধ্যক ছিলেন, তিনি আপুন রাজার দৌরাত্মো সাহজাহানকে ঐ রাজ্য সমর্পণ করিয়া তাঁহার শরণাগত হইলেন। আলীমর্দ্দন অতিশয় বৃদ্ধিজীবী ও বিদ্বান ছিলেন। গৃহাদি নির্মাণে তিনি বিশ্বকর্মা ছিলেন। তিনি যে সকল অউালিকা নির্দ্যাণ করান তুংহা অতি অপূর্বে। সর্বাপেকা দিলীর খাল অতি উত্তা। ঐ থাল অদ্যাপি ভাঁহার নামে খ্যাত আছে, এবং ইহাতে ভাঁহার গুণের পরিচয় প্রদান করিভেছে। এই ওণের खना मारुकारान डांशांक यर्थिंग मन्यान कविर्देशन, 'बर्ट একবার তাঁহাকে কাশ্মীরে ও আর একবার কারুলের কর্মা-भाक्रभएम नियुक्त कतियाष्ट्रितन। देश जिन्न जाँशांक जानक যুদ্ধে প্রেরণ করিয়াছিলেন। শান্তিসময়েও ভাঁহাকে व्यत्नक উक्तम २ कर्गा नियाहित्वन ।

কান্ধার রাজ্য আয়ন্ত হইলে বক্তিয়া রাজ্য অধিকারের
হি ১০৫৪
নতুপায় ইইল। অতএন সাহজাহান
খ ১৯৪৪
আলীমর্দনকে সৈন্যাধাক করিয়া উজনকদিনের সহিত যুদ্ধার্থ প্রেরণ করিলেন। আলিমর্দন
হিচ্ছুকুশ পার হইয়া বক্তিয়াতে গমন করিলেন। কিন্তু
শীত সমাগনে, অতান্ত শীতের আশক্ষায়, ফিরিয়া আসিকোন। পর বংসর জগৎসিংহ নামে এক রজঃপ্ত রাজা

১৪ • • রক্তপুত দেনা লইয়া তথায় যাত্রা করিলেন। রজ্ঞঃপুত্ত দেনাগণ গ্রীষাপ্রধান দেশে বাস করিয়া বড় হিম সঞ্করিতে পারিত না, তথাপি শীত শঙ্কানা **করিয়া শীত** নিবারণেরজন্য বড় ২ বাহাছরী কাঠ ফাডিয়া कार्श्वभग गृहापि निर्माण कतिया शांकिल। ताखाउ त्रहत्स ভাহাদের দক্ষে কাঠ ফাডিতে লাগিলেন। এই প্রকার कछ बीकाद कतिया छे छवकनिशंदक शूगःशुनः शहास्त করিলেন। কিন্তু ইহাতেও জয়ের কার্য্য সম্পূর্ণ হইল ন।। পারবংস্ব সাহজাহান স্বয়ং কার্লে গ্রন্ ক্রিয়া তথা হুইতে সীয় কনিষ্ঠ পুত্র মুরাদকে আলীনর্দ্ধনের সম্ভিব্যা-হারে বিজিয়াতে পাটাইলেন। আলীনর্দন এযাতার সম্পর্ণ রূপে জগী হইলেন। কিন্তু পর্বৎসর রাজা দিল্লীতে প্রত্যাগমন করিলে, মুরাদ ভাঁহার পশ্চাৎপশ্চাৎ দিলীতে व्यामित्वम । सूर्वातम्ब अभदमत् श्रेष्ठ উद्धानदकद्दा व्यवक-নন্দা পর্যান্ত তাবৎ দেশ উৎখাত করিল। মুরাদ বিনা আক্ষাতে চলিয়া স্থাসিলেন তাহাতে এই ফল হইল, এই বিবেচনায় সাক্জাহান তাঁহার অসম্মান করিয়া, তৃতীয় পুত্র আওরং জেবকে ঐ যুদ্ধের অধ্যক্ষ করিয়া পাঠাইলেন। শাপনিও ভাঁহার সঙ্গে ২ কার্ল পর্যান্ত গমন করিলেন। चाउँदर्द्यव युद्ध क्य कदित्वन, किन्छ छाहात शत छवद-কেরা তাঁহাকে এমত ভাবে অবক্রম করিল, তিনি হুর্গহার के क्रियां बांक्टिन, वाहित हहेट शाहिटनन ना। नार्कारान मिरकान ७७ अधिक पूरत चेत्राका सम

করিয়া কোন ফল হইল না, তাহা রক্ষা করা কঠিন। অভএব উলবৰজাতীয় এক রাজপুত্র বক্তিয়া হইতে পলাইয়া ভাঁহার সভাতে বাস করিতেছিলেন, ভাঁহাকে এ রাজা অর্প করিলেন। তাহাতে আওরংজের বদেশে প্রত্যা-গমন করিলেন। সাহজাহান বক্তিয়া রাজ্য পরিত্যাগ করিলে, ১০৫৮ অন্দে, পারসস্থানের রাজ্য কান্ধার রাজ্য আজমণ করিলেন। সাহজাহান এ রাজ্য রক্ষার্থে আঙরংজেবকে প্রেরণ করিলেন। কিন্তু যে সময় পারসন্থানের রাজ: এ দেশ আক্রমণ করিলেন তথন অতার শীত। তৎকালে এইদেশ হইতে উত্তরাঞ্চলে লো-কের গমনাগমন এক প্রকার রুদ্ধ হইত। শীতপ্রযুক্ত আও-বংক্ষের দীত্র পৌছিতে পারিলেন না, সুতরাং পারসরাক্ষ ঐ ব্রাজ্য অধিকার করিয়া লইলেন। তদনস্তর আওরংজেব তথায় উপস্থিত হইয়া রাজ্য উদ্ধারের চেটা করিলেন, কিন্তু পারিলেন না। পর বৎসরেও তিনি পুনর্কার তথায় গমন कविटलन, ভारा । विकल रहेल । अनुसद्ध गारकारात्मव ब्लार्क श्रुव माता निर्देश औ युष्त अग्र कतिन देलिया आफ्ना-লন করিলেন। তাহাতে রাজা তাঁহাকে অতান্ত সমারোহ भूकंक उथाय भागेहितन। किन्नु छाहात भगनह मात इहेन, পातमी त्मनाता छाहादक खे दान न्यान कतिएछ দিন না। দারা নিরাশ ও হতমান হইছা ফিরিয়া আসি-त्तन। उनविध काम्नात ताका त्यांभनमिट्यत वटक्वादत क्छ होड़ा रहेन।

ইহার পর ছই বৎসর কোন যুদ্ধাদি হয় নাই। औ मभरत पिक्त द्रारकात कतील कर्म ममालन थ >७৫० ∫ इटेल। এই জয়ीপ २० व<मत व्यवि হইতেছিল, এ পর্যান্ত শেষ হয় নাই। জরীপ নমাপন হইলে সাহজাহান ভোডলালের ধারাক্রমে কর ধার্যা করাইলেন, ভাহাতে রাজস্ব অনেক রুদ্ধি হইল, এবং कत मध्यक् विषया भूत्यंत नाम कान लानयाल विक्-स ना।

এই সময়ে সাছল। নামে রাজমন্ত্রীর মৃত্যু হইল। माष्ट्रहा था कि विषय अ कर्मा एक हिस्तन, उज्जा धर्मानि छे ও রাজহিতৈধী দল্লী ভারতবর্ষে আর কথন দেখা যায় नाहे।

অনস্তর আওরংজেবের যশোলাভের আর এক উপায় হইল। মিরজ্মল নামে এক রত্ত্বণিক গোলকন্দার রাজার মন্ত্রী ছিলেন। রাজার সহিত তাঁহার মনোবিচ্ছেদ হও-য়াতে তিনি সাহজাহানের সাহাযা প্রার্থনা করিলেন। আওরংক্তের এই বিষয়ে পিতাকে অনুরোধ জানাইলেন। সাহজাহান সেই অনুরোধে গোলকদার রাজার উপর ধুমধাম করিয়া পত্র লিখিলেন। গোলকলার রাজা তীহা ন। শুনিয়া তাঁহার আক্রা অবহেলন করিলেন। এই কোণে আওরংজের যুদ্ধসজ্ঞা করিয়া তথায় গমন করি-लन। आक्षत्रराज्य इस शहित तत्मत्र कर्मा अवस ररेट्डम ना, खंड बर अधिकार म त्मना भगाद ताथिया

কভ্ৰমগুলি সেনা সম্ভিব্যাহারে আওরলাবাদে উপস্থিত ছইয়া, এই কথা প্রকাশ করিলেন, তাঁহার দিতীয় জাতা সুজা বল্পদের সুবাদার, তাঁহার কন্যার সহিত তৎপুত্র মহম্মদের বিবাহ দিতে ঘাইতেছেন। আওরলাবাদ হইতে মামুলিপাঠাম দিয়া বল্পদেশের পথ। গোলকদার রাজ্যানী হায়জাবাদ তাহার অধিক দুর নহে।

কেল্লকন্দার রাজা আওরংজেবের প্রকৃত অভিপ্রায়
কিছুই জানিতেন না, রাজপুত্র আসিতেছেন এই সংবাদ
শুনিয়া তাঁহার সম্মানার্থ মহা ভোজের আয়োজন করিতে
লাগিলেন, যুদ্ধ বা আত্মরক্ষার কোন আয়োজন করিলেন
না। আওরংজেব ঐ অবকাশে হায়দ্রাবাদ আক্রমণ
করিলেন। গোলকন্দার রাজা যুদ্ধে অসমর্থ হইয়া প্রাণরক্ষার জনা এক পর্যভীয় ছর্গে পলায়ন করিলেন। আওরহুজেব হায়দ্রাবাদে পড়িয়া ঐ দেশ লুঠন ও দন্ধ করিলেন। অনস্তর যথন তাঁহার পশ্চাতের সৈন্যগণ আসিয়া
যুদ্ধিন, তথন তাঁহার প্রকল দল হইল। গোলকন্দার
রাজা যুদ্ধসন্ধা করিয়াও ভাঁহার সক্ষে যুদ্ধে অক্ষম হইক্রেন, আওরংজেব যাহা বলিলেন তাহা শিরোধার্যা
করিতে ছইল।

এই প্রকারে গোলককা জয় করিলে বিজয়পুর আজর্ম-শুরু এক পত্না হইল। আওরংজেব ঐ রাজ্য জনায়ালে জয় করিতে পারিজেন, কিন্তু তাহার পর স্থানাব্তরগম-বের প্রভাঙ্কন হইল, ভাহাতে ঐ নেশ জয় করিতে পারি- লেন না। যে প্রয়োজনে, স্থানান্তর গমন করিতে হইল ভাহার বিষরণ পশ্চাৎ লেখা যাইতেছে।

সাহজাহানের ঢারি পুত্র ছিলেন, জ্যেষ্ঠ দারা সেকো, দ্বিতীয় সুজা, তৃতীয় আওরংজেব, চতুর্থ মুরাদ। দারার অনেক সদ্ভূণ ছিল, তিনি সাহসী সরল এবং সৌজন্য-শীল ছিলেন, দোষের মধ্যে অভ্যস্ত প্রচণ্ড স্বভাব, কাহার প্রাম্প শুনিতেন না, আপনি যাহা ভাল বুরিতেন ভাহাই করিতেন। ওঁহোর বিদ্যাও ভাল ছিল। তিনি আকবরের মতাবলম্বন পূর্বাক হিন্দুও মুসলমান্দিগের ধর্মবিরোধ ভঞ্জন করিয়া একথানি পুস্তক লিখিয়াছিলেন। सूजा विदान हिल्लन, किन्नु भर्तमा मना ও ই क्रिय-सूर्यंत वनीष्ठ्र थाकिएकत । आंखद्रश्टकत् सून्मद्र, माश्मी, मना-লাপী ও ধীরবৃদ্ধি ছিলেন, কিন্তু ভাঁচার স্বভাব অত্যন্ত খল, চিত্ত সর্বাদা অনিশাল, এবং বৃদ্ধি নিভাস্ত ফুটিল ছিল, তাঁহার মনের ভাব কেহ বুঝিতে পারিত না। তাঁহার মুখে এমন মধুবৰ্ষণ হইত যে শক্তপ্ৰ্যান্ত ভাষাতে ভূলিয়া বাইত। তিমি মুসলমান-পর্মের অত্যন্ত গোঁড়া ছিলেন। লোকের সাক্ষাতে প্রকাশ করিতেন সংসার আশ্রম পরিভাগ করিয়া देवরাগ্য আশ্রেম করিবেন। কিন্তু সইর্মব विचा, मदमुत ভाव छादा हिन मा। सूत्राम वीर्यावान, व्यथिक जेमात्रवित्र हिल्मन, किन्छ नर्समा हेल्लिय त्मवाय নিযুক্ত থাকিতেন।

শাহজাহান স্থাপেকা ৰাবাকে তান ধানিতেন, এবং

ব্রহারতার ভাঁহাকে নিকটে রাখিয়া রাজকর্ণের অনেক-ভার অর্পণ করিয়াছিলেন। দারা পিতার আজ্ঞানুবর্তী হইয়া সকল কর্ম করিতেন, এবং পিতার অবর্তমানে রাজা ছইবেন ইহাও নির্দ্ধার্য হইল। অনন্তর রাজার একটা পীড়া জামিয়া হঠাৎ প্রভাব বন্ধা হইল, রক্ষার কোন আশা রহিল না, তিনি শ্যাগত হইয়া থাকিলেন। দার। এই পীড়ার কথা প্রকাশ নাকরিয়া আপনি রাজকর্ম সম্পাদন করিতে লাগিলেন। কিন্দু রাজার পীডার কথা অপ্রকাশ রহিল না। সুজা তাহা জানিতে পারিয়া অবি-লয়ে বন্ধদেশ হইতে সমৈন্যে আগ্রাতে যাতা করিলেন। मुत्राम एकतारहेत सुवामात ছिलान, जिनि अधारे-अम গ্রহণ করিয়া আগ্রা গমনের উদ্যোগ করিতে লাগিলেন। ধুর্জ আওরংজের বিরুদ্ধ ভাব প্রকাশ না করিয়া বীর্ঘানান व्यथं ह উपात्रहतिक मुत्रापटक व्यापनात छेळ व्यापात त्या-পান করিয়া পত্র লিখিলেন, আমি মক্তা গমন করিব, রাজত্বের আশা করি না, কিন্তু দারা অতি অধার্দ্মিক, * তিনি পিতাকে বন্দিবেশে রাখিয়। আপনি রাজত্ব করি-বীর মনস্থ করিয়াছেন। একর্ম অতি গঠিত, ইহা দেখিয়া আমি কোন প্রকারে নিরস্ত থাকিতে পারি না, অতএব জোনাকে বিধিতেছি বদি জুমি আমার সহায়তা কর ভবেণ

बुबार कोक्टरहड़ मणाबनाची हिल्लम आहे जना जीशांक व्यर्ग-

আমি পিডাকে তাঁহার হস্ত হইতে উদ্ধার করি। তাঁহার-পর পিডাকে বুঝাইয়া যাহাতে তিনি দারাকে ক্ষমা করেন ভাহার চেন্টা হইতে পারে। আওরংজেব ঐ পত্রে দপথ করিয়া লিখিলেন ভাঁহার বাধ্য হইয়া চলিবেন, ক্খন ভাঁহার অনিষ্ট চেন্টা করিবেন না। মুরাদ আওরংজেন বের প্রভারণা বুঝিতে না পারিয়া ভাঁহার সঙ্গে মিলিয়া আগ্রাতে যাতা করিলেন।

ইতিমধ্যে সাহজাহান আরোগ্য প্রাপ্ত ইইয়া আপনি রাজকার্য্য চালাইতে লাগিলেন, এবং মুজাকে পত্র লিথিয়া পাঠাইলেন তুমি কেন সংগ্রাম সজা করিয়া আগিতেছ, বঙ্গদেশে প্রতিগমন কর। মুজা বিবেচনা করিলেন এই পত্র দারা লিথিয়া থাকিবেন, পিতা লেখেন নাই। অত্রব সেই আজ্ঞা উল্লেজ্মন পূর্বাক ক্রমশঃ অগ্রসর হইতে লাগিলেন। তাঁহার সাধ্যমন নিবারণার্থ দারার পুত্র সলীমান রাজ-সেনাধ্যক্ষ হইয়া যাত্রা করিলেন। বারাণসের সামিধ্যে মুজার সহিত যুদ্ধ হইল। মুজা এই যুদ্ধে পরাস্ত হইয়াবল্লেশে প্রত্যাগ্যন করিলেন।

এদিকে আওরংজেব মুরাদের সহিত মিলিয়। আগ্রালক্ষ্যে গমন করিতে লাগিলেন। সাহজাহান এ সংবাদ
শাইয়া তাঁহাদিগের গমন রোধ জন্য রাজা যশবস্তু
নিংহকে প্রেরণ করিলেন। রাজা ঘশবস্তুসিংহ উজ্জ্মিনী
নগরের সালিখ্যে তাহাদিগকে আটক করিলেন। আটক
করতে মহা মুদ্ধ হইল। রজঃপুত দেনাগণ অভি লাহনে

যুদ্ধ করিল, কিন্তু আর ২ রাজসেনা ভাছাদের পৃঠপুরক হইল না, ভাহাতে যশবন্ত জয়ী হইতে পারিলেন না। এই যুদ্ধে মুরাদ অতান্ত বীরত্ব প্রকাশ করিলেন ৷ যুদ্ধ জয়ের পর ছুই ভ্রাতা আগ্রাতে যাত্রা করিলেন। °ইতি-মধ্যে সাহজাহান আগ্রা হইতে দিলী যাতা করিয়াছিলেন। মুদ্ধের সংবাদ পাইয়া রাজধানীতে ফিরিলেন, এবং আপনি বুদ্ধে গনন করিবেন এই প্রতিজ্ঞা করিয়া রণসজ্জা করিতে আজ্ঞা দিলেন। কিন্তু রুদ্ধ বয়সে পুত্রদের সহিত্ সংগ্রাম করা সংপরামর্ণ হইল না। তাহাতে দারা রণসকল করিয়া আগ্রা হইতে ঘাতা করিলেন। সাহজাহান ভাঁহাকে অগ্রসর হইতে নিষেধ করিলেন, ভিনি ভাহা শুনিলেন না। তৎপুত্র সলীমান বারাণস হইতে আসিয়া তাঁহার সলে একত হইয়া ঘাইবেন ভাছারও অপেকা করিলেন না। আগ্রা হইতে একদিবসের পথ গমন করিলে ভ্রাতাদিগের সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হইল। ছই বৈনো ঘোরতর যুদ্ধ আরম্ভ হইল। দার। বিপর্যায় সাহসে যুদ্ধ করিতে লাগি-লেন, এবং ভাঁহার সমভিন্যাহারী রক্ষঃপুত ও উজবক হৈন-ताता अनात अकात वीत्र अकाम कतिए नाशिन। मुतान रखी आद्राहरन के जरून रजनात जन्मूरथ भमन कतिरनन । ভাঁহার হস্তী শত্রশবে কত বিক্ষত হইয়া পলাইবার চেটা করিল। মুরাদ লৌহশৃত্বলৈ তাহার পদ বন্ধন করিয়া बाबिटलन्। रखी अलाइेट्ड भातिल ना, मुत्राम गक्रशृत्धे बाकिया युक्त कतिट्ड माणिटमन । छारात छेनेत्र छातिनित्र হইতে শরবর্ষণ হইতে লাগিল, তাঁহার হাওদাখানি শরে শরে সজার পিজির শরীরের ন্যায় হইল। আওরংজের শতাবতঃ বীর্যারান্; অশ্বারোহণ করিয়া সৈন্যগণকে নানা-প্রকার উৎসাহ দান করিতে লাগিলেন। সেনাগণ অতি সাহসে মুদ্ধ করিতে লাগিল। এই প্রকার ঘোরতর মুদ্ধ হইতে লাগিল। কোন পক্ষে জয়াজয় নিশ্চয় হইল না। অনস্তর দারা যে মাতঙ্গ আরোহণ করিয়াছিলেন তাহার গাত্রে একটা বোমা প্রেবেশ করিল। বোমাথাতে হস্তী অন্থির হইল। দারা তাহা দেখিয়া এক তুরঙ্গ আরোহণ করিলেন। তাহার সেনাগণ তাঁহাকে হস্তিপ্ঠে না দেখিয়া অনুমান করিল তিনি হত হইয়া থাকিবেন। ইহাতে সক্ষা সেনার মহা আতঙ্গ হইল, সকলে রণে ভঙ্গ দিয়া পলায়ন করিতে লাগিল। দারা পরাজিত হইয়া লক্ষায়

এবস্পুকারে সংগ্রাম জয় ইইলে আওরংজের নতজার ইইয়া পরমেশ্বরের ধন্যবাদ করিলেন। তৎপরে মুরাদের সহিত সাক্ষাৎ করিয়া ভাঁহাকে সম্রাট বলিয়া সম্ভাষণ করিলেন। তদনস্তর উভয়ে আগ্রার সম্পুথে সইসনো উপস্থিত হইলেন। ভাঁহাদিগের আগমনে কেই প্রতি-ব্যক্তা করিল না। অনস্তর উভয়ে পিতার স্থানে নানা-

[।] আতি আশুর্য্য বিবেচনা করিয়া এই হাওদা খানি অনেক কাল প্রায়ে রাজভাতারে বৃক্তিত হইয়াছিল।

ख्यकांत जानूनम विनय जानाहेया आंशनाटमत माय शिंतहाद्वत आर्थना कित्रहान । किन्छ माहजाहान छाहाट
कर्मशां कित्रहान ना, जिनि जानाहेदन छाहामित्यत
मूथावत्नाकन कित्रदान ना, मात्रादक तात्जात उज्जीभिकांती
कित्रदान। आंश्रदेश्वत मिलिलन, शिखादक हर्णा
ना कित्रदान कार्या मिलि ह्य ना। अख्या खर्मा कर्माम्दक
आंखा मिलिन माहजाहादनत पूर्व अवद्रोध कर्त्रन, यादः
ख्याद्धा काहाद्व अद्या कित्रिण ना म्मूणाम
खाहाह कित्रदान। माहजाहान हर्षत मत्या विकारवर्ण
थोकित्यन।

আওরংজেবের মনে মনে যে অভিলাষ ছিল তাহা পূর্ণ হইল। মুরাদই ইহার মূলাধার, তিনি সাহায্য না করিলে এ আশাপুর্ল হইবার সম্ভাবনা ছিল না। কিন্দু যথন কর্মনাধন হইল তথন তাহাকে আপনার আশাপথের কন্টক জ্ঞান করিয়া, দুই সহোদরে দারার পশ্চাৎ গমন করিতেহ এক দিবস রাতে তাঁহাকে ভোজনের নিমন্ত্রণ করিলেন। মুরাদ ভোজন করিতে আগিলে আওরংজেন ভাহারে সক্ষেপান করাইলেন। আপনিও তাঁহার সক্ষেপান করিতে লাগিলেন। মুরাদ মদ্যপানে অজ্ঞান হইলে আওরংজের তাঁহাকে নির্ম্প্র ও শৃথান্যকা করিয়া একটা হক্তির পূঠে আরোহণ করাইয়া দিল্লীনগরে প্রেরণ করিজার করিন। তদনন্তর আর তিনটা হক্তী সেই ভাবে আর তিন দিলে পাঠাইলেন। ইহাতে তাঁহার বন্ধুবাদ্ধ কেই তাঁহার

উদ্দেশ পাইল না। অনস্তর আওরংজের তাঁহাকে গোয়ালিয়রে * বলীবেশে রাখিয়া, আপনি দিল্লীনগরে রাজ্য

কিং ২০৬৮

গু ২০৫৮ আগন্তী ২০
কং ২০৬০ ভাজ।

আহল করিলেন। কিন্তু তথন

আপন নামে মুজাক্ষন করাইলেন না। তৎপরে সায়ৎসরিক রাজাভিষেকের দিবসে
রাজ্যুকুট গ্রহণ করিয়া প্রকৃতরূপে রাজ্যারস্থ করিলেন।

সাহজাহান রাজ্যুকুথে বঞ্জিত হইয়া বলীবেশে থাকিলেনা। তিনি এই অবস্থায় সাত বৎসর জীবিত ছিলেন।
তাহার পর, ৭৪ বৎসর বয়সে তিনি পরলোক গমন
করেন। তিনি ৩০ বৎসর রাজত্ব করিয়া, ৬৭ বৎসর বয়সে
রাজ্যুত্ত হয়েন।

সাহজাহানের সময়ে ভারতবর্ধের যে প্রকার লক্ষ্মীর বী ছিল, আর কোন রাজার রাজত্বকালে সেরপ হয় নাই। সাহজাহান অন্যান্য অনেক ২ রাজার সঙ্গে সংগ্রাম করি-য়াছিলেন বটে, কিন্তু তাঁহার নিজরাজ্যে কোন যুদ্ধবিগ্রহ ছিল না। তিনি আপনি বিলাসপ্রিয় ছিলেন, শারীরিক মুখের জন্য সভত কাশ্মীরে বাস করিতেন, তদ্ধিন শোভন অটালিকাদি নির্মাণে ও নগরের শোভাবর্জনে নিয়ত মনোযোগী থাকিতেন। কিন্তু এই সকল করিয়াও প্রজার সুধসক্ষতা বিষয়ে কখন অবহেলা করেন নাই। প্রজা

[•] অতঃপর গোয়ালিয়র রাজ্য কারাগারের ন্যায় চইয়াছিল। যাহারা রাজার অঞ্চিয় হইতেন বা রাজবিজ্ঞানী হইতেন তাহা-দিগকে এই স্থানে বন্ধ করিয়া রাখা যাইত।

কিপ্রকারে সুথে থাকিবে নিয়ত এই চিন্তা করিতেন।
বিচার কর্মে বিজ্ঞ প্রধানিষ্ঠ মনুষ্য নিযুক্ত করিয়া বিচাণরের প্রণালী এমত উত্তম করিয়াছিলেন, যে তক্ষপ বিচার ভারতবর্ষের ভাগ্যে আর কখন ঘটে নাই। অধিকস্ত প্রজার হিতকর অনেক কর্ম করিয়াছিলেন। থাফি থাঁ নামে এক মুসলমান-ইতিহাসলেথক লিখিয়াছিলেন, আকবর অনেক দেশ জয়, এবং অনেক সুন্দর ২ ব্যবস্থা করিয়া গিয়াছেন বটে, কিন্তু সাহজাহান যে প্রকারে রাজক্মর্ম নির্মাহ, রাজস্ব সংগ্রহ, ও বিচারকর্মের সুনিয়ম করেন, অন্য কোন রাজা তক্রপ করিতে পারেন নাই।

অন্য রাজাদের রাজশাসনের সহ তুলনা করিয়া যদিও
সাহজাহানের রাজশাসন উত্তম বলা যায়, কিন্তু একন্ট্রিঞ্চ
রাজতন্ত্রে বেসকল দোষ সম্ভব তাহা সাহজাহানের রাজত্ব
কালে না ছিল এমত বলা যায় না। তিনি যে সকল করসংগ্রহকারক নিযুক্ত করিয়াছিলেন তাহারা অবশ্যই কখন
না কখন অন্যায় কর লইত। বিচার কর্মে যেসকল লোক
নিয়োজিত ছিল তাহারা কেহ না কেহ অবশ্যই উত্তোচ
গ্রহণ করিত। যাহারা শুলক সংগ্রহে নিযুক্ত ছিল তাহারাজ সাধুদিগকে নির্যাতন করিত। কিন্তু এ সকল বিবেচনা
করিয়াও ইয়া বীকার করিতে হইবে সাহজাহানের রাজত্বকালে কেশ বেমন লক্ষ্মীবন্ধ ও প্রজারা যেমন সক্তন্দে ছিল
কালা কোন রাজার সময়ে বেক্সপ্র ছিল না।

कार्जक नारम अक मारक्त अकरम्बदन नातकात सामिया

ছিলেন, তিনি লিখিয়াছেন প্রজার প্রতি রাজার যেঞ্চার ব্যবহার কর্ত্ব্য, সাহজাহানের সে প্রকার ব্যবহার ছিল না। তিনি সকল প্রজাকে সন্তানের ন্যায় দেখিতেন, কাহার প্রতি কাহাকে অন্যায় করিতে দিতেন না, প্রজারা তাঁহার রাজ্যে নির্ভয়ে ও আনন্দে থাকিতেন।

यथन मिलीनशरत ताक्यानी, उथन ताका अका मकरनत প্রতি লক্ষ্মীর রূপীদৃষ্টি ছিল, ইহার কিছুমাত সন্দেহ হইতে পারে না। ঐ সময়ে পার্ম রাজ্য অতি প্রতাপ-শালী, তত্তলা ভারি রাক্সা আর ছিল না। কিন্তু মন্দিসোল নামে এক সাহেব লিখিয়াছেন পারস্থানের রাজধানী ইম্পাহান অপেকা আগ্রানগর অনেক বড় ছিল, এবং ভাষীর পথী, ঘাট, পণালয় পথিকপান্থ অতি মুন্দর ২ ছিল। এই সকল লক্ষ্মীর চিত্র তাহার সন্দেহ কি। ধন ও মরুযোর মনে মুখ না থাকিলে নগরের শোভা বর্জনে কাছার মতু হয় না। কিন্তু কেবল রাজগানীতেই উত্তম উज्ञम अफ़ीनिकामि छिल अमा अमा खोटन छिल मा अमक नदर, मंदेन नेशदत ও ताकवानी श्टेटल पृतवर्जी अदमदन অনেক অনেক অটাকাদি ছিল, তাহা অতি রমা ও উত্তম। वमा मिंग इहेटि य मकल लिटिके हो अम्मि खर्म করিতে আদিয়াছিলেন তাহারা মুক্তকঠে ভাহার প্রশংসা क्रियाट्डन ।

থাহারা ভারতবর্বের বর্তমান অবস্থা অবলোকন করিছে-ছেন ভাঁহারা এমত অনুমান করিছে পারেন পূর্ব লেখ- করা ইহার অতাধিক প্রশংসা করিয়াছেন। এমত অনুমান অমূলক। অনেক অনেক প্রাচীননগর এইক্লনে
লোকশুনা হইয়াছে, অনেক হাজালয় কালবশো ভূমিসাং
হইয়া গিয়াছে, অনেক অনেক প্রণালী অবরুদ্ধ হইয়া
রহিয়াছে, অনেক অনেক জললের মধ্যে রুমাং হর্দ্যা
সরোবর ও পাষাণময় ঘাট দেখা ঘাইতেছে। ইহাভিগ
কত কূপ প্রকিপান্থ ও রাজ্পথ ভগ্নীবন্ধায় দেখা যায়
তাহার সংখ্যা করা অসাধ্য। এইসকল দেখিয়া অক্শা
বোধ করিতে হইবে পুর্মে এই দেশে লক্ষ্মী বিরাজমানা
কলেন, লোক সকল অতি ধনবান ছিলেন, রাজা প্রজার

ख्रत अकथा श्रीकात कति छ हा, जात जर्रात छ विश् श्राम ममान हिल ना। अत्मक श्राम अञ्चल পूर्व जिल, अवश् श्राम ममान हिल ना। अत्मक श्राम अञ्चल श्रुव जिल, अवश् श्राम परमात्रयाचा निर्माष्ट कति छ। तृप्तनथश्च अञ्चल त्य श्राम कलल श्रीक्ष छ हहेग्रा लाक ताम कति ग्राहिक ज्याकात अभीन त्राञ्चाता नत्या मत्या तित्याहिक हरेल्ड में महिलाहात्तत त्राज्यकात्म अवगुष्ठ वित्या-श्राम हरेग्राहिक, किन्नु छाहाश्च क्याहित् । आत आत अन् क्रिकार्त के अकृत स्वत्यान त्राज्यकात्म व्याह्म विद्या

कोत्र उन्दर्भ रव मकन मूजनगान ज्ञाकाता जाकव कतिया विश्वन जन्मार भाग जावकावारनज्ञ धूमधाम ७ कें कि समक विश्वन विकार जिलि पूर्व र ज्ञाकाविरणत् अर्लका ज्ञाना, লোক লক্ষর, মভার শোভা, অনেক রুদ্ধি করিয়াছিলেন। ইহাতে বায় বাহুলা হইয়াছিল, কিন্তু তিনি কর রন্ধি করেন নাই, তথাপি খরচপত্তের টানটোনি ছিল না। অতি অপরিমিত বায়ের মধ্যে তিনি একথান সিংহাসন প্রস্তুত করিয়া ছিলেন, তাহা ন্যুরাক্তি। ন্যুর, পুচ্ছ বিস্তার করিয়া থাকিলে যেমন দেখায় সিংহাসন থানি প্রকৃত সেই প্রকার হইয়া ছিল, এবং ষেখানে যে প্রকার রঙু সেই খানে দেই রঙের র'রাদি মণ্ডিত হইয়া ছিল, ঐ সকল রত্ন ও মণির প্রেথর জ্যোতিতে চক্ষের মণি প্রথারিত হইত। তাবর্ণর নানে যে রল্পরীক্ষক সাহেকঃ ভারতবর্ষে আসিয়াছিলেন, তিনি লিথিয়াছেন ঐ সিংহ🍇 সলে বে-রত্ব ও মণি খচিত হইয়াছিল, ভাহার মূলা অম্যান সাত কোটী মুদ্রা হইবে।

গুলাদি নির্মাণেও সাহজাহানের অতিশয় অনুরাগ ছিল, এবং তাহাতে অধিক ব্যয় ভূষণ হইয়াছিল। দিল্লী-তে তিনি এক স্থাতন নগর নির্দাণ করেন, তাহার গঠন ও শোভা পূর্ব নগর অপেকা অনেক মনোহর। এক आखरत्त्र मधा खुल यसूनात छेलद्र अखत्मप्र आंहीदत् ৰেষ্টিত এক রাজপ্রাসাদ নির্দাণ হইয়াছিল। এ প্রাসাদে পাদিবার তিন্টা অতি প্রশস্ত পথ ছিল। এক পথের মধ্য দিয়া একথাল বাহির হইয়াছিল, ভাহার ছইখার বুক্ ও উত্তম উত্তম গুহে মুশোভিত, গুহের নিম্ন ভাগে পর্ণালয়। রাজবাদীর মধ্যে বড় বড় যে সকল সভাস্থান সংমান্ত্রের দালান ও স্বর্ণময় শুম্বেজ করিয়াছিল তাহার শোভা ও পারিপাটোর কথা কি লিখিব, যে সকল লোকেরা তাহা দর্শন করিয়াছেন তাঁহারা তাহার প্রশং-দার চূড়ান্ত করিয়া গিয়াছেন। তদ্বিদ্য দিলী নগরে এক মসজীদ আছে তাহা অতি অপুর্ম, সেপ্রকার মসজীদ আর কোথাও দেখা যায় না। ঐ মসজীদের শিপ্সকর্মা যেমন মনোহর তাহার দৌন্দর্যাও তত্ত্বা। যে ব্যক্তি ঐ মসজীদ নির্মাণ করেন তাহার বুদ্ধিকে সহত্র সূহত্র ধন্যবাদ করিতে হয়।

কিন্তু সাহজাহান যে সকল অটালিকাদি নির্মাণ করান ত্রাথ্যে আগ্রাতে তাজগহলই প্রধান, তাহার সহিত আর কোন গৃহের তুলনা করা যাইতে পারেনা ব্যান্তাজমহাল নামে সাহজাহানের এক মহিথী ছিলেন, তিনি লোকান্তর গমন করিলে সাহজাহান তাহার ন্যরণার্থ মনতাজমহাল নামে এই অপুর্ব্ধ সমাধিমন্দির নির্মাণ করেন। মমতাজমহাল নামের অপজংশে একণে তাহাকে তাজমহাল নামের অপজংশে একণে তাহাকে তাজমহাল নামের অপজংশে একণে তাহাকে তাজমহাল বামের অপজংশে একণে তাহাকে তাজমহাল বামের অপজংশে একণে তাহাকে তাজমহাল বামের অপজংশে একণে তাহাকে তাজমহাল কামের অপজংশ একণে তাহাকে তাজমহাল বামা । এই সমাধিস্থান শ্বেত উল্লেখ্য বিশিত, তাহাতে বিবিধ বর্ণের মূল্যবান রক্ত বসান গিয়াছে। তাহার সৌদ্র্যা ও শিপ্প নৈপুণা দেখিলে অন্তঃকরণ একেবারে মোহিত হইয়া যার। এমন সুশোলিত ও মূল্যবান অন্তালিকা আসিয়া বা ইউরোপ থণ্ডে এপ্রাক্ত আরু প্রায় ভৃতিগোচর হয় নাই। এই তাজমহল নির্মাণে কত বায় হইয়াছিল তাহা কেই সন্ধ্যান

ক্রিয়া বলিতে পারেন না। এই সকল ব্যাবাছল্য-कर्त्या माहळाहान जात्नक थन वास कतिसाहित्वन। वित्यस, কান্ধারের যুদ্ধযাতাতে ও বন্দিরার সংগ্রামে অসম্বা অর্থ বায় হইঁয়াছিল। তদ্তিম নিয়ত তুই লক্ষ অখারোহী সেন। রাজকর্দো নিযুক্ত থাকিত। এবং আরু আরু অনেক বায় ছিল। এই সকল নির্বাহ করিয়া সাহস্কাহানের রাজ্য অব-শান কালে নগদ ২৪০০০০০০ টাকা রাজভা গ্রারে স্থিত ছিল। এতদ্রিল সোণা রূপার্ভ আর আর বহুমুলা দ্রব্যাদি কত ছিল ভাছার সন্মানাই। ইহাতে অনুমান করা যাইতে পারে তিনি অতি বিবেচনা পূর্বক অর্থ ব্যয় করিতেন। বছবায়ী হইয়াও কিছুমাত অপবায় করিতেন ন‡। অতি সম্ভল্রপে থব্রচণত করিয়াও তিনি এত সঞ্চয় করিয়া গিয়াছেন, ইহাতে তাঁহাকে অভান্ত পন্যবাদ করিতে হয়।

ষৌবনাবস্থাতে সাহজাহানের চরিত্র ভাদুক প্রশংসনীয় ছিল না, কিন্তু রাজত্বের ভার গ্রহণ করিয়া ভাঁহার চরিত্রে কোম দোষ দেখা যায় নাই। তিনি প্রজাদিগকে পুরের ন্যায় দেখিতেন। প্রজাদিগের তুঃখের কথা শুনিলে সহত্র কর্ম ত্যাগ করিয়া অগ্রে তাহার প্রতিকার করিতেন, এমত প্রজাবৎসল রাজা আর দেখা যায় নাই।

দ্বাবিংশ অধ্যায়

व्याखद्रश्टक्रव ।

আওরংকের সিংহাসনার্চ হইয়া আলমগীর অর্থাৎ জগজ্জ্মী নাম ধারণ করিলেন। তৎপরে তিনি দারাকে হিং ১০৬৮ বিরুত্ত করিবার চেটা করিতে লাগিলেন। শু ১৬৫৮ দারা দিলীতে প্রস্থান করিয় ছিলে**ক**, অভির্থজেবের আগমনে তথা হইতে লাহোরে পলায়ন করিলেন। সলীমান তাঁহার সাহায্যে গমন করিতে ছিলেন। আওরংজেবের কৌশলে ভাঁহার সেনাগণ ভাঁহাকে পরি-ত্যাগ করিল। তাহাতে তিনি নিরাশ্রায় হইয়া শ্রীনগরের রাজার শরণ লইজেন। শ্রীনগরের রাজা তাঁহাকে আশ্রয় না দিয়া কারাক্ত করিয়া রাখিলেন। অনস্তর আওরংজেব मोत्रात श्रम्धाकावमान श्रेटलन । थे मनद्यं सूका मिलीताका অধিকার জন্য বঙ্গদেশ হইতে পুনর্কার যুদ্ধযক্তাতে যাতা ब्रिटनन। व्याउदश्राज्य धारे मरनाम शारेमा मातारक পরিতাগ পূর্বক তাঁহার সঙ্গে যুদ্ধার্থ কিরিলেন। মুকা नका शांत रहेटन अवारावाम ७ हेट्डायात मधायटन कान-

য়াতে ছাউনি করিলেন। আওরংজের তথায় উপস্থিত হইয়া তিন দিন অবস্থিতি করিলেন। উভয় সেনা সম্থা-সন্মুখি হইয়া থাকিল, কিন্তু সংগ্রাম করিল না। ইতিমধ্যে মুক্তা ভাতার পক্ষ রাজা যশবস্ত সিংহের সহিত মস্ত্রণা क्रितिन पूरेकटन এक्काद्य पूरेमिश श्रेट्ड कार्छेद्रश्रक-বকে আক্রমণ করিবেন। আওরংজেব এই মন্ত্রণার কিছুই জানিতে পারিলেন না। চতুর্থ দিবস প্রভাবে আওরং-ব্যের বৈন্য সক্ষা করিয়া যুদ্ধারম্ভের উদ্যোগ করিতে-ছেন, ঐ সময়ে যশবস্ত সিৎছ পূর্বে পরামশাসুসারে আও-রংজেবের পশ্চাতের সেনাদিগকে আক্রমণ করিবেন। কিন্তু মুক্তা ফুর্যোদয়ের পুর্বেষ অগ্রসর হইতে পারিলেন মা, এজন্য রাজা **যশবন্ত একাকী কিছু করিছে** না পারিয়া যুদ্ধকেত্র হউতে সহসন্য অন্তরে গিয়া থাকিলেন। ছুই জ্রাতার সংগ্রাম আরম্ভ হইল। সুজা পরাজিত হইয়া यरम्दर्भ अञ्चान कतिर्वन । ब्राजिश्व गर्माम अ गित्रज्ञाना উঁহিকে ভাডাইয়া চলিলেন।

শারা এই অবকাশে গুজরাটে গমন করিলেন, এবং তত্তত্ব শাসনকর্তা তাঁহার পক্ষ হওয়াতে তিনি এ দেশের কর্তা হইয়া রাজা বশবস্ত সহিত সম্পুতি করিবার চেটা করিলেন। রাজা বশবস্ত সিংহ অনীকার করিলেন তাঁ-হার পক্ষ হইয়া মুখ্য করিবেন। এই আখানে দারা তাঁহার নিকটে যাতা করিলেন। কিন্তু ধূর্ত আওরংজেব তাঁহার বুরারা তাঁহাকে আপনার বনীভূত করিয়া রাখিলেন, জাতার পক্ষে যাইতে দিলেন না। সুতরাথ যথন দারা তাঁহার অতি নিকটবর্তী হইলেন, তখন তিনি তাঁহাকে বলিয়া পাঠাইলেন তাঁহার সহিত নিলিতে পারিবেন না। দারা তাঁহার আম্বাদে নিরাশ হইয়া আথান্তরে পড়িলেন। অগ্রপশ্চাৎ কোন দিগে যাইতে না পারিয়া আজমীরের পর্বতে উঠিয়া চতুর্দিপ গড়বন্ধন প্রথম থাকিলেন। আওরংজেব আগ্রা হইতে তথায় যাইয়া ক্রনাগত তিন দিন পর্বতে তোপ করিলেন। তৎপরে যুদ্ধের আজ্ঞা দিলেন, এই যুদ্ধে গুজরাটের শাসন-কর্তা হত হইলেন, এবং দারা একেবারে তথ্নোদান হইয়া পলায়ন করিলেন। তাঁহার সেনাগণ ছিল ভিল হইয়া

এই বিজাটের পর দারা আট দিন আট রাত্রি অশেষ ক্রেশ পাইয়া, এবং মধ্যে ২ অসভ্য লোককর্ত্ব আক্রান্ত হইয়া নিভান্ত অনুগত কতকগুলিন লোক সমভিব্যাহারে আইম্মদাবাদে উপস্থিত হইলেন, কিন্তু ডত্রস্থ রাজ্যা তাঁহাকে নগর প্রবেশ করিতে দিলেন না। দারা নির্দ্ধন ইয়া কচে যাত্রা করিলেন। কচাধিপতির সহিত প্রেই তাঁহার যথেই প্রণয় হইয়াছিল। কিন্তু তিনি তথম তাঁহাকে হতাদর করিলেন। তাহাতে তিনি কান্ধারে যাত্রা করিয়া সিন্ধুর পুর্বসীমাবর্তী জুইন রাজ্যে উপনীত হইলেন। পাঠানজাতীয় এক ব্যক্তি এ হানের অধ্যক্ষ করিলেন। তিনি দারার নিকটে বিধিনতে বাধ্য ছিলেন।

অতএব ভাঁহাকে অভান্ত মত্নপূর্বক রাখিলেন, কিন্তু পরে বিশ্বাস্থাতকতা পূৰ্বক তাঁহাকে লইয়া আওবংজেৰের হল্তে সমর্পণ করিলেন! দারা দিলীতে আগত হইলে, আওবংজেব তাঁহাকে শৃত্যুলবন্ধ করিয়া এক সামান্য হন্দ্রী-তে আরোহণ করাইয়া সকল নগর ভ্রমণ করাইলেন। তীহার এই মুদ্দশা দেখিয়া নগরস্থ লোকেরা নানাপ্রকার থেদ প্রকাশ করিতে লাগিলেন। পরদিন জুইনাগিপতি নগঁতে বাহির হইয়াছিলেন, তাঁহাকে দেখিয়ী নগর্ভ লোকেরা চারিদিগ হইতে 'তাঁহার উপর প্রস্তুর ও ডেলা বর্ষণ করিতে লাগিল। ইহাতে ভাঁহার প্রাণ ঘাইবার লক্ষণ হইয়াছিল কেবল প্রহরীরা তাঁহাকে রক্ষা করিল। ° কিয়দিবস পরে আওরংজের এক সভা করিয়। আপন मछन्द करुकश्रानिन स्मोलगीरक आक्रा मिरानन, उँ। शाहा मात्रात ज्ञानाद्यत विष्ठात करत्न। योनवीता शर्क ज्ञेश-मिना क्रमाद्य विष्ठां क्रिया विनित्नम, मोता मुनलगाम भर्म বন্ধিত, অতএব তাঁহার প্রাণদণ্ড করা উচিত। এই ব্যবস্থা करम व्याख्य स्टब्स्ट मार्याय ध्यानम्द ख्या व्याख्या मिटलम । ঘাতক পুরুষেরা তাঁহাকে কারাগার হইতে আনয়ন ক-.রিতে গিয়া দেখিল, পাছে কেহ বিষাক্ত দ্রব্য ভক্ষণ করাইয়া ভাঁহায় প্রাণ বধ করে, এজন্য ভিনি ও তাঁহার পুত্র উভয়ে বলিয়া শ্বহণ্ডে মহুর কলাই রন্ধন করিতেছেন। দার चालक शुक्रविमगरक मिरा मञ्जलानि इहेवा माँजाहरणन ।

याज्य शुक्रदेश डाँशाटक आक्रमण क्षिरण, जिनि बीदेश

ন্যায় তাহাদিগের শহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। কিন্তু অবশেষে তাহারা তাঁহার মস্তক ছেদন করিয়া আওরং-জেবের নিকটে লইয়া গেল, এবং তাঁহার মৃতদেহ হস্তি-পৃঠে তুলিয়া তাবং নগর প্রদক্ষিণ করিতে লাগিল। দারার ছিল মস্তক আনীত হইলে, আওরংজের তাহা ধৌত করিতে আজ্ঞা দিলেন। মস্তক গৌত হইলে মখন তিনি দেখিলেন এ ছিল মস্তক তাঁহার ভ্রাতার, তখন কপটভাবে বিলাপ করিতে লাগিলেন। তংপরে তাহা হুনায়ুর্নের গোরস্থানে নিশ্বাত করিতে আজ্ঞা দিয়া, তাঁহার পুত্রকে গোয়ালিয়রের হুর্গে চিরবন্দ্রী করিয়া রাখিলেন।

রাজপুত্র মহম্মদ ও মিরজুমলা সুজার পশ্চাজারমান
হইয়াছিলেন, কিন্তু তাঁহাদের ঐকবাকা ছিল না, মির্নজুমলা যাহা ইচ্ছা করিতেন, রাজপুত্র প্রতিষ্ঠির নাায়
ধাকিতেন। ইহাতে তাঁহার অন্তঃকরণে ছণা জন্মিয়া তিনি
জ্যেষ্ঠ ভাতের সহিত প্রণয় করিলেন। সুজা ঐ প্রণয় চ্চ়
করণার্থ ভাঁহার সহিত আপন কন্যার বিবাহ দিলেন।
আওরংজের ইহা শুনিয়া অভিশয় বিরক্ত হইলেন।
কিয়দিবল পরে রাজকুমার মিরজুমলার সহিত লাকাৎ
করিতে গিয়াছিলেন, ভখন মিরজুমলার বাজাজা ক্রমে,
ভাঁহাকে বন্দী করিয়া পোয়ালিয়রে পাঠাইয়া দিলেন,
ভথায় ভিনি চিরলনী হইয়া থাকিলেন। তৎপরে মিরজুমলা সুজার সহিত সুজারত করিলেন। সুজা প্রথমভঃ
ভাঁহাতে, তদনজুর মন্তর্গের, পলায়ন করিলেন। ঐ দেশে

তাঁহার এবং ভাঁহার পরিজনগণের কি গতি হইল ভাহা প্রকাশ নাই। মগরাজ ভাঁহাকে বিনাশ করিয়াছিলেন এই জনশ্রুতি প্রবল।

ইতিমধ্যে জ্ঞীনগরের রাজা দারার পুত্র সলীমানকে কোন কারণ বশতঃ আওরংজেবের হস্তে সমর্পণ করি-লেন। আওরংজের তাঁহাকে দিল্লীতে আনাইয়া তং-পিতার ন্যায় ভাঁহাকে একটা সামান্য হস্তিপুঠে আরেইন প্রথকে নগর ভ্রমণ করাইলেন। সলীমান অতি মুপুরুষ ছিলেন, তাঁহার বীরবৎ আরুতি অবলোকন করিয়া অনে-কের অঞ্পতন হইল। অনন্তর যথন রাজভুত্যেরা তাঁহা-কে নগর প্রদক্ষিণ করাইয়া রাজ্যভাতে উপন্তিত করিল, •আওরংজের তাঁহার মনোহর রূপ দেখিয়া মনে মনে ্ব্যাকুলিত হইলেন। সলীমান বলিলেন মহারাজ আমার প্রাণ দণ্ডের ইচ্ছা করিয়া থাকেন করুন, তাহাতে আমার थिम नारे, किन्तु आभारक यनुना मान कहित्तम नाः পাওরংকেব বলিলেন, সলীমান তোমার প্রাণদণ্ড করি ইছা আমার বাসনা নহে, কিন্তু তুমি রাজ্যলোভে আমার অনিউ চেটা না কর এজনা আমার সাবধান হওয়া উচিত। ইহা বলিয়া তাঁহাকে গোয়ালিয়রের ছুর্পে পাঠাইয়া দিলেন, তথায় তিনি চিরবন্দী ছইয়া থাকি-

কিছুকাল পরে মুরাদ কারাগার হইতে পলায়নের किया क्रिल्म । जालहरूटकव जाश अनिया विद्युष्टमा

করিলেন যদি তিনি পলায়ন করেন তবে পুনর্কার উৎপাত ঘটনার সম্ভাবনা। অতএব মনে মনে তাঁহার প্রাণদগু কম্পনা করিয়া অনুসন্ধান দ্বারা জানিলেন তিনি গুজরাট-দেশস্থ কোন ব্যক্তিকে হত্যা করিয়াভিলেন, অতএব তাঁহার প্রজ্ঞকে ডাকাইয়া উপদেশ দিলেন যে পিভৃহস্তা বলিয়া সে মুরাদের নামে অভিযোগ করে। রাজার উপদেশ মতে ঐ ব্যক্তি তাঁহার নামে অভিযোগ করিল। আওরংজেব ঐ স্ত্রে তাঁহার আগদণ্ডের আজ্ঞা দিলেন।

এই রূপ রাজকুল নির্দাল, অর্থাৎ ভাতা ও ভাতৃষ্পুত গণকে সংহার ও কারারজ্ব করিয়া আওরংজের সচ্ছলে রাজস্ব করিতে লাগিলেন, তাঁহার শক্ষমাত্র রহিল না। কিন্তু নির্জ্যলা তৎকালে বঙ্গদেশের সুবাদার হইয়াছি--লেন। তিনি অভ্যন্ত সংহসী ও বীর্যাবান। পাছে রাজ্য লোভ করেন এই ভয়ে তাঁহাকে ব্রহ্মপুত্রের সামিধো আসাম দেশে পাঠাইয়া ঐ দেশ জয় করিতে আজা দিলেন। মির-জ্মলা তরিবোগে আসানে গমন করিয়া ঐ দেশ জয় করি-লেন, এবং তথা হইতে অহস্কার পূর্মক রাজাকে পত निधितन आगि धथान इटेट हीन प्राम गाजा क्रिन, खे দেশ অধিকার না করিয়া ফিরিব না। ইহা বলিয়া তিনি हीसरमृत्य शम्म क्रिटनन । किन्त वर्षात्र ह छै। हात्र देशना-भर्भक आहातीय जनामि পाउमा हर्षणे रहेन, उर्परक চীরকেশীয় লোকের চারি দিগ হইতে তাঁহাকে আক্রমণ क्रिक । अधिकन्त, जाबात देशदगात मट्या महामात्री खेश-

স্থিত হইল। এই সকল কারণে তিনি তথায় তিষ্ঠিতে না পারিয়া ঢাকাতে ফিরিয়া আসিলেন। তথায় এম ও পীড়াতে অত্যন্ত কাতর হইয়া পড়িলেন। ঐ পীড়া কোন প্রকারে উপশ্য হইল না। তাহাতে তিনি সেইখানে কলেবর ভ্যাগ করিলেন। তাঁহার মৃত্যুর পর আগুরং-জেব, তাঁহার পুত্র আমীনকে তৎপদাভিবিক্ত করিয়া বলিলেন ভোমার পিতা আমার পরম বন্ধু, কিন্তু তিনি অতি বীরপুরুষ ছিলেন, সুতরংং আমাকে ভাঁহাকে ভয় করিয়া চলিতে হইত, তাঁহার পরলোক গমনে আনার म भक्ता पूत रुदेशांट्य ।

এবস্কারে আওরংজেবের সকল শত্ত নিপাত হইলে **তিনি** নিশ্চিত হইয়। সচ্চল মনে রাজ্য করিতে লাগি-লেন। কিয়দিবস পরে তাঁহার অতান্ত গীড়া জন্মিল, তখন বুঝিতে পারিলেন জীবন ও ঐশ্বর্যা সকলি মিথ্যা। তথাপি লোভশুনা হইতে পারিলেন না। কিয়দিবস পরে রাজ্যের মধ্যে নানা প্রকার কুমন্ত্রণা আরম্ভ হইল, ক্ষেত্র কর পরামর্শ করিলেন ভাঁহাকে পদ্যুত করিয়া। मारुकारान्दक भूनकात प्रिशामनादतार्ग कतारेदनन। क्ट क्ट्रेश्यां कतित्वन, आश्वत्र खरवत विछीत प्रव শেউজমকে রাজ্যাপণ করিবেন। কেহ বা তাঁহার ভূতীয় विक काकवहरक हाजा कहिताह मनन्द्र कहिरलम। किन्छ क्टि कि के कि कि शांतिरन मा। आ**ं** आं अत्र र करवत देखि-किन्द्र नकन मञ्जूष विकल हहेल।

তদনন্তর আওরংজের বায়ু পরিবর্তন জন্য কাশীরে গমন করিলেন। এই সময়ে মোগলদিগের সহিত মহারাষ্ট্রীয়দিগের প্রথম যুদ্ধ হয়। ইতিপুর্বে মহারাষ্ট্রীয়েরা নামলন্ধ মনুষ্য ছিল না। কিন্তু ক্রমে তাঁহারা অত্যক্ত প্রবল ও পরাক্ষান্ত হইয়াছিল। অত্যব এক্ষে তাহাদিগের পুর্বে বিবরণ কিঞ্চিৎ লেখা যাইতেছে।

नर्माहा प्रकार देशनवली अवधि त्य त्मा आहु इहे-शास्त्र टाहारे महाताचे प्रभा रहात श्रविनीमा वहुमा नमी, পশ্চিম मीमा ममूज, এবং গোয়ার রেখা পর্যান্ত ইহার দক্ষিণ সীমা। ঘাটনানক পর্যাত্তপ্রেণী এই দেশের মধ্যদিয়া গিয়াছে। এ পর্বতের পশ্চিমে সমুদ্র পর্যান্ত যে ভৃথও আছে ভাহাকে কনকান বলা যায়। ইহার প্রাচীন নাম পরশুরামক্ষেত্র। অতি প্রাচীন কালে নহারাই দেশে গুর্নি নামে এক বন্য জাতি বাস করিত। পুরাণে ইহার কোন নিদর্শন পাওয়া যায় না, কিন্তু ভাহাতে লেখে গোদাবরী ও কাবেরীর মধ্যন্তিত দঙকারণা রাব-ণের অধিকার ছিল, এবং তিনি রামন্ত্রী নামে এক বংদা-কর জাভিকে ঐ ভূমি দান করেন। বছকাল পরে ডুগরা নামে এক নগর ঐ দেখে অতি প্রসিদ্ধ ছিল। জন্ঞতি আছে নিসর এবং ধবন দেশ হইতে বণিকেরা এই স্থানে वातिकार्थः स्वाति एक । यहात्राकः विक्रमानि एका समग्र প্ৰিবাৰন নামে কুছুকান আভি এক বাজি অভান্ত প্ৰভা-शाबि र सरेगा कहे. नमश्च प्रभ खिविकात करतन, बर॰

তুপরা হইতে রাজধানী উঠাইয়া প্রতিস্থান নামক এক नगरत ताजधानी करतन। भानिताहरनत शूर्व कामन व्यर्थाः व्यवस्थातिकात्रेयं व्यवस्थितः विकट्ट स्वाप्तकः वकः রাজা এই দেশে রাজত্ব ক্রিভেন। শালিবাহন ভাঁহাকে मवर्ष्ण विभाग करत्रन, क्वनल अकनि खीरलाक छीरांत শिच नसानत्क नहेगा विकाशित गर्धा अद्युष्ट क्रिया প্রাণ রক্ষা করেন। ভিত্তোর এবং উদযপুরের রাজার। সেই রংশোদ্র। মহারাকীয়েরাও সেই বংশীয়।

উপর হিম্মুস্থান বা দকিল অঞ্চলে আর আর হিম্মু-দিগের যেমন আচার ও বাবহার, মহারাইটুদিলের সে-প্রকার নহে। ইহারা থকা ও মর্কটাকার, অভ্যন্ত পরি-শ্রম-পারণ, অত্যন্ত চতুর, কাহার কথার আপন যার্থ विश्वृष्ठ इस ना, अवर रेग करम् अव्रुष्ठ इस छोड्रीत अक अकात त्मेष ना कतिया ছोट्ड ना। शूर्ट्स देशे पिर्धित রাজাবা রাজপাঠ ছিল না। ভাহাদিগের প্রধানেরা পুত পৌরাদিক্রমে গ্রাম বা জিলার প্রধানত্ব করিভেন। ইং-बाकी शक्तम गंजाकीत शृद्ध मूमनगानिएशव ইভিহাসে रेशांक्टिश्रत नाटगाटलथ भर्याख हिल ना, त्यां अ अंकाकीत প্রক্রি অবিধি বিজয়পুরের রাজারা পারন্য ভাষা রহিত कतिया बामनकार्नीय कार्य महाताचीत्र जावा वाबहात, वर्षक गुजानत्क महाताक तनीय त्मावित्र नियुक करवेता अस्त अविदिनक अपराद्यांहरन केन शुना दमनिया कि के के किया है जिसके अपने निवस्क

করিতে লাগিলেন, কিন্তু তথনও তাহাদিগের নাম বড় প্রকাশ ছিল না। মালকাম্বর যে সময়ে সংগ্রাম আরম্ভ করিলেন সেই সময় অবধি তাহাদিগের নাম ব্যক্ত হইতে লাগিল।

नालकाष्ट्रदत्त नगरम योष्ट्रदाञ्जाक नात्म महातासीयागरणत এক প্রধান ছিলেন, তিনি আপনাকে রক্তঃপৃত বংশীয় বলিয়া প্রিচয় দিতেন, এবং দশ সহস্র অধারোহী দেন। लहेश मालकाश्वतत्र कर्ण्यानियुक्त हहेशाहित्सन। मठाकी ভৌসলা নামে এক ব্যক্তি উক্ত ৰাষ্ট্রাওয়ের অধীনে কর্ম তিনি দোলঘাতার দিবসে সাহজী নামে ত্রীহার এক পঞ্চনবর্ষীয় পুত্র সমভিব্যাহারে যাত্রভিয়ের आवित्य शमन कवियाहित्वन। जिजिनोत्म याष्ट्रताउदयत कन्। उरकारन जिन वरमत्रवयका हिल्लन। याष्ट्रवाञ ভাছাকে সাহজীর সহিত ক্রীড়াসক্ত দেখিয়া হাস্য করিয়া कहिटलन, दकमन जिल्लि! जुनि धेर वालकणिटक विवाह করিবে তদনন্তর সভাগদেণের প্রতি চৃষ্টি করিয়া সহাস্য-बनदन कहिटलन, दम्थ दम्थि अहे इहे बैट्ड क्यान भाजि-आहरू, अहे शाब कना। द्र छेशबुक्क वटणे। अहे कथा विनिवा-बीब मनाजी नकनरक मदशासन कतियाँ विनदसन राज्यासहा শানী, যাছরাও আমার পুতের সহিত কলার বিবাহ (क्शा वित्र कतिरमन्। विश्व शश्चिता व नेताकी करक्षण) क्लीन हित्तम, चडका क्रेक्स क्लिंड हरेग TITLE PROBLEMENT OF THE BEAUTIFUL THE PROPERTY OF THE PROPERTY

ধ্য, বাছরাওয়ের সহিত সমান ভাবে চলেন। কিন্তু ক্রমে তাঁহার ভাগ্যোদয় হইতে লাগিল। তিনি আহম্মদপুরের রাজাদের কর্মে নিযুক্ত হইয়া পুনাতে এক জায়গীর পাই-লেন, এবং ক্রমে ধনবান্ ও পরাক্রমশালী হইলেন, তথন ভবিতব্যতাক্রমে বাছরাও তাঁহার পুরের সহিত ক্রমের বিবাহ দিলেন।

এই বিবাহের পরে: সাহজী বিজয়পুরের রাজার কর্মে नियुक्त रहेशा कडास रमवी रहेतनम, এবং वे तांका তাঁহাকে মহীশুরে এক জায়গীর প্রদান করিলেন। পংক্র জিজির গর্ত্তে শঙ্কী ও শিবজী নামে তাঁহার হই গুত্র হয়। শহুজীকে তিনি আপনার নিকটে মহী ভরে রাখিয়া-ছিলেন, শিবজী পুনাতে প:কিতেন। দাদাজী কামনের नारम এक खाक्का भूनांत काञ्चली द्वत कमा निस्तार करिटलन, তিনি তাঁহার রক্ষক ধরূপ হইলেন। শিবজী অভ্যস্ত চতুর ও সাহসিক ছিলেন, তিনি মুস্লমান্দিগজে ধৎপরো-নান্তি মৃণা করিতেন, এবং বয়স্যগণের সাক্ষাতে সর্বাদা रिलिट्डन आर्थि मुगलमानिमिश्दक श्रेतालग्न कविशा श्रीत बाका इडेव। मामाञ्ची उाहाटक मठा निवाहन कविराहन, বিদ্ধাতিনি তাঁহার বাকো কর্ণপাত করিতেন না। অনম্ভর তিনি দাদাজীর অধীনত্ব পরিত্যাগ করিয়া পিতার অখা-कारी त्रमा अवर शक्क वानी मन्त्रामिटन व नहिल बिनिया व्यवस्ति। इन दूर्वक शक्तक क्रमन कतिया विकारितकन, करे-करण किनि लर्काएक्स नवन द्यान, ऐक्स्स्सर्श व्यवश्र हरे-

জেন। ইহাও অমুমনি করা গিয়াছে কনকান প্রদেশে যে

নকল দমুরেভি হইত তিনিই তাহা করিতেন। এই সকল
কর্মো তাঁহার সাহল জনে আরো রভি পাইল। তিনি লুঠ
ও বিষাদ লইয়া সর্মদা কালকেপ করিতেন।

কিছুকাল পরে দাদাজী পরলোক গমন করিলেন, ভাহাতে পুনার জায়মীরের কর্তৃত্ব প্রাপ্ত হইয়া তিনি আপানিই ভাহার উপস্বত্ব ভোগ করিছে লাগিলেন, পিভাবে কিছুই পাঠাইতেন না। তৎপরে বিজয়পুরের কাজার সহিত ভাহার ভাবান্তর হইল, ভাহাতে তিনি একরারে কনকান অধিকার করিয়া বসিলেন। বিজয়পুরের রাজা শিবজীর দৌরাক্স দেখিয়া ভাঁহার পিভাকে কারারজ্ব করিয়া বলিলেন, ভোমার পুত্রকে বলিয়া পাঠাও এরপ দৌরাক্স আর না করে, যদি করে ভবে কারা- গারের হার গাঁথিয়া ভোমাকে ভাহার মধ্যে পচাইয়া লারির। এই আজা শ্বনিয়া শিবজী সাহজাহানের শরণ লাইলেন। সাহজাহানের জানেশে বিজয়পুরের রাজা ভাহার পিভাকে ভারার পিভাকে হারামুক্ত করিয়া দিলেন।

्यन हत, १७६८ च्योरम, का छत्र एक प्रमान द्वारण बहिया रनावकमात श्राकात महिए युकात्म कतियान। से नमत्त मियकी काँछ क्षांचा रहेश रमानन ब्राक्ष गूर्धन कार्यक्र नानिरान । देशरेष का छत्र राज्य निष्ठांच गार्थ-क्षांक्ष करेराम, किस समन देशित करनाराज्य नामन रहेण, कार्यक्ष देशाम हिस्स महम्बद्ध देश कमा सार्थमा विक ভিনিও দক্ষিণ ইইতে প্রত্যাগমন করিয়াছেন, শিবলী
বিজয়পুরের রাজার প্রতিকৃদে অক্সধারণ করিয়াছেন, শিবলী
বিজয়পুরের রাজার প্রতিকৃদে অক্সধারণ করিলেন। বিলয়ন
প্ররের রাজা অপার্যামানে তাঁহার সহিত সন্ধি করিলেন।
ইং ১০০০
এই সন্ধিতে শিবলীর যথেক লাভ ইইল।
গ্রুতিন সমুদ্র তীরে গোয়া অবগি কল্যান-পর্যান্ত-কনকানের ১২৫ জোল ভুনি এবং ঘাট গর্কতের উপুরিভাগে পুনার উত্তর অবগি ক্ষানদীর দক্ষিনে মরিচ পর্যান্ত ৭৫ জোল ভুনি পাইলেন। এই রাজ্য প্রস্তের পরান্ত কম রুদ্ধি হইল। এ সময়ে ওাঁহার পঞ্চাশ সহত্য পান্তিক এবং সাত সহত্র অশ্বারোহী সেনা ইইয়াছিল।

বিজয়পুরের রাজার সহিত সদ্ধির পর, শির্মী যোগল রাজ্য লুঠনে পুনঃপ্রবৃদ্ধ হইলেন। এই উপত্রের কারণ কিছুই উপলক্ষ হয়না। যাহা হউক উাহার সেনাগণ লগ্ধন জারম্ভ করিলে, সায়েন্তা গাঁ নামে মোগল সেনাপতি আঞ্জ্যকার্য হইতে যাতা করিয়া উাহার সকল সেনা ছিল ভিন্ন এবং উাহাকে পরাজয় করিয়া, পুনাতে তাঁহার লামগাঁর জ্যিকার করিলেন। শিবজী পরাজিত হইলা ভিন্নি মুন্ন প্রশাহন করিয়া লাকিলেন। সায়েন্তা লা বিল্লি স্থান করিয়া লাকিলেন। সায়েন্তা লা বিল্লি স্থান করিয়া তথান শিবজী গাঁলাবস্থাত প্রশাহন করি করিয়েন করিছে রানা করিলেন। করেন, অতএব এক দিবস নগরে একটা মহাঘটার বিবাই छश्रीक्र इहेटल, यथन बत्रमाजी लाटकता ताजित्यादश ্নগর প্রবেশ করে, শিবজী সেই সময় পঁচিশ জন বল-बीन (मन। मनिकाशाद्य वत्रमाओं वक्षण छारारेण्य महम চলিলেন। তাহার লোকেরা ছানে হানে গুপুডাবে রহিল ি শিবজী নগর প্রবেশ করিয়া একেবারে আপ-बाब राजित थिएकी चात मित्रा माराखा धाँटक वध করিতে গেলেন। সায়েন্তা থাঁ তৎকালে লোভালার উপর এক ঘরে বসিয়া ছিলেন। রক্ষার কোন উপায मा प्रतिशा भेषतान्यव शर्वादक तक्षु वस्रम कविशा उद्यवस्त थुर्वक अनारेटनन । अनार्त काटन निवकी उद्योग छे श्रेष थे इताचा छ कति वन । . वित वी अड़त है। हात অকে লাগিত তাহা হইলে তিনি একেবারে ছই খণ্ড ইইয়া পড়িতেন, কিন্তু ভাহা অঙ্গে না লাগিয়া ভাঁহার সঙ্গে লাগিল, ভাহাতে ছইটী অনুনী একেবারে উড়িয়া গেল। সায়েত্তা খা পলায়ন করিলে পর ভাঁহার পুত্র ও আর ২ बोहोती शृह दिन भिवली छोड़ामिश्रक काणिया पंछ ये छ করিলেন। তৎপরে তিনি নির্মিলে পরিতারোহণ করি-क्षेत्र । श्रेष्ठाद्वास्य काटन मगारनत खारनारक छाउद श्राच अतील न्द्रेग उति ।

्यहे क्रमोहिनक नत्मत्र सेत् नितकी चाद्या नाहिनक ब्रोड्साडोडि नवस सब्दाही स्वाचनाराहत नवुक्कीर्य क्षोडाके नवड सामग्र विद्यान। स्वकाद्य के नवद्य রক্ষকাদি কেছ ছিলনা, তাহাতে তিনি ছয় দিবস পর্যাস্ত ঐ
নগর লুঠন করেন। আর ঐ সময়ে ইউরোপবাসী কতভালন লোক তথায় কুঠা করিয়াছিলেন, শিবজীর সমতিব্যাহারী লোকেরা ভাহাও লইবার বাঞা করিল কিন্তু পারিলু
না, তথাপি নগর লুঠন করিয়া অনেক অর্থ পাইল।
ভাহাতে শিবজী রণভরী প্রস্তুত করিয়া সৌরান্ট্র নোগলদিগের বাণিজ্য-ভরী লুঠ করিলেন। তৎপরে চারি কহ্প
ভোক সমভিব্যাহারে বিজয় পুরের রাজার অধিকার
স্থায়ে কানাড়ার এক বন্দর লুঠন করিলেন।

শোরাই মন্ত্রাগমনের পথ, এজনা তাহা তীর্থসানের
মধ্যে গণ্য। শিবজী ঐ স্থান আক্রমণ এবং যাত্রিদিনের
নৌকানি লুঠন করিলে, আওরংজের অত্যন্ত রাগপ্রাপ্ত
ইইলেন। বিশেষ, পিভার মৃত্যুর পর শিবজী রাজা
উপাধি গ্রহণ পূর্মাক স্থনানে মুদ্রা মুদ্রিত করিতে আর্
ইর্মা ছিলেন। আওরংজের এই সকল অত্যাচার
দেখিয়া তাহার দমন জনা সৈনা প্রেরণকরিলেন, ভাষারা
শিবজীর ভাবং মুর্গ অবরোধ করিল। শিবজী মোগলরাজের সহিত বুদ্ধ করিয়া হঠাৎ জনী হয়েন এমন আবার
ছিল না, অত্থব, আওরংজেবের সেনাপ্রির সহিত সন্ধি
ইন্ধনের ক্যা উপাপন করিয়া আপান সৈন্যগণ দূরে রাখিয়া
ভাষার নির্মার উপাত্রিত ইইলেন। নেনাপ্তি ভাষাকে
ক্রান্তর ক্রান্তর ইপাত্রিত ইইলেন। নেনাপ্তি ভাষাকে
ক্রান্তর ক্রান্তর ইপাত্রিত ইইলেন। নেনাপ্তি ভাষাকে
ক্রান্তর ক্রান্তর ইপাত্রত ইইলেন। নেনাপ্তি ভাষাকে
ক্রান্তর ক্রান্তর ইপাত্রত ইইলেন। নেনাপ্তি ভাষাকে

বিংশতি হুগ ও তৎসম্পর্কীর তাবৎ ভূমি তিনি পরিত্যাগ করিবেন, তাহা হইলে অবশিক্ট হাদশ হুর্গ জায়ণীর স্বরূপ তাঁহাকে দেওয়া যাইবে, এবং দিলীশ্বর তাঁহার মর্যাদার জন্য শস্তুজী নামে তাঁহার পুত্রকে রাজসরকারে পঞ্চসহজী সেনাপতির পদ প্রদান করিবেন। এই সন্ধিন পত্র সাক্ষরিত হইয়া দিলীতে প্রেরিত হইলে সম্রাট সকল বিষয় গ্রাহ্ম করিলেন, কিন্তু চৌধগ্রহণের বিষয়ে কোন আজ্ঞা দিলেন না।

্লের্ম্বর শিবজী সম্রাটের আজাবন্তী ক্ট্যা বিজয়পুরের রাজার শহিত যুদ্ধে প্রকৃত হইলেন। তৎ-পরে সাওরংজের ভাঁহাকে রাজধানীতে ডাকাইয়া পাঠা-ইলেন। শিবজী ভাঁহার আজ্ঞানুসারে দিলীতে গমন করি-. লেন। কিছু যখন তথায় উপস্থিত হইলেন, তখন রাজা তাঁৰার উচিত মর্যাদা না করিয়া ভাঁহার অভার্থনা জন্য द्भाग अक्षम गामामा कर्याकात दश्चत्र कतिरलम । उपमुख्त ষ্থন তিনি রাজসভাতে উপনীত হইয়া সম্রাটের সম্মুখে নকর গরিবেন, তথন কুনবাদি কিছু জিজাসানা করিয়া জারাকে ছভীয় শেশীর মর্যানিগের সহিত বসিতে कांका बिटनान । कांश्वत एकाव महम कहिरतान मारनद श्रेक्ट। करें। निरकी व्याशित नहां हर्दिन, किन्नु धरे नकन व्यल-ৰানে তাঁহাৰ অন্তঃকরণে শূর্মান্তিক বেদনা হইল। ভিকি असमीरन अर्थेपार मुद्धिक हरेलान। मुद्धाच्याक अन खन र्यालम महास राजित रक्षम हानि इहेरम पुछ। জাপেকাও অধিক যাতনা বোধ হয়, আমার নান হানিতে বে ননোবেদনা হইয়াছে মৃত্যু হইলেও সেরপ বেদনা হইত না। ইছা বলিয়া তিনি সভা হইতে উটিয়া গেলেন। রাজ্ঞপরিছেদ গ্রহণের অপেকা করিলেন না। রাজা ভাঁহার আচরণে কুপিত হ'ইয়া অ'জা দিলেন ভাঁহাকে নজরবন্দী করিয়া রাখা যায়, তিনি পলাইতে না পারেন।

শিবজী দেখিলেন তাঁহার বিধিমতে অপ্যান হইতে ৰাগিল, অতএব নিশ্চিত্তভাবে পলায়ন করিবেন এই मानम कतियां, फिलीत क्या नांशूटण मनीत्यादकत श्रीफा कारम अहे इतन रेमनाभगरक करम करम विमाय कपिएछ লাগিবেন। তাঁহার সহিত যত অপ্প লোক পাকে ভতই ন্টাল এই বিবেচনা করিয়া আওরংজের তাহাতে আপত্তি कतित्वन ना। जन्म कर्म कार्य कार्यात मकल मकीया असान নদীদিগের প্রস্থানের পর শিবজী পীড়াছলে শযাবাদী হইয়া থাকিলেন। ভাঁহার সঞ্চীগণের মধ্যে কএক कन मिल्लीनशदत एश्रजादर थाकिन, हिन्छू कविताक मिरशत् ষারা ভাষাদিণের সঙ্গে শিবজীর কথোপকথন চলিতে লাগিল। শিষস্পী দিলীতে যাইয়া অবধি প্রতাহ সন্ধার পর गति भाग गामाति थामाज्या अভिधानदम् भागेहिम्। मिट्ड-ম। প্রহরীরা জানিত খাদ্যদ্রব্য বাইতেছে, অতএর চাঙ্গারি भाष्ट्रेक कविक ना । এक प्रित्म ब्रोटक भिराजी जार्शन अक চাঙ্গারিতে এবং পুরুটীকে আর এক চাঙ্গারিতে বসাইয়া कनाग्रांटन बन्धियान स्टेटल वाहित स्टेटलेन, भेगाटल अक

শারিল না। পরে তাঁহার লোকেরা যে এক দ্রুতগামী অর্থ প্রান্তিল না। পরে তাঁহার লোকেরা যে এক দ্রুতগামী অর্থ প্রস্তুত করিয়া রাখিয়াছিল, শিবজী পুরসমভিব্যাহারে সেই অংশ আরোহণ করিয়া মধুরাতে পলায়ন করিলেন। তথার পুরুটীকে কোন বন্ধুর আলয়ে রাখিয়া আপনি মল্পক ও গোঁপানাড়ি মুগুন করিয়া দণ্ডিবেশে শ্রমণ করিতে করিতে নয় মাসের পর স্বদেশে প্রত্যাগমন করিলেন।

ভাঁহার পলায়নে আওরংকেব অত্যন্ত সশক্ষিত হইলেন, বিশেষ তথন পর্যান্ত বিজয়পুরের যুদ্ধ শেষ হয়
নাই, কি জানি ঐ রাজার সহিত গোগ করিয়া আর
কোন উৎপাত করেন এই ভয়ে তাঁহার অপরাধ মার্ক্তনা
পূর্বেক ভাঁহাকে আর এক জায়গীর প্রদান করিলেন, এবং,
ভাঁহার রাজা-থ্যান্তি দৃঢ রাবিয়া ভাঁহাকে ঐ যুদ্ধে নিযুদ্ধ
করিলেন। শিবজী রাজার আজ্ঞাক্রনে বিজয়পুর ও গোলকন্মার রাজাদিগের শহিত সংগ্রামারম্ভ করিয়া পরিশেষে
ভাঁহাদের স্থানে কর গ্রহণ করিতে লাগিলেন।

এই যুদ্ধের বিরতির পর শিবজী নিজ রাজ্যের যুক্তও রাক্ষশাসন সম্পর্কীয় কতকগুলিন নিয়ম করিলেন। রাজ্য সংগ্রহও রাজ্য সম্পর্কীয় সকল কর্মের ভার ব্রাহ্মণদিগের প্রতি দিলেন। ক্রবিলোকের প্রতি দৌরাগ্যা না হয় অর্থচ ক্রেছ রাজ্যকে রাজ্য বঞ্চনা করিছে না পারে ভাষার বে বে নিরুম কর্তবা ভাষা করিলেন। দৈনাগণের ভূরি বেডন নিয়োজিত স্থিয়া ভাষা রাজ্ভাগ্যার হইতে দিবার নিয়ম করিয়া দিলেন। লুঠিত জব্য প্রদানের নিয়ম রছিত করি-লেন। লুঠিত জব্য সরকারে জনা হইতে লাগিল। সৈন্দ্র দিগের প্রধানেরা দশ অবধি পঞ্চ সহস্র সেনার অধাক্ষ-ভায় নিযুক্ত হইয়া রাজভাগুরি হইতে বেতন প্রাপ্ত হইতে লাগিলেন, জায়গীর বা বৃত্তির বন্ধান রহিল না। এই সকল সুনিয়মে রাজ্য সমৃদ্ধ হইতে লাগিল।

সাওরংজেৰ তাঁহার প্রতি ইদানীং যে অনুগ্রহ করিয়া-ছিলেন তাহার কারণ এই, তিনি আনেদে বিহাল বা, অসতক হইলে তিনি পুনর্কার তাঁহাকে হল্পাণীন করিবেন, কিন্ত ধুর্ত শিবজী তাঁহার অভিপ্রায় বুরিয়া তাঁহার চক্রে পাদক্ষেপ করিলেন না। অতএব আওরংজেব দে আশায় উনরাশ হইয়া ভাঁহার সহিত মুদ্ধার ম ক্রিলেন, ইহাতে তাঁহার নঙ্গল হইল না, যুদ্ধারম্ভ কইলে শিবজী সিলা-दित मिनित चाकम्म, त्मोताके धूनः वृक्षेन, अवर धटनम ध्यामम धरकवादत उद्योख कतिया क्वित्वन ; भविकन्द्र তিনি নর্মতে চৌথ গ্রহণ করিতে লাগিলেন। আরু যথা-उंथा बाहेम ताकामिश्टक दलिटलेन ट्यामता जागीटक वाकत्यव ठकुषी १८भव जकार म माछ, छारा हरेटम दर्जामा-मक छाछि त्वान अङ्ग्रहात कतिन ना, विनि ना मित्तन छोहात त्रोकान्क्रम ও श्रमा दिनीच कृति । अहे छत्य मनका आकार देशहादक को थे निरुद्ध नामिरमन, खाराट उद्दे ফৌৰ বাহলের ব্লীত হইল।

· काक्ष्मश्रदक्षव चित्रकीत महिन्छ चुक्तार्थ त्व देगना त्थात्रव

ক্রিলেন ভাহার। যুদ্ধ জয় করিতে পারিল না, ভাহাতে তিনি পুনরায় অধিক সেনা পাঠাইলেন। শিবজী এপ-र्यास त्यांशनमित्तव मान मन्यूथ-पूर्व अवस श्राम नाहे. स्वाटल शांदल बाकिया दाताह गांत गांतिर छन, अदर मूर्ठ-शांके क्रिया त्वकाइएकन । अ बाजाय नमार्थ यूक्त क्रिया स्मार्थन रमसामिशक किस जिन कतिरनम । ইহাতে ভাঁহার অত্যন্ত দশ হইল, এবং মোগল সেনাগণের অষশ হইল। আওরংজেব তৎকালে পূর্ব্ব উত্তর বাসী পাঠানদিখের সহিত যুদ্ধে প্রব্রত ছিলেন, এ জন্য দক্ষিণের युषा के किन मा, धीरत धीरत हलिएक वाशिन।

আওরংকের জ্রমাগত ছুই বৎসর পাঠানদিগের সহিত যুদ্ধ করিলেন, কিন্তু ভাহাতে কোন ফল দৰ্শিল না, তিনি लोठीनिमित्रदेक बटक्वाद्य वनीष्ट्रक क्रिटक लाहिटनम ना। ভদনস্তর সাধুদম্পুদালের সহিত উ্হোর ঘোর সংগ্রাম कांत्र हरेंगे। बद्दे मकल मापू अटक्षत्रवानी, माजार्यतार्थ, क्षर बिट्डिसिंग, महार्गि शान क्रिट्डिन मा। डिका उ स्मिक्स क्रिया कान करण मिन लाक क्रिएकन। धर जन्महास्त्रज्ञ थक गृष्टि मिल्लीत कि स्थिद वावधादन वान अहि-रछन, डीशांत कंडन जृगि हिन, छारांत हान आवान कतिया किनि केनद्रात को बट्डन। सम्मदनत नगरम वास्त्रभ नामा-क्रिका अस्त्रीक कर्ज त्रमुक सावित्र, वाक्का मा निमा ्कर् क्रमस्वहरा बाहरक नाविक ता । त्वान क्याव नावक अक्रिक श्रवरीत विरोध हरेका अर्थी डाम्लक बाह बाह

অনেক লোক আনিয়া সাধুকে অপমান করিল। সাধু সকল ভাহা দেখিয়া দলবদ্ধ হইমা রাজপক্ষ লোকদিগকে প্রহার कतिन । कटमरे निवाम त्रिष्ठ स्टेट्ड नाशिन, त्रभन्ड ভावर লোকপাধুদিগের পক্ষ হইল। সম্রাট ভাহাদের দমনার্থ সেনা সামন্ত পাঠাইলেন। সেনাগণ গুদ্ধসম্ভা করিয়া আসিল, কিন্তু পরাজিত হইয়া প্রস্থান করিল। একটা कन्दर छेठिल, माध् मकल दाष्ट्रराज युक्त करत, अरथ कान দেবী তাহাদের যুদ্ধ কর্ম্যের অধ্যক্ষতা করে, তাহাতেই কেছ ভাহাদিগকে পরাজয় করিতে পারে না। ভদ্তির রজঃ-পুত সেনাগণ ভাহাদিগের দলে নিলিয়া যুদ্ধ করিতে লাগিল। মুতরাং আভরংজেৰ অনেক সৈন্য প্রেরণ करित्रमन, এবং योष्ट्र नोटमोद क्रमा मकल रममोत् शांटक अरू अरू करक रहान कतिया मिलन । अरे अर्काद्ध (चाँव मरक्षाम इहेटल नाणिन, अवस्थाद चालिनही जुड़ी अवर সাধুগণ প্রাক্তিত হইলেন।

करमाविश्न अधाम

আওরংক্তেবের চরিত।

যে সকল পাঠকেরা এই ইতিহাস মনোযোগ পুর্কৃক পাঠ করিয়াছেন ভাহারা অবশা বুঝিয়া থাকিবেন পাঠান রাজারা এমন হিন্দুপর্মানেরী ছিলেন, তৈমুর বংশীর রাজারা নে প্রকার ছিলেন না। আকবর হিন্দু রাজা-দিগের কন্যাদি গ্রহণ করিয়া ভাঁহাদিপের সহিত কুটুমিতা পর্যান্ত করিয়া ছিলেন, এবং ভাঁহার রাজত্বালে হিন্দু রাজারা রাজ্যের অতি উচ্চ উচ্চ কর্মো নিযুক্ত হইয়াছিলেন। আকবরের কয়েক জন উত্তরাধিকারীও নেই খারাছেত চলিয়াছিলেন, ভাঁহারা হিন্দু ধর্মের প্রতি বিশেষ ক্রীরাজ্য করিতেন না।

ক্তিত আওরংজের সে ধারার মনুবা চিলেন না, তিনি অত্যন্ত শঠ এবং মুসলখান ধর্মের গোঁড়া ভক্ত ছিলেন। ধর্মের প্রতি অত্যন্ত ভক্তি প্রযুক্ত তাহার বোরানোর কিছুই বিরেচনা ক্রিতেন না। সভ্তব রাজ্যারভার কিছুদিন পরে সৌর বংগ্র রহিত করিয়া ছাল্ল বংগ্র পুনঃস্থাপন ক্রিলেন। ইয়া করিবার বিশেষ

ভारभंग वह लोडनिक्दा तीत ररमत मृष्टि करत ভাহাদিগের মভাতুসারে মুসল্যান শাস্ত্রের গণনা রহিত করা যাইতে পারে না। অনেক মুগলমান পণ্ডিত ইহাতে आंशिष्ठि कतियां विकासन त्य हास्य वरमत काल-मस्बर्शिक নহে। কিন্তু তিনি কাহার কথা গ্রাফ্ করিলেন না । ইহা ভিন তিনি হিন্তুদিগকে ধুমধাম পূৰ্বক প্ৰতিমা পূজাদি করিতে দিতেন না। এক ব্যক্তি মলা নিযুক্ত হইয়াভিলেন তিনি কতকণ্ডলি অশ্বারোহি মলুবা নজে করিয়া পথে পথে জমণ করিতেন, পথযাটে কাহাকে দেবার্চনা করিতে দিতেন না। পরে তিনি হিচ্চুপর্কাদি একবারে উঠাইয়া रमन, अवर वफ वफ रमनाटक हिन्छुमिरभव प्रवामि क्या করিতে নিষেধ করেন। ইহা তিন্ন তিনি অনেক অপ্পা বুদ্দির কর্মা করেন। রাজসভাতে এক এক জন গণক থাকিতেন, এবং অনেক পণ্ডিভ ও কবি হুত্তি ভোগ করিতেন, ভিনি তাহা রহিত করেন। এবৎ ইতিহাসলেথকের কর্মা উঠাইয়া দেন, ভাহাতে ইতিহাস লেখার প্রথা রহিত হয়। কিছুকাল পরে তিনি আজো দেন মুসলমানেরা দ্ব্যা-पित अर्फिक माञ्चल पिरंब, हिन्कुपिशंदक मगूपांश पिराक হইবে এবং হিচ্ছুরা রাজসম্পর্কীয় কোন উচ্চ কর্ম भाइत्व ना।

জাজিয়া নামে পৌডলিকদিগের উপার এক কর ছিল, আক্রর তাহা রহিত করিয়া দিয়া ছিলেন, আওরং-জেব সেই কর পুনঃস্থাপন করিলেন এবং তাহা সংগ্রহের উৎকট নিয়ন করিলেন। এই করই অনর্থের মূল ছইল।
অনেকে অনেক রূপ বুঝাইলেন, কিন্তু তিনি কাহার বাক্যে
কর্ণণাত করিলেন না। এই কর পুনঃস্থাপনে রক্তঃপূতদিশ্লের নর্যান্তিক ছঃখ হইল, তাহাকের কিছুমান্ত প্রভুভক্তি রহিল না, এবং দক্ষিণ রাজ্যে রাজা প্রজা সকলেই
প্রকাশ্য বা গোপনভাবে রাজবৈরী হইয়া হিম্মুধর্মপালক
শিবজীর পক্ষে ধাবমান হইতে লাগিলেন।

এই বিস্লোহিভায় স্থার এক গুরুতর কারণ এই, জাজিয়া পুনঃস্থাপনের কিছুদিন পরে সিন্ধুপারে রাজা ৰশবন্ধ সিংহের মৃত্যু হইল। তাহাতে তাঁহার ভার্যা इस्मी चिन्छ मस्तान बहेश सम्मान अल्गागमन कतिरलन। কিন্ত অধানে প্রত্যাগমনের জন্য রাজার অনুমতি লওয়া इस नारे, वित्यव बाजज्ञां वित्यम क्यित्व बागी ভাহাদের কথা না শুনিয়া সিন্ধুপার হইলেন। আওরং-ब्बर और मरवान পाইगा बांनी ও डाँहात हरेंगी मछान्दक অবক্ত করাইলেন, পরে আর ২ সকল লোক ও স্ত্রীলোক-দিগতে গমন করিতে অনুমতি দিয়া কেবল রাণী ও তাঁহার हरे भूज्यक आहेक केंद्रिए आड़ा मिलन। धरे खाड़ा अबद्दलन कतिहा तागीत शक जिनाधाक द्र्णामान, तागी ও রাজকুমার্দিগকে ছগুবেশে পাঠাইয়া দিলেন। একজন शक्तिहासिनी बाबीत त्वन आह छहें वानक तानकृमात-बाबा तम धातन बहिया बहिता बावतर छन आतिए भारतमा तानी ७ छर्भूविनगरक भूनवानवन করিতে আজা দিলেন। সেদাপতি হঠাৎ সে আজা পালন করিতে বিশ্ব করিতে লাগিলেন, এই অবসরে রাণী পুত্র সমতিবাহাবে যোগপুরে পৌছিলেন। আওরং-জেব জুলু হইলা সৈন্য প্রেরণ করিলেন। তাহাদের সহিত রজঃপুতদিগের খোরতর যুদ্ধ হইল, কিন্তু তাহার। জয়ী হইতে গারিশ না, মোগলদিগের হতে সকলে নিহ্ত হইল।

কিন্তু রাজা হশবস্ত সিৎহ কম সম্ভুমের মনুষা ভিলেন না। তাঁহার সধর্মিণীর প্রতি এই প্রকার অত্যাচার ও তীর্থ যাতার কর পুনংস্থাপন করাতে দকল ওজঃপুত রাজারা একেবারে ক্ষিপ্তবৎ হইয়া সংগ্রান-সজ্জা করিতে লাগিলেন। উদয় পুরের রাজা এই যুদ্ধের অধ্যক্ষ হই-লেন। আওরংজেন তাঁহার দহিত মুদ্ধার্থ স্থাৎ যাত্র। করিয়া ভাঁহাকে পরাস্ত করিলেন। তথন রাজা কি করেন, ভাঁছাকে শ্বহস্তে লিখিয়াদিলেন ভাঁহার অবাধ্য হইবেন না। কিন্তু আওরংজের রাজপানী গমন করিবায়াত্র ভিনি পুনুর্মার অস্ত্রধারী হইলেন। সুতরাং আওরং-জেব চতুর্দ্দিগ হইতে সৈন্য সংগ্রহ করিয়া উদয়পুর আক্র-मन क्रिटलन। উদয়-পুরের রাজা সংগ্রামে জক্ষ ইইয়া আরাষলী পর্বতে প্রায়ন করিলেন, তাঁহার রাজ্য পড়িয়া तरिन। साधन देशस्याता छारा नूठे स्तिया नश ज्य क्रिन । अनुस्त्रः आधारश्रद्धत तुल्रः श्रुकित्भव श्रुकात দৰ্শ করিয়া ভাষাদিখকে নিভান্ত নিৰ্যাতন করিতে লাগি-

रमना किछ ब्रक्षा प्रदेखका निखाय वीर्याशीन नटर, स्वर् ভাছাদিগকে আঘাত করিলো ভাহারা ভাহাকে এক গা লা মারিয়া কান্ত হয় না। সম্রাট ভাহাদিগকে মেমন নির্যাতন क्रिट्ड बालिएनन, डाहातां मनदम्ब इहेगा उँहित দ্রবাদি বাহৰ পথাদিও সেনাগণকে রাত্তে ও সকালে আজ-मा बाइड कहिन, जर मलार नग्युक रहेटल नाजिन। আকরর নামে অভিন্তকেরের এক পুত্র ছিল, ছুর্গাদাস ভাষাকে সিংস্থাসন দেওয়াইব বলিয়া আপানাদের দলভুক্ত क्रिट्रंबन्। व्यक्तिय १००० ब्राब्स्ट्रमना लहेया आक्रमीटर পিতার সহিত যুদ্ধার্থ উপস্থিত হইলেন। তৎকালে षाश्वित्रश्रक्षरस्य त्करल क्षेत्र महत्य रमना हिल। जिनि ৰুঝিলেন উহিার পুজের সহিত যে সকল দৈন্য মুছার্থ আদিয়াছে তাহারা সকলে আপন ইচ্ছাতে রাজ বিপক্ষ इम्र मारे, दास्युक छारामिश्रक इल श्रुर्सक व्यानियाद्यम, জ্জত্ত্রর অনায়াদে তাহাদিগকে বদীভূত করিলেন। সুভরাং রজঃপুভেরা মোগলদিগের দহিত যুদ্ধ করিভে मुक्त ना रहेश अञ्चान कहिन । जाबवत तासायुअटर विक्षिक इहेसा महाताकी समित्मत भारतान इहेटलम ।

এই বুজে রক্ষঃপৃত ও মোগল উভয় জাতির অনেক শনিষ্ট হইতে লাগিল। ভাষা দেখিয়া আওরংজের উন্নয়পুরের রাজার সহিত সন্ধি বন্ধন করিলেন। সন্ধিপজে আজিয়া নামক করের কোন উল্লেখ থাকিল না। এই সন্ধি উন্নয়পুরের রাজার পক্ষে গুড়কর হইল বটে, কিছু ভাষার পূর্বাবিধি রাজার সহিত তাঁহার যে মনোভর ইইয়াছিল তাহা দূর হইল না। আওরংজের যত কাল রাজত্ব করি-লেন তাবংকাল মধ্যে মধ্যে যুদ্ধ ত্বতে লাগিল।

अनिदर्श मिवली क्रमभंद छावल २३८७ श्रीकटलन । दिससं পুরের রাজার মৃত্যুর পর ঐ রাজ্যে নানা-প্রকার গোলযোগ উপত্তিত হইল। এই গোল্যোগ শিব-জীর রুদ্ধির আর এক হেতু হইল। বেহেতু তিনি 🏖 গোলের সময় ভক্রাজা, এবং ভাছার ছই বংসর পরে কনকানের অংশিক্টাংশ এবং ঘাটপর্বতের অধিকাংশ হিং ১৯৮৪ 👤 অধিকাব করিলেন। তৎপত্র তিনি হিন্দু-খু ১৯৭৪ শাস্ত্রের বিধানামুসারে রাজমূকুট গ্রহণ ক্রিয়া আপনার রাজ্যাভিয়েক সম্পন্ন করিলেন। ঐ রাজ্যা-ভিষেকে ভারি সমারোহ হইন। ভদনন্তর তিনি আপ-নার কর্মকারকদিলের পার্সী নাম খ্চাইয়া সংস্কৃত নাম দিলেন, এবং মুসলমান ধর্মে আওরংজেবের যেমন অভি ভক্তি ছিল, ভিনিও হিন্দু-ধর্মের প্রতি সেই প্রকার অচল ভিজ্ঞ প্রকাশ করিতে লাগিলেন-সর্বতে হিন্দুশাস্তাসু-बागी (महार्कमा ७ वर्षा कर्यानि इटेट्ड नाशिन ।

জনে শিবজীর এমন পরাক্রম হইল, তিনি নর্মধা
হিং ২০৮০ বিজ্ঞান পূর্মক মোগল অধিকার আক্রমণ
শু ২৯৬৫ বিয়া আনেক রাজা লুঠন করিলেন।
তবপরে মহীশুরে উহার পিভার জামগীর উদ্ধারের
বাসনাতে গোলকনার রাজার সহিত মিকতা করিয়া

माखारजत मामिरधा ममूज उठ निता विक्षि नायक शक् छीत्र ছুর্গের সন্মুখে উপস্থিত হইলেন। উপস্থিমাত ছুর্গস্থ मिनीगर निवस इहेन। उदशद छिनि छिटमाद्वद छ अना अना पूर्व क्या कतिरणन्। এই श्रकारत ভाবৎ काय-গীর অধিকার হইলে, মোগলরাজ এবং বিজয়পুরের রাজা গোলকন্দার রাজার বিরুদ্ধে অস্ত্র গারণ করিলেন। ভাহাতে তিনি মহীশুর হইতে গোলকদাতে যাতা করি-লেন। মহীশুর বেক্ষাঞ্জীর হস্তে রহিল, তিনি অঞ্জীকার क्षिटलन छ। हाटक अर्प्सक बाज्य मिटवन। भीवजी मही-শুরে আসিয়া দেখিলেন গোলকদার রাজার সহিত মোগ নরাজের সকল বিষয় মিটমাট হইয়া গিয়াছে। অতএর অফীদশ নাসের পর তিনি রাজধানীতে প্রত্যা-शममं कतिरलन ।

পর বংসর মোগলেরা বিজয়পুর আক্রমণ করিলে,
বিজয়পুরের রাজা শিবজীকে আজ্ঞান করিলেন। শিবজী
সাহায্য স্বীকার করিলেন। কিন্তু অনেক মোগল সেনা
বিজয়পুর আক্রমণ করিয়াছিল, ভাহাদের সলে মুন্তার্থ
আগ্রাকে অসমর্থ জ্ঞান করিয়া, তিনি মোগল অধিকার
আক্রমণ ও লুঠ করিতে আরম্ভ করিলেন। এই আক্রমণে
আক্রমর উহার প্রাণ সংখ্য হইয়াছিল, তিনি মারা
পাড়িতে ই রক্ষা পাইলেন। ভদনন্তর মোগলেরা নগর

বেশ্বন করিলে, তিনি তাহাদের আহার দ্রব্য আনয়নের
পথ অবরোধ করিলেন, তাহাতে যোগল সেনাপতি
নগর বেশ্বন করিয়া থাকিতে পারিলেন না, উটিয়া
গেলেন। এই কর্মের পুরস্কার মুরপা বিজয়পুরের রাজা
শিবজীকে অনেক ভূমি দিলেন, এবং সহীশুরে তাঁহার
আয়গীরের উপর আপনার বে স্মাধিকার ছিল তাহা
রহিত হইল।

- পর বংসর শিবজী পরলোক গমন করিলেন। তিনি অত্যন্ত নুজিজীবী চতুর এবং ক্ষমতাবান্ পুরুষ হিলেন। প্রথমে সন্তাদলাধিপতি থাকিয়া ক্রমে আগন বুজিবলে তিনি অত্যন্ত পরাক্রমশালী হইয়াছিলেন, ততুলা পরাক্রম আর কোন হিম্মু রাজার ছিল না। তিনি আর কিছুকাল জীবিত থাকিলে কি করিতেন বলা যায় না। আওবং-জেবের ধর্মাতজ্ঞিও জ্ঞান্তিই শিবজীর হৃদ্ধির মূল। শিবজী অতিবাদ নিষ্ঠুর ছিলেন না, সংগ্রামে জনপদের যে ছঃখ হইত তাহা তাঁহার সুনিয়মে দুর হইয়া যাইত।
- শিবজীর মৃত্যুকালে তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র শানুজী বাদী-বেশে ছিলেন। কথিত আছে শানুজীর প্রচণ্ড প্রভাব-প্রমুক্ত শিবজী রাজারাম নামে দশ বংসর বয়ক আর এক পুত্রকে রাজ্যের উভারাধিকারী করেন। বাহাইউক শানুজী দৈনাগণকে বদীভূতে করিয়া রাইপড়ে উপজিত ইলৈন, এবং রাজারামের মাতাকে বধ ও রাজারাম ও তমান্তিগণকে কারাক্ত এবং প্রাহ্মণ ভিন্ন আর অনেকের

মুওচ্ছেদন করিয়া আপনি রাজা হইলেন। তদনন্তর তিনি ইজিয় মুখের নিতান্ত বনীভূত হইলেন। তাহাতে কলুদ নানে এক হিন্দুখানী আন্ধান রাজ্যের কর্মাকর্তা এবং তাঁহার লাম্পটা কার্যাের আচার্যা হইলেন। শাসুজী বেশ্যা ও নদ্যে পিতার উপাজ্জিত অতুল অর্থ নাশ করিছে লাগিলেন। ক্রমে সকল অর্থ নই হইলে তিনি পনাভাবে নানা প্রকার অন্যায় কর খাপন করিলেন। ঐ করে প্রজারা নিতান্ত কুপিত হইয়া উচিল, সৈন্যগণের বেজন দেওয়া কঠিন হইল। তাহারা বেজনাভাবে চতুর্দ্ধিপের আরম্ভ করিল। মহারাক্ত্রিদিগের অন্যাহ রাজ্য লুঠন করিবার এই প্রত হইল।

বখন শতুজী ইন্দ্রির দেবাতে নিভান্ত বিহাল, তখন
আওবং জৈব, উদয়পুলের রাজার সহিত সন্ধিবন্ধনের পর
দক্ষিণ রাজা একেবারে আপন কর্ত্বাধীন করণ নানসে
গ্ ১৯৮০ তদেশে উপস্থিত হইলেন। পরে বরহানপুরে কিছুকাল অবস্থিতি করিয়া রাজস্ব এবং জাজিয়া
কর সংগ্রহের নিয়ম নির্দ্ধারিত করিলেন, তৎপরে আওব ১৯৮৪ রক্ষাবাদে গমন করিয়া তথা হইতে স্বায় পুর মোজাইনকে কণকানে পাঠাইলেন, বলিয়া দিলেন ঐ
আক্ষাল্যা করিয়া করেবে। রাজপুর শিক্ত অক্ষাল্যার ভাহাই করিতে লাভিজেন, ভাহাতে
কলা বাজি প্রতিবন্ধক হইল না। কিন্ত ভাহার সক্ষে

বেসকল অস্ব ও ব্রুষ গিয়াছিল তাবৎ মারা পাঁড়িল, এবং আহারাভাবে তাঁহার সৈন্যগণের বৎপরোনাভি ক্রেশ হইল। তৎপরে ষধন রাজপুল ঐ দেশ পরিত্যাগ করিছা ঘাটপর্বতে শিবির সমিবেশ করিবোন, ভগন মহামারী উপস্থিত হইয়া ভাঁহার অনেক দেনা প্রুদ্ধ পাইল। রাজকুমার বিপন্ন হইয়া কিরিয়া আসিলেন।

তৎপরে আওরংজের বিজয়পুর ধ্বংসের প্রতিজ্ঞা ক্রিয়া মোজাইমকে পশ্চিন্দিগ এবং আজীয় নামক আর এক পুত্রকে পূর্মদিগ আক্রমণ করিতে আজ্ঞাদিলেম, আপনি आहमाम नगरत गमन कतिरलन। किन्नु स्माज्ञ विराद अधिक দৈন্য চিল না, দেক্ষ্য তিনি আক্ষ্যে অশ্ভ ইট্লুন, মুতরাৎ আজীন অতাসর হইতে পারিলেন নাঃ এই মুখোগে শদ্ভুজী রাজার পশ্চাম্বর্তি সঞ্চল স্থান লুওন আরম্ভ করিলেন, এবং বরহানপুর দক্ষাকরিয়া ভক্ষদাৎ क्रियां क्विलिन्।

অতির্থজের বিজয়পুর আক্রমণ করিতে না পারিয়া গোলকন্দা রাজ্যের উপর ঝুকিলেন: গোলকনার রাজা, মদন পান্থ নামে এক ব্রাহ্মণকে মন্ত্রীর পদ প্রেদান করিয়া: ছিলেন, ইহাতে ধর্মভক্ত মুসলমানেরা অত্যন্ত কুলিত হইয়াছিল। অভএৰ যখন দিল্লীশবের সেনাগণ ঐ রাজ্যে উপস্থিত হইল, তথ্ন এবাহেদ নামে গোলকদা-রাজার প্রধান সেনাপতি রাজার সহায়তা না করিয়া অস্তরে র্মিলেন। পরে একটা অধ্বিরোধ উপস্থিত হইয়া মধন

পদ্ হত হইলেন। এই ঘটনার পর রাজা পর্বতশিষ্ধরে পলায়ন করিলেন। নিশ্লীশ্ব হার্ম্যাবাদ লইয়া লগু ভণ্ড করিলেন। তদনস্তর গোলকদার রাজা অনেক অর্থ দিয়া টোহার সহিত সন্ধি করিলেন। সন্ধির পর রাজ্যসনগণ বিজয়পুরে যাতা করিয়া ঐ নগর বেন্টন করিয়া থাকিল। রাজা অপার্যামানে পরাভব স্বীকার করিলেন। তদব্ধি ঐ রাজ্য একেবারে লোপ হইল।

তদনস্তর আওরংজের গোলকদার রাজার মন্ত্রী ও দৈনাগণের সহিত মন্ত্রণা করিয়া বিশ্বাস্থাতকতা-পূর্কক ভাহার সঙ্গে যুদ্ধারন্ত করিলেন। রাজা সাত মাস পর্যান্ত প্রবির্দিশ্যে কছা হইয়া থাকিলেন, তৎপরে ভিনি পরাভব মানিলেন, তদবধি ঐ রাজ্য ধাংস হইল। অন-ন্তর আওরংজের মহীশুরে সাহজীর জায়গীর হরণ করিয়া মযুদ্ধ পর্যান্ত আপনার অধিকার বিস্তার করিলেন। কিন্তু ইহাতে ভাঁহার পরাক্রম ব্লিক্ল হইল না, বরং এই অবধি ভাঁহার বলক্রাস হইতে লাগিল, ভাহা ক্রমে প্রকাশ হইবে।

এতাবং কাল শভুজী কেবল ইলিয় সেবাতে নিবৃত্ত-ছিলেন। অনস্তর এক সময়ে তিনি কয়েক জন বন্ধু সহ-বালে কণকানে এক উলাসালয়ে উলাস করিতে ছিলেন, ইতিমধ্যে এক মোগল সেনাপতি কতকথলি সেনা সম-ভিনাহাত্ত্ব উহার গৃহ বৈষ্টন করিলেন। শস্কুলী দদাপানে উন্নত্ত ছিলেন, পলাইতে পারিলেন না কল্প উহিত্তিক

हुका कहियात करों। कहिटलम, किन्छ शहिदलम मांः। মোগল সেমাপতি উভয়কে বন্দীবেশে সমাটের সমীপে প্রেরণ করিলেন। আওরংজেব শান্তীকে মুসলমান ধর্ম গ্ৰহণ ক্ষিতে বলিলেন। শমুজা ভাগা খনলম্ব না করিয়া কটু উত্তর করিলেন। আওরংজের সেই জোপে ভাঁহার প্রাণদণ্ড করিলেন। মন্ত্রীও ঐ দণ্ডের ভাগী इडेटलन ।

 শস্তুজীর মৃত্যুর পর মহারাফ্রীয় প্রধানেরঃ সাহ নামে তাঁহার এক শিশু সম্ভানকে সিংহাসনে বসাইছা তাঁহার পিতৃবা রাজানামকে উাহার কর্ম্মকর্তা করিলেন। কিয়ৎ-কাল পরে মোগল-মেনাগণ রাইগড় আক্রমণ করিয়া বিশাস-ঘাতকতা পূর্বকে ভাহা অধিকার করিলা লইল, ভাহাতে শিশুরাক ভাষাদের হত্তে গড়িলেন। মহারাই,ীয় প্রধানেরা ভাঁহাকে উদ্ধার করিছে না পারিয়া এই ধার্য্য করিলেন রাজারাম কর্ণাট অস্তঃপাতি ফিঞ্ছির ছুর্গে গমন করিবেন। এই পরামশালুসারে রাজারাম ছল্বেশে बै वृत्र्य भगन कतिलान, अवर उपाकात ताजा उपाधि এছণ পূর্বক হাজ্য করিতে লাগিলেন। আওরংজের এই मध्याम भाहेग्रा जनकिकत नात्म এक मिनाभिक्तिक बह-हेमना ममस्त्रियाद्याद्य वे पूर्व आक्रमनार्थ त्थादन कदितनर । জনক্ষিকর তথায় উপস্থিত হইয়া দেখিলেন, তাঁহার সজে व देनना आमिश्राद्ध छल्नाता वे हर्न बग्न कता कठिन, जाउ-वा किनि कारको देनमा हाहिया भाठाइटनन । वार বৈন্যাপ্রমনের অংশকায় তিনি তানজোর ও অন্যান্য দেশে আগন বৈন্য পাঠাইলেন। তাহারা তথায় বল-পুর্বক এজাগণের ধন হরণ করিতে লাগিল।

নোগল সেনাগণের সাধ্য ছইল না এই সকল অত্যাচীর এক্লবারে নিবারণ করিয়া উঠে। আকবরের সময়ে লৈনাগণের সুন্দররূপ শিকা হইত, তাহারা উভম-রূপে যুক্ত করিতে পারিত। সেনাধ্যক সকলও অতি দক্ষ ভাষাহলী ছিলেন। এক্ষণকার সেনাপতিদিশের সেপ্রকার সাহল বা পরাক্রম ছিল না, কেবল তাহাদের বার্গিরি অধিক হইসাহিল। আর এক দোব এই, যোগল সেনার। বড় বড় ঘোড়াতে আরোহণ করিত, এই নকল ঘোড়ার ভারি ভারি দাল ছিল। সেনাগণের পোখাকও অত্যস্ত ভারি ছিল, তাহাদের কোন্ডা সকল পলাত বা পলাতের আলে আছানিত, ও হত্তে ও পুঠে সনেক প্রকার অস্ত্র বাকিত। তদ্তির জিন পোষের ভিতরে অনেক দ্রবাদি রাখিত। অস্থ সকল আপনাদের ভারে ভারী, তাহাতে এই সকল ভার পুঠে করিয়া অধিক দূর গদন করিতে পারিত লা। বিশেষ, ভাষু প্রস্তুতি বেসকল নটবহর সক্রে শাইত ভাহা এক স্থান হইতে ভার এক স্থানে লইয়া ঘাইতে হইলে মহা বিপদ হইত। ইহা ভিন্ন সেনাগতি ও অনেক নেনাগণের পরিবারানি সঙ্গে থাকিত, এবং ভাষুব সঙ্গে দোকানী পর্শারি ও বণিক অনেক গমন করিত।

মহারাষ্ট্রীয়দিশের এই সকল কিছুই ছিল না, ভাগাদের সঙ্গে গুলু এক একটা খোড়া পাকিত। এই সকল ঘোড়া অভি সুশিক্ষিত, মাঠে ছাড়িয়া দিলে আপনি চরিয়া থাইত, এবং ভাহাদের পুঠে আরোহণ করিলে ভাহারা পরনাত্যে দৌড়িত। সেনাগণের পোশাক অভি হালকা ছিল, অত্যের মধ্যে একখান ভলওয়ার ও একটা বন্দুক বা নয় দশ হক্ত লয়া এক বর্ষা ধাকিত। খোড়ার পুঠে বভত্ত আনম দিতে হইত না, পরিখেয় কয়েক খান বন্ধ বিছাইয়া ভাহার উপর এক খান করল ভোকরিয়া দিলে দিবা আনন হইত, ভাহাতে উড়ন পাড়ন সকল কর্মা চলিত। আহারের জন্য বন্ধ চিতা ছিল না, অন্য এব্য না পাইলে

देश होता हर्सन करिया करिय बाना निस्तान करिए।
निजात हेन्द्रा हरेटन कृषिभया करिया निजा गाँठेठ, धक हेटल अब तक्कू धता, खना रख मृखिकाट विश्व वर्षाटक महन्त्र बाकिए, श्रासामन गटक धटकबादि जम्म निया अब मृद्ध देनिए। जिनाक विश्व हरेठ मा।

ক হানে দণ্ডায়মান হইয়া যুদ্ধ না করিয়া পলায়ন করিত।
মোগল সেনা প্রান্ত হইয়া ফিরিলে তাহাদের পশ্চাঞ্জাভায়াদিগকে সংহার লগুভও ও নানাপ্রকারে
বিরক্ত করিত। যদি দেখিত শক্তসেনা কোন দ্রবাদি
লইয়া বাইতেছে তাহা হইলে রক্ষকদিগকে বপ করিয়া
ভাহা লুঠন করিত। বদি জানিতে পারিত ভাহাদের সলে।
ক্রমানি আছে, তাহা চইলে আরো বড়বান হইয়া অর্থান্ড রক্ষকদিগকে একেবারে বেইন করিত, কোন নিগে পলায়ন করিতে দিত না—পরে ভাহাদের অর্থানি প্রতি ভারার ক্রমাদি লইয়া ভাহাদিগকৈ হাড়িয়া দিত।

महाशास्त्रीराता मध्यम हात्या अञ्चाहात आतस कतित्य आध्रुवेर एक्ट स्वास्कित नामक जनाशिक्टिक आक्रा मिर्टिन, दिश्चित के शक्रम सञ्जाहात मिर्वाहर्ग करतम । स्वास्कित स्वास्थ्य हात्या स्वास्त्रम कित्या, भक्षामी स्वासामी छावाह देशत्याह शंकाब स्वास्त्रमाहिया हिन्द्रमान क्षेत्रस छाटात्मत बास्त्राहार स्वास्त्र क्षा क्षा क्षा हित्यम, स्वास्ट स्वाह्मत ।

करे मकत दश्य निवांतन रामनाम आखद्रश्रकक विश्व আক্রমণ জনা ক্রবকস নালে তাঁহার আর এক পুরক্ত सुमक्किन कतिया मिक्टम दश्यतम कतिटलन । आक्का मिटलन क्रमक्षिकत जोशांत महिक बैका जादर कर्मा कदत्र । बहे আজাতে जनकिक्दब्र किभिन्द मनः भीषा इहेन, कमना রাজপুতের অধীন হইয়া কর্মা করেন ইহা তাঁহার ইছা নহে, অতএব মহারাষ্ট্রীয় রাজার সহিত মিলের চেষ্টায় ধারি-লেন। রাজপুতেরও মনে মনে ঘুণা হইল, ভাঁহাকে জল-ফিকরের পরামশানুসারে কর্ম করিতে হইবে, ভিনি আপনি কিছু করিতে পারিবেন না । অতএব দানাজী विश्मिक महत्व अभारताही समा ममिखवाहारत कर्नाटर উপস্থিত হইলে, তিনি তাঁহার সহিত সন্ধির কথা বার্ডা পার্ম্ভ করিজেন। এই প্রকার উভয়ের ননোবাদ উপস্থিত হইয়া ভাঁছারা বন্দোয়ানে ঘাইয়া রাজাকে পত্র লিখি-লেন, নগর বেউন করিয়া থাকিলেন না৷ আওরংজেব বিস্তারিত অবগত হইয়া জলফিকরকে সাজা দিলেন জাঁহাকে জিঞ্জির তুর্গ জয় করিতে হইবে, তাহা না হইলে: डीशांत क्या वाक्टिय ना। अहे बाक्टा लाहेश क्रवक्रिक ाइ अक्ट महनादयात्री रहेशा पूर्व करा कांद्ररजन, किन्छ अ अभिन्न वाषात्रामद्य पश्चित्व भावित्मन मा, जिनि শেতারাতে পালায়ন করিবেলন।

अन्दर हानांकी ७ भंडाकीत शतत्त्रत विवाद आहड बदेन । बहे विवादन ब्राजातांम भंडाकीत शक्र श्टेरनन, क्लि শন্তাকীর সেনাগণ তাঁহার প্রতি বিরক্ত হইয়া জাঁহাকে বিনাশ করিল। তথন রাজারাম প্রয়ং গৈননাথাক হইয়া যুদ্ধার্থ গমন করিলেন, তাঁহার গলে অনেক সেনা চলিল, এত সহারাতীয় সেনা ইহার পূর্বে কথন একত গমন করে নাই। এই সকল সেনা লইয়া রাজারাম দক্ষিণ রাজ্যের উত্তরাংশ লুঠ করিয়া ঐ দেশ একেবারে উচ্ছিম করিলেন। আওরংকেব এপর্যান্ত ব্রহ্মপুরীতে ছিলেন। আপনি যুদ্ধ করেন নাই, সেনাপতিদিগকে পাঠাইতেন, তাহারা বাইয়া যুদ্ধ করিতেন। রাজারাম সংগ্রাম-সক্ষান্ত বাহির হলন, তিনি সমুদান্ত গৈনা ছই ভাগে বিভক্ত করিয়া এই প্রতিজ্ঞা করিলেন আপনি এক ভাগ লইয়া মহারাতীয় হুর্গ সকল আক্রমণ করিবেন, জলফিকর অপর সেনা লইয়া প্রস্ত্রেত থাকিবেন। মহারাতীয়েরা মখন যেখানে আসিবে তিনি কেই স্থানে ভাহাদের সঙ্গে যুদ্ধ করিবেন।

এই প্রতিজ্ঞা করণানম্ভর আওরংজের ক্রমাণুরী হইতে
বামা করিয়া সেতারা আক্রমণ করিলেন। আক্রমণের করেক
বৃ ১৭০০ সাম পর সেতারা আয়ন্ত হইল। ইতি
কথ্যে রাজারাম পরলোক গমন করিলেন। কিন্তু ইহাতে
সমরের বিরতি হইল না। তারাবাই নামী তাঁহার ভার্যা
বিরতি হাল না। তারাবাই নামী তাঁহার ভার্যা
বিরতি লাগিলেন। আওরংক্রের একে একে অনেক
ব্রবিজ্ঞার বিরতির কর্মান্ত্রী হইমা রাজ্যু
করিতে লাগিলেন। আওরংক্রের একে একে অনেক
ব্রবিজ্ঞার বির্বিজ্ঞার পাঁচ বংগর সংগ্রাম ভলিন। জল-

किक्य दिनकम दनना वहेगा नियाहिटनम छोटोता कर्क यूटक महिला, कठक फटमर आंद्रुद श्हेल, मुखदार यूकका সেনা অতি অংশ রহিল। মহারাট্রীয় সেনাগণ **রক্ত**া वीटकात्र नाग्र मिन मिन इन्ति श्हेटल गांगिल, अवर मिक्क রাজ্য একেবারে ছার-থার করিয়া ফেলিল, কাহার কিছু वाचिन ना। ভावर वाका श्राप्त मनुषा हीन रहेत। वर्षे কর্মের পর তাহার। মালব ও গুজরাট বাইয়া গেই একার: नुष्ठे आह्र कहिन, धर आश्रमात्मद्र प्रशं नकन करम करम উদ্ধার করিল। পরে সম্রাটকে নানা প্রকারে বিঃস্ত ক্রিতে লাগিল। ভাহারা নিয়ত ভাঁহার ছাউনীর নিক্ট-বর্তী থাকিত। রাজ-মেনাগণ ছাউনীর বাচির হইতে পারিত না, হইলেই ভাহাদিগকে কাট্যা লওভঞ করিত, এবং ভাহাদিগকে আহারীয় জ্বাদি আহরণ করিভে দিত না। রাজ-দেনাগণ তাহাদিগের বহিত যুজার্থ গমন করিলে ভাহারা যুদ্ধ না করিয়া পলায়ন করিত, এবং ফে स्नान निम्ना याहेल शंक्षान नक वा नुठे कदिया अकाकांत ্করিত। রাজ্যের রাজ্যত ক্রে ক্ষ স্টুতে লাগিল; ভাছাতে আওরংজেব চিক্ সময়ে ইসনাগণের বেতন मार्न असम हहेत्वन, देगरनाता विजन ना शाहेशा मक्षा विष्यिष्ठ आहु कहिल। देश जिम तकः शुरु দিলের সহিত যুদ্ধ চলিতে ছিল, এবং জাঠ নামে আপ্রার नाबित्सा आह अर्क कांचि हिन, ভाशांपित्तत्र विकृत्क जन वात्र का वात्रमान इहेन। এই नकन कांत्रम आउत्र-

শেষ মহাবিয়ত হইয়া মহারাকীয়দিলের সহিত সন্ধার
প্রার্থনা করিলেন। কিন্ত ভালারা ভাঁহার ঘরের সকল সন্ধান
রাক্তি, ভাহাতে ভারি পদ করিয়া বিদল। আওরংজের
ভাহাতে সম্মত হইডে না পারিয়া, সৈন্যগণকে লইয়া
আহমদ নগরে গমন করিলেন। পমনকালেও মহারাকীক্রো ভাঁহাকে ব্যতিবাস্ত করিতে লাগিল। আওরংজের
কোন প্রকারে ভাহা নিবারণ করিতে পারিলেন না। এই
সকল চিন্তা ও শারীরিক রোগে তিনি জনে অভ্যন্ত প্রবল

ইইতে লাগিলেন। পরে ৫০
বংসর রাজত্বের পর,৮৯বংসর
বয়নে তিনি পরলোক গমন করিলেন।

আওরংজেব বেমন বুজিমান হউন, কিন্তু এ কথা অবশ্য দ্বীকার করিতে হইবে তাঁহার রাজত্ব কালে রাজ্যের পরাক্রনের হ্রাস দশা আরম্ভ হয়। তদবধি ঐ পরাক্রম করে আরে জিয়মাণ হইয়া আসিয়াছে। বাহা হইবার ভাহা হইমাছে, একথা মথার্থ, কিন্তু হিন্দুধর্ণের প্রতি লাওরংজেবের অত্যম্ভ বেষ চিল, এবং হিন্দুদিগকে তিনি, নিভাম্ভ ক্রেশ নিতেল, ইহাই অমললের হেতু। বিশেষ ঐ সময়ে মহারাজীয় জাতীয়েরা প্রবল হইয়া উঠিতে ছিল, ইহা দেখিয়া ভাহানিগকে নিভাম্ভ হেয়জান ও হিন্দুদ্ধর্ণের কের করা উচিত ছিল না। ভাহা করাতে হিন্দুদ্ধরণের কিছুমাল প্রত্যুক্তির রহিল না, ভাহারা সকলেই ভাহার বিশক্ষ হইয়া উঠিল। পোলকদা জী বিজয়

পুরের রাজ্য জয় করাতে কোন ফলোদয় হইল না।
পরস্ত তাঁহার অন্তঃকরণ এনন অশুদ্ধ ও সন্দিধ্ধ ছিল মে
তাঁহার কথায় কোম ব্যক্তি বিশ্বাস করিতে পারিত না।
তাঁহার পুরেরাও তাঁহার বাজো বিশাস করিতেন না, ইহা
অমলনের আর এক কারণ। বিশেষ, ঐ সময়ে মহারাফীয়েরা অভান্ত প্রবল হইয়াছিল, এবং কারুল ও পারসকানে বে সকল ব্যাপার হইতেছিল ভাহাতে রাজায়লা
করা বড় সহজ কর্ম ছিল না।

যাহা হউক। এই দেশের মুসলমানেরা আওরংকেবের অভান্ত প্রশংসা করিয়া থাকেন, বাবর বা আকবরের তাদুশ প্রশংসা করেন না। তাঁহারা বলেন আওরংকেবে অভান্ত সাহসী ক্ষমভাবান ও জ্ঞানবান ছিলেন। কিন্তু তাঁহার ধূর্তপনাই তাঁহার জ্ঞান। এই ধূর্তপনাই তাঁহার অথপের মূল। তাঁহার প্রধান দোষ এই তিনি জ্মমদাতা পিভাকে যাবজ্ঞীবন কারারুদ্ধ করিয়া রাখিয়া ছিলেন, এই কর্মের জনা একবারও খেদ করেন নাই। তাঁহার মনে মনে সর্বাদা এই আশস্কা ছিল তিনি পিভার বে হর্দশা করিয়াছিলেন তাঁহার পুত্রো পাছে তাঁহার কেই প্রশান করেন এই ভয়ে তিনি নিশ্চিত্ত থাকিছে পারেক রাই। তিনি অনেক হরহ কর্ম্ম করিয়াছিলেন, কিন্তু আশন কন্তানদিকের উপকারার্থ ভাহা করিয়াছিলেন এই বিন্যা করিয়াছিলেন এই

ठञ्किः भ ज्याम ।

বাহাছুর সাহ।

আওরংকের আজা করিয়াছিলেন ভাঁহার মৃত্যুর পর ভাহার তিন পুর ভুলা। দে রাজা বিভাগ করিয়া লইম वैकजन मिन्नी ७ छाहाई छेउत शक्तिम आरमरमात वाला श्रदेश फिलीनगरत द्रास्थानी कतिरुक्त, स्रात धकसन আত্রা ও তাহার দলিশ পুরু প্রদেশের রাজা হইয়। जाआंट ताजधानी कतिरवन, कुछीय पूज विकाश्त छ লোলকন্দার রাজা হইবেন। কিন্তু তাঁহার বিতীয় পুক আৰীম দে আৰু অৰহেলন করিয়া আপনি রাজপদ अहम क्तित्वम । त्याकारम उरकारक कानूरक हित्वम, किनि ब्रोबाइ स्वार्ध पूज, बाउवन, बाए। बाबा श्रहतन, जिनिक जालनात ताकाजित्व कत्राहेत्वन । प्रजति উভয় ভাতার বিবাদ উপস্থিত হইল, তাহাতে আমার क्रिक्ट अकड़ा त्यांत्र छत्र मध्यांम इहेग । यह युटक कालीम के कीशात सह प्रमाहक एहरनम, अवर जीशात जुकीय प्रमा जननाटम क्ली इहेटलन्। त्माकारम उनकती प्रदेश वाराष्ट्रक नार नाम थातन श्रवंक निर्दाननी काटतारन **स्**द्रिटमन । "

আওরংজেবের তৃতীয় পুত্র কমবকস পিতার আজান্ধ-সারে আপনাকে রাজ্যের তৃতীয়াংশের অধিকারী বিবে-চনা করিয়া মধ্যমের প্রভূত অধীকার পূর্বক দক্ষিণ রা-জ্যের রাজত্ব প্রহণ করিয়াছিলেন। বাহাছর সাহ রাজ্যে-শ্বর হইয়া তবিক্ষত্বে গমন করেন, তাহাতে হায়দ্রাবাদের নিকটে উভয়ে মহাযুদ্ধ হয়। ঐ যুদ্ধে কমবকস পরাজিত ও হত হন।

• তথন পর্যান্ত মহান্ট্রীয়দিণের উপদ্রের বিরতি হয়
নাই। তাহারা প্রবলভাবে চলিতভিলে। অভএব ভাহাদের
মধ্যে আপ্ত কলহ উপত্তি হয়, এই অভিপ্রায়ে বাহাছর
তাহাদিগের প্রক্রত রাজা সাহুকে মুক্তি দান পূর্বক বলিলেন যদি তুমি আপনার রাজা উদ্ধার করিতে পার ভাহা
হইলে আমি ভোমার সহিত সন্ধি বন্ধন করিব। দাহ
কারা মুক্ত হইলা রাজ্যোদ্ধারের চেকা করিছে লাগিলেন,
মুত্রাৎ মহারান্ট্রীয়দের মধ্যে ছুই দল হইল। এই ছুই
দলের মধ্যে সাহুর দল প্রবল হওয়াতে দাওদ খাঁ পালি
নামে জলফিকরের পক্ষ যে এক প্রধান দক্ষিণের কর্মান্ধাক্ষ হইয়াছিলেন তিনি সাহুর কহিত সন্ধি করিলেন,
ভাহাতে এই নির্দ্ধারিত হইল সাহু চৌধ পাইবেন, মহানান্ট্রীয়েরা ভাহা লইতে পারিবে না।

এই সময়ে ব্লকঃপ্তদিপের সহিত যুদ্ধ চলিতেছিল, পরে পঞ্চাববারীবিধের সহিত মোগলদিনের সংগ্রাম উপস্থিত হইল। প্রকালে ছই যুদ্ধ নির্মাহ করা কঠিন বিবেচনা করিয়া বাছাছির সাহ রজঃপুতদিশের সহিত সন্ধি করি-লেম, তাহাতে তাহার। যুক্ষে কান্ত দিল। কিন্তু শিথ-দিগের সহিত যুক্ষ চলিতে লাগিল। এছলে শিথ জাতি-দের বিবরণ কিঞ্ছিৎ লেখা বাইতেতে, তৎপরে তাহাদের যুক্ষের কথা বর্ণনা করা বাইবে।

नित्यता नवा काछि। हेरताको शक नेठाकीत त्यम छात्म नानक नात्म এक वाङ् हिल्लन। शक्कांव आत्मत्य विशासा नगीत छीत्रवर्ड ताग्न्यत आत्म कालू विभी नात्म धक किछ्म हिल्लन, नानक छीहात प्रका छिनि अथ्यत्म वाभिक्षा वााशाद्म निगुक हहेगा लगा विक्य कित्र्यक्त, शद्म किछ्मिर वर्णाद्मक हहेला विषय काँग श्रित्छाण क्रिया धर्म हिन्छाय छ शर्त्माश्रामत्ये मनः मरसाम् क्रिया धर्म हिन्छाय छ शर्त्माश्रामत्ये मनः मरसाम् क्रिया छरकात्म शक्कांव अत्मर्म ताका छ तात्र छेशाधि-विभिन्न व मकल छ्यामी हिल्लन छम्मत्या এक वाक्कि नामत्कत्म महाग्रहा क्रिक्टन, छाहादछ छिनि निर्कित्म बीग्र शर्म अहाद क्रिक्ट मक्कम हहेगाहित्यन।

শিশ এমকর্তারা সকলেই কছেন, বালাকালাবধিই নান-কের ধর্মে মতি ও কথরারাগনার প্রকৃতি ছিল, এবং তিনি ক্রমেক প্রকার কঠোর তপ্রকৃত্য করিয়া চরিতার্থ হইয়া-ছিলেন। ইহাতে বৈরাকা ভাষ উপক্তি হওয়াতে ক্রিনি পিডার জ্ঞান্ত অপ্রিক্ত ইন্যাতি ক্রিনি বিভাগ কিবিরাছেন তাহার পিতা টাহাকে ধর্ম ক্রিনি বিভাগ বিষয় ব্যাপারে রভ করিবার নিমিত জ্পনেক যন্ত্ৰ করিয়াছিলেন, কিন্তু কোন প্রকারে উহিছিক ধর্মপথ হইতে বিরভ করিছে পারেন নাই।

নানক সমুদায় ভারতবর্ষ ভ্রমণ করিয়া মরা মদিনা পর্যান্ত গগন করিয়াছিলেন, এবং নানা দেশে নানা স্থানে একী পক্তি প্রকাশ পূর্বক অনেক প্রকার অলৌকিক ক্রিয়া সম্পন্ন করিয়াছিলেন। পরে পঞ্জাবদেশে অবজিতি করিয়া বদেশীয় লোকদিগকৈ ধর্মোপদেশ প্রদান করেন, এবং অনেককে আপান মতে নিবিষ্ট করিয়া শিষা করেন। শিষা প্রকরে অপভ্রংশ শিখা তদ্দুলারে তাঁহার শিবোরা শিষা শব্দের অপভ্রংশ শিখা তদ্দুলারে তাঁহার শিবোরা

নানকের মতে প্রদেশর একনাত, অভি তীয়, নির্নিত্ত, নির্বিকার, নির্বাসন, নিজা, সভা, শ্বাস, প্রাৎপর ও বাকা মনের অংগাছর। এবং ভিনি প্রদেশ্রকে অনাদি আদিই সভা বলিয়া উল্লেখ ক্রিয়াছেন ।

िति भाजानुसादि कीर बाद त्यानि क्रम् ७ एउ।-एउ क्यानुद्रम जेखभाषन जेम अहम अनीकात क्रिएडन। अर्थ जेना विकृ मर्ह्यदापित अस्ति ७ त्मरद वीकाद

[•] উদ্ধার ক্রিটা পাঠ করিলে ব্যেষ ক্য তিনি নিজু নৈদানিক ক স্থাননাম ক্রি এই উড়ারের মধ্য ক্রিটা নাম নাম এবেও করিলাভিয়ের । শিথ-এফ্রারের। ক্ষেন তিনি এক সুসল্যান ক্রিয়ের বিরুট সুন্ত্রান শাখা শিক্ষা করিয়াছিলেন।

করিতেন, কিন্তু প্রনেশ্ব ডিগ্ল অনা বস্তুর আরাগন। করিতে বারম্বার নিষেপ করিয়া গিয়াছেন।

উহিত্ব মতে হিচ্ছু ও মুসলমানে কোন ভেদাতেদ ছিল না। মোলা ও পতিতে, দরবেশ ও সম্মানী সকলেরই পরমেশরের উপাসনায় অধিকার এবং সকলেই তাঁহার অসাদ ভাজন। আত্রহ উভয় জাতিকে এক পর্না নিবিষ্ট করেন ইহাই মানস করিয়া তিনি এক সূত্রন গর্মোর অসুক্র কানে করেন। তাহাতে জাতির বিচ্ছুমাত্র ভেনাতেন পাঁকে না, এবং হিন্দু মুসলমান উভয় জাতিতে পরজ্পার ঐক; করিবার নিমিত্ত গোমাংস এবং বরাহ্মাংস ভক্ষণ নিষ্টেপ করিয়াছিলেন। আপনিও মাংস-চক্ষণ ও জীবহিংসা গরিত্যাগ করিয়াছিলেন।

নানকের মতে সান দান ও পর্মেশ্রের নামোপাসন, এই তিনটী প্রধান কর্ম। ধদিও তিনি প্রকৃত প্রস্তানে জাতিজেদের প্রথা উৎসেদ করিতে পারেন নাই, কিন্ত উক্ত প্রথার বিস্তর নিক্ষা করিয়া গিয়াছেন।

এই সকল বিষয়ে হিল্ফুদিগের কিছু মাত্র আপত্তি ছিল না, এবং হিল্ফু ও মুসলমান অনেকৈ ভাঁহার শিষ্য হইয়া-ছিল। কিন্তু ধর্মোক্সজ মুসলমানেয়া ভাঁহার মত আহ

[े] जिनि निर्मितारहन करमात जिलामें कित्र को, गरंतत ममीरण नज वर्षे मा, अजिम जुना, जीवियाजा, क्षश्चक-मरन विकरन-नाम अ ममुनायर बाल । अ मकल क्षम्कीम कृतिरम, कृति गृकीज इदैरज भातिरन मा । येनि निक्ष जिलाह जुरस मरेजात केशाममा स्त १

করে নাই, তাহারা তাঁহার প্রতি নানা প্রকার স্বত্যাচার করিছ। নানক তাহাদের অনেক অত্যাচার সহ্ করিয়াছিলেন, অবনেঁয়ে তাহাদের কোঁপানলে পড়িয়া ৭০বৎসর বয়নে, ১৯০৬ খুটান্দে, মুলতাদা অস্ত্রপাতি কীর্তিপুরে প্রাণত্যাগ করেন। তথায় ইরাবতী নদীর তীরে তাঁহার শরীর সমাহিত হয়।

নানকের মতারলয়ী লোকেরা প্রের অতি শান্তমভার 庵ল, কাহার হিংসা করিত ন।। মুদলমানের। নান্ককে বিনাশ করিলে তাহার৷ হয়গোরিন্দ নামে নানকের পুত্রকে व्यानिमाद व्यथाक कविन । किन्नु उदकारन कुमनमान् রাজার রাজ্য, রাজা ভাহাদের বিপক্ষ হট্লেন। ভাষ্ট্র। রাক্ষণৈনাগণের সহিত যুদ্ধ করিতে অক্ষম হইল। ঐ स्माधन ভाशानिशदक लादशां इहेट प्रती छुळ कितल, স্থাতরাৎ তাহারা পঞ্চার পরিত্যাগ করিয়া উত্তর অক্লের পর্বতে প্রায়ন করিল। সেখানেও মুসলমান্দিগের শহিত তাহাদিগের শত্রুতা চলিতে লাগিল। পরে গুরু-र्काविन्त नाटम श्रुरणावित्न्त लोज, छाश्मिशस्क अकवे করিয়া ভাহাদিপের শিখ নাম দিলেন । ভাছাদিলের মধ্যে জাতি বাধর্মভেদ রহিল না, কি মুসল-मान कि हिन्छु मुक्टल है अहे मशकूक इहेट वाणिन। धनर ভাহাদিগকে দেখিলেই শিथ বোধ হয় এজনা ভাহার। नकरनरे नीवायत श्रातिधान कतिन ७ माछि गोल ७ मख-কের কেশ রাখিল। আবো এই বিধি হইল এই দলে ছুক হইয়া সকলে যুদ্ধ ও সর্মদা অন্ত্র ধারণ কারিবে। আর পূর্বে যে সকল ধর্ম কর্ম ও ক্রিয়াকলাপ ছিল তাহা রহিছে হইয়া স্থতন ক্রিয়ার বিধি হইল। ইহাতে হিন্তুপর্ম এক-বাবে উঠিয়া গেল না, ত্রাক্ষণদিপের পূর্বক্রপ স্থ্যাদা রহিল, গোমাৎস ভক্ষণ একেবারে নিষিশ্ব হইল।

ु किन्छ এই मकन कित्रशां उत्थम निश्विमिटशत धारम वन হয় নাই যে রাজার সহিত যুদ্ধ করে। রাজাসনের ভাহাদিগকে মুষিকের ন্যায় ভাড়াইয়া বেড়াইড, শিশ रम्**थित्महे वर्थ क**तिल, श्रावाम ब्रह्म कोहारक छाड़िया मिल मा। कथिए जाइ वह मक्क मोहाद्याह निमिष्ठ छह-शीरिक धारणाद यूगलमान ब्रोक्नात्मत **होक्**ति शर्यास श्रीकात कृतियाहित्वम, छथाशि यूनलमान तासाता छाहा-দিগের প্রতি অভাচার করিতে বিরত হন নাই। এই সৰল অত্যাচার জন্য তাহারা যাধীন ছইবার ৰাঞ্চা করিল। धक्रशातिक बद्ध एकक्षेत्री शुक्षम ছिलान ना, किन्नु वन्द्र नारम ভাঁহার পর যিনি শিখাধাক হইয়া ক্লিনেন ভিনি অভান্ত এছ গ্রন্থ বিভাব ছিলেন, ভাঁহার শ্বরীরে দরা মাত্র ছিল না তাঁহার সময়ে শিখেরা পর্মত হইতে অবরোহণ করিয়া পঞ্চাবের পূর্ব অংশের ভাবদেশ একেবারে ছিল ভিন্ন করে। ं कोशांत्मतः त्मोद्रांत्या अ अत्मणं अक्वाद्यः त्माकणुना क्रेया-हिल । छाराजा मनुरा ଓ जीवलला किहूरे द्वार में नारे। छम-सक्कत्र ओहांत्रा ब्रमूनाकीटत माहात्रास्थित वर्गास व्यानिया-্তিলা, এবং ভাষাধ ভাষারা শতক্ষ পার পর্মতে বার করিয়া खबा हरेट करम मिल्लीत निक्छ भगाख नुरु कतिहर किना 🕏 ছন্ন। মোগলদিবের সহিত ভাহাদের যুদ্ধের এই স্থ্য।

াশিখেরা দিল্লীলক্ষ্যে গমন করিলে, বাহাছর মাহ ভাহা-দিক্ষের দমনার্থ চতুরক্ষ দেনা প্রেরণ করিলেন। এ দেনা-भरभत भाषाम भिरम्यता देशन शिश्यतः शनायन कतिन। ভবায় এক ভূর্ব ছিল, বন্ধু তাহা আত্রয় করিয়া তমধ্যে পাৰিলেন। ভাহাকে ধরিতে পারিলে যুক্ত শেষ হইবে 峰 भटन कतिया वाशासूत सूर्त त्वस्य कतिराजन, किन्छ वन्त्र এমন ভাবে পলায়ন করিলেন, বাহাছর ভাষাক্ষানিভেও भातित्वम ना । अन्नस्ट किन नात्राद लक्षाभगन ি ১৯২৪ করিয়া কিছুকাল পরে মানবলীলা নছ-পু ১৭১২ কং ২৮১৪ রণ করিলেন। বাহাছর সাহ অপিক ৰয়দে রাজ্য প্রাপ্ত হন, এজনা পাঁচ বংসরের অধিক রাজহ ক্রিতে পারেন নাই।

ं आश्चित्र मार्

্ৰাছাছর সাহের মৃত্যুর পর সিংহাসন অপিকার জনা ভাঁছার ছই পুতে মহা বিবাদ উপস্থিত হইল। জ্যেষ্ঠ काहानात्र माह कमछावान् श्रुक्ष हिलान ना, धलाना देमना ও मडामबर्ग छींदादक हाका ना पिया उम्लूब प्राकीमाका बाषा कतिवातं कण्णन् कतित्वन । किन्छ जाशामत ताका হইলে উাছাত্তে সাকী গোপাল করিয়া আপনি কর্তৃত্ব করি- বেন এই অভিলাবে জলকিবর তাঁহার পক্ষ হইয়। আজীদের সহিত সংগ্রাম করিলেন। এই সংগ্রামে আজীর্ম পরাজিত ও হত হইলেন। তাহাতে জাহান্দর সিংহাসনারোহণ করিলেন। অলফিকর তাঁহার মন্ত্রী কইয়া
একাপিপতা করিতে লাগিলেন। জাহান্দরের এক উপন্
পত্নী ছিল, সে সামানা নর্তনী। জাহান্দরের এক উপন্
তাহার আলীয়গণকে রাজ্যের প্রধান কর্মা দিতে লাগিলেন। ইহাতে তিনি সকলের অভান্ত অপ্রিয় হইলেন।
মন্ত্রীও তাঁহাকে ভুচ্ছ তাচ্ছীলা করিতে লাগিলেন।

সে হাহাহাউক, জাহান্দর রাজ্যপ্রাপ্ত হইয়া নিক্ষণীক রাজ্য ভোগ করিবার মান্দে, রাজ্যপরিবারের হাহারা তাঁহার রাজ্যত্ব বিশ্বদান বা রাজ্য আকাজ্যা করিতে পাবর এক একে ভাহাদিগকে সংহার করিবেন। কিন্তু হতোহান্দামে আজীমের এক পুত্র বজ্ঞানাল ছিলেন, তাঁহাকে বিনাশ করিতে না পাবিষা, তিহিন্দে সৈনা প্রেরণ করিবলন। ফরেরার সাহ্য পিড়বোর জাতাচার দেখিয়া আবস্থলা ও হুসন্ম আলী নামে সৈয়দ গোচীর ভুই জাতার শরণ লইলেন। ইহারা জভ্যন্ত পরাক্ষমশালী, একজন এলাহাবাদের আর এক জন বেহারের স্ববাদার ছিলেন। ইহাদের সাহায্যে ফরোধসাহ রাজ্যপ্রেরভ সৈনাগণকে দুরীভুত করিয়া আগ্রা হালা করিবেন। আহাত্বাক এই সন্ধান পাইয়া বিশ্বত সিনা লইয়া ভাহার করিতেন। আহাত্বাক প্রান্ধ পাইয়া বিশ্বত সিনা লইয়া ভাহার করিতেন।

সেনাপতি হটয়া মুজে চলিলেন। সংগ্রাম অভি খোর-उत्र हरेत । अन्दर्भाष कात्वाधनात अही इहेरनन, उधन জাহান্দর ভরাবেলে বিদ্ধীতে প্রভায়ন করিলেন। প্রশা-गर कारल कलिकदत्त्व शिखा आप्तम की डीएएक रफी করিয়া রাখিলেন। তদমন্তর করে।থসাই আগ্রাতে উপ-তিত হইলে, তিনি ও তৎপুত্র জলফিকর মনে মনে বড় ভিং ১১২৪ বাশা করিয়া স্কালান্ত্রক তাঁহার হত্তে বু ১৭১০ সম্পূর্ণ করিলেন। কিন্দু সংবে(প্সাহ ভারাদের মনোবাঞ্জা প্রথ না ক্ষিয়া জাহন্দের ও জন্ম-किन्द उक्तराहरू ज्यान महस्त्र प्राप्त हिर्हाल । ज्यानम शास्त्र वैधित्सन ।

कत्वाथमाङ् ।

भिः २०२० विद्यालमार सिक्ष्ममनाऽदाद्य कवित्रा ज्ञात-य २०२० २२ ४७२० विद्यालमा सिक्समन व्यामी-রল মলহ, ভার্থাৎ প্রাধান শেলাপতি করিলেন। ইত্ৰত তা মনে কৰিলেন ক্রাজা রাজ্যতোগে নত বাকিবেন, সামত তুর্নাকর্তা চ্নেরাজকর্ত্ব করিব। কিন্ত করোৰদাহ উহিছিন্ত ক্ষতিপ্রায় বুঝিতে পারিয়া ব্যুদাকে মিবুজুনলা উপাধি দিয়া তাহাদি-श्रित हुई खाँ कि विनाम कतिवात खाँ छक कतित्मन, ক্রাভাবে চুই স্থানে রাখিবার

ৰাক্লা করিয়া, হুখন আলীকে মাডওয়ারের রাজা অব্বিড সিংহের সহিত যুদ্ধার্থ পাঠাইলেন, এবং অঞ্জিত সিং-इटक शालन ভाবে बनिया भाषाई दान, युक माराहरू শীও শেষ না হয় ভাহা করিবে। কিন্তু স্মাঞ্চ কিংহ ভাহা না করিয়া, আপন মঙ্গল চিস্তায় সেনাপতির স্থিত সন্ধিনদ্ধন করিয়া এই লিখিয়া দিলেন, সমাটের শক্তিত আপনার কন্যার বিবাহ দিবেন। এই শক্তির পর क्षमन काली दाक्यानीराज अखाधनन कविरामन, काम রাজাব সহিত মনোবাদ হইয়া, বরাও গুল ছটবার একণ হুইল । কিন্তু রাজা নম্রতা ধীলার করিলেন, ভাচাতে ब्ये युक्त चरित मा। जनस्त्र अने धांग रहेत निवस्त्रमा **ब्ल्हाद्वत सू**रामात हहेगा पाइटका, ताजधानीट आकिट है। পুর্বিবেন না: ছলন আপনার দৈন্য স্মিত্ত লইয়া म्किटन योको क्रिट्रेन । श्राह्मञ्जा मञ्जिपटम लोकिटरन । ইতি মধ্যে অজিত দিংহে ক্রীকন্য। রাজধানীতে আদিয়া উপস্থিত হইলেন। হুগন আলি তাহাতে আপন আলতে রাখিয়া অত্যন্ত ধুন্ধক্ষে 🕻 জার সহিত বিবাহ * দিলেন 🕻 ভৎপরে ভিনি দক্ষিণে যান কার্রেলন, গমন কার্ক্সক্র शिलन व्यामि अथान हर्दे । छलिलाम । 🚰 यपि एकि (कर आगात कारकेत आक्री अत् तिम कितिशादक उत्स

रेशंद शद्र दिन्द्र दोकांद्र। मुनलमान द्वित्र श्रीतिक श्रीत कना शान करहन नारे। अरे शानके लाहा

ভিন দপ্তাহের মাধ্য আমি এই থানে আদিয়া ভাছার উচিত দও প্রেরান কবির।

इमन मिकार भागन कतिरस, वाका, मोलप थी नाम अक পাঠানকে ভাঁহার বিনালার্থ নিযুক্ত করিয়া ভারাকে উপ-দেশ দিলেন তিনি মহারাফীয়দিগকে ভাঁহার হহিছ মুদ্ধ করিছে পর্মেশ দিবেন, পরে আপনি টাঁহার স্পক্ষ পাকিয়া কোন ভৌশলে তাহাকে সংহার কবিচন। লাওদ ষ। এত গোলমালের মধ্যে না ঘাইয়া জাপনি ভাঁহার সহিত যুদ্ধ করিতে পেলেন। ভাছার ট্যন্যণ্য এমন रक्टम की शास्त्र व्याक्तिमा कहिला त्य. क्रमारम् हो समाग्रम हो বেশ গারণ করিছে না পারিয়া ছিল ভিন্ন হট্যা চতুর্দিনো প্রায়ন করিল। 🕏 সম্বেদারদ থাতিন শভ পাঠান দৈলা গইয়া আপনি ভাহাকে আকলং করিলেন ' কিন্তু **টদনের নিক্স ক্রনে, একটা গুলি জা**দিয়া ভীহার মন্ত্রক ভেদ করিল, ভাহাতে তিনি হ চ হউলেন; যুদ্ধ জন হইল না : তদনস্তর ছলনজালী সহারাষ্ট্রীয়দের সহিত সংগ্রাম । আরম্ভ করিবলন। সহারাট্রিফরা আপেনাদেরু নিজ্মালু-সাবে যুদ্ধ করিল, তিনি ভালাদিগকে পারাভব করিতে পারিলেন না। অনন্তর দিলী হটতে আজা হইল ভাঁহাকে ভথায় ঘাইতে হইবে, ভাহাতে মুদ্দ শেষ করিতে না পারিয়া তিনি সাহর সহিত সন্ধি করিলেন। সন্ধিপত্তে, आंद्र १ सक्या लागा थे। कुक, अक्ट्री क्या अहे था किन नाष्ट्र मिलीश्वरत्न मेच लक मूजा कह अवान, नश्काम कारन

अक्षमण महत्व रेमना महिया, धर प्रक्रिंग हारका यहिएक युक्तामिना हम छोटा कहिरवन । देश कहिरक छिनि मिक्नि हारकाह मकल अरम्हल छोच अहन कहिर्छ शहिरवन, धर होक्यद्वर मणेमार्टणह धक अर्थ शहिरवन । मखाँ हिर २२०० । खेट मिक्का आह्म कहिरकन मा, छाहारछ यू २९२९ | हाजाह महिर्छ रेमग्रम्मिश्यह जूनकाह युरुहत ककन हहेगा छैटिन।

अहे नगरत निर्धता श्रूनकीत राम नुक्रेन आंत्रष्ट कतिल, ভাহাতে সম্রাটের পক্ষ এক দক্ষ সেনাধ্যক্ষ ভাহাদিগের সহিত যুদ্ধার্থ গম্ন করিয়া তাহাদিগের অনেক প্রধান ২ লোককে রণবৃদ্ধী করিলেন। বন্ধু নামে ভাহাদিগের प्रवाधाक वरे वसाम पता পড़ित्वन । " त्मागन-त्मनाशिक चरनक निथ-क्षेत्रान्दक म्हिथात्न वध कतिरक्षन, ७९ शद ৰন্ধুকে সাত্ৰণত শিশ সমভিব্যাহারে, দিলীতে পাঠাইয়া मिल्न । इंश्रा मिलीएक आमिल्न मका है आका मिल्नन कोहाता मकरल मूर्गलमान धर्मा शहल कतिरव । निर्धिता ভাহাৰী করিল না, ভাহাতে নগর প্রদক্ষিণ করাইয়া व्यक्तिम छोहामिरशत्र अक अक भक्त अस्तत्र मू छ- किमन हरेट मानिनं। वसूटक शक्त वस श्रीविधान, कहारेया नक्टरक अर्क लीच नामणी मिग्रा अर्क लीव-निकदा आथा-विशाहित। डाहात धक्षे बखान हिन, त्म निडास निस, बाक्यूक्रद्वता छाटाटक छाटात मेमूट्य जानादेश छाटात হতে একখান জীকু অত্ত দিয়া আৰু করিছা তুৰি এই

আত্র বারা সন্তানকে বগ কর। বন্ধু পুত্রকে বিনাশ করিছে।
পারিলেন না, তাহাতে তাহারা ঐ পুত্রতীকে বধ করিয়া
তাহার আছি ও লোণিত তাঁহার গাত্রে প্রক্রিক করিয়া
শরে গৌহশলাকা অগ্নিতে সিন্দুরবর্ণ করিয়া চতুর্দিগ হইছে
তাঁহাকে বিন্ধিতে লাগিল। বন্ধু পর্মেশ্বরের ধনাবাদ করিতেহ প্রাণত্যাগ করিলেন। বন্ধাণ তয়ে ধর্ম ত্যাগ করিলেন
না। মুসলমানেরা আর আর শিখদিগকে বন্য, পশুর
ন্যায় তাড়াইয়া মারিতে লাগিলেন। গানেক শিথ ম্মান্লয় গমন করিল, কিন্তু তাহারা যে দল বাঁগিয়া ছিল তাহা
ভক্ত হইল না, ক্রমে রুদ্ধি হইতে লাগিল।

বাজমন্ত্রী আবতুলা অতি সলগ ও সুখাতিলারী ছিলেন,
অতএব তাঁহার জ্যেও দালণ রাজ্যে গমন করিলে,
তিনি এক হিচ্ছ প্রতিনিধির প্রতি সকল কর্মের ভারাপণ
করিয়া আপান পুথ, মুদ্ধোগে নিযুক্ত হইলেন। বে হিচ্ছ্
তাঁহার কর্মা করিতেন তিনি অতি ধর্মনিও ছিলেন, কোন
প্রকারে প্রভুর অন্যায় হইতে দিতেন না, ইহাতে অনেকে
অস্ত্রত হইলেন, সুভরাৎ প্রধাবধি তাঁহার প্রতিশ্বালার
বে বেষ ছিল তাহা রদ্ধি হইতে লাগিল। বিশেষ মিরজুমলা
ন সময়ে দিলীতে আসিয়া ছিলেন, তিনি উপস্থিত
থাকিয়া মন্ত্রীর প্রাণ বগের মন্ত্রণ করিলেন। মন্ত্রী কি
করেন, রাজার অভিপ্রায় ব্রিয়া স্বীয় বন্ধু বারব গণ্ডে
লইয়া আয়া রক্ষার্থ প্রস্তুত হইলেন। মিরজুমলা আহাকে
বং করিতে নাপারিয়া স্বনেশ মূল্ভানে প্রস্থান করিলেন।

काशास्त्र मुखाण द्राका क्यानिश्च के बाद करमक कन अधानरक आका निर्द्धन कीशाहा मुखीरक क्य करमन । जीशाहा मुखीरक निर्दाण करियाह यह करिर्द्धन, किन्छ रूडकाचा श्चेरक नीमित्रक ना। शिक्तमणा श्चेन मुख किर १९७०) महत्व महाताकीम स्मान निर्द्धक मनहाधि-कः १९९०) निर्द्धिक अखानमन श्चेक मनहाधि-का निर्देश मुखाणेरक वध करिर्द्धन । स्ट्राक्षमाह मुख्

क्रमान गोर ।

करताबनाएरत गुजात शत देनग्ररणता अण्येतग्रक ग्रहे बालकरक निर्देशनरम जेशारतभाम क्यामा। हें दाना अण्य-काल गरपार कालकारम शिंडिंड रम। डाशारक डाशाया बाल के बालकरक निर्देशमा मिर्लिम। के बालक स्टामन शाह मात्र क्रिक्ट श्रिकंक निर्देशमान बारता-

जिए, जबर क्टब्रा बनाटक ताजलुकाटन निकटनत सुताबाद हिर्मिन र रनन में अर्मर नह स्वामाह द्वारिक किन শাহ্যত হইয়াছিলেন। তথাচ তিনি ইদয়দ্দিলের के उन्ने निक्रक क्या करतन मोहै। नकारा जोशानित्वत बर्जी इमाद्व विषट्छंम, किन्छ अवेटनट्य देनग्रदम्त्रा डिशिटक मणिदेवत सूर्वापाती कर्ट्य नियुक्त कतिदलन। बहे कर्मा कानी मटें डीर्डा डिल पुर हिन ना, अखबर डीर्डा मेटन र क्विटिमामय इहेको जिनि देमना जर्शक क्रिक्ट लागिटमानु তৎপরে দক্ষিণ রাজো বাইয়া উপায় আপন প্রভুত স্থাপন हिः 3302 क्रिटलेस । देशतदमंत्रा छत्तिरूटका रमना तथात्र পু ১৭২০ করিলেন, কিন্ত ভাহারা ছিল ভিল হইয়া কিরিয়া আসিল। ইহাতে উগ্রদ্দিগের মনে গুড়ান্ত আস विभाग मर्निटम्ब गर्डशाहियों अंछ वृक्तिम्छी हिल्लम, मर्ट-শার তীহার পরামর্শ ভান্য। কর্ম কার্য্য করিতেন । ইসয়ন निरंगत अछि उद्दार अमदायदात क्रिल मा, किन्तु यसम आर्थका खरी रहेतान, उपन महन महन आस्लानि उन्हें क्येक समें क्षिपिटनत गहिए छोट्। पिटनेत क्रमणे द्वारंगत मखनाम निर्क रहेटलने। एनन बहे मखनात कथा जानिए भौतिम बद्दा बदा किंद्र किंद्रिक तीका ଓ डीराइ मजनाटक विकृष्ट मुखानिवादक नहेंगा जामि निक्त मार्ट पुकार्य नवस्य क्षित् वात्रा श्रमपुर मिहीट शक्दिन। इश वरेक मांत्र त्वर कि केत्रिट्ड शाहित्व ना ।

वर नगडक छिनि हुन नका कहिए। आओ हरेटे बांबा

করিবেন, কিন্ত বেয়ন তিনি বিবিদ্যা আরোজ্য ক্রিয়াডেন अप्रति काममक जाजीय क्षेत्र क्यांत्र श्रम्भ रहार जैतिहरू विताल क्रिक । इनटनद मृङ्गटि देवनामधनी कल्ला-बिक्ट इटेल । देमबार मक्न बाकविक्टम स्त्रापीवर कडिन । क्रिकाचलकीय अधारनहा डाहानिशस्य भहात कहिरवान। इम्रद्भत मुख्य मन्त्राम् मिलीएक अकाम इहेदन कारहता बात अब शक्तिक तालमिरहोमन धाराम कतित्वत, धारू अद्भक्त देशना अकळ कतिशा आशनि अहमारमद गहिछ যুদ্ধার্থ অঞ্জনর ছইলেন। কিন্তু মহন্দদ সাহের সেনাগণ উছি। চক পরাস্ত ও রগবন্দী করিল। মহম্মদ ভাঁছার প্রাণদণ্ড করিতে উদাত ছইয়াছিলেন, কিন্তু পীর বংশীয় বলিয়া डाहा कदिरम्म नाम

अस्त्रकान देशकानिद्यात इन्छ इहेटक शतिकांश शाहिला আস্ফুলাকে মক্তি-পদ প্রচান করিলেন ৷ স্থাসকলা ज्यूमारत प्रक्रिम द्वारकात कर्म्य निश्च किरनम, करे रे में आरमें इचित्रा आंत्रिट शाहित्वन मा। अत्व हाज्या-नीटङ आमित्रो दम्बिदलन बाका हेक्सिय-व्यवद्व निकार বিষয়ে, ট্রাহার উপপত্নী ও প্রিমপালের। একাধিপভা कडिर छट्ट । अहे तकन दमाक्तिरथन मस्टि छै।बाक সমাৰ ক্ষমিল না। তাহার। আসক্ষাম প্রামীর ক্ষেত্রীর टिबिश विक्रं किंद्रिंट नाशिन, प्रेर हाना कार्बाहरू चारमात्र कहिरछ जानिस्त्रत । काण्यात्रा निक्कं करेका कर्त शरिकारण प्रसंत शत १६नत मध्यि कृष्टिंग, प्रस्ता-

সমন করিলের। সমন কালে মহম্মন তাঁহার সহিত্ত ক্ষেত্রক সামীয়তা করিলেন, কিন্তু ভাহার পরে পোপনৈ গোপনে মহারক্ষ থা নামে হারজাবাদের নরাবনে বাজা কিলেন তাঁহাকে বন করিলা তাঁহার লাজা হরণ করেন। মহারক্ষ থা এই আজা পাইলা সৈনা সংগ্রহ করিলা আসমন ক্ষার সহিত মুক্ত করিলেন, কিন্তু এই মুখ্যে তিনি আপনি পাঁহাজিত ও হত হইলেন। আসফ্রা ভাশার হিন্তু মন্তব্দ রাজস্বিধানে ক্রের্ম করিলেন। তন্ত্রস্কর তিনি হায়্রজা-বাদে রাজধানী করিলা তথার রাজসাসন করিতে লাগি-লেন। তিনি মধ্যে হ সন্ধাইকে উপটোকন প্রেরণ করি-তেন, কিন্তু তাঁহার রাজপ্রত্ব বীকার করিভেন না, প্রায় যাধীন রাজার নাগ্য চলিতেন।

এই সমনে মহারাকীত রাজ্য পূর্বাপেকা আরো মুণাসিত্ত পূঞ্জাবদ্ধ হইরাছিল চ বালাকী নিকনাথ নামে
সাহ রাজার এক মন্ত্রী ছিলেন। চৌধ ও স্থিমুখী করকে
মহারাকীলনের ভবিষাৎ রাজ্য মূল বিবেচনা করিয়া
ভিনি ভাষা আগানের প্রতি অতান্ত মনোযোগ করিতেন। চৌধের বিষয়ে ভাষার এমন আজা ছিল প্রক্রত
রাজ্যের চতুর্থাংশ গ্রহণানা করিয়া ভোজনমন ও মনকার্ম যে কর ধার্ম করিয়াভিলেন ভাষাই চতুর্থাংশের
কর্মান সংগ্রহ করিবে এই কর সকলে দিভেন না, কিছ
ভবালি ভাষা ছাভিতেন না। তিল ভিন ভানে ভিন ভিন
আখানের প্রতি এই কর আনালের ভার ছিল। ভাষারা

বিনিষ্ঠ কর আদায় করিবেন জাকা নিশ্লারিক করিয়া विशे किरलत्। (कोन राजिएक अप्राप्त अधिक कर अधिकार ক্রিছে সিতেন না, কেন না অধিক অর্থ একেরারে হতে भागित्वहै भावः कृत्म (नाङ्गियक हरेगांत ग्रह्णात्ना । े बीनानी विश्वनारेषत्र त्रिश्वमा भाष्टि इहेगाहिन। वे ক্যাতি তাঁহার পুর পৌরেরা ভোগ্র করিয়া আরিতেছে 👢 বুরাজী বিশ্রাপের মৃত্যুর পর তংপুর বাজীরাও মন্ত্রী क्रेया हित्तुन । वाकीशांश्यत अमानादन क्रमा हिल । चित्रज्ञीत शत उनुमा नग्रम गरात्राके आमृत्य यात पृष्टे इब नाहे। जिल्हि प्रश्ताची अमित्रदक द्यालन मिटशत प्रश्नेत जाक्सन कृतिएक श्रामन तन । किन् नित्या क्रिलन मिन्नी वंत्रभूना इर्व्यव छुना, वे क्ष्ममूरल अस्तवादव भीषोष्ठ कर, छोटा हहेटल नाथा शुक्रव आश्रति हितिया প্ৰভিৱে। ৰাজ্য ভাষার প্রামশান্ত্রপত্র মোগলদিপকে প্লাক্ত্ৰৰ কৰিবাৰ প্ৰস্থাত দেন। ভাষাতে বাজীৱাও क्षेत्रः, अक्षित्रसम्भ सुक्षेत्र कित्या अक्षत्रारमेत प्रवादाद्वत्र स्वादन

कोष रुष करतन । ्रष्टानस्का प्रत्न कृतिया किर्तन्त जिलि निमा निष्म बाक्य कृतित्वन, महाबाक्यीत्यता द्वारान कृत् सुरुष कृतित्व साहित्वन न।। किन्द्र शांधनायात्मव कृत्वित्क त्य

[्]रेन्द्री किंद्र मह सारकाविकारः

সকল স্থান ছিল ভিনি ভাষার চৌব গ্রহণ করিতে পারি: त्ममं मा अकुम्छ महाप्राक्तीत्पन्न। डाहान कारन कारनक দাৰি করিবেই জিনি ভাষার উত্তর নিলেন এই কর नाइक्शाहेरनम् कि (महाद्राहित मकिनार लाई कर्छा) मंड्र माहेरवम बन्नकास छारात मीमारना रह नाहे, अर्थ এই বিষয় স্থিতীয়ত হাউক, ভাষার পর দাহাকে নিতে হয় (मंद्रश्र) बांटेट्ट । जानकंका करें फ्लानांत्र कर पान करिएमन ক্ষা। স্বান্তীয়াও ভাছাতে অভান্ত কুপিত হইখা বহর।ন প্লয় आक्रमन कहित्सन्। कांत्रकका ও अधु वी सान दकार्य উপস্থিত হইলে, তিনি ভাষা পরিত্যাপ করিয়া ওজরাটো को जावस कविरमन । एकदारे मुट्ठेंव श्रद मिल्ट्स याहेश आमकलात महन पुरस्त अव्य स्टेश एँवित देगनामानह आहोत्रीय सरापि कामसत्नत श्रेश कृष्ण कृष्णि किर्मा । ভাহাতে আরক্ষাকে শমুর পক পরিত্যাগ করিতে হইল ভাহার সহিত বিজ্ঞা রাখিতে পারিবেন না। ছই सन ভিচ হইলে, ভিৰি শন্তুর সহিত যুদ্ধায়ত কহিলা উহিচ্ছে প्रकाश्चुक अब्रिट्सन, अञ्चलकारभाव माहत अञ्चल वीकांत्र क्रिंद्रकत । अरे बालाद्यत शत राजीदां उ जानकता स्मित्रकात त्य छाहारमतं शहन्त्रद्ध विदारम आह स्कान अन নাই অভবৰ পাৰ্লপাৰ যুক্ত না করিয়া তাঁছায়া পরস্থার পরস্পানের সাহাত্য করিতে লাগিলেন 🕫

्रकाश्चास विक्रीयम् महाताचे । विरागत अवशास्त्रक व्यक्ति व्यक्ति के समाति होका क्रमाश्च सोकाण्डिका

व्राक्ष गमर्थन कतिराष्ट्रिया । त्यानीताव के हर ताका भून**र्वात काक्**मण काँद्रशाम और मर्वाटक है। हात कर-अकाका जिल्लीनमान रहेन, छार एक छिति । बार हा त श्रेक्क দিলীখরকৈ দৃতভারা ৰশিয়া লাঠাইলেন মালবরাক্ত ও মধুরা ও এলাহাবাদ ও বারাধ্য অত্যেতি চ্ছল নদীব দলিংগ যে সক্ষা দেশ আছে ভাষা জামাকে ফাখগীর ধরুপ দান কর, ভাছাকটলে আদি মুদ্ধে কাল্ত কইব, নতুনা তাথা বল-भूकों के व्यक्तिया कित्र । पिक्षी चेत्र छच । . क्ष्यन उनरी न हम । माहे, त्य शाकीतांबरयत करे संबा सामग्रा छोशांक के রা**ল্যা ছা**ড়িয়া দেন। আত্রধ ভিনি মহারাফী দিগের সহিত যুদ্ধার্য করিলেন। আসক্ষতা ভাছাদিলের মহ' **अ**फिल (मचित्र) क्षत क उप भारेश आक्ष गार्गरण ॥(४, क्तिरलम । किन्ह 'कमि मा स्लोकिटक्ट वाकोद्राट प्राधाव বিংশতি জোশ ব্যবধানে হাইয়া উপস্থিক হইকেন वनक्रवां क्रमलाक्ष के ममस्य मकुम्। लाज क्रेरा ७ व-কেশ উৎপাত করিতে জাবিতেন। ইছা দেখিল অবো-काहर भौत्रमक्ती मान्छ की अवस्था स्टेस्स राहित बहुता हुई जनत्व के त्रम क्टेंट्ड डाका कवित्तन। देशास्त्र करणे। समयव छेष्टिम, जिनि वरात्राकृतिशदक भद्राकृष्ठं कविषारं छन । वाक्षीवां ७ वर्षे क्यांत करन २ समा कदिरममे, बनर तीय प्रकृत्सा । रमभादेवार्व समा उप्तर-भनाम प्राक्षांत्राचि भारतमाद्य मिलीड लिल्ह्या वारेया छेलfor a state of the state of the

তথার দৈশিয়া ঘটা শহিতে হইল। কিছ বালীরাও অনিককরেন এমন বাসনা করেন নাই। কেবল ভয় এদর্শন জনির
ভবায় গলন কবিয়াছিলেন। অভবায় বালন ভিনিলেন, রাজশন্ত্রী নামত বাঁর সহিতে গিলিগা উল্লেখ্য বিজ্ঞা অঞ্জন
সরু ইইয়াছেন, ভগন আয়ু নিলম্ব না করিয়া নিলী
ইইতে একেবারের দক্ষিণে ঘাইয়া উপস্থিত ইইলেন।
কি ১৯৪৯ কিছুকাল গতের আসফলা নিলীতে
ই ২০০০
উপনীত ইইলেন। রাজা উল্লেখ্য কবিলেন
কবের ভারাপনি করিলেন, এবং ভাইার পুলি গালীউদ্ধীনকে মালব ও ওলারটি প্রবেশ দান কবিলেন।

কিয়ৎকাল পানে হাজীরাও অলীতিসহত্র অপারেছী সেনা সম্বিল্যাহানে পুনর্কার নর্মন, নদী পান হইয়া, উত্তরে হাকা করিলেন। এই গংলাদ পাইষা জাসক্ষরা-তাঁহার সহিত মুন্ধার্থ অপ্রসর স্থলেন। কিন্তু মহারান্ধীয় দিগের কাও কার্ম্যানা ও কৌশল সকল জানিতেন, অত্তর্প্র ক্রেকারে মুন্ধে প্রকৃত্ত না হক্ত্রি গোলন্দাজের প্রতি নির্জ্য করিয়া ভূপালের নিকট এক উচ্চ স্থানে থাকিলেন। ভাষিলেন ভাহারা আক্রমণ করিলে, ভাহার গোলন্দাজেরা ভাষানিলের উপর গোলার্টি করিলে। কিন্তু মহারান্ত্রীয়েরা ভাষানা করিয়া ভাহার গভ্রিকের দেশ উৎখাত করিতে লাগিল। অনেক্লা কোন স্থান হউতে আহারীয় জন্ম থাকিলেন। ভাষার পর ভবায় ডিটিডে নাগারিয়া পলাথন আরম্ভ করিলেন। সহারাতীকেরা ভাষার পশান
থন আরম্ভ করিলেন। সহারাতীকেরা ভাষার পশান
পশাং প্রমন করিল, এবং নানামতে ভাষাকে কই দিতে
লাগিল : আসফলা নিরুপায় হইয়া বাজীরাওকে লিখিয়া
দিখেন চম্বল নদীর দক্ষিণে ভাবদেশ ভোমাকে দেওয়া
পোল। আরো অলীকার করিলেন এই দান রাজা
বাহাতে গ্রাহ্ম করেল ভাষার বিশিষ্কত চেটা করিব।
ভত্তির মহারাকীয়দিগকে পঞাশ লক্ষ্ম টাকা দেওয়া
বাইবে।

কিন্ত এই বিষয় গ্রাহ্মনা হইতে হইতে আর এক ছোর উৎপাত উপস্থিত হইল, ডাহাতে রাজা প্রকাসকলে নহ। বিপদগ্রস্ত হই নেন। তদ্বিরণ পশ্চাৎ দেখা মাইতেছে।

जीवक्यर्यंत्र हे किसीत्र।

ं अक्षितिर में क्रमांब ।

मुखाकी वश्नीय द्वाकाता। शांतम खाँदनर ब्राक्रिक्शमन প্রাপ্ত হইয়া ভিন প্রত এৎসরের অধিক রাজস্ব করের: प्रभावत के कार्या कार्या के स्थापन के किए के कार्या के स्थापन के ्मता काकाटकत निक्षेत्रांत्र कतिए. समन थात बाल कताटन ছাহারা কান্ধার এখন অধিকার করিয়াছিল এবং পারস-দেশীক কাজ্যদিপের প্রতিভালতত মুক্ত-বিগ্রহাদি করিত। इत्त हो कामान तामजनारन के भारात्महा भवत पारत्न विनाम राष्ट्रा कतिया सहसाम नारम धक खाँछ सहतिक ব্যক্তিকে আপ্রন্তানের অধ্যক্ষ করিল। মহন্যান পঞ্চবিংপাতি गर्म बन्तान त्यामा महेगा काकात्रहरेएड शांत्र प्रारमङ काल्याची देख्यादादन याका कतिरवान । जिलि हो नगहत्त्र निक्केंबर्की स्केटन, शांत्रगीता चटतक देतना प्रमुक्तिए कहि-ग्रा क बादक कामान उक्क बदेश दीशाव महित पृष क्षारक क्षेत्रक क्रिका । क्षिक शर्क दशमी शाहीन मिट शह न्तिक शासिक जी, लांबेरनको कडी रहेश हे न्याहान बोक-अधी जनसम्बद्धां कविया अधिक । महारहत स्था नहार कर मक लोक बान करिए, छोड़ोती बर्पा के शोडोनित भरत मोक्रमण करिएछ मानिया। किन छोड़ोनित्रक भर्ताक्षेत्र करिएछ भारित ना। भार्डान मिना क्षित्र किन ना, छवालि छोड़ोत्रा है ल्लाहोत रामीपिशक क्रिमेश्वर करिता। धर्नैर छोड़ोर्ट्स खोड़ोत्रीय खरापि नहेता दहिरात्र भव क्रक करिया नाना ध्यकात दक्षम पिएछ जोलिन। हे ल्लाहोर्ट्स इस मान भर्षात्र धरे दक्षमें महास्त्र शाक्षित्र। भरत खाद्य छोल करित्रा भोडोनित्रक मेर्स करेन, धरु छोड़ोर्ट्स बाद्या करित्रा भोडोनित्रक मेर्स करेन, धरु छोड़ोर्ट्स बाद्या करित्रा भोडोनित्रक हेरेसा खानिया खानिया भित्र हरेएछ इस्क्रम क्रिसेस प्रस्तित भिरत कर्मन करिरसन।

नहण्य हरे उरमह हाजच करिया ज्यान त्यारण मिलतम्। छीराय युद्धा श्रेष क्षामयक मारम छीराय कर व्यक्तिम् इनें व कर्णा हरिया । क्षामयक कांत्र कर्णा हरिया । क्षेत्रम कुनें व कर्णा ही रिया मिला के विर्वाद किन्छ करिक, क्षामयक छोरा कर्णा दि विराध क्षाम्य करिया । किन्छ हर्णा कांत्रम कांत्र क्षा मेरा वांत्र क्षाम्य । क्ष्मा वीव के वरिया कांत्र क्ष्मम तिथा बांच्र बारे, छोष्ट्य करें कांत्राम नारम हर्णा मीरहर क्षाम्य करिया वांत्रिय कांत्रक कार्य हें कांच्रा करिया क्षामय करिया वांत्रिय वांत्रक कार्य हें कांच्रा कार्य कर्णा क्षामय करिया वांत्रिय वांत्रक कार्य कार्य कार्य क्षामय क्षामय करिया कार्य क्ष्मय नारम कार्य त्यावांक्षित-स्थानां क्ष्म क्ष्मय क्ष्मय होंच्या कार्याय क्ष्मय क

क्रिका क्रांत क्रियाक हरेशहितक । क्रिन बाक्युटबंब पेक्टम जाभनाहः मोलाना निक कहितनन करे जानाकाम वाननारक खोत्राका कृति (नई१६ जागारका माम) विश्वीक क्रिक्रा, विमानी पिकांब महिल गृषांत्र क्रांतरम । चिनकीता छारोड द्वनमञ्चाय भेता कर मानिया भारतहाने. হইতে প্লায়ন করিল ৷ ভামাপ্র পার্য সান পুনঃপ্রাঞ্জ वहेरसम्। अनुस्त्रं मारमञ्ज्ञात्र अध्यक्ष युक्षापि कतिरसम्। শ্বনে উহিার অত্যক্ত কন্ত। হইল। তথ্ন পূর্ব অধীকার বিশ্বত হইয়া ভিনি ভাষাপকে রাজাচ্যুত করিয়া আপনি, ३०२० । असमूक्षे भारत कदित्वन। छ। हात ताला-व २०१२ । अन्यस्य प्रशास स्टेस, अवर अनावगाति क्रिक्ट विटयटक खडास प्रशास स्टेस, अवर । ভাষাতে বে বে ক্রিয়ার আবশাক সরুলি করিলেন।

सिक्की व्यक्तियाः भावमञ्चानतः निकास सत्त्वका कविकाष्ट्रिका । नारमुङ होका इरेगा व्यक्तिका अर्कित्वसः ভাষ্টাদিগতে প্রভিক্ত দিবের, এবং জানার রাজ্য ভাষা-पिट्या इक्ट्राइ महेमा श्राप्तकारम श्रून र्याण अति। त्वमा करिका क्षिक किन काकाव विकेत करिन रमना अभिन्नकीता तथ-नियमार्थि अक्समार्थ व्यक्ति पाक्कि। अनुस्तार शतालन कीकात कविक । छाराटक नात्नकानांक नामाक शाया भाग वर्षेत्वमा लोगीन ATHER MEMBERS POSITIONS OF STREET freeze which for the face of sauce statements

उद्भि छाम अवसा दिलाता, क्रम बंगरीन हरेग वामिटल्डिन। व्यक्तिर किमि प्रिमेश्वरक रनिया भाठी-रेटनम जुनि जीपात अध्य गोनात करे, महत्व कामि टिशामात्री ताका विस पूर्वक करिया। पिन्नी बन्न डीहात अजूद वीकांत्र कतिरलम मा, जाहारक मारमत मार्च काम विवान-श्राद्ध कार्यूल कार्यकार्त्र कतिशा निवानरेक वाका करि-लिन। अमनकारक क्ट डींटात अधावत्त्राध कविन ना छोटीएँ डिनि यम्ना लक्ष्में निकित्त्रे आंतिएड माणिएलेना পরে যথন ভিনি দিলীর একশত কোশ উভরে উপস্থিত इडेटेलम, उथम मिलीश्रद्धद्र समाधन केन्द्रिक्त किंद्रांत अधीवदर्शार्थ कतिन। किन्द्र मारमहत्त्व त्मना त्यक्रकोत स्वस्त्वस अ द्वांदर्व द्विम स्वात्र छत्त्रीय त्मना-গৰ সেক্কণ ছিল আৰু অভএৰ ভাহাদেৰ এনও শাখা एंडेजि मा लाउमी त्मनारमंत्र महिन्छ युक्त करहा। अधिकन्छ बे नमेटच आनक्षी 'अ मानक बीटच मन्त्रीं कि हिन ना, প্রশীর কেই কাছার নক্ষ বাঞ্ছা করিছেন ন।। অত-वर डीहाबिट्यंत रमनायेश्वरक मार्ट्यंत खेमाहारम भड़ा कर कतिहरून, बिठिय कि । दशका रामाश पूर्व लगामिक इहेटक बहु मान शाह नाटन बनाइटक गटक करेंग निवीट छ ब्रोजित्वत् । भावनम् द्रमद्र रमन्त्रम् ब्राप्ट स्मिक्टिः অভান বিষ্ঠানত আসিয়া ভাল্মের কর্ত ক্ষিত অতা-STA PEN PALL PICH AND WHAT STEN ATTHE THE WINDLESS IN TOTAL CONTROL OF THE CONTROL

कुर्मिया १०० भारती सन्दर्भ क्ष क्रिका । बार्ट्स माद् भीने निवृष्टित निर्मिष्ठ बारमक राष्ट्र कतिरक्ता, किन्नु दर्शन मध्क नियादन कहिएक भावितस्य ना । विदल्पस्तक বৰ্ম তিনি ভূমিবার্ণার্ম অখারোহ্দ কবিয়া নগত্তে গমন করেন, তথন চারিলিপছইতে তাঁহার উপর পর-र्यंत बहेटल माणिकः वहे चारकार्यः जिमि व्यानाव द्रख बनिक्षा मककाक मध्याप्र कड़िएक खाळा नित्सन । असे जीक्षा भारेग देशित अभुत्रवद (मन) वर्ग अक्तिकास व्यवस्थि चनदाक भग्रह हुई हुए बाहारक क्षिय ए हिएक उप कर्तिन, बानक औरलहरू या दुख काश्रतक छा।या करिन मा। মুতের মন্ত্রা অনেক বেশকে অনেকরণ সিথিডাডেন, কেল कार्यम कार्यालकः, रकह वर्षान सकः, (कह अ) वान रहारालकः। কিন্তু ক্রিম্ম চল্লিম্ম সহজ্ঞ কোজ কটি! পিয়াছিল ভাহার काम मध्यम नाहै।

किस क्षाल क्षिडिय समा मादमा माह कांद्र अर्थ कालमम करवम माडे. लिनि वर्ष लाएक बालिगांडिलन, अञ्चल ब्राक्कालदेव गुजाबांचे ए मक्त स्वामि विचिट्नन मक्न अस्न कविरासनः, अवन भनराम् ७ तृत्रम् दवाकनियदम अति लिके क नानाक्षकात रहन। मिया कारामिटनत नर्जक वतम कतिराञ्चः जोणिश्वाम्। श्रुवामाद्रशिरागत छेणात्र स्रोति **ेकि बहेन : जैस्कित प्रधानक्षेत्र मिक्स युक्ति अ**हस करिएनमा के कारणः नारमञ्जानाम् छात्रख्यारं ३৮ मिनम नाम कतियाः मकारः क्रिके संबंधि स्था महेशः लाइन्हाटन श्रनर्भमन করিলেন। গমন কালে মহন্দ্রীন সাহের কহিত সন্ধি বন্ধন করিলেন, তদ্যারা এই ছির কইল সিন্ধুপার সকল দেখ পারসন্থানের কইবে। সুজয়াৎ এই অবধি আকগানভাবে ইতমুর বংশীয় রাজাদের কোন আধিপতা বাকিল'ন।।

এই সময়ে রাজধানীতে লোকের কে তুর্গতি ও চংগ ও
রাজ্যের যে সূরবন্ধ। হইল তাহা পাঠকেরাজনায়ালে অন্তভব করিতে পারেন, বর্ণন বাছলা। মহারাষ্ট্রীয়েরা
হিচ্ছুবানে পড়িয়া সকলকানে আপনালের পরাজন মুক্তি
করিবে এমন সন্তাবনা ছিল, কিন্তু ভাষা না কর্মা বাজীরাও ঐ সময়ে মৃজিণ রাজ্যের মুক্তে পুনঃ প্রবৃত্ত হইয়া
আসফলার পুজন সর্ভারের হল্তি সংগ্রাম করিবেন।
নাসর্জ্যান ভাষার সহিও খোর যুক্ত করিবেন। বাজীরাও
এমন মনে করেন নাই নাসর্জ্যান গ্রুক্ত করিবেন। বাজীরাও
এমন মনে করেন নাই নাসর্জ্যান গ্রুক্ত করিবেন। বাজীরাও
এমন মনে করেন নাই নাসর্জ্যান প্রক্রিক করিবেত পারিবেন, অত্রাব তিনি ভাষার সহিত নিল করিয়া হিন্দুখানে
বাজা করিবেন। কিন্তু নার্মাণ পার ছইক্তেনা হইকে তিনি
কাল্যানে পত্তিত হইকেন।

রাজীরাপ্তয়ের মৃত্যুর পার তৎপুত্র বালাজীরাও তৎপদারত হইলেন। বালাজী অতি ক্ষমতাবান্ পুরুব চিলেন,
কিন্তু ভাঁহার পত্রুগণও অতি বীর ভিলেন, ভাহাদিগের,
পাক্তক হইতে উত্তীপ হওয়া সামানা ব্যালার নহে
ভাঁহার পথ্যক্ষের মধ্যে মুখ্যী ভোঁদলা অতি ভয়ন্তর,
ভিলিবেরার ও তর্ভুক্ষ জন্মতা রাজ্যে চৌৰ সংগ্রহ করিবেচনা ভাহাতে জি অঞ্চল ভাষার এক প্রকার, রাজার

ন্যায় আধিপতা হইয়াছিল। তিনি বলপুর্বাক ন্মাদার , উত্তরেও চৌথ গ্রাহণের চেন্টা করিলেন। ভাচাতে বালাক্ষী वर्ष में बांदबा गमन कवित्रा जानकलीत क्रज मिस शाह-भारते अना भूगथाम कतिरक नाशित्वम । औ समरम त्रमूकी छात्रका नक्रमण आक्रमण क नेट्यान । नस्छ छीछ हहेग्। गंगाकीत्व विशासन त्याभारक मान्य हांका हाफ्रिया দেওয়া বাইবে, তুমি রযুজীকে আলার রাজো উৎপাত পরিতে দিওনা। বালালী এই কলাম স্মাত আহলাদে विश्वादिकाः विकास प्रमानित साक्ष्मानित सूत्रशिमान्। एम अभन करिन লেন, এবং রঘুলীকে পরাভব করিয়া হল্লেশ হ্ইন্ডে দ্রী-**ष्ट्रक करिरणन। इच्छी रङ्गदमः भेद आभाग देनदान रहेगा** শেক্তারা লক্ষ্যে গ্রামন করিলেন । বালাকী ভাঁহার প্রশাহন কিং ১১৯৬ **তথা**য় চলিলেন। কিন্তু ক্রমে অবেকে শু ১৭৪০ <mark>ভাহার বিপক্ষ হইল, ভাহাতে তিনি</mark> ব্যুক্তীকে বাঞ্লা ও বেহারে চৌথ গ্রাংগের ক্ছ ছাডিয়া मिटलम् । ज्याष्ट्रः शह बक्तंपटणेत करवत शतिहर्द्ध बामणे नक সুদ্রা ও করেক প্রেদেশ দিশা উছে।র সহিত সন্ধি করিলেন। এই সমধ্যে আসফজাও রাজাসাত্র মৃত্যু হয় ৷ নাসীর জল নামে আগফজার এক পুত্র স্বাধীনভার কপেনা করিয়া मिन्द्रभ बाजविद्यारी इरेग्राडिटलन, आमक्का बे विद्रमार দ্মন জন্য •গমন করিয়াছিলেন, তথায় বাইয়া তিনি, > १८ प्रकारक, भारत्वाक शमन करतन। उँदात मृजुाद পর ভত্তরাধিকারিছের বিষয়ে অনেক দত্ত উপস্থিত

व्यक्तिम् अवस्थात् विश्वासी लोगस्य त्राकाताः नामक स्था व्यक्तिक सीरात निरक्षामनं वर्णनं कवित्नमः, फारात्स से जवन त्याम नित्रस वर्षमः, स्थि कंप्लात्म संस्थानी वर्षः सामाजात्मन् वृद्धः अञ्चल क्रेस्ता । स्वर पृत्यः क्रिका क्रिकाता नामानात्माः नश्चास क्रिकार्मः, रूपात निवस्त स्थानात्मः त्यास्ता

बाहे मयदम द्याहिका काफीटक्स वय राखिन विकेत द्रशिक्षा-दानी चारेनक भावनि सामानवकारत कर्मा कविन्छ । इंश्रामित्त्रत्र मृत्या जानीभरणात्र बाध्य बन वाक्ति हित्तन, তিনি হিন্দু বংচশাস্ক্র, কিন্তু এক রোহিলা সেনা কর্তৃক প্রতিপানিত ইইয়া প্রথমে এক বিপাহির কর্মে প্রয়ত हन, कांश्रंत भर करण करम जाभग निमा 🐞 दुवि बरम অভি উচ্চ পদ প্ৰাপ্ত হটয়া করেকথাৰ জানুৱীর মহাতের व्यक्तका करवन । यहे कर्ल्य बाक्तिम क्रिन व्यनक येथ्रा मरप्रम, ब्रद्धः चरमक शांत्रांमस्य चार्शन कर्ष्यं नियुक्त कहि-সাহিলেন। নিত্তীখন ভাষার আম্পর্কা দৈখিলা তথিককে रेमका ब्लाइय करहन, किंख किनि के श्रमानक्ष्य नहांकर क कर्क कर्स कड़ियां श्रमा करिय करणाया शर्यक छाउ० कारमञ् अरक्षेत्र हम । देशोर करे च कारमत्र माम स्त्राहि-सम्बंध देश। भागवत दीकांत्र लंदाव इबि रहविता विजीवत क्रिकेट के प्राप्त दिला निर्मात कार्य प्रमान करतम । कीको प्रकृष कार्यान देवरण क्रम्यन श्रीका हार्यिया,

चात्र (वनकम द्वामा हिल, विश्लीचत्रक नगस्त्रहे नगर्नव क्राबन।

क्छि देशास्त्र छात्रस्वर्ष अरक्वाद्य मध्य हरेन मा। নাছের লাছ এই রাজা হইতে পার্স বাজ্যে প্রভ্যাপমন ১১৯. বিয়া অভাস্ত এজাপীড়ন আবস্ত করি-साहित्यन। अभावा दीहात लोताचा मक क्षिएक मा भौतिया भेतांपर्भ शूर्यक केंग्हारक वध व्यतिष । दिशां मानित्या व्यावमानी नाम त्व काल्टिक अहे करण ब्रहानी পाठाम बनाबाय, आहम्यन थाँ नात्म छाहात्मव अधान बारमङ गारकत करमा निमुक्त छिलन। आजुरक হত্যা করিলে ভিনি হত্যাকারীদিগের দক্তের চেক্টা করি-लन। किन्न भावमी काडीरावा गकरण धक रक्षांते इडेन, ভাহাতে ভিনি ক্তকাৰ্য্য হইতে পারিলেন না চনাপারিয়া **তিনি সংসনো আপন রাজো** প্রত্যাগমন করিলেন। তথার তাঁহার অভান্ত প্রভাগ ছিল, মুভরাং তিনি জপ্প कांटकत मरशा काषारद्रक द्राका स्टेटलम, এব॰ मिश्व जारति পারন ছাবের সীমা পর্যাক তাঁহার আঘিপতঃ চলিল।

वर जारका थे। नात्मत मास्त्र महिल लात्ववर्धः जानिया वर्षः जात्ववर्धः जानिया वर्षः जात्ववर्धः जानिया विद्यान्ति वर्षः महन्ति वर्षः वरः वरः वर्यः वर्षः वर्षः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः वरः

वाजा कतिराजन। निजीचत छाचांत जानगरनंत मश्यानशाहिता
मजी अवीत्र मृज जाहण्यस्य छित्रस्य रक्षत्र कितराजन।
हेर्दाता अञ्ज्ञाभारत मरेगना कावज्ञ हरेता अक्तिराजन। जाहमाम बा छाहा रहिंदता छ्याप्त नहीं मश्कम ना कतिना खात
कर चारम नहीं शांत हरेराजन, छ्या हरेराछ कर्यारत
छाहारम्त रेगरनात शम्माखारण जानिराजन। छश्शरत गतहर्म अधिकांत कतिना त्रांकरमनानिशस्य बाकम्य कितराजन,
हिर १७०० विक छाहांता छाहारक शतांकर कितान ।
बाहण्यम बाहण्यम बाहणान कितराजन।

আহমদ সাহ।

সরহন্দের বুজের পর একমাস অতীত না হইতে ২

হিং ১১৯১ মহম্মদ সাহ পরলোক পমন করিবু ১৭৪৮ বন। ভাহাতে তৎপুত্র আহুমুদ্দ সীহ
সম্রাট হইলেন।

সরহদের মুদ্ধে প্রধান মরী হত হইরাছিলেন, তাহা-তে আহম্মন সাহ সম্রাট হইরা ঐ কর্ম আসকলাকে দিতে চাছিলেন। আসকলা ভাষা গ্রহণ করিলেন না, ভাষাতে ভিনি আযোগ্যার সুযানার সামত খাঁর পুন সমর্জনক ডৎ কর্মে নিযুক্ত করিলেন।

ं बरे नमरम चारनाम प्रशानी बीम बारकाद शाक्तम क्षेट्रमानंत यूर्ण नियुक्त हित्तन, अवर जानीमस्यन পরলোক গমন করিয়া ছিলেন। তাহাতে স্থতন নতী विद्वष्ठमा कतिहा पिचित्वम अहे ममदत्र द्वाहिनामिश्रदक নিপাত করিলে ভাল হয়। এই অভিপ্রায়ে তিনি ফরখা-বাদের পাঠান বেনাপতিকে তৎকর্মের ভারার্পণ করিলেন. ৰিন্দু 🗳 দেনাপতি যুদ্ধে হত হইলেন। দেনাপতির মৃত্যুর পর মন্ত্রী ভাষার ভাষাকে ভাষার ঐথব্যাদিতে বঞ্চিত করিয়া আপনি ভাহার অধিকারের চেন্টা করিবেন। ইহাতে তদেশীয়েয়া তদিক্দে অন্ত ধারণ পূর্মক বোহিলা-দিগকে আহ্বান করিল। মন্ত্রী ভাহাদিগের সাইত হুজার্থে গমন করিলেন, কিন্তু ডাঁহার সেনাগণ মুলিক্ষিত ছিলনা, ১১৯৬ ৄ ভাছাতে রোহিলারা যুদ্ধ হয় করিয়া पर २९०० े **अटक-वांट**त मटको ও अनाहांबाटमत সম্বা আসিয়া পড়িল।

এই বিপদ কাৰে মহারাজীয় দিখের সহায়ত! তিঃ অব্রির অন্য উপায় রহিলনা, অন্তএব হলকার ও সিন্ধিয়া নামে নীৰ্মানীয় যে ছই দেনাপতি পেদওয়ার স্থানে নালবদেশ ৰন্দোবস্ত করিয়া লইয়া ছিলেন, ভাহা-দিগতে পতা লিখিলেন ভোমরা আমার পকা হইয়া যুদ্ধ কর বে দেশ-জয় করিবে, তাহাতে যে ধন পাওয়া बाहरत छोहा त्छामानिशयक संख्या बाहरत । बहे लाटक महाद्वाकीय अधारमहा डाहात मरक पुरुष भमन कति- रम्तु, श्वर स्वाह निरम्भ त्रास्त्र के स्वाह शक्त सर स्थान। अरे निर्देश हिंगा कि राज्य के स्वाह स्वाह

बरे युरक्त शत मुझी मिलीएक अकाशक सरेता শুনিকোন আহম্মদ ছত্তাৰী পঞ্জাৰ প্ৰদেশ আক্ৰমণ করিয়াছেন। জিনি আরো দেখিলেন বে ওাঁহার অনুপ-স্থিতি কালে এক নপুথ্যক ব্যৱসাতা ও রাজার ক্ষতি প্রিম্ন হইয়া রাজ্যের মর্কোসর্কা হইয়াছে। ভাষাতে ভিনি এক দিবৰ একটা মহা কোজে নপুৎসককে নিমন্ত্ৰণ করিয়। वध क्तिरक्त । देवारक कीशात अरू भंक नाम बरेन नरहे, किन गारवजेंगीन नाटम आगयकात लोज, बाहादक किनि भाकी देवीन देशां प्राचीतम दमता भाग किविक बुद्धिशिक्तन, जिनि छैड़ांत्र अदब लक रहेश केतित्वन । এই য়াজি অভাত বীৰ্যাশালী ও কমভাপন ভিবেত্ৰ, ভিবি बहिराक दरेश काराब मरिक दिशाम बाबक स्टिस्नन। बहुँ विद्वाह द्वा मान शर्माद हिम्ह, धरेर के इस्मान कान विद्वीत शर्व प्राप्ते नव्हर्। त्यानिक्सय त्रस्मितः व्यवस्थितः बहुबहु बहुबुच्चिति हुन्ता झालाह भरक गावा कहिल, त्यहे সংবাদ অবিয়া মন্ত্ৰী নতি বছৰ প্ৰবাদ কৰোৱাৰ প্ৰকাৰ:

বিরুক্তে ক্ষম্মান্তর করিবের। এই মুন্তে রাজ্যত ভাষার ক্ষ্মান্তর করিবের। এই মুন্তে রাজ্যত ভাষার ক্ষ্মান্তর করিবের। এই মুন্তে রাজ্যত ভাষার ক্ষ্মান্তর করিবের। করিবের। এই মুন্তে রাজ্যত ভাষার ক্ষিত্র করিবের। রাজ্য উইয় এক দিবস শীকারক্ষ্যে ভাষাকে পরিভাগে করিয়া বায় বশীভূত সৈনাগণ সম্ভিবাহারে বিরীতে আনিকান। মন্ত্রী ভাষার অভিনাম বুঝিতে পারিয়া ক্ষ্যান্তর করিব। ভাষার ভাষার

ब्यानभनीय, विकीय।

আজিক্ষীর সিংহাসনারোহণ করিলে, গাভীউন্টিন পঞ্জাব উত্তাহের ২০তা করিলেন। কিন্তু মুখ্যারা ছাহ। সম্পন্ন করিছে দা পারিষ্টা প্রচাহার করিলেন। তরি-বর্ষ এই-ক্ষাঞ্জার বিনি শাসন-কর্তা ছিলেন তাঁহার মৃত্যুর পর তাঁহারখনিতা আপন এক শিশু সভানকৈ রাজ। করিয়া আপনি প্রাক্তর্ম চালাইছে ছিলেন। ঐ বিধ্যার 'এক কন্যা ভিল ভাহাকে বিবাহ করিবার ছলে ভিনি পঞ্চাবে হতা করিলেন, কিন্তু ভাষা না করিয়া একেবারে नगत जाकमन, धरूर तांनीटक दमी कविया जानित्वन। আছম্মদ লাহ এই বিশাস্থাতক আচরণের সংবাদ শুনিয়া खनक खनत्नत नाम अत्कराद्य प्रदेशत्ना मिलीयूर्थ यात्र। করিলেন। তিনি দিলীর বিংশতি ক্রোশ অন্তরে পৌছিলে मक्की छाष्ट्रांत्र कार्रम कमा आर्थना कतित्वन । शक्कारदव द्रांगीक छाँहांद्र कमात्र समा समुद्रांग क्रांनाहेटसम, ভাছাতে আহম্মদশাহ মন্ত্রীকে কমাদান করিলেন। কিন্ত ওদ্ধ মন্ত্রীর শান্তিক্ষনা তিনি আইসেন নাই, ভারত্তবর্ষে लाल अपनक अर्थ भारेय এই माएक आमिम्राहित्यन, अन्दित नारमंत्र नारम्त्र जालामन कारन मिलीर्ड व्यमन मर्ट ও নর হত্যা হইয়াছিল মেই একার হইল। আছম্মদ সাহ স্থাৎ বড় নিষ্ঠুর ছিলেন না, কিন্তু তিনি দেশাগণকে শাশন করিয়া রাখিতে পারিতেন না, সুতরাং ভাছারা মধুবা লুঠ করিল, এবং ভথায় যে সকল ভীর্থবাসী ছিল ভাহ:-দিগকে সংহার করিল। অনস্তর তীঘু ঋতুর আগমনে উহিার দেনাগণের মধ্যে মহামারী উপস্থিত হইলা স্থিক্ত डिस्टिक्ट जीवा नह रहेन ना, डाहाटड बाहमान नाह अंत्रज्यस्य अधिक काम छिडिट्ड मा भातित्रा वरमस्थ প্রাম করিছেন। প্রত্যাধ্যন কালে তিনি ভৈমুর বংশীয় अक ब्रोक्समहोदन विशेष्ट कवित्रा कहेग्रा लालन, अवर ब्रोक्स-बखी ब्रामात व्यक्ति बकाषात्र कहिएल मा भारतन बचना

নশীরুশোলা নামে এক রোহিলাগুধানকে তাঁহার নেদান বি ১১৭১ প্রতিক্রিয়া রাজকর্মা সম্পাদনের ধার্ম প্রতিক্রিয়া রাজকর্মা সম্পাদনের ধার্ম কং ১৮৫১ নির্দ্ধারিত করিয়া দিলেন।

भाकी छेलीन बारे मक्न नियम क्यमाना कतिया श्रवाबक রাঙ্গবিরুদ্ধে চলিতে লাগিলেন, এবং আপনাকে নিতাৰ नवल विट्यहना ना कतियां, महाब्राफीशमिटलब नाहाया প্রার্থনা করিলেন। মহারাটীয়েরা এতাত্বক কর্মে সভত অগ্রসর, অন্তএর গান্ধীউদীন তাহাদিগকে আহ্বান করা-তে পেসওযার সহোদর রাঘবন্ধী উপাযুক্ত সেনা সইয়া ভাঁহার সহিত নিবিয়া দিলী-নগর অধিকার করিয়া দুর্গ-वर द्राक्षालत व्यक्ति कतिल। द्राङ-देशनाग्रम धक मात्र औ পালয় রকাকরিল। তদনস্তর নজীবদৌলা তথা হইতে পলায়ন कतिरन, हाका हुर्यदात मुख्य कतिया मिया शाकी-উদীনকে পুনর্কার মান্ত্রপদে নিযুক্ত করিলেন ৷ তদনস্তর ताथवसी शक्षांव करशह क्र**कोटल** योकः क्रिस्त्रमः। इता-নীরা তাঁহার আগমনে পঞ্চার পরিত্যাগ করিয়। শিক্ষ व्याद इरेग । दाधन विना नाभाग थे तमन कव कतियां হিং ১৯৭২ ভিপায় এক জন, মহাব্রাইটীয় লালন-থ ২৭৫৮ কর্ত্তা ব্রাধিয়া আপনি দক্ষিণে প্রত্যা-

त्रमन क्षिट्यन ।

महाताकी दाना क्रमणः श्राटन इहेटन, क्राइ। शाद नक् नेत्र करकत्र पूक्ष भूका केटलोन। ७ आद्र पूजनमान ताल-व्यादक्षा विद्यान । क्रिटलन (द) काक्ष विभाव नम्मन ना

कदिएक छन्दिन स्वयंत्रम, अखबर नक्टन बक्स हरेग বুদ্ধদক্ষা করিবেদন। সহান্ধাই বিষয়া ভাষা দেখিয়া রোহি-नथन चाक्रम प्रशंक के त्रभ करक्षारत छेन्द्रित कत्रित। मुजाउदमोबा के प्रारम रक्षेत्र खाश्मिनदक व्याक्रमन कंद्रिश शक्षा व्यवि काकारेश क्लिटान । विटबंद बाहप्पर गाङ् সংসংলা যালা করিয়াছেল ভাষা শুনিয়া মহায়াই যি-দিলের মনে ২ মহা ভর হইক, ভাহাতে ভাহারা সন্ধির প্রার্থনা করাতে মুদলমান সংযোগিত রাজপুরুবেরা काशामित्रके गाँग्छ मक्षि कदित्यन । आज्ञान गांश छ०-कारण चीम बारक्यत पिक्सारर भेत जिल्लाह काछिषिभारक नमनार्च अञ्चल रहेग्राहित्तन । তाहामिश्राक ममन करा वरेटन जिनि निकू नरमत्र जीत मिया ल्मां ब्याटत शमन করিবেন। পেশওয়ারের নিকট সিক্সু পার হইয়া বর্ধাঞ্জযুক্ত পর্কভের ধাতর ২ বমুনা পর্যান্ত গাঁমন করিলেন। তথাপ বিভিয়ার অধীন এক দল মহারাফীয় মেনার উপর প্রক্রিয়া তাহাদিগকে কাটিয়া খণ্ড২ করিলেন। ने नत्य रूछ घटेलान । इसकात के मगद्र आत अक्रम अर्था अविषये महातृष्टीय-दमनां मम्बियाहादत्रं मिक्न ৰুখে পালায়ন করিভে চলেন, ছয়াণী সেনাগণ তাহার हिर >> १० े शकार धारमान इरेग्रा छास्य महा-व भारती वाकीय क्या विनाम क्या .

बार मन्द्रम शाबी उमीर नह महत्त महत्त वाम क्रिका वक्ति बारण्यम् मार प्रत्य सजी हत्त्व अन्य स्टेरम सिमीत है आया। প্রতি অত্যাচার করিবেন। অতএব তাহা না হইবার পূর্কেই তাঁহাকে বিনাশ করিয়া তৎপরিবর্তে রাজপরিবারত্থ আর এক রাজপুত্রকে সিংহাসনে উপনেশন করাইলের। কিন্তু প্রজাগণ ভাঁহাকে রাজা বলিয়া মান্য করিল না। রাজার উত্তরাপিকারী ভাহ আলম তৎকালে , বলদেশে চিলেন, ভাঁহার বিবরণ উপযুক্ত ভলে বিবরিক চ্টানে।

এই সমতে মহারাভীয়দিশের অভ্যন্ত রুদ্ধি, কিমালর অবলি কন্যাকুমারীয় অস্তরীপ পর্যান্ত প্রায় ভারৎ ভারত-वर्ष छोशानियतं अभीन, अन् अदनक रोणा ए।श्वीनाटक ৰূর প্রেদান ব্রিভেন। পেদাওয়া মহবেপ্ট্রীয় দিলের গ্রেফ্ক কর্তা ছিলেন। জাঁহার কর্ত্ত ভালাদিলের পরাক্রম অভাস্ত ব্লব্ধি ছইয়'ছিল, তাহাদিণের অনেক অধারোহী ংস্কাছিল, ভাষারা অভান্ত মুছ-পার্গ, ভাদ্রি অভান मभ महत्व भगां जिक हिन, इंश्वा का महत्व का वामका महानी रेफेटहालीय लाटकत निकर युद्ध भिका कतियाकित। এই সকল সেনা, ভদ্তিন তাহাদিলের ভোগ কামান অনৈক ছিল, তাহাতে তাহাদের মধন ২ বড় অহস্কার ক্ষিয়া ছিল, পৃথিবীতে আর কেন্স জাতি আমাদের ভুলা নহে। অভএৰ যখন তাহারা সিন্ধিয়া ও ছলকারের মৃত্যুর সংবাদ পাইল তখন একেবারে প্রতিজ্ঞা করিল ভারভবর্ষকে জার মোগলদিলের হত্তে রাখিব না, জ রাজ্য আমহা অধিকার করিব।

करे व्यक्तिका कर्मानस्तर लिलेख्या मनाभित नारम छारात

এক পিতৃৰাপুত্ৰকে সেবাপতি কার্মা বুঁকে প্রেরণ করি-লেন। তাহার পুত্র বিখাসরাওও অনেক ত্রাক্ষণ ও মহা-রাষ্ট্রীয় প্রধান দেনাপতির সহিত যাতা করিলেন। সদা-निवंद्वा अमिलीटक शमन कदिया दिनियतन मिली तकार्थ पूर्ण (करेंन कडक छलिन प्रांभी लिना माज আছে। यूक्ट अत একদিলে উপযুক্ত রক্ষক ছিলনা, ভাহাতে তিনি সেইদিগ विद्या पूर्व आदिन कतित्वन। पूर्वत्रक्क तनावन गरा রাষ্ট্রীয়দিগের ভোপের অত্যে হির থাকিতে পারিল না। তুর্গ প্রবেশ কর্ণানন্তর মহারাট্রীয় সেনাপতি বাজার ও আর আর স্থানে যে সকল মূল্যবান দ্রব্য ছিল ভাহা লুঠ ১১৭৪ করিলেন, এবং রাজার অপুর্ব্ব সিংহা১৭৬০
৮৬২ সন ও রাজসভার কড়িকাট আছাদিত রমতাদি ভালিয়া লইলেন। তদনতর তিনি বিশাস রাঞ্জকে রাজা করিবার মানস করিলেন। কিন্তু তখন পর্যান্ত ছুরাণী সেনারা দিলী নগরে ছিল, এজনা তাহা করিতে ন পারিয়া মনে ২ স্থির করিলেন ভাহারা নগার পরি-ভাগি করিয়া গেলে ভাঁছাকে সিংছাসনে ৰসাইবেন।

ভাঠদিগের রাজা মহারাতীয়দিগকে পরামর্শ দিয়া ছিলেন তাঁহারা তোপ কামানাদি ও পদাতিক সেনা-গণকে তাঁহার দেশে রাজিয়া কেবল অস্থারোহী সেনা লইয়া যুদ্ধার্কে গমন করেন। তাহা হইলে গ্রীম শতুর সমাগনে হুরাণীরা এ দেশ হইতে প্রস্থান করিলে ভাহারা সম্প্রেক রাজ্য ভাধিকার করিতে পারিকে। ক্ষি মহা-

রাষ্ট্রীয় সেনাপতি সে শরামর্শ না শুনিয়া সকল কৈন্য লইয়া যুদ্ধ করিতে গেলেন। আহম্মদ্বাহ তৎকালে चर्याणात निक्र इंडिमि कहिया मुझाडिटलीवा ও चात ६ বুদ্ধ রাজাদিলের সহিতে রাজ্য বুদ্ধার উপায় চিকা क्रिंटिकिट्निन । वर्षाट्स देमना मध्येत्रद्वसम्बद्ध समग्र इक्रेट्स फिनि गरेमत्ना मिली नगरत याजा कतिरसन्। छाँदां । আগননে মহারাটীয় সেনাপতি দিল্লী পরিত্যাগ করিয়া পাণিপতে পলায়ন कतिकान, এবং के खात्नत ठातिनिका कामान माजाहेश देगनाशंगदक उन्नद्धा वाखित्वन । अहे ১৫০০০ পদাতিক দেনা, ইহারা অতি সুশিক্ষিত, তহিল ২০০ কামান ও প্রাচীর ভাঙ্গিবার যন্ত্র ও গোলাগুলি धमधा, सूखदांए रेमना, शालनाज ও खंडाीनित्ड हैं। हात मटक थाय पूरे तक मनुशा हिन। आहाल সাহের সঙ্গে ৪০০০০ পাঠান ও পার্মী সেনা ১৩০০০ এতদেশীর খোডসওয়ার, এবং ৩৮০০০ ভারতবর্ষীয় পদাতিক, ভদাগ্যে রোহিলা জাতিই অধিক। ইহা ভিন্ন ৩ টী কায়ান ও কতক গুলি প্রাচ্চীরভালা যন্ত্র ছিল। . আছম্মদ সাহ এই সেনা লইয়া মহারাষ্ট্রীয়দিগের ছাউনির নিকট শিবির স্থাপন করিয়া থাকিলেন, কিন্তু ভাহাদিগকে আক্রমণ করিতে সাহস করিলেন না। ইভিমধ্যে এক मन, व्यर्थार ১२०००, महाताचीत्र त्यता ग्रमूनात थात पित्रा **डीहांद्र अन्छाद्धारण याहेग्रा थानामि जानगरनदे अध**



আটক করিল ৷ আহাত্র অফাড়ীকে ভাঁছার লেনাগণের बद्भावानानि क्ला ब्हैटक शामिता करे क्ला मक् করিতে না পারিয়া ভাঁহার কতক গুলিন সেনা সহা-ক্লাটীয় বেদাদিখের সহিত্ যুদ্দ করিয়া তাহাদিগকে একে-बाद्ध मम्द्रम जिलाम क्रिन, अक खानित्क दाधिन ना। छम्मकृत छोहाता छात्र विहासण अधिकात कतिन, जाशास्त्र महाताकीयमिटशत आशातीय सवा आनयदनत ব্যাঘাত করিল। মধ্যে নধ্যে ছুই সেনার্ডে মল্লযুদ্ধ क्टेट जाणिन। महाबाधी देवता हतानी त्ननात (अनी छान्त्रियांत एको कतिन, किस शाहिन मा। आहमान সাহের বন্ধান পরামর্শ দিলেন শীত সংগ্রাম করুন, ভাচা इंद्रेटल योहाँह्य अक्षी इहेग्रा बाग्न, विलय क्रिया कल नाहे। আহম্মদ সাহ উত্তর করিলেন তোমবা যুদ্ধের বিষয় বুঝনা, व्यन्त्र विषदत्त रछाभारणत रव डेव्हा इन्न कत्, किन्छ अधिवदत्त আৰি ট্ৰালা ভাল বুৰিৰ ভাহা করিব। তিনি ভাহাদিগকে ইছাও বলিলেন ভোমরা সক্ষণে নিজা বাত, আমি উপ-স্থিত থাকিতত তোমাদিদের কোন চিন্তা নাই। বস্তুত खिनि व्यत्नि शतिख्य कतिए नाशितन, देशना दक्कात कना आह नमल नियम अम्भुट्छे थाक्टिजन।

সদাশির রাও মনে করিয়াছিলেন তিনি আহম্মদ সাঙ্গের সহিষ্ট ক্ষি করিবেন, এবং সুজাউদ্দৌলঃ হারা ভাহার গুড়িউর পাইয়াছিলেন, কিন্তু নৈ চেন্টা বিফল হইন। আহ-শ্মদ দার করিবেন না। স্থায়ির আশায় কৈয়াশ কইয়া

তিনি প্রতিজ্ঞা করিলেন যুদ্ধ করিব, ইহাতে জনী হইছে 🦠 পারি ভাল, নতুবা প্রাণ দিব, কিন্তু দৈনাপণ অনাহারে মরিবে তাহ। দেখিতে পারিব না। এই প্রতিক্ষা করিয়া ১१७১ मान ७ हे **जारू**शांति **अनुस्य फि**नि देमनामक्ही कतिया প্रथम कामान मकल माति मानि दांचाहेलम, অভিজ্ঞায়, তদ্যারা শক্ত-ভোগী ভল করিবেন। আহম্মদ সাহ তাঁহার মনত জানিতে পারিয়া আপন শিবিরের मन्द्रार्थ देननाभारक प्रकाशमान कराहिताना धनस्त . মহারাষ্ট্রীয়েরা সংগ্রাম জারম্ভ করিয়া গোলার্ষ্টি করিছে : लांशिन, किन्तु थे मकन त्थांना भूनानिया চनिन, आहम्मन मारहत रेमनाभरभद्र अब न्यार्भ कविन ना ! ভाहार महा-রাষ্ট্রীয় পদাভিক সেনাগণ বস্তুকে সন্ধীন চড়াইয়া দক্ষিণ ভাগে রোহিলাদিগকে কাটিয়া একাকার করিল। তৎপত্তে শক্রমেনার পাশ্বভাগে দলবন্ধ হইয়া ভাষাদের মধ্য দেশ आकैष्म कतिल। नदाताचीय त्मनाপতি ও विश्वामत्। अ व्यक्षाद्राही त्मना नहेगा के मगरम প्राहत दर्भ छाहा-দিগের উপর পড়িল। আহম্মদ সাহ মহা বিপদ দেখিয়া পশ্চাতের দলবদ্ধ সেনাগণকে আন্তিলেন, ভাহাতেও যুদ্ধ সারিল না, মহারাষ্ট্রীয়েরা প্রবল ভাবে রহিল। অতএষ তিনি সকল সেমা একক করিয়া ক্রেণীপূর্বক অত্রে ষাইতে আজা দিলেন। এই আজা পাইয়াকতক দেনা ठकाकारत बाइता महाताची समिद्रभत शाक रमक द्वतिम, ইহাতে তাবৎ মহারাফীয় সেনা ছিন্ন তির হইয়া প্রায়ন

করিতে লাগিল, রণকেত্র শবে পরিপূর্ণ হইল। ছুরাণী সেনারা পলাতক সেনাগণকে ১০ কোশ পর্যান্ত কাটিতেহ চলিল, সেনাগণ বাহাদিগকে কাটিতে না পারিল গ্রামস্থ ক্ষেপিণ ভাহাদিগকে সংহার করিল। এই প্রকার প্রায় ছই লক্ষ সনুষ্য নই হইল। মহারাইণীয় সেনাপতি ও বিশ্বনাথ রাও ঐ সঙ্গে হত হইলেন, আর ২ প্রধানেরা কেহ হত কেই আহত হইলেন।

্ এই হুৰ্ঘটনা-সংবাদে পেশপ্তয়া অত্যন্ত চিন্তিত হইলেন, এ চিন্তায় কালরোগ উপস্থিত হইল, তাহাতে তিনি অপপ কালের মধ্যে কালগ্রাসে পড়িলেন। তদনস্তর মহা-রাষ্ট্রীয় প্রধানদিগের মধ্যে আপ্রবিচ্ছেদ জন্মিল, মুত্রাং ভাহাদের বল ক্লাস হইতে লাগিল, তাহাতে অনেক দিবস পর্যান্ত তাহাদিগের পূর্বের ন্যায় ধুম ধাম রহিল না।

আহমদ সাহ জয়প্রাপ্ত হইয়া একেবারে দিল্লী নগরে বাজা করিলেন। তথায় কিয়ৎ কাল অবস্থিতি করিয়া তিনি আনেশে পমন করিলেন। তাছার পর তিনি ভারতবর্ষে আর আইসেন নাই। কিন্তু এই রাজ্যে আর এক ফুতন কাপ্ত উপস্থিত হইল। যে ইংরাজেরা এই ক্ষণে এই রাজ্যের অধিপতি হইয়াছেন তাঁহারা ইউরোপ হইতে আসিয়া ক্রমে ২ বলদেশে গুড়ীভূত হইয়াছিলেন। তাঁহারা দিলীশরকে হীন দেখিয়া এই রাজ্য অধিকার করিয়া-ছেন। ইহার বিরুব্ধ ভবিষাৎ প্রস্থৈ লেখা বাইবে।